



93

PT.



187-
a m. 6v2
us 10/1/23

93

I N D E X

L O C O R V M S. S C R I P T.

| | | | |
|-------------------------------|----------|-------------------------------|----------|
| G en. 2. 18. | 137 | Job. 1. 12. | 145 |
| Gen. 4. 26. | ibid. | Pfal. 106. 23. | 146 |
| Gen. 8. 4. | 181 | Pfal. 112. 2. | 145 |
| Gen. 10. 11. | 62 | Cant. 2. v. 12. de Messia | |
| Gen. 11. 4. | 77 | tempore | 129. 251 |
| Gen. 23. 19. | 48 | Efai. 13. 20. | 76. 199 |
| Gen. 35. 16. | 176 | Efai. 23. 9. | 36 |
| Gen. 49. 10. Diff. ** 6. a. | | Efai. 24. 16. Diff. *** 5. b. | |
| Deut. 4. 49. | 52 | Efai. 49. 9. de Messia | |
| Deut. 4. v. ult. | 179 | tempore. | 206 |
| Deut. 11. 29. | 39 | Jer. 1. 2. | 158 |
| Deut. 23. 4. | 59 | Jer. 7. 31. | 216 |
| Deut. 23. 12. | 145 | Ezech. 26. 19. | 36 |
| Josua 18. 30. | 54 | Ezech. 38. & 39. | 180 |
| Jof. 24. 32. | 39 | Danielis 3. 23. | 76 |
| 1 Sam. 28. 4. | 50. 178 | Hof. 3. 4. Dissert. ** 7. b. | |
| 2 Sam. 18. 18. | 43 | Joël. 3. 7. | 44 |
| 1 Reg. 7. 15. Dissert. *** | | Hobad. v. penult. | 233 |
| 2. a. | | Mal. 3. 5. de Messia. | 231 |
| 1 Reg. 9. 18. | 58 | Matt. 23. 38. | 171 |
| 1 Reg. 18. 19. & seq. | 37 | Matt. 26. 30. | 44 |
| 2 Reg. 17. 6. | 97. 210 | Luc. 13. 4. | 43 |
| 2 Reg. 17. 24. | 169. 211 | Joh. 4. 20. | 39. 170 |
| 2 Reg. 23. 11. | 214 | Act. 26. 5. | 147 |
| 1 Chron. 5. 26. | 97. 210 | 2 Cor. 9. 10. | 145 |
| 2 Chr. 3. 15. Diff. *** 2. a. | | Philip. 3. 5. | 147 |
| 2 Chron. 39. 20. | 62 | 1 Timoth. 1. 4. | 202 |

F I N I S.

I N D E X.

| | | | |
|-----------|---------|--------------|---------|
| כוח. | 211 | פרסה. | 140.141 |
| כוהא. | 215 | פרוש. | 147 |
| כנגדם. | 137 | צאנזה. | 215 |
| כנה. | ibid. | צדקה. | 145 |
| כפר. | 161 | sonus ק. | 135 |
| כרך. | 228 | קדומה לתורה. | 136 |
| לבטה. | 161 | קדִם. | 137 |
| לולו. | 213 | קורש. | 162 |
| מיל. | 140.141 | קרוב כהצי. | 177 |
| מיקילם. | 160 | ראש הסדר. | 190 |
| מעין. | 167 | ראש כלוח. | 191 |
| נמל. | 160 | quid שגר. | 202 |
| נפק בה. | 138 | של. | 157 |
| ע litera. | 144 | שלגורן. | ibid. |
| عين شمس | 224 | שם מפורס. | 204.205 |
| על ידי. | 145 | שמע. | 133 |
| עמד בפעץ. | 146 | חלמיד' חכמי. | 138.139 |
| ענק. | 136 | תמנת חרם. | 143 |
| פיך. | 232 | תנאים. | 151 |
| فسطاط. | 221 | | |

INDEX

INDEX TALMUD.

| | | |
|---------------------------|-------------------------|-----|
| Avoda Zara. fol. 27. | Horajoth. fol. 13. | 138 |
| p. i. 169. fol. 26. p. | Kiddouschim. fol. 37. | |
| 2. | 170 | 138 |
| Bava Metzia fol. 93. | Sanedrin Hierof. fol. | |
| 148 | 29. col. 3. | 207 |
| Berachoth. fol. 58. p. i. | Schabbath. cap. i. par. | |
| Diff. ** 8. a. fol. 65. | 4. | 148 |
| 140 | | |

INDEX HEBRAICVS.

| | | | |
|---|----------|--------------|-----------|
| א cum ין ferè permutatum in manuscriptis. | 155 | במה. | 164 |
| א in initio quid. | 164 | בר. | 160 |
| אב. | 157. 158 | برهن الفلك | 182 |
| אדום. | 144 | גאונים. | 151 |
| المستعربة | 179 | התנאים | 136 |
| אל ערוה. | 144 | הר געש. | 142. 143 |
| אמוראים. | 151 | הר חבר quis. | 188. 189 |
| אספקטור. | 164 | חזן. | 148. 149 |
| אפריפוס. | ibid. | חפה. | 166 |
| ב cum יוצא ב. | 152 | טיאני. | 157 |
| בדולה. | 213 | יד. | 145 |
| בין ידנא | 146 | ישמאל. | 144 |
| | | כברה ארץ. | 176. 177. |
| | | 178 | |

בנה

I N D E X.

| | |
|---|--|
| <i>Turca idololatra.</i> 98. venti | <i>Victimarum canalis.</i> 43 |
| <i>cultores.</i> <i>ibid.</i> | <i>Vira flumen.</i> 85 |
| <i>Turca Persiam invadunt.</i> | <i>Vitriolum unde.</i> 15 |
| 98 | <i>Vitrum Tyrium præstans.</i> |
| <i>Turca Persas vincunt.</i> 103 | 36 |
| <i>Turca.</i> 30 | <i>Ἰσραήλ Danielis.</i> 76 |
| <i>Turris Davidis rudera.</i> 41 | <i>Vrbis latera 15 milliaria:</i> |
| <i>Turris Babylonica.</i> 77. <i>ejus</i> | 55 |
| <i>magnitudo.</i> <i>ibid.</i> <i>igni</i> | <i>Vrbs 12 milliarium.</i> 96 |
| <i>vastata.</i> <i>ibid.</i> | <i>Vxores se in maritorum ro-</i> |
| <i>Turres in civitate pro ar-</i> | <i>gum præcipitant.</i> 216 |
| <i>cibus.</i> 9.10 | <i>Vxores omnes permutan-</i> |
| <i>Tyri portus tutissimus.</i> 35 | <i>tur.</i> 34 |
| <i>Tyrus antiqua.</i> 36 | VV. |
| <i>Tyrus nova.</i> 35 | W <i>ilhelmus Sicilia rex.</i> |
| V. | 18 |
| V <i>Ael de luna.</i> 40 | X. |
| <i>Valachia.</i> 162 | X <i>enodochium Hieroso-</i> |
| <i>Valachrorum indoles.</i> 21. | <i>lymitanum duplex.</i> |
| <i>ortus judaicus.</i> <i>ibid.</i> <i>sine</i> | 41 |
| <i>legibus.</i> <i>ibid.</i> | <i>Xenodochium Salomonis.</i> |
| <i>Vallis Iosaphat.</i> 44 | 42 |
| <i>Vanath.</i> 89 | Z. |
| <i>Vanitas Iudeorum.</i> 195 | Z <i>achus princeps.</i> 61. 94 |
| <i>Vasa Hierosolymitana.</i> 13 | <i>Zaken.</i> 63. 14 |
| <i>Ventus vocalis.</i> 46 | <i>Zarzin.</i> 52 |
| <i>Vespasiani palatium.</i> 12 | <i>Zebid.</i> 112 |
| <i>Vestes osculantur subditi.</i> | <i>Zeilan.</i> 106 |
| 66 | <i>Zin-aldin.</i> 95 |
| <i>Viatores nomina dant.</i> 105 | <i>Zingiber.</i> 107 |

INDEX

I N D E X.

| | | | |
|---|--------------|---|--------------|
| <i>Templum Domini.</i> | 42 | <i>Titi palatium.</i> | 12 |
| <i>Templum in Tſione.</i> | 44 | <i>Titus rejicitur.</i> | <i>ibid.</i> |
| <i>Templum Abrahami.</i> | 48 | <i>Tobias.</i> | 8 |
| <i>Templum Samuelis.</i> | 50 | <i>Togarmani.</i> | 54.27 |
| <i>Templum ſepulchri Domi- ni.</i> | 173 | <i>Toletum.</i> | 133.134 |
| <i>Terra motus Tripolis.</i> | 32 | <i>Torondolos.</i> | 49 |
| <i>Terra motus validus in terra Canaan.</i> | 33.179 | <i>Torrens orientaliſium.</i> | 36 |
| <i>Terra motus ingens.</i> | 58 | <i>Trabelos.</i> | 32 |
| <i>Terra motus Antiochia diuturnus.</i> | 180 | <i>Trane.</i> | 17 |
| <i>Thanai.</i> | 84 | <i>Trapana.</i> | 127 |
| <i>Tharſis.</i> | 31 | <i>Tribus Iſraëliſ ubi.</i> | 97 |
| <i>Theatrum Conſtantinopo- litanum.</i> | 25 | <i>Tributum Conſtantinopo- litanum.</i> | 26 |
| <i>Theba.</i> | 20 | <i>Tributum Iſraëliſtarũ.</i> | 90 |
| <i>Thema.</i> | 82 | <i>Tripolis.</i> | 32 |
| <i>Theman.</i> | 29 | <i>Tſedekias.</i> | 60 |
| <i>Therma ſalutiſera.</i> | 15. | <i>Tſedekia ſepulchrum.</i> | 80 |
| <i>quando ad eundem.</i> | <i>ibid.</i> | <i>Tſidon.</i> | 34 |
| <i>Therma Tiberiadis.</i> | 53 | <i>Tſintſan.</i> | 14 |
| <i>Theſaurus Conſtantinopo- litanus.</i> | 26 | <i>Tſion.</i> | 44 |
| <i>Theſaurus ſepulchrorũ.</i> | 46 | <i>Tſionis murus.</i> | 45 |
| <i>Theſaurus templi à Deo conſervatus.</i> | 175 | <i>Tſionis ſpelunca.</i> | <i>ibid.</i> |
| <i>Theſaurus ſepulchri Da- vidis.</i> | 176 | <i>Tſionis ſepulchrum magni- ficum.</i> | 46 |
| <i>Thronus Iudaorum Bag- dadi.</i> | 75 | <i>Tſipori.</i> | 52 |
| <i>Tiberias.</i> | 52 | <i>Tſoane Caliphæ.</i> | 115 |
| <i>Tilimas.</i> | 84 | <i>Tſoan munita.</i> | 116 |
| <i>Timin.</i> | 53 | <i>Tſoan.</i> | 219 |
| <i>Timnatha.</i> | <i>ibid.</i> | <i>Tuboth.</i> | 97 |
| | | <i>Tudela.</i> | 133 |
| | | <i>Tunes.</i> | 126.229 |
| | | <i>Turca Perſarum vaſallus.</i> | |
| | | 95 | |
| | | <i>Turcarum terminus.</i> | 54 |
| | | <i>Turcarum limites.</i> | 60 |
| | | <i>Tur-</i> | |

I N D E X.

| | |
|---|---|
| <p><i>Soli adoletur.</i> 107</p> <p><i>Solis cultores.</i> 105. 107</p> <p><i>Solis imago sponte vertitur</i> <i>ibid.</i></p> <p><i>Sonbat.</i> 125</p> <p><i>Sophia templum.</i> 24. 164. <i>ejus ornatus.</i> 25</p> <p><i>Sorores pro uxoribus.</i> 113</p> <p><i>Sotericus Panteuchenus.</i> 165</p> <p><i>Sourani confessus caput cū</i> <i>Poumbedithano.</i> 194</p> <p><i>Soura confessus.</i> 199</p> <p><i>Specula Alexandria.</i> 123</p> <p><i>Specula Alexandria quan-</i> <i>ta, &c.</i> 225</p> <p><i>Specula Alexandria ad</i> <i>100 milliaria videba-</i> <i>tur.</i> 123</p> <p><i>Speculum ad 50 dierum</i> <i>iter visum extendens.</i> 122</p> <p><i>Speculum Alexandria fre-</i> <i>git Theodorus.</i> <i>ibid.</i></p> <p><i>Spelunca elegans.</i> 13</p> <p><i>Spelunca Neapolis.</i> 15</p> <p><i>Stadium, Dissert.***</i> 4. b. <i>seq. 6. a.</i></p> <p><i>Statio, σῶδος, Dissert.***</i> <i>3. b. & seq.</i></p> <p><i>Stationes cur differāt, Dis-</i> <i>fert.***</i> 6. a.</p> <p><i>Statua salis.</i> 44. <i>accre-</i> <i>scit.</i> <i>ibid.</i></p> <p><i>Stephani templum.</i> 13</p> <p><i>Subterranea porticus.</i> 15</p> | <p><i>Sumatra.</i> 215</p> <p><i>Suria.</i> 81</p> <p><i>Susan.</i> 86</p> <p><i>Susenburk.</i> 128. 230</p> <p><i>Sybotā.</i> 161</p> <p><i>Synagoga Syrorum & Ba-</i> <i>bylon. in Ægypto.</i> 114</p> <p><i>Synagoga inter turres.</i> 77</p> <p><i>Synagoga Meiri.</i> <i>ibid.</i></p> <p><i>Synagoga pretiosissima.</i> 75</p> <p><i>Synagoga Damascena.</i> 55.</p> <p><i>Samuelis.</i> 63. 81. <i>Iuda.</i> <i>ibid.</i></p> <p><i>Synagoga 28. Bagdadi.</i> 75</p> <p><i>Synedria quando in Ba-</i> <i>byl.</i> 190</p> <p><i>Synedria Iudaorum Bag-</i> <i>dadi.</i> 70</p> <p><i>Synedriorū ordo & consi-</i> <i>dentīū diversa officia.</i> 191</p> <p><i>Syracusa.</i> 127</p> <p style="text-align: center;">T.</p> <p>T <i>Abrextaan.</i> 96</p> <p><i>Tadmor.</i> 58</p> <p><i>Tarentum.</i> 18</p> <p><i>Tarracona,</i> 3</p> <p><i>Tatari Caliphas sustule-</i> <i>runt Bagdadi.</i> 184</p> <p><i>Telassar.</i> 112. <i>ubi.</i> 217</p> <p><i>Tempestas insignis.</i> 110</p> <p><i>Templa ditissima Constan-</i> <i>tini.</i> 25</p> <p><i>Templum Petri.</i> 11</p> <p><i>Templum Petri & Pauli.</i> 153</p> |
|---|---|

Tem-

I N D E X.

| | | | |
|-------------------------------------|---------|------------------------------------|-------|
| <i>Schemaja.</i> | 29 | <i>Sepulchra à Christianis di-</i> | |
| <i>Scherira.</i> | 81 | <i>ruta.</i> | 44 |
| <i>Schiam.</i> | 59 | <i>Sepulchra Davidica. ibid.</i> | |
| <i>Schilo.</i> | 22.50 | <i>Sepulchra patriarcharum.</i> | |
| <i>Schiloa.</i> | 43 | 48.49 | |
| <i>Sciphaaz.</i> | 96 | <i>Sepulchrum Samuelis.</i> | 50 |
| <i>Schittim.</i> | 44 | <i>Sepulchretum Israëlita-</i> | |
| <i>Schizeria.</i> | 37 | <i>rum.</i> | 53 |
| <i>Schlawonia.</i> | 232 | <i>Sepulchra trium puerorū.</i> | |
| <i>Schola Salernitana.</i> | 16 | 80 | |
| <i>Schola & curia eadem He-</i> | | <i>Sepulchrum Akiba. ibid.</i> | |
| <i>brais.</i> | 191.192 | <i>Sepulchrum cum omnium</i> | |
| <i>Schola 20. Alexandria.</i> | 121 | <i>animalium figuris. 124. à</i> | |
| <i>Schunem.</i> | 49 | <i>diluvio remanens. ibid.</i> | |
| <i>Sculptum in pariete pra-</i> | | <i>Serica regnum.</i> | 208 |
| <i>lium.</i> | 12 | <i>Serra secant ipsos reges.</i> | |
| <i>Scythia extra Imaum.</i> | 208 | 32 | |
| <i>Sebaste.</i> | 38 | <i>Seth.</i> | 59 |
| <i>Sectiones L. legendi modus.</i> | | <i>Sichem.</i> | 38.40 |
| 218 | | <i>Simeonis filii Gamalielis</i> | |
| <i>Seguras.</i> | 52 | <i>sepulchrum.</i> | 54 |
| <i>Sehora.</i> | 80 | <i>Sina.</i> | 110 |
| <i>Sela midbara.</i> | 59 | <i>Sinai. 125. Ægypto paret.</i> | |
| <i>Selencia.</i> | 22.163 | <i>ibid.</i> | |
| <i>Selencus.</i> | 22 | <i>Sipuria.</i> | 52 |
| <i>Semarchosh.</i> | 87 | <i>Socii.</i> | 70 |
| <i>Sementis quando in Ægy-</i> | | <i>Sociorum successio.</i> | 192 |
| <i>pto.</i> | 118 | <i>Socius etiam docet.</i> | 189 |
| <i>Senatorum successio.</i> | 192 | <i>Solennitas ad Ezechielis</i> | |
| <i>Sene.</i> | 50 | <i>locum.</i> | 78 |
| <i>Senigar Rex Persia.</i> | 88 | <i>Solium Constantinopolita-</i> | |
| <i>Septem Societates.</i> | 33 | <i>num.</i> | 26 |
| <i>Sepulchrum omnes arcens.</i> | | <i>Solpro Deo habitus.</i> | 215 |
| 46 | | <i>Solem colendi ritus.</i> | 214 |
| <i>Sepulchrum Iesu.</i> | 42 | <i>Soli obviam itur.</i> | 107 |
| | | <i>Soli</i> | |

I N D E X.

| R. | | | |
|----|---|----------|--|
| R | Abbanai. | 30 | Russi filios & filias dirvendunt. 130. Hieme sese domi continent. <i>ibid.</i> |
| | Rabi synagoga. | 81 | <i>ibid.</i> |
| | Rachelis sepulchrum. | 47 | S. |
| | Rakia. | 60 | Sabbathicus fluv. 206. |
| | Rama. | 50 | 207. 208 |
| | Rameses. | 120. 224 | Saccharum Tyrium. 36 |
| | Ramla. | 50 | Sacerdotes praestigiatores. |
| | Rasid. | 119 | 108 |
| | Rechabita. | 82 | Salduba. 135 |
| | Regensburg. | 130 | Saleca. 57 |
| | Reges 12 sub imperio Constantini. | 23 | Salernum. 16 |
| | Regillianus. | 155 | Salomonis jarchi patria & nomina. 149. 150 |
| | Regio sine segetibus abundans fructibus. | 16 | Salomonis filii Abrahami patria. 143 |
| | Regnum Israëliitarum fictum, Dissert. ** 6. a | | Salomon Princeps. 83 |
| | Remira. | 120 | Salomon praefectus. 22 |
| | Rephidim habet Arab. | 125 | Salomon Ægyptius. 28 |
| | Resen. | 75 | Samarcant. 97 |
| | Rubenita. | 84 | Samaria fertilis. 38 |
| | Rhodus. | 30 | Samaritani nullis literis carent. 170 |
| | Rigandi modus in Ægypto. | 118 | Samos. 30 |
| | Robadbar. | 89 | Samsonis imago. 13 |
| | Robinca. | 21 | Samuel pralector. 6 |
| | Rodanus. | 8 | Samuelis justi sepulchr. 53 |
| | Rodoston. | 29. 164 | Samura. 85 |
| | Rohoboth. | 62 | Sanballathi factum. 169 |
| | Roma quibusdam à Nubiensi equatur. | 152 | Sarschalom princeps. 56 |
| | Roma. 10. 128. situs. | 11 | Schabtæus parvus. 29 |
| | Roma magnitudo. 153. 154 | | Schammai sepulchrum. 53 |
| | Romulus à mortuo Davide timet. | 15 | Schargoreg. 38 |
| | | | Scheba. 82. 112 |
| | | | Schelahja. 19 |
| | | | 25 |
| | | | Sche- |

I N D E X.

| | | | |
|---|--------|--|--------------|
| <i>Parisi.</i> | 131 | <i>Phir.</i> | 31 |
| <i>Passus.</i> | 141 | <i>Pinego.</i> | 130.232 |
| <i>Patra.</i> | 19 | <i>Piper.</i> | 106 |
| <i>Pavimentum imaginibus variegatum.</i> | 127 | <i>Piper album est. ibid. fit ni- grum.</i> | <i>ibid.</i> |
| <i>Pecunia in agro à Rege cu- ratur.</i> | 106 | <i>Piso.</i> | 9 |
| <i>Pellibus se insuunt tempe- state jaclati.</i> | 111 | <i>Piscandi ars in Ægypto.</i> | 117 |
| <i>Perditarum rerum resti- tutio.</i> | 106 | <i>Piscium adeps lucernis in- servit.</i> | <i>ibid.</i> |
| <i>Peregrinantes Hierosoly- mam versus.</i> | 36 | <i>Pischo.</i> | 112 |
| <i>Peregrinantium in terra sancta statio.</i> | 126 | <i>Pithom.</i> | 114 |
| <i>Perinthus.</i> | 164 | <i>Pitirvinus Papa. 31. quis. 165</i> | |
| <i>Perisolis fabula, Dissert. ** 6. b.</i> | | <i>Pium.</i> | 114 |
| <i>Persa in 45 reges domina- tur.</i> | 87 | <i>Platea subterrana.</i> | 121.224 |
| <i>Persa ab exploratore deci- pitur.</i> | 99.100 | <i>Populus exlex.</i> | 34 |
| <i>Persia latitudo.</i> | 85.86 | <i>Porta misericordiae.</i> | 43 |
| <i>Persiam & Turciam deser- tum interjacet.</i> | 99 | <i>Portus incomparabilis.</i> | 35 |
| <i>Persidis initium.</i> | 62 | <i>Poumbeditha.</i> | 63.81 |
| <i>Persidis Sultan. 87. ejus la- tissimum imperium. ibid.</i> | | <i>Poumbditha confessus.</i> | 199 |
| <i>Pes.</i> | 141 | <i>Praga.</i> | 130 |
| <i>Pesipua.</i> | 50 | <i>Praga Schlarvonia initium 130</i> | |
| <i>Petaleria.</i> | 127 | <i>Preces contra Christ.</i> | 150 |
| <i>Pethora.</i> | 59 | <i>Pralium in palatio.</i> | 12 |
| <i>Petri & Pauli sepulch.</i> | 153 | <i>Præsides decem judaorū.</i> | 70 |
| <i>Pharisai.</i> | 147 | <i>Princeps fidelium.</i> | 72 |
| <i>Pharos Alexandria.</i> | 121 | <i>Principes è Davide.</i> | 83 |
| | | <i>Propontis.</i> | 163 |
| | | <i>Puteoli inundati & à quo conditi.</i> | 14 |
| | | <i>Puteoli.</i> | 159 |
| | | <i>Puteus Abrahami.</i> | 52 |
| | | <i>Pyramis Ægypti.</i> | 119 |

R. Rab.

I N D E X.

| | | | |
|---|---------|--|--------------|
| <i>Naves auro obducta.</i> | 127 | <i>Ociosi qui dicantur.</i> | 71 |
| <i>Naufragiū effugiendi mo- dus.</i> | III | <i>Okbera.</i> | 63 |
| <i>Neapolis.</i> | 15.38 | <i>Olivarum mons.</i> | 44 |
| <i>Nebo.</i> | 44 | <i>Omari fornix.</i> | 42 |
| <i>Nebucadnezaris palat.</i> | 76 | <i>Ordinis procurator.</i> | 190 |
| <i>Negroponte.</i> | 162 | <i>Orfa.</i> | 180 |
| <i>Nehardea. 81. ubi.</i> | 200 | <i>Orion procellosus.</i> | 110 |
| <i>Netsibis.</i> | 61 | <i>Ormus ubi.</i> | 212 |
| <i>Nikrokis.</i> | 104.212 | <i>Ostrea rore subsidunt.</i> | 105 |
| <i>Nilus semel quotannis ex- undat. 116. quando. ibid. ad 15 dierum iter. ibid.</i> | | <i>Otranto.</i> | 18.161 |
| <i>Nili aqua medicinalis. 117 ejus alvei quatuor.</i> | 118 | <i>Oula.</i> | 59 |
| <i>Ninive.</i> | 62 | P. | |
| <i>Niphas.</i> | 36 | <i>P Agus-deserti.</i> | 80 |
| <i>Nisbon mons.</i> | 97 | <i>Palatia 80 Roma.</i> | 11 |
| <i>Nisboris urbes.</i> | ibid. | <i>Palatium in horto auro ob- ductum & argento.</i> | 127 |
| <i>Nisboris montes.</i> | 100.210 | <i>Palatium Galbini.</i> | 12 |
| <i>Nisibis.</i> | 181 | <i>Palatium trium mill. ibid.</i> | |
| <i>Nob.</i> | 50 | <i>Palatium Constantin.</i> | 25 |
| <i>Noctu per fora faces ar- dent.</i> | 106 | <i>Palatium baalath.</i> | 57 |
| <i>Nogres.</i> | 7 | <i>Palatium Bagdadi 3 mil- liarium.</i> | 64 |
| <i>Nominis Iova vires.</i> | 93 | <i>Palermo ad 2 milliaria ex- tenditur. 126. omnibus abundans.</i> | ibid. |
| <i>Nor-Aldin.</i> | 59 | <i>Πάλλω.</i> | 142 |
| <i>Nosocomia eximia Ar.</i> | 69 | <i>Palmis.</i> | 51 |
| <i>Nosocomium furiosorū. ib.</i> | | <i>Papa Gracorum.</i> | 24 |
| <i>Nubiensis testimonium. 153 154. 182. 209. 212. 222. 224</i> | | <i>Papa Romanus non est uni- versalis.</i> | 24 |
| O. | | <i>Papa excellentia.</i> | 10 |
| <i>Obadia princeps.</i> | 97 | <i>Parpar fluvius.</i> | 55 |
| <i>Obadia synagoga.</i> | 62 | <i>Parasanga. 140. 141. Diff. *** 1. b. & seq. & 4. 6.</i> | |
| <i>Obedientia insignis infide- lium.</i> | 32 | <i>Parschandatha.</i> | 150 |
| | | Q 4 | <i>Pari-</i> |

I N D E X.

| | | | |
|-------------------------------------|--------------|--------------------------------------|---------|
| <i>Maxara.</i> | 127 | <i>More nebuchim quis ver-</i> | |
| <i>Méyas δμωσιγῆς.</i> | 23 | <i>terit. 151 combustus fuit. ib</i> | |
| <i>Méyas δῆκας.</i> | <i>ibid.</i> | <i>Moria mons.</i> | 40 |
| <i>Méyas οἰγορόμ.</i> | <i>ibid.</i> | <i>Morignano.</i> | 123 |
| <i>Meir Carceschonenfis.</i> | 35 | <i>Mortui insepulti.</i> | 107 |
| <i>Meir.</i> | 9.18.33 | <i>Moschus.</i> | 88 |
| <i>Meiri sepulchrum.</i> | 77 | <i>Mosella.</i> | 128 |
| <i>Menahem.</i> | 11.18 | <i>Moses Gisso.</i> | 6 |
| <i>Mensa Salomonis.</i> | 134 | <i>Moses Constantinopol.</i> | 59 |
| <i>Mensura Arabica cū Heb.</i> | | <i>Moses è Nisbore.</i> | 103 |
| <i>conciliatio, Diff. *** 2. a.</i> | | <i>Mosis synagoga in Ægypto.</i> | |
| <i>Messana.</i> | 126 | | 120 |
| <i>Messia tempus adesse ne-</i> | | <i>Mozal.</i> | 181.182 |
| <i>gant Iudai.</i> | 94 | <i>Mubchar.</i> | 61 |
| <i>Messis quando in Ægypto.</i> | | <i>Muchtar.</i> | 53.59 |
| | 118.223 | <i>Muhammedani.</i> | 144 |
| <i>Μετρητῶν.</i> | 34 | <i>Munster,</i> | 128.230 |
| <i>Michaël de Bar.</i> | 18 | <i>Murus adis sacra.</i> | 43 |
| <i>Milliare. 141. Dissert. ***</i> | | <i>Musica in plateis ob Cali-</i> | |
| <i>1. b & seqq. Italici cum</i> | | <i>pham.</i> | 68 |
| <i>Hebr. coll. Diff. *** 3. a.</i> | | <i>Mitylene.</i> | 29 |
| <i>Miracula quando.</i> | 175 | N. | |
| <i>Misericordia Arabum.</i> | 69 | <i>Nahumi synagoga.</i> | 62 |
| <i>Mitrisi.</i> | 23 | <i>Nahumi sepulchrum.</i> | |
| <i>Mitfraim.</i> | 114.115.220 | | 80 |
| <i>Mitfraim sine mœnibus.</i> | | <i>Naphha.</i> | 77 |
| | 116 | <i>Narbona. 4. quàm distet à</i> | |
| <i>Mitfraim duplex.</i> | 119 | <i>Monpeslier, Diff. *** 6. b.</i> | |
| <i>Mitfraim antiqua.</i> | <i>ibid.</i> | <i>Nasfer.</i> | 85 |
| <i>Mitfraim vetus quãta.</i> | 120 | <i>Natolicon.</i> | 19.162 |
| <i>Molhath.</i> | 89 | <i>Nathan. 5.8.17.18.58.63</i> | |
| <i>Monachi in Sinai.</i> | 125 | <i>Nathanaël preses.</i> | 115 |
| <i>Monpeslier.</i> | 142 | <i>Navalia ante speculum A-</i> | |
| <i>Mons pessulavus.</i> | 5 | <i>lexandria.</i> | 122 |
| <i>Montes Gozan.</i> | 206 | <i>Navarra.</i> | 132 |
| | | | Na- |

I N D E X.

| | | | |
|---|--------|---|----------|
| <i>Karaita discreti ab aliis.</i> | 28 | <i>Liga.</i> | 31 |
| <i>Karaita differunt à Samaritanis.</i> | 52 | <i>Liga fluvius.</i> | 80 |
| <i>Karaita à Cuthais differunt.</i> | 57 | <i>Legationes D. ab Aersen. Dedic. ** 1. b.</i> | |
| <i>Karkefia.</i> | 62 | <i>Locorum mensura à se diversa, Dissert. *** 5. b.</i> | |
| <i>Katipha.</i> | 105 | <i>Luca.</i> | 10.128 |
| <i>Kegila.</i> | 38 | <i>Luctus Iudeorum.</i> | 83.129 |
| <i>Kirjathaim.</i> | 58 | <i>Lud.</i> | 52 |
| <i>Kischon torrens.</i> | 37 | <i>Ludovicus de Dieu, Dedic. * 6. b.</i> | |
| <i>Konpassus.</i> | 14 | <i>Lunel.</i> | 5 |
| <i>Kormos.</i> | 32 | <i>Luz.</i> | 38 |
| <i>Kwopotopogis.</i> | 21 | <i>Lybia.</i> | 112 |
| <i>Kupha.</i> | 80 | | |
| <i>Kouts.</i> | 114 | M. | |
| L. | | M <i>Agraa.</i> | 121 |
| L <i>Abra magna aurea Damasci.</i> | 56 | <i>Malchi.</i> | 17 |
| <i>Labta.</i> | 18 | <i>Malfi.</i> | 16 |
| <i>Lamdin.</i> | 59 | <i>Malmistras.</i> | 31 |
| <i>Lambala.</i> | 120 | <i>Manassita.</i> | 84 |
| <i>Lamiki.</i> | 208 | <i>Manziphta.</i> | 120 |
| <i>Lampas sepulchralis semper ardens.</i> | 49 | <i>Maran.</i> | 53 |
| <i>Lampas perpetuo in sepulchro Ezechielis.</i> | 79 | <i>Mardochei sepulchri.</i> | 96 |
| <i>Laodicea.</i> | 31 | <i>Mare concretum.</i> | 110 |
| <i>Lapides maximi.</i> | 57 | <i>Mare rubrum.</i> | 125 |
| <i>Larta.</i> | 18.161 | <i>Marescha.</i> | 49 |
| <i>Legere vespera ante Sabbatum non licet magistro.</i> | 148 | <i>Mare Sodoma.</i> | 53 |
| <i>Leo.</i> | 20 | <i>Margarita loco lampadū.</i> | 26 |
| <i>Lepantum.</i> | 19 | <i>Margaritarum origo.</i> | 105. 214 |
| <i>Lephras.</i> | 80 | <i>Martes Scythica.</i> | 130 |
| <i>Linum.</i> | 125 | <i>Massilia. 8. ejus distantia à S. Ægidio, Diss. *** 6. b.</i> | |
| | | <i>Mastyx.</i> | 30 |

I N D E X.

| | | |
|---|--------|--|
| <i>Ismaëlita.</i> | 179 | <i>Iudai doctissimi.</i> 20. <i>sericarii.</i> <i>ibid.</i> <i>patientes.</i> 29. <i>Epicurai.</i> 30. <i>diem Veneris observantes.</i> 30. <i>infectores.</i> 41. <i>bellagerunt.</i> 58. 112 |
| <i>Ispahaan.</i> | 96 | <i>Iudai lugentes Hierosolyma.</i> 83. <i>eorum eremita.</i> <i>ib.</i> <i>devoti.</i> <i>ibid.</i> <i>eorum civitates hodierna.</i> 84 |
| <i>Israël.</i> | 18. 59 | <i>Iudai non conveniunt in legenda lege.</i> 114. <i>legem triennio absolvunt.</i> <i>ibid.</i> 115. <i>Ægyptiaci bis conveniunt.</i> <i>ibid.</i> |
| <i>Israëlita pradones.</i> 82. <i>urbes condunt.</i> 84. <i>bellagerunt.</i> <i>ibid.</i> 89 | | <i>Iudai in ficto regno nõ conveniunt.</i> 203. 207 |
| <i>Israëlita Chaldaice loquentes.</i> 90. <i>à Schalmamesere abducti.</i> <i>ibid.</i> <i>omnes tributarii.</i> <i>ibid.</i> | | <i>Iudai conclusi.</i> 206. 207 |
| <i>Israëlita in Havila.</i> 203. <i>ad Euphratē.</i> <i>ib.</i> <i>Pharanis montes incolunt.</i> <i>ibid.</i> | | <i>Iudæorum agri.</i> 19. <i>eorum potestas.</i> 71. 72 |
| <i>Israëlitarum ditio lata.</i> 82. 84. <i>eorũ imperium.</i> <i>ibid.</i> | | <i>Iudæus præfectus gubernatoris.</i> 8 |
| <i>Israëlita in Nisbore</i> 100 <i>in Haphton.</i> 90 | | <i>Iudæus aula magister.</i> 11 |
| <i>Israëlitarũ dominium hodiernum.</i> 98. <i>pugnant.</i> <i>ib.</i> <i>eorum lata diocesis.</i> 100. <i>Turcis confæderati.</i> 101. <i>eos Persæ adoriri non audent.</i> 102. <i>bello ob fratres abstinent.</i> <i>ibid.</i> <i>eorũ dominium in India.</i> 112. <i>eorum structura in Ægypto</i> 114. 120. <i>eorum in Ægypto præses unus.</i> 115 | | <i>Iudæus seditiosus.</i> 91. <i>pro Messia se gerit.</i> <i>ibid.</i> |
| <i>Iuda.</i> 16. 29 | | <i>Iudæus Magus.</i> 92. <i>carcere se proripit.</i> <i>ib.</i> <i>invisibilis fit.</i> <i>ibid.</i> <i>flumē transit.</i> 93 |
| <i>Iudas medicus.</i> 6 | | <i>Iulii Cæsaris palatium.</i> 11 |
| <i>Iudai equo non vehuntur Constantinopoli.</i> 28 | | K. |
| <i>Iudai oppressi Constantinopoli.</i> <i>ibid.</i> <i>à Gracis.</i> <i>ibid.</i> | | K <i>Adesch Naphtali.</i> 54 |
| <i>Iudai arcentur Constantinopoli.</i> 27 | | <i>Kairo.</i> 220. <i>muro cincta.</i> 221 |
| | | <i>Kakus.</i> 38 |
| | | <i>Kalagaber.</i> 59 |
| | | <i>Kalikout.</i> 208 |
| | | <i>Ka-</i> |

I N D E X.

| | | | |
|----------------------------------|-------------|---------------------------------------|-----|
| <i>Hospitalitas judæorū.</i> | 129. | <i>Insula solum fontem ha-</i> | |
| | 131 | <i>bens.</i> | 104 |
| <i>Hostium Israëlitærum pœ-</i> | | <i>Interdium homines non pro-</i> | |
| <i>na.</i> | 128 | <i>deunt.</i> | 106 |
| <i>Haoulam.</i> | 105.106.214 | <i>Inundationem Nili meti-</i> | |
| <i>Houa sepulchrum.</i> | 80 | <i>tur & promulgat præco.</i> | |
| | I. | <i>117. ejus causâ Deum lau-</i> | |
| I <i>Abok.</i> | 31.58 | <i>dant. ibid. ea fertilitatis</i> | |
| <i>Iabusterisa.</i> | 20 | <i>causâ. ibid. &.</i> | 118 |
| <i>Iacob. 6.8.9.10.17.19.20.</i> | | <i>Ioannis filii Zachari sepul-</i> | |
| <i>21.22.29.33</i> | | <i>chrum.</i> | 53 |
| <i>Iacobum ubi Deus allocu-</i> | | <i>Iohannes Lælius, Dissert.</i> | |
| <i>tus.</i> | 173 | <i>*** 1. b.</i> | |
| <i>Iafne.</i> | 51 | <i>Iona.</i> | 36 |
| <i>Iaphet.</i> | 36 | <i>Iona sepulchrum. 52. & sy-</i> | |
| <i>Iardenis origo.</i> | 54 | <i>nagoga.</i> | 62 |
| <i>Idolum Ammonitarum in-</i> | | <i>Ionathanis filii Levi sepul-</i> | |
| <i>ter mulieres.</i> | 33 | <i>chrum.</i> | 53 |
| <i>Iechonia sepulchrum.</i> | 81 | <i>Ioppe.</i> | 51 |
| <i>Iechonias in exilio urbem</i> | | <i>Ioseph. 7. 4. 6. 10. 17. 18.</i> | |
| <i>condit.</i> | 63 | <i>20. 21. 22. 23. 31. 34. 56.</i> | |
| <i>Ignem colendi ritus.</i> | 216 | <i>61. 63</i> | |
| <i>Ignem transeunt infantes.</i> | | <i>Ioseph scharginus.</i> | 28 |
| <i>ibid.</i> | | <i>Ioseph Berhen Alphelec.</i> | 61 |
| <i>Ignis cultores.</i> | 108 | <i>Iosephi horrea.</i> | 119 |
| <i>Ignis perennis.</i> | ibid. | <i>Iosephus videns.</i> | 94 |
| <i>Israël.</i> | 52 | <i>Iosua sepulchro solis imago</i> | |
| <i>Imperatores Romani.</i> | 11 | <i>imposita.</i> | 143 |
| <i>Imperatorū falsa series.</i> | 154 | <i>Iraak.</i> | 114 |
| <i>Imperium judæorum fictū.</i> | | <i>Isaac. 6.7.9.15.19.21. 53.</i> | |
| | 195. 196 | <i>62</i> | |
| <i>Indiarum initium.</i> | 85 | <i>Isaac magnus.</i> | 29 |
| <i>Insicienda lana locus.</i> | 41 | <i>Isaacus Græcus. 58. No-</i> | |
| <i>Insidiales fidi.</i> | 32 | <i>phæus.</i> | 77 |
| <i>Insula filii Omaris.</i> | 61.181 | <i>IskaalLein Alschemes.</i> | 120 |

I N D E X.

| | | | |
|---------------------------------|--------------|------------------------------------|-------------|
| <i>Germania initium.</i> | 128. | <i>Harda.</i> | 63 |
| <i>terminus.</i> | <i>ibid.</i> | <i>Hatzor.</i> | 59 |
| <i>Germersheim.</i> | 128 | <i>Havila Ginea.</i> | 113 |
| <i>Gerunda.</i> | 4 | <i>Havila.</i> | 218 |
| <i>Gibea Saulis.</i> | 50 | <i>Hebron.</i> | 48 |
| <i>Gibeon.</i> | 40 | <i>Hegira anni revocati ad</i> | |
| <i>Gigantis costa magna.</i> | 56 | <i>Christianam aram.</i> | 185 |
| <i>Gilboa.</i> | 40 | <i>Heliopolis.</i> | 224 |
| <i>Gilead.</i> | 57 | <i>Hemdan.</i> | 96 |
| <i>Gilianus Princeps.</i> | 33 | <i>Hierosolyma.</i> | 41 |
| <i>Gina.</i> | 96 | <i>Hierosolyma montosa.</i> | 44 |
| <i>Gingala.</i> | 111 | <i>Hierosolymorum porta.</i> | 42 |
| <i>Gisbor.</i> | 88 | <i>Hierosolymis aqua penu-</i> | |
| <i>Golius.</i> | 214 | <i>ria.</i> | 43 |
| <i>Goscher.</i> | 120.223.224 | <i>Hierusalem omnino deva-</i> | |
| <i>Gousch Halebi.</i> | 53 | <i>stata.</i> | 171.172.174 |
| <i>Gozan.</i> | 88.96.97 | <i>Hierusalē altera.</i> | 171.173 |
| <i>Gozan fluv.</i> | 100.205.206 | <i>Hierusalem restaurare co-</i> | |
| <i>Graci Ægyptiis subiecti.</i> | 122 | <i>nantes miraculum coër-</i> | |
| <i>Graci Italia incola.</i> | 160 | <i>cuit.</i> | 174 |
| <i>Guinea ubi.</i> | 114 | <i>Hiia.</i> | 20.31.60 |
| <i>Guts.</i> | 101 | <i>Hiia sepulchrum.</i> | 52 |
| H. | | <i>Hila.</i> | 76 |
| H <i>Abeb.</i> | 59 | <i>Hillelis sepulchrum.</i> | 53 |
| <i>Habitaculum elegan-</i> | | <i>Hizkija.</i> | 62 |
| <i>tia.</i> | 79 | <i>Hispania Ismaël erepta.</i> | 12 |
| <i>Habor.</i> | 60 | <i>Holocausta in Gerizim.</i> | 39 |
| <i>Halavan.</i> | 113 | <i>Homines carnem crudam</i> | |
| <i>Hallucinatio Benj.</i> | 232.233 | <i>edentes. 98. naso carentes.</i> | |
| <i>Hamath.</i> | 58 | <i>ibid.</i> | |
| <i>Hami posteritas.</i> | 113 | <i>Homines esca capti.</i> | 113 |
| <i>Hammaatom.</i> | 112 | <i>Hordeum quando matu-</i> | |
| <i>Hanas.</i> | 126 | <i>rum in Ægypto.</i> | 118 |
| <i>Haphton mont.</i> | 88.90.204 | <i>Horologium mirandū Da-</i> | |
| <i>Haran qua.</i> | 180 | <i>masci.</i> | 55 |
| | | <i>Hospi.</i> | |

I N D E X.

| | | |
|---|--|---------------------|
| <i>Error Benjaminis. Dissert.</i> | <i>Fanum Veneris.</i> | 173 |
| *** 6. b. & p. 155. 158. | <i>Figmentum judaorū.</i> | 174 |
| 160. 164. 165. 170. 172. | <i>Filia ducūtur in uxores.</i> | 34 |
| 173. 174. 176. 178. 180. | <i>Filios per ignem transmittunt.</i> | 108. divendūt. 130. |
| 187. 200. 201. 202. 203 | <i>Flumen lapideum sabbatho cessans.</i> | 207 |
| 210. 212. 213. 215. 217. | <i>Flumen precum tempore fluens.</i> | 209 |
| 218. 219. 222. 223. 229. | <i>Flumē solo sabb. fluens. ib.</i> | |
| <i>Error Benjaminis duplex.</i> | <i>Franci in oriente.</i> | 32 |
| 156. triplex. 159. 166 | <i>Fructus quando maturi in Ægypto.</i> | 118 |
| <i>Error crassus Benjam.</i> | <i>Furioforum cura.</i> | 70 |
| 163 | <i>Fustaat unde dicta.</i> | 220. |
| <i>Error Isaaci fil. Arama,</i> | G. | |
| <i>Dissert. ** 5. b.</i> | <i>G Ad portus.</i> | 37 |
| <i>Error Iudaorum putidus,</i> | <i>Gad Palaſtinorum. ib.</i> | |
| <i>Dissert. ** 7. a.</i> | <i>Gaditea.</i> | 84 |
| <i>Eſaias.</i> | <i>Galilæa inferior.</i> | 53 |
| 23 | <i>Gallipolis.</i> | 29. 165 |
| <i>Eſtera ſepulchrum.</i> | <i>Gapha.</i> | 51 |
| 96 | <i>Garan Davidis.</i> | 40 |
| <i>Eulæus ſluruius.</i> | <i>Gardegis.</i> | 21 |
| 203 | <i>Geba Benjamin.</i> | 50 |
| <i>Excōmunicatio judaic.</i> | <i>Gebal. 32. ſecunda.</i> | 33 |
| 94 | <i>Gehiagan.</i> | 75 |
| <i>Exilia Iſraëlitica.</i> | <i>Genealogia judaorū</i> | 70. 71 |
| 207 | <i>Genezareth.</i> | 52 |
| <i>Explorator capite multatur.</i> | <i>Gentium diſtincta taberna</i> | |
| 100 | <i>Antiochia.</i> | 124 |
| <i>Extracta quaſtionum.</i> | <i>Genua.</i> | 9 |
| 202 | <i>Gerizzim mons.</i> | 39. 40 |
| <i>Ezechias.</i> | <i>Gerizzim montis templū.</i> | |
| 15. 20 | 169. 170 | |
| <i>Ezechielis ſynagoga. 77. ejus ſepulchrum ſplendidum. 78. ejus locus ſanctus. 79. 80. ejus autographum extat.</i> | | |
| 79 | | |
| <i>Ezra. 56. ejus ſynagoga. 60</i> | | |
| 61. ſepulchrum. | | |
| 86 | | |
| F. | | |
| F <i>Abula Benjaminis.</i> | | |
| 217 | | |
| <i>Dissert. ** 7. a.</i> | | |
| <i>Fana Conſtantini tot, quot dies anni.</i> | | 24 |

I N D E X.

| | | | |
|-------------------------------------|----------|-----------------------------------|-------|
| <i>Danielis sepulchrum.</i> | 86 | <i>combusti post mortem re-</i> | |
| <i>Darma.</i> | 23 | <i>deunt. ibid. mortui non</i> | |
| <i>David.</i> | 10.14.80 | <i>recipiuntur ante debito-</i> | |
| <i>David Alroi dictus.</i> | 91 | <i>rum solutionem.</i> | 110 |
| <i>Davidis fam. principes.</i> | 81 | | E. |
| <i>Debris fons dimidio die fer-</i> | | E <i>Balin.</i> | 51 |
| <i>vens.</i> | 139 | <i>Ebrietate maximum</i> | |
| <i>Decursus collis.</i> | 52 | <i>damnum datum.</i> | 122 |
| <i>Devotissimus judaus.</i> | 6 | <i>Edessa.</i> | 180 |
| <i>Δεσποπρωτων sabbathū. 223</i> | | <i>Ehud.</i> | 62 |
| <i>Die nono Ab quid evene-</i> | | <i>Einsiphthā.</i> | 80 |
| <i>rit.</i> | 158 | <i>Elam.</i> | 86 |
| <i>Dies anni quot.</i> | 156 | <i>Eleazar.</i> | 7 |
| <i>Digiti quantitas Dissert.</i> | | <i>Eleazarus.</i> | 21 |
| <i>*** 2. b.</i> | | <i>Eli preses.</i> | 91 |
| <i>Dimetiendi modus in Benj.</i> | | <i>Eliab.</i> | 23 |
| <i>Dissert. *** 6. b.</i> | | <i>Eliakim.</i> | 28.63 |
| <i>Dioecesis Æchmalotarcha.</i> | | <i>Elias. 15. 16. 17. 20. 22.</i> | |
| 96 | | 29.30 | |
| <i>Discipuli sapientum.</i> | 139 | <i>Elia spelunca. 37. fanum,</i> | |
| <i>Divites Iudai.</i> | 5 | <i>ibid. altare. ibid.</i> | |
| <i>Docentium gradus.</i> | 188 | <i>Elim habet Arabes. 125. in</i> | |
| <i>Doctoris S. sepulchrum.</i> | 52 | <i>deserto. ibid.</i> | |
| <i>Dogziin.</i> | 34 | <i>Elisæus.</i> | 16 |
| <i>Dominium Israëlitarum</i> | | <i>Elyman in Arabia.</i> | 65 |
| <i>factū. 207. Dissert. ** 7. b</i> | | <i>Elyman.</i> | 85 |
| <i>Dominus nomen officii.</i> | 23 | <i>Emmanuel.</i> | 20 |
| <i>Domus Abrahami.</i> | 49 | <i>Emmanuel rex orientis. 25</i> | |
| <i>Dugbiim. 108. ignis culto-</i> | | <i>Emporium celebre. 20. 104</i> | |
| <i>res. ibid. filios per ignem</i> | | <i>Emporium.</i> | 22.24 |
| <i>transmittunt. ibid. com-</i> | | <i>Emporium Alexandria il-</i> | |
| <i>burendos se devorvent.</i> | | <i>lustrissimum.</i> | 123 |
| <i>ibid. 109. comburendos</i> | | <i>Ephraim Ægyptius.</i> | 35 |
| <i>convivio excipiunt. 109</i> | | <i>Eprāimi limites.</i> | 51 |
| <i>igni se immittunt. ibid.</i> | | <i>Equites Hierosolym. 41. 42</i> | |
| | | | Error |

I N D E X.

| | | | |
|---|-----|---|---------|
| <i>Chersonesus.</i> | 215 | <i>Corcyra.</i> | 161 |
| <i>Chiüs.</i> | 29 | <i>Corfu.</i> | 18.161 |
| <i>Cholan.</i> | 111 | <i>Corinthus.</i> | 20 |
| <i>Chozastan.</i> | 104 | <i>Coronamaxima.</i> | 26 |
| <i>Civitas in qua messis.</i> | 84 | <i>Corucus.</i> | 30.165 |
| <i>Civitas judaica 15 milliarium.</i> | 84 | <i>Creta capta.</i> | 123 |
| <i>Civitates Germania ubi Iudai.</i> | 130 | <i>Creutznach.</i> | 128 |
| <i>Coblentz.</i> | 128 | <i>Crissa.</i> | 19.162 |
| <i>Coccinea vestes.</i> | 18 | <i>Cub.</i> | 128 |
| <i>Cœmiteria extra urbem Hierosolym.</i> | 44 | <i>Cubitus, Dissert. *** 2.a.</i> | |
| <i>Cœmiterium duorum miliarium.</i> | 51 | <i>Cursus, Dissert. *** 4.a.</i> | |
| <i>Collegia judæorum.</i> | 8 | <i>Cusestaan.</i> | 86 |
| <i>Colonia.</i> | 128 | <i>Cuthæi. 37.169.170. legis observatores. 38.40. eorū matrimonia. 38. precaturi vestes mutāt. 40</i> | |
| <i>Columbæ cultus.</i> | 169 | <i>Cuthæi unde.</i> | 39.40 |
| <i>Columna inundationis index. 116.221.222. quantā.</i> | 116 | <i>Cuthæi tribus literis cærere dicuntur.</i> | 39 |
| <i>Columna Salomonis desudant.</i> | 13 | <i>Cuthæorum superstitio.</i> | 40 |
| <i>Computum Iudæorum redacendi modus.</i> | 134 | <i>Cylla.</i> | 165 |
| <i>Confessuum capita.</i> | 190 | <i>Cyprus.</i> | 30 |
| <i>Constantini imago.</i> | 14 | <i>Cyprus capta.</i> | 123 |
| <i>Constantinopolis. 23. ejus magnitudo.</i> | 24 | D. | |
| <i>Constantinopolitani magnifici. 27. divites. ibid. doctissimi. ibid. peregrino milite tantum utuntur. 27. imbelles. ibid.</i> | | <i>Damascus.</i> | 54.55 |
| <i>Corallium.</i> | 127 | <i>Damiata.</i> | 119.125 |
| | | <i>Dan.</i> | 54 |
| | | <i>Daniel.</i> | 10 |
| | | <i>Daniel in vitreo cœditorio. 88. ejus oculus è ponte suspensus. ib. ejus synagoga. ibid. reverentia. 89</i> | |
| | | <i>Danieli prosperitas accepta fertur.</i> | 87 |
| | | <i>Danielis oculus alternat. ibid.</i> | Da- |

I N D E X.

| | | |
|------------------------------------|-------------------------------------|-----|
| <i>Calipha vestem ad oscu-</i> | <i>Canistro.</i> | 163 |
| <i>landum demittit: 65</i> | <i>Capernaum. 37. 166. 167.</i> | |
| <i>Calipha semel in anno pro-</i> | <i>ejus situs. 167. 168</i> | |
| <i>dit. 67. 69. modestiam</i> | <i>Capernaum fons. ibid. in-</i> | |
| <i>indicat. 67. osculo ve-</i> | <i>teritus. 168</i> | |
| <i>stis salutem indicat. 68.</i> | <i>Caphor. 125. 226. & seq.</i> | |
| <i>benedicit. ibid. legem</i> | <i>Capita exulum ubi. 81</i> | |
| <i>exponit. ibid. camelum</i> | <i>Capita communitatis. 192</i> | |
| <i>mactat. ibid. pedes solus</i> | <i>Capiti exsulū acclamāt. 72</i> | |
| <i>incedit. 68</i> | <i>Capitis exulum honor. 72.</i> | |
| <i>Calipha in Perside non im-</i> | <i>194. 195</i> | |
| <i>perat. 93</i> | <i>Capua. 14</i> | |
| <i>Calipha Ægypti bis in an-</i> | <i>Capua conditio. 158</i> | |
| <i>no prodit. 115</i> | <i>Caput senatus. 179</i> | |
| <i>Calipha tituli. 65</i> | <i>Caput exulum. 63. 71. 193</i> | |
| <i>Calipha Mahumedi pares.</i> | <i>Caput exulum comites VII</i> | |
| <i>66</i> | <i>diebus excipit. 195. ejus</i> | |
| <i>Calipha fratres catenis</i> | <i>reditus. 197. ejus comi-</i> | |
| <i>vincti. ibid.</i> | <i>tatus. 196. 197. ejus la-</i> | |
| <i>Calipha fratrum divitia. 66</i> | <i>tum dominium. 73. ejus</i> | |
| <i>Calipha viam nemo cal-</i> | <i>auctoritas. 73. 74. dona</i> | |
| <i>cat. 69</i> | <i>accipit. 74. 193. ejus</i> | |
| <i>Calipha Ægypti. 186</i> | <i>pradia. 74. emit potesta-</i> | |
| <i>Calipha parsimonia. 187</i> | <i>tem. ib. à Calipha crea-</i> | |
| <i>Calipharum in Ecclesiasti-</i> | <i>tur. ib. ejus suggestus. 193</i> | |
| <i>cis munus. 183. Abasida</i> | <i>Carcemis. 62</i> | |
| <i>Ommiadis successerunt.</i> | <i>Castilia. 133</i> | |
| <i>183. eorum sedes. 183</i> | <i>Catania. 127</i> | |
| <i>Calipharum quorundam</i> | <i>Cebar. 84. 85</i> | |
| <i>series. 185</i> | <i>Chaboras fluvius. 180</i> | |
| <i>Calipharum Ægyptiorum</i> | <i>Chaldaicè in Sinai lo-</i> | |
| <i>series. 219</i> | <i>quuntur. 125</i> | |
| <i>Calne. 60</i> | <i>Chananeel. 30</i> | |
| <i>Canalis templi. 175</i> | <i>Charra. 180</i> | |
| <i>Canistolis. 23. 163</i> | <i>Chenerag. 108. 215</i> | |
| | <i>Cher-</i> | |

I N D E X.

| | | | |
|-----------------------------|--------|------------------------------|-------|
| Batira. | 4.139 | Beth gebarin. | 49 |
| Bagdad. 63. ejus situs. 75. | | Betlehem. | 47.48 |
| ejus ubertas. | ibid. | Bethnobi. | 50 |
| Bagdadi hortus. 198. re- | | Bibliotheca librorum tem- | |
| stauratio. | ibid. | pli primi. | 79 |
| Balits. | 59 | Bingh. | 128 |
| Baraki sepulchrum. | 54 | Biros. | 33 |
| Barcelona. | 3 | Bissina. | 22 |
| Barnedis. | 18 | Blachernas. | 26 |
| Basteneus. | 63 | Bolzir Salbis. | 120 |
| Bdellium pluvia fit repti- | | Botsets. | 50 |
| le. | 105 | Botfra. | 85 |
| Beaucaire. | 7 | Bouja posteri Caliphis ob- | |
| Beeroth. | 33 | sistunt. | 183 |
| Belinos. | 54 | Briviesca. | 132 |
| Bellum civicum. | 9 | Burgus Ægidii. | 7 |
| Benbenschatb. | 7 | Byssus. | 125 |
| Benefici Iudæi. 5.6.7.83 | | C. | |
| Beneventum. | 17.160 | C Æsar-Augusta. 3.135 | |
| Benhadadi palatium. | 55 | Casarea. | 37 |
| Benjamin cujas. I. quando | | Calabria. | 160 |
| vixerit. &c. ibid. & in | | Calabria incola Graci. | 18 |
| Dissert.** 4 & 5. | | Calamus odoratus. | 107 |
| Benjamin. II. quando per- | | Calas. | 165 |
| egrin. 134. ejus scopus, in | | Caleb. | 18.20 |
| Dissert.** 6. a 8. b | | Calebi synagoga. | 53 |
| Benjaminis ἀπιστονοία. 159. | | Calipha. 63. 64. antistes | |
| 185. 186. 219. ejus dolus. | | religionis. | ibid. |
| 201. 217. ejus fides. 218 | | Calipha legis Mosæica pe- | |
| incuria in distantis, | | ritus. | ibid. |
| Dissert.** 2. b & 6. a | | Calipha manu victū qua- | |
| Benibera. | 51 | rit. | 65 |
| Besiers. | 140 | Calipha invisibilis. ibid. | |
| Bestiarum instar viven- | | Calipha splendide incedit. | |
| tes. | 112 | 67 | |

Cali.

I N D E X.

| | | | |
|----------------------------------|--------|----------------------------------|--------------|
| <i>Alkosonath.</i> | 80 | <i>Arena instar aqua homi-</i> | |
| <i>Alma.</i> | 53 | <i>nes. obruit.</i> | 113 |
| <i>Alfodo.</i> | 131 | <i>Aria.</i> | 90.204 |
| <i>Altare Ammonitarum.</i> | 33 | <i>Aristocratia.</i> | 9.10 |
| <i>Altare Gerizzim.</i> | 39 | <i>Aristotelem quarebant un-</i> | |
| <i>Altare idoli Micha.</i> | 54 | <i>dique.</i> | 121 |
| <i>Altare Ieroboami.</i> | ibid. | <i>Aristotelis schola.</i> | 121 |
| <i>Altsara.</i> | 113 | <i>Armenia.</i> | 30 |
| <i>Alumni Iudæorum.</i> | 6 | <i>Armilon.</i> | 22.162 |
| <i>Amana fluvius.</i> | 55 | <i>Arnon.</i> | 54 |
| <i>Ambracia.</i> | 161 | <i>Arsenii mira dexteritas.</i> | |
| <i>Ammonite.</i> | 33 | <i>ep. ded. **.</i> | I. A. |
| <i>Andernach.</i> | 128 | <i>Aruch cū commentariis.</i> | II |
| <i>Andreas Rivetus. ep. ded.</i> | | <i>Aschath.</i> | 53 |
| <i>* 3. A.</i> | | <i>Aschcenaz.</i> | 128 |
| <i>Anima in bestias migrans.</i> | | <i>Aschdod.</i> | 51 |
| 34 | | <i>Aschkalon nova.</i> | ibid. |
| <i>Annas princeps.</i> | 82 | <i>Aschkalon antiqua.</i> | 51 |
| <i>Antiochia.</i> | 31 | <i>Ascher.</i> | 6 |
| <i>Antiochus Rex.</i> | ibid. | <i>Asmodæus.</i> | 57.179 |
| <i>Antipater rex.</i> | 19 | <i>Asmon.</i> | 119 |
| <i>Apenninus.</i> | 128 | <i>Asshour.</i> | 61.62 |
| <i>Aqueductus Antiochi.</i> | 31 | <i>Assueri regia.</i> | 86 |
| <i>Aquila homines è mari</i> | | <i>Asuvaan.</i> | 112 |
| <i>extrahunt.</i> | 111 | <i>Aula Achabi.</i> | 38 |
| <i>Arabia felix ad Babylonia</i> | | <i>Aula Salomonis.</i> | 43 |
| <i>septentrionē fingitur.</i> | 201 | <i>Aureus imperatorius.</i> | 90 |
| <i>Arabum in Arabes ex-</i> | | | |
| <i>ursionsiones.</i> | 82 | B. | |
| <i>Aram Tsoba. 59. ejus re-</i> | | B <i>Aadan.</i> | 112 |
| <i>gia.</i> | ibid. | <i>Baalath.</i> | 57 |
| <i>Arca Noe locus.</i> | 61.181 | <i>Baalbec.</i> | ibid. |
| <i>Arca in synagogam con-</i> | | <i>Baalgad.</i> | 32 |
| <i>versa.</i> | 61 | <i>Babel.</i> | 76 |
| <i>Arelatum.</i> | 8 | <i>Babylon horrendo modo</i> | |
| | | <i>vastata.</i> | 199 |
| | | | <i>Bati-</i> |

I N D E X RERVM & VERBORVM.

A.

| | |
|----------------------------|-------------------------------------|
| A Aron. 6.20.52 | <i>Ægyptiorū cladis causa.</i> 13 |
| Aaron Cuspus. 28 | <i>Ægyptus gelu, nive, plu-</i> |
| Aba. 80 | <i>via caret.</i> 116 |
| Abba. 30 | <i>Ægyptus dives.</i> 119 |
| Abba mari. 8 | <i>Ælia.</i> 171 |
| Abcamaz Gigas. 56 | <i>Æsculum.</i> 17 |
| Abia. 29 | <i>Æthiopia. 112. 114. du-</i> |
| Abraham videns. 53 | <i>plex.</i> 211 |
| Abraham preses. 4 | <i>Αραβου Arabum.</i> 68.188 |
| Abraham.7.9.16.17.19.35 | <i>Ager duplicationis.</i> 48 |
| Abrahami locus in Meso- | <i>Agger unius milliariis in-</i> |
| potamia sacer. 60 | <i>tra mare.</i> 121 |
| Abfalonis locus. 43 | <i>Ahimaats.</i> 17 |
| Abtalion. 28 | <i>Abmed omnes callet lin-</i> |
| Abu Algaleb. 59 | <i>guas.</i> 64 |
| Abualgidus. 16 | <i>Ajalon vallis.</i> 40 |
| Abunatser. 120 | <i>Akadi.</i> 36 |
| Abydus. 23 | <i>Albinus.</i> 155 |
| Academia Iudaorum. 6. | <i>Albubiigh.</i> 120 |
| 7. 11. | <i>Alcabor.</i> 60 |
| Acclamatio solennis. 68 | <i>Alcaschischi.</i> 89 |
| Acco. 36 | <i>Alexandria. 120. splendi-</i> |
| Achilon. 19.161 | <i>da. ibid. ejus conditor. ib.</i> |
| Adan. 112 | <i>supra fornices. 121. ejus</i> |
| Æchmalotarcha regē pla- | <i>longitudo. ibid.</i> |
| cat. 95. ejus diocæsis. 96 | <i>Alexander Papa.</i> 10 |
| Ægriphou. 20.162 | <i>Alger.</i> 145 |
| Ægyptii rebelles in Cali- | <i>Alhabasch.</i> 114 |
| pham. 115 | <i>Alhanan.</i> 62 |
| Ægypti limites. 51. ejus | <i>Aliobar.</i> 63 |
| initium. 114. ejus confi- | <i>Ali filius Abitalebis.</i> 115 |
| nium. 126 | <i>Alko-</i> |

regionem veluti ultimas captivitatis in Occidente oras Israëlitæ commigrarunt. Attamen $\eta\gamma\omega\zeta$ est ultimum terræ sanctæ ad Septentrionem oppidum 1 Reg. 17. 9. Adeo ut verborum Obadiæ hic sit sensus, Abrahami prolem inde à Septentrione terræ Canaan ad eisdem Austrum usque, regionem suam recuperaturam. Sive ita hyperbolicè reditus è Babylonia describatur, quo in terram Canaan reversi sunt; sive allegoricè Ecclesiæ restauratio adumbretur. Cujusmodi figuratas formulas & Judæi sæpe agnoscunt, & orientales passim usurparunt, ac etiamnum usurpant. Denique quemadmodum Judæus suæ genti ex illo 30. c. Deut. post *conversionem* exoptat restorationem qua in *libertatem* vindicentur; sic illius gentis *velamen* ex Es. 25. 7. (ubi de Messiæ adventu) expendens, quo conversio impeditur; conversionis, velaminis auferendi, & libertatis assequendæ viam his Pauli 2 Cor. 3. 16. 17. verbis ostendo: $\eta\ \nu\acute{\iota}\kappa\alpha\ \delta\iota\ \alpha\ \nu\ \epsilon\pi\iota\sigma\tau\acute{\rho}\epsilon\psi\eta\ \omega\varsigma\ \theta\acute{\varsigma}\ \kappa\acute{\upsilon}\rho\iota\omicron\nu\mu, \omega\epsilon\lambda\alpha\iota\rho\acute{\epsilon}\iota\tau\alpha\iota\ \tau\omicron\ \kappa\acute{\alpha}\lambda\upsilon\mu\mu\alpha. \omicron\ \delta\acute{\epsilon}\ \kappa\acute{\upsilon}\rho\iota\omicron\ \tau\omicron\ \pi\upsilon\epsilon\upsilon\mu\acute{\alpha}\ \acute{\epsilon}\sigma\iota\nu\ \acute{\epsilon}\ \delta\acute{\epsilon}\ \tau\omicron\ \omega\pi\epsilon\upsilon\mu\alpha\ \kappa\upsilon\ \rho\iota\omicron\varsigma, \acute{\epsilon}\kappa\epsilon\acute{\iota}\ \acute{\epsilon}\lambda\alpha\theta\epsilon\rho\iota\alpha.$ quæ cum Es. 25. 7. quò Paulus respexit, conferantur.

$\epsilon\gamma\chi\alpha\ \kappa\acute{\upsilon}\rho\iota\epsilon\ \iota\gamma\sigma\acute{\epsilon}.$

F I N I S.

INDEX

confinium sita. Sed quia est & alius compendiarie scripturae modus, quo primae dictionum variarum literae junguntur, פי papam, & patriarcham quemlibet quem etiam פיפיר vocant, fortassis denotat, ut nun sequens Nicolai prima litera esse possit: quod hoc pacto urbs S. Nicolai eodem tractu non ita procul à Pinego condita significetur. Nam ut פי, id est, Pim, pro Pinsko sumatur, licet scriptura compendiosa id admittat, quae junguntur non permittunt. Etenim quum inquit *Regio montosa* &c. hæc ad magnam Russiam quam sub Sclavonia comprehendit spectantia, ut subjuncta verba docent, ea continent quae Russiæ strictissime sumptæ, cujus terminus à Pinsko remotus non est, non quadrant. Cæterum satis inconcinnè & obscurè verba ista *Regio montosa*, & quae sequuntur, prioribus combinantur: cum de Sclavonia tota loqui videatur; nec hic tamen ultra Russiam expatietur, uti istis verbis se Russiæ regnum describere subjungit.

Pag. 130. l. ult. [Tfarphath] Judæi ex prava interpretatione commatis penultimi Hobadiæ, צרפת Franciam esse existimant: quandoquidem enim illic de liberatione à captivitate agitur, & Chaldæus illic per ספרד Hispaniam intelligit, altera voce Franciam designari posse autumant; siquidem ad utramque

P 5 regio-

renda & Eliam statui Messiaë præcursorem. Hujus ergò vocem, turturis voce à Salomone innui existimat: adeoque cum nostro facit, qui ista adventus Messiaë indicia agnoscit.

Pag. 130. l. 14. *Schlavonie*] Quum Slavonia latè accipitur, quam longe lateque extendatur notum est: sed noster cum aliis quibusdam strictiori notione eam accepit, ut Bohemiam, Dalmatiam, Poloniam, & Russiam tantum complectatur. Ideo eam à Praga (quam pro toto regno forte accipit, quemadmodum in Oriente metropoles aliquando ipsis regionibus sunt cognomines) à Praga inquam inchoat. Porro quum istius regionis homines omnibus promiscuè prolem suam divendere narrat, per illos homines Bohemos intelligit, non vero communiter Sclavos: quandoquidem cum iis Russos, qui & ipsi Sclavi sunt, ut alterius regionis homines conjungit, eodemq; crimine involvit. Quod crimen tamen imperite Bohemis ascribit. Ubi postea ait, *regnum illud latè patet*, Slavoniam designat, non verò solam Russiam; utpote quæ à porta Pragæ initium non sumat. Terminum statuit urbem פּינֵגוֹ : in qua voce cum litera *nun* finalis non sit, quædam literæ ex usu scribendi vulgato & compendioso subintelligendæ videntur. itaque Pinego forte indigitatur, urbs apud album mare ad Russiæ

con.

excitans: quod præcedentia tempora hiberna præterierint; jucundum verò ac florens tempus jam appareat, exorto justitiæ sole. Unde noster duo deprompsit, minuritionem & vocem turturis: quæ æstatis jam ineuntis indicia in hunc modum convenienter enarrat Sal. Jarchi, *Tempus minuritionis advenit*, שהעופות נותנין זמר וקול ערב להולכי דרכים וקול התור כמשמעו תורים ובני יונה דרך העופות להיות משוררים *quo aves edunt minuritionem & cantum suavem iis qui iter faciunt. Vox turturis: hic prout verba sonant, designantur turtures & columbae. aves cantare & cantillare solent mense Nisan, sive veris initio. Hoc ergo pacto æstas indicatur; vel potius æstatis initium sive veris tempora. Verumenimverò cum alii nonnulli Judæi, tum Benjamin noster, priorem Messiaæ adventum adumbrari existimat. Hinc Rabbi Alschech ad hunc versum, גם קול התור הוא אליהו, תיור מן התרים את הארץ בימי יהושע הלא נשמע בארצנו על יד הנביא כדבר שנאמר הנה אנכי שולח לכם את אליה הנביא, Etiam vox turturis (qui est Elias, unus exploratorum qui explorarunt terram temporibus Iosue) annon audita est in regione nostra Propheta operâ? secundum illud dictum Mal. 3. 5. Ecce ego missurus sum vobis Eliam Prophetam. Quamvis alienum sit, Eliam inter exploratores numerari; id verum ac Christianum, verba Mal. ad Messiaæ adventum cum Euangelistis referenda*

Hoseæ רדוף *prosequi* idem esse affirmans quod Gallorum פורקציר *purchasser*, ק pro duriori sibilo adhibet, cui magna aspiratio insit. Quum ergo constet Germanos suum s cum majori spiritu efferre, quam apud alias multas nationes fieri solet, s per ק exprimere nostro Benj. licuit. Hoc autem oppidum Germaniæ terminum statuit: quia illam Germaniæ partem respicit quæ Rheno alluitur. Hæc Colonia secundum Rhenum ascendens prope Helvetiam definit: ubi Susenburk, sive Susenburg, reperitur.

Pag. 128 l. 8. à fin. *Munster superior*] Dictio *superior* additur, quò in isto Germaniæ tractu, quem noster tota hac pagina describit, Munster infra Coloniam sita, ab hac distinguatur quæ longe superior est. Porrò quas civitates ad Mosellam Benjamin collocat, cave in ejus ripa quæras: nam על latissimè accipit; adeo ut loca nonnihil remotiora etiam completatur. Itaque על נחר משלה sive *non procul à Mosella* esse dicuntur civitates, quæ remotissimæ non sunt.

Pag. 129 l. 22. *Minuritionis*] Obscuriora hæc sunt: quorum hic sensus, nondum adesse Messiam; sed signa illa & indicia præsentis Messiæ expectanda, quæ in Cantico Cant. sponsæ sive Ecclesiæ proponuntur. Ibi enim ipse loquens introducit & cætum suum
exci-

datur גרול urbem longè maximam describi. Itaque cum in parvi montis (ut vocat Benjamin) radicibus tanta urbs, quæ totam fere tribum capere posset, in deserto fuisse non videatur, כרך גרול pro magna arce accipere malui.

Pag. 126. l. 1. *Vno die distat Tunes*] Sano modo hæc accipi non possunt, si urbs quæ Tunes vulgò audit designetur: nam Sinai, vel Damiatam (quæ loca commemoravit) multo longius abest, quam ut uno die istud iter quis emetiri queat. nec ad mare rubrum referri possunt, ut ab istius sinus initio, quo versus Damiatam fluit, ad Tunetum unius diei iter constituatur. Itaque de insula quadam Ægypto vicina authoris verba intelligenda videntur. Verumtamè cum duo nomina proponat, & Tunes per aliud antiquum explicet, ipsum in hac sententia fuisse apparet, ut quam vulgò Tunes vocant, insulam itinere diei Damiatam dissitam arbitraretur. qua in re admodum fallitur. Id nihilominus testatur non nemo, ante Ægyptum esse insulam quandam, cui Thenes nomen. Quomodo scribendum fuisset תנים non טונים, ubi est literarum diversitas.

P. 128. l. 16. *Susenburck*] In textu Rabbinico est קשנבורק: ubi ק respondere literæ s, non est quod miretur quis: siquidem & alibi hoc fit, ut s nostrum, vel sch per ק ab Ebræis exprimitur. Ita Salomon Jarchi ad com. 7. cap. 2

Deus Pelisthæos vastaturus, in reliquias Caph-
toris idem factururus narretur. non quasi utri-
que sint iidem; sed ut subintellecta particula
וּ sive ׀, Pelisthæos & reliquias istas Caph-
toris, quæ ipsos secutæ fuerant, Deus vasta-
turus dicatur. His observatis, omnia ista Scri-
pturæ loca optimè conveniunt: nec ulla pu-
gnæ species amplius meo iudicio apparet.

Pag. 125. l. 11. à fin. *Arx magna*] In origi-
nali est כרך גדול: vocabulum כרך arcem quan-
doque, aliquando urbem denotat. Verum
urbs magna, propriè dicitur כרך: quemadmo-
dum Maimonides cod. de Idololatria c. 4.
sect. 2. innuit cum in hunc modum scribit,
כל פחות ממאה כפר קטן ורובו של שבט כרך גדול
*Omnis (civitas) pauciores quam centum continens,
est pagus parvus; continens verò maximam tribus
partem, est urbs maxima.* Ibi de civitate agitur,
cujus mentio Deut. 13. 12. & seq. quænam sit
hujusmodi civitas: definitque Maimonides,
Deum illic nec parvum pagum designare;
nec tantam urbem quæ plerosque unius tri-
bus homines complectatur (ut quæ alia pœ-
na teneantur:) idque vocem עיר indicare ar-
bitratur, quippe quæ civitatem significans,
minorem pagum & maximam urbem exclu-
dat. Hebræi sub כפר pago oppidula etiam
complectuntur: cui cum apponatur כרך, hac
voce majus oppidum notari constat; & si ad-
datur

datur

קפודקאי *Cappadoces*, eum probare nequeo. Porro è Caphtorim orti Pelisthæi videntur Jer. 47. 4. quod Pelisthæi dicantur reliquiæ Caphtoris; atque etiam Deut. 2. 23. Caphtoræi Palestinam occupasse narrentur, quasi posteriores Pelisthæi è Caphtoræis prognati sint. Cum tamen aliunde orti dicantur Gen. 10. 14. puta è Casluchæis. Responsio in promptu: ut priores Palestinæ strictè sumptæ incolas è Casluchæis; posteriores è Caphtoræis ortos dicamus. Sed duo obstant: nam antiquiores incolæ erant Awæi, non Casluchæi; deinde Am. 9. 7. sermonis scopus indicat, ita Pelisthæos è Caphtore eductos, ut Israëlitas ex Ægypto liberaverat Deus. quæ Caphtoræos non majores; sed hostes posteriorum Pelisthæorum ostendunt, ut observavit Abrabaniel. Itaque hæc mea est sententia, quam è Gen. 10. 14. & Am. 9. 7. elicio: Pelisthæos è Casluchæis oriundos à Caphtoræis in captivitatem abactos, posteaque à Deo liberatos Avvæorum regionem, sive Palestinam occupasse: & quemadmodum turba Israëlitas ex Ægypto proficiscentes comitabatur; sic multos Caphtoræos cum illis Pelisthæis unà profectos fuisse, quibus ob virtutem bellicam (qua etiam antea Pelisthæos subjugaverant) Deut. 2. 23. hoc tribuatur, ab ipsis Avvæos fuisse expulsos; ideoque Jer. 47. 4.

observet; licet rem incertam esse subjiciat.

يقال انها من بنيان الاسكندر عند
بنيان الاسكندرية والله اعلم بصحة ذلك

Dicitur, illam esse è structura Alexandri apud structuram Alexandria: sed Deus novit certitudinem ejus.

Pag. 123. lin. 17. *A centum usque milliaribus]*

Licet pagina præcedenti, naves quinquaginta dierum itinere remotas in speculo quodam turris Alexandrinæ observari potuisse, fabuletur; cum hoc tamen loco turrim speculatoriam inde à centum usque milliaribus conspici docet, Nubiensi consentit. qui altissimam etiam fuisse testatur: ارتفاع هذه المنارة

ثلاث مائة ذراع بالرشاشي وهو ثلاثة اشبار

Altitudo istius candelabri (turris speculatoriæ) est trecentorum cubitorum Resasica mensura, id est, ut cubitus sit trium spithamarum. اشبار enim pro-

prie sunt *spithamae*. Idem annotat, Alexandriæ magnificentissimæ aulæ reliquias & columnas splendidas superesse: quam nonnulli à Salomone structam ferant. Unde qua is in Ægypto apud regem autoritate & gratia fuerit, conjicere licet.

P. 125. l. 5. *Caphtor]* Similiter ex Gen. 10.

14. 1 Chron. 1. 12. in Ægypto Caphtor quaerendam esse constat. Quapropter cum loco Caphtorim Hierosolymitanus Gen. 10. ponit

קפודקאי

enim superiori urbis structuræ lumen non adimere, certum & indubium erat.

Lin. 10. à fin. *Ibi turris*] Hoc sibi vult, turrim ad aggeris extremitatem uno milliari ab urbe extructam fuisse. quod verum, si viam maritimam spectes; sed itinere terrestri distabat milliaria tria: uti nos docet Nubiensis parte tertia climatis tertii: cujus hæc sunt verba,

بين المنارة وبين المدينة ميل في البحر
 وفي البر ثلاثة اميال
Intercandelabrum (illam turrim ac speculam denotat) & urbem est milliari itinere per mare facto; at per terram, tria milliaria.

Ibid. *Ab eo extructa fuit*] Series contextus postulat, ut Benjamin hanc turrim Alexandro ascribere dicatur. Secus alii: nam Plinius hist. nat. lib. 36. c. 12. hoc opus Ptolemæo vindicat, qui Gnidio architecto usus fuerit. *Turris à rege facta in insula Pharo, portum obtinente Alexandria, quam constitisse octingentis talentis tradunt: magno animo, ne quid omittamus, Ptolemæi regis, quod in ea permiserit Sostrati Gnidii architecti structuræ ipsius nomen inscribi. Usus ejus, nocturno navium cursu ignes ostendere, ad prænuntianda vada, portusque introitum.* Quibus verbis cum Benjaminis contextus illustratur; tum author turris exprimitur. Nubiensis tamen cum Beniamine facit: utpote qui Alexandrum authorẽ

P obser.

hanc civitatem vocavit Ein Alschemes, quasi dicas fontem solis; ideo magis confirmor, ut locum in orientiori Ægypti regione situm designari credam : nimirum Goschen esse diocœsin circa Heliopolin, sive, civitatem solis; adeoque Rameses ipsam esse Heliopolin. ita ut duæ fuerint civitates primariæ in hoc tractu Goschen, civitas cognominis (si Benjaminii credamus) & Heliopolis. Ut enim Rameses hic Ein Alschemes dicitur, sic Nubiensis Heliopolin, ut circumstantiæ docent, eodem nomine nuncupavit, *عين شمس* Ein Schemes, part. 3. climatis tertii.

Pag. 121. l. 4. *Opere pulcherrimo*] Ad ornatum & commoditatem urbis etiam facit, quod, teste Nubiensi, *النيل الغربي منها يدخل تحت اقبية دورها كلها*

Nilus ab occidente ex ea defluit sub fornicibus domorum ejus omnium. id indicare voluit noster verbis sequentibus, *Ab inferiori parte convexa est innitens fornicibus.* Dum verò Nilus sub ædibus omnibus versus occidentem defluit, plana à latere spatia relinquere videtur, quæ iisdem fornicibus tecta noster plateas vocaverit quas nemo videt. Ideoque forte dixerit Nubiensis, urbem licet hujusmodi fornices habeat, esse tamen luminosam : quia alti fornices lumen in istas plateas admittunt. Fornices enim

enim

Pag. 118. l. 19. *Februario metunt hordeum*] Hinc liquet, quod Lucas de discipulis spicas sabbatho *δὲ περὶ πρῶτω* affriantibus narrat, non impedire, quo minus sabbathum istud quatuor circiter septimanis pascha præcedat. quemadmodum notis ad Danielelem istum Lucae paragraphum exposui pag. 194. & sequ. Etenim non tantam habet situs Ægypti & terræ Canaan, respectu Æquinoctialis circuli, distantiam, ut cum illic mense Februario metatur hordeum; hic in terra Chanaan quarto vel quinto ante pascha sabbatho tam immaturæ sint spicæ, ut velli, confricari atque edi nequeant. Hæc si quis cum dictis notis conferat, sententiam meam ibi pluribus præpositam ab eo non improbatum iri confido.

Pag. 120. l. 10. *Regionem Goschenis*] Postea urbis meminit: itaque Goschen nostro est regio, & civitas. Ita enim sæpe civitas primaria est regioni cognominis. quemadmodum supra metropolis Mitsraim dicebatur, cum idem sit & totius Ægypti nomen. Regionis G. frequens mentio in sacris; sed ubi fuerit, distinctè non docetur: nisi quod Historia Exodi, in Ægypti confinio versus terram Canaan, eam collocat; at Benjamin inter Kairum & Alexandriam eandem recenset. Ita sæpe aberrat.

Lin. 16. *Rameses*] Quia linea præcedenti hanc

hæc est mensura, qua hodie mensuratur, Nili incrementum. Hæc insula duobus Nili brachiis ante Fustaat sive Mitfraim cingitur: in cujus parte superiore est cisterna ingens, ad quam gradibus marmoreis descenditur. Hic (ut Nubiensis tradit parte 3. climatis 3.) في وسط

العسقية عمود رخام قائم وفيه رسوم اعداد اندرع واصابع بينهما وعلي راس العمود بنيان متقن من الحجر وهو ملون مرسم بالذهب واللازورد وانواع الاصباغ المحكمة

In medio cisternæ columna marmorea exstat: in qua sunt signa numerorum cubitorum, & digitorum qui iis comprehenduntur. Supra capitellum columnæ structura saxo constans, eaque colorata, distincta auro, & lapide cyaneo, colorumque generibus, iisque fabricatis. (ita hæc vertenda censeo.) Plura istic de hac columna, quæ omnia ascribere necesse non est. summa, Nili aquam ad cisternam (in qua est columna) per canalem duci; eoque nonnisi Nilo excrecente ingredi: crescere Nilum cubitis octodecim: si viginti cubitis, damnum inferre: cum minus duodecim (quæ usitata & ordinaria incrementi quantitas) excrecit, defectû annonæ caritatem inferre. Unde Benjaminem, ut alia multa, sic mensuram duodecim cubitorum, malè percepisse videmus.

Pag.

ad eam figebatur, antequam Alexandriam peteret. Quum enim ipsis post expugnatam Alexandriam reversis, quæreretur ubi castra haberent, respondebatur *الغسطاط Fustaat*, quasi dicas ad *tentorium* quod apud Mitsraim fixum erat, ibique ob columbam supra ipsum nidulatum remanserat. unde postea Mitsraim Fustaat, id est, Tentorium dicta fuit. Paulo aliter hæc narrat Nubiensis parte 3. climatis tertii. Quod verò eam muro cinctam neget Benjamin, cum Elmacini verbis non convenit: siquidem Elmac. loco jam producto, *أحيط عمرو بن العاص مدينة مصر*
Muro cinxit Omrus filius Alasi civitatem Misram.
 Longe ante Benjaminis peregrinationem.

Pag. 116. l. 23. *Columnnam marmoream*] Hanc ab Alama Ægypti quæstore structam, cum prior collapsa esset, refert Elmacinus l. i. c. 14. Nam ubi prior duabus leucis à Fustaat in pago Hulvvaan erecta interiisset sive eversa ac fracta fuisset, super ea re ab Alama consultus Calipha Suleiman *امرہ ان يبني مقياسا في الجزيرة التي بين بحر الغسطاط وبحر الجيزة وهو المقياس الذي يقاس فيه اليوم*
præcepit ei ut mensuram (columnnam scilicet) extrueret in insula, quæ mare (ita flumen etiam vocant Arabes) Fustaat & mare Giza interjacet:
hæc

אללה בנו תחתיו וימת חאפיט וימלוך אל טאפר והרגוהו
 וימלוך תחתיו בנו אל פאיו , *Obiit Al-Amir, & ejus*
loco regnavit Al-Haphit Ledin Alla filius ejus; &
defuncto Haphit, regnavit Al-Tapher; quo interse-
cto, ejus loco regnavit filius ipsius Al-Phaiz. Tan-
 dem sub paginæ finem additur: בשנת תקנו מת
 אל פאיו, *anno 556. vita defunctus est Alphaiz.* Annus
 556. Hegiræ est æræ Christianæ 1177. Itaque
 inter Ægypti Caliphas ab anno Christi 1116.
 ad annum 1177. recensitos, nullus occurrit
 Ali f. Abitalebis. Quod alias monui, & jam
 repeto, in Historicis & Geographicis parum
 aliquando nostro Benjamin aliisque simili-
 bus tribuendum esse.

Pag. 116. l. 5. *Mitfrain*] Civitas toti regno
 cognominis est, eaque duplex, ut p. 119. ob-
 servatur: una eaque vetus devastata est; alte-
 ra eaque nova hoc paragrapho designatur. ea-
 demque etiam Kairo dicitur, vel Kara, ut le-
 gitur f. 147. *Jouchasin*: קאהרה היא מצרים, *Cara*
est Mitfrain. Aliàs etiam dicta fuit *Fustaat*:
 cujus etymologiam habes in Historia Sara-
 cenica Elmacini l. 1. c. 3. *مصر في القسطاط*
وانما سميت بذلك لان قسطاط عمرو
كان مضروبا عليها قبل توجهه الى
الاسكندرية *Mitfra* (sive *Mitfrain*) *est Fustaat*:
nominatur autem eo nomine, quia Omri tentorium

ad

de precibus c. 12. & 13. unde petant lectores: hic enim ista pertractandi locus non est.

Pag. 115. lin. 20. *Tfoanis palatio*] Misraim pro urbe accipi à Beniamine circumstantiæ atque verba hic sequentia docent. quî ergo Tfoan ipsius Misraim dicitur? nam si Chaldæo & Græcis 70. credimus, Tfoan est Tanis; ille enim טניס, hi vero Τάνις reddunt. Forte ita loquutus, quod Misraim non procul ipsi à Tfoane sita videretur.

Lin. 24. *Ali f. Abitaleb*] Hæc & similia, auctorem nostrum omnibus istis locis, quæ describit, non fuisse ostendere mihi videntur: sed multa male auditu accepta, pejus nonnūquam scripto tradidisse. Nullus fidelium Imperator (ut Muhammedani suum ducem nuncupant) tempore Benjaminis in Ægypto erat, qui Ali filius Abitaleb diceretur. Etenim peregrinationem suam anno 1172. instituit, aut 1171. si biennium in itinere fuisse dicamus: quo tempore alium in Ægypto regnasse, è Jouchasin, ab ipsius populari conscripto, colligere in promptu est. Ibi fol. 149. pag. 1. בשנת תצה' מת מסתעלי מלך מצרים וימלוך תחתיו בנו הה, הנקרא אל אמור באחכאם אללה, anno 495. obiit *Muste-Ali rex Aegypti, & ejus loco regnavit filius ipsius, qui dicebatur Al-Amir Bahcam Alla.* Annus Hegiræ 495. incidit in ann. Christi 1116. Eadem paginâ: מת אל אמור וימלוך אל האפיט לרון אללה

fatis liquere autumo : ideoque id in medio relinquo. Verum noster quasi perturbare lectorem studuerit, regionem quoque Telassar cum Edene vicinam facit Lybiæ : atqui Lybia in Africa reperitur, quò noster (ut hoc addam) tam paucis etiam diebus ex remotis Indiarum insulis remeare non potuit. Cum multa ipsum ex auditu malè percepisse ; tum nonnulla data opera & de industria ad gentem suam extollendam fingere observamus.

P. 112. l. 9. à fin. *Asyvan*] Ptolemæi Metacompo posterioribus temporibus dicta fuit Asvan : quocirca circumjacentem regionem designasse videtur Benjamin. Atqui ab Indiis huc tendenti nulla occurrit Lybia : cujus tamè in hoc itinere jam meminit, ac si à peracto itinere non procul abesset. Deinde Pischon flumen apud Asvan collocans, id ipsum ex Æthiopia derivat ; quo duplici indicio indigitat superiorem Nili partem : cum tamen Pischon Havilam alluat Gen. 2. 11. & licet noster Havilam in Aphrica collocet, ne sic quidem cum Gen. 2. 11. ejus verba conveniunt : quandoquidem Havilam & Gineam eandem facit.

Pag. 114. l. penult. *Sectiones legere*] Babyloniorum morem sequuntur plerique omnes : quemadmodum hunc ritum, aliosq; huc spectantes prolixè Maimonides descripsit codice de

de

Pag. III. l. 12. *Pelleſque intrus*] Tam putida fabula ingenium & indolem Benjaminis nobis ſatis ſuperque exprimit. adeo ut vel hinc conſtare queat, quam fidem in aliis multis mereatur. Non eſt ergo, quod R. Iſaac filius Aramæ autoritatem ipſius ad eludendum comma 10. cap. 49. Gen. producat, ubi argumento inde deprompto ſatisfacere allaborat.

Pag. 112. l. 9. *Plurimi Iſraëlitæ*] Quin paſſim in Oriente multi ſint Iſraëlitæ inficias non eo: ſed nulli gentium jugo ſubditos nego; nec id unquam Judæi probabunt, ea ſe conditione urbes (ut noſter ait) ac regiones incolere, ut aliis non pareant. Porrò obſerva noſtri ſtratagema: ne quis in iſta loca inquirens, falſi eum convincere queat, per ambages & ignota nomina nos deducit (quod etiam alicubi antea in ſimili cauſa fecit) quaſi hoc ad rem aſtruendam ſufficiat, ſi locus licet ignotus apponatur. Ita etiam Eden & Telassar ubi ſita fuerint, incertum & dubium eſt: procul in Oriente fuiſſe, eſt in confeſſo; ſed deſtinatam climatis partem aſſignare difficile. Hieroſolymitanus tamen Gen. 10. locum deſignat his verbis *הלֹאֶסֶר בֵּין גִּנְזָה וּבֵין הָרִית*, *Telaſar inter Niniven & Harjath*: ubi poſtrema vox cum Aria convenit. fidem autem illum in Geographicis ſemper non mereri,
O 5 ſatis

seo. Legimus quidem, apud Brachmannos, cum uxores maritorum morti inhiarent, tandem publico ritu receptum, ut se præcipitent in mariti rogam: ne qua mulier mariti mortem acceleraret, utpote cui simile exitium immineret. De altero autem quod noster pluribus describit, hætenus mihi nihil innotuit: itaque auctori alias non satis fide digno fidem habere nequeo.

Pag. 108. l. 7. à fin. *Per quem filios*] Hujusmodi ritus hic narratur, quo prolem suam per ignis flammam traducebant: qualis idololatria interdicitur Deut. 18. 10. Duplex cultus erat: uno filios igni comburebant; altero in Molochi vel alterius venerationem, ut in his insulis ad ipsius ignis cultum, liberos suos per flammam ducebant. Qua de re Maimonides ubi Idololatricum cultum describit, cap. 6. Idolol. sect. 3. אביו הכין הוא שמעביר בנו על האש ברשות הכהנים ומעבירו ברגליו מצד זה לצד אחר בתוך השלהבת לא שהוא שורפו למולך כדרך *Pater filii ipse traducit filium suum per ignem ex placito sacerdotum: traducit eum suis pedibus incedentem ab hoc ad illud latus per flammam. non quod comburat ipsum Molocho, quem admodum filios filiasque suas in alio idolorum cultu comburunt.* Vides hic duplicem illum modum, quem annotavi. Hinc illustratur Jer. 7. 31. ubi de comburendis filiis sermo est. Pag.

שהכוכבי' הם אלהיות ושהשמש הוא האלה הנגזר
Stellas esse Deos; verum solem esse Deum maximum.
 Ita sentiebant הצאבה sive Tfabæi: quam vo-
 cem cum vetus interpres non intelligeret, vi-
 ro longe doctissimo imposuit: qui ignis cul-
 tum hinc ostendere voluit, quod citato capi-
 te legatur *serviebat igni & servientium igni.* At-
 qui in textu est הצאבה: ubi commentator
 Schem Tob, אומות הצבה דעתם היה שאין אלוה בעולם,
 רק הכוכבים, *Gentes Tfabæ in ea erant sententia, nul-
 lum Deum esse in mundo præter stellas*, sub qui-
 bus planetas complectebantur. Postea Mai-
 monides pro צאבה ponit כוּתָּה *Cutha*, quorum
 utrumque male per *ignis cultores* redditur. Li-
 cet etiam solis cultores tandem coluerint
 ignem, ut qui illius symbolum esset.

Pag. 108. l. 12. *Chenerag*] A Zeilan Si-
 nas versus navigantibus multæ occurrunt in-
 sulæ: quas tamen designaverit, non facile est
 affirmare. Licet è locorum distantiis, non
 procul à Java majore sitas esse, non immeri-
 tò quis conjiciat, quæ vicina est Sumatræ: hæc
 olim, uti arbitror, Aurea Chersonesus. Judæi
 nomina sæpe depravare & immutare solent:
 & hoc modo Chersonesus in Chenerag de-
 generare potuit. Quæ verò de iis narrantur,
 qui se igni stulto & insano ritu devoentes in
 ignem, quem Deum arbitrantur, insiliunt; re-
 liquis à Beniamine temerè affirmatis accen-

accepit, ostreas ascendentes decidentem rorem excipere, indeque mori ac subsidere nar-
raverit. Hujusmodi enim inter Arabes Ach-
med f. J. de margaritis refert: ostreas in aqua
superficiem ascendentes rorem haurire; quo
admisso moriantur ac subsidant; & natis ra-
dicibus frutices fiant, intima parte ac sub-
stantia in margaritas conversa. Hæc collega
noster D. Golius Academiae nostræ lumen, se
in libro illo, qui aliquando in M. Erpenii Bi-
bliotheca fuit, legisse recordatur.

Lin. 10. à fin. *Haoulam*] Iam vulgò nun-
cupatur Zeilan, ut bene observavit Arias
Montanus.

P. 107. l. 11. à fin. *Soli obviam*] Vetus hæc fuit
idololatria: adeo ut Judæorum temporibus
jam invaluerit. Imo non tantum currebant
obviam soli; sed vehabantur equis & curri-
bus, quos in eum usum paratos habebant. In-
signis est ea de re paragraphus 2 Reg. 23. 11.
*Abolevit (Jofias) equos illos quos posuerant reges
Iudæ Soli, ab ingressu in domum Iovæ . . . currus au-
tem solis combustit igni.* Hujus expositionem
quandam habes Cod. Midd. p. 46. ubi quæ-
dam adjeci. Cæterum qui Solem colebant,
alios etiam Deos venerabantur; sed ut infe-
riores: quemadmodum Maimonides in Mo-
re Nebuchim l. 3. c. 29. observat. Ubi inter
alias multorum idololatrarum sententias refert,

שזכוכבי

nomine mutuato ex insula Zeilan, quæ olim Nanigeris dicebatur.

Pag. 105. l. 11. *Bdellium*] Pro בדולה posui *bdellium*, ob soni affinitatem: licet quæ Ebræi de בדולה, & Latini de bdellio tradunt, non congruant. Sed in re dubia vocem ferme Ebræam retinendam censui: quia quæ ad margaritas spectantia noster subjicit, an ad bedolach spectent, non satis declarat. Nam si id (quod videtur) pro certo sumatur, sequentia eodem spectare; nullus dubito quin margaritas vel potius ostreas quæ margaritas continent, vocaverit בדולה, adeoque lin. 17. in textu Rabbinico הללו, scribi possit הלולו, cum לולו Arabicè margaritam significet: cujusmodi gemmæ loco quodam inter Hormoz & Haoulam medio inveniri dicantur. Eo sensu נסגרים referetur ad בדולה, & vertendum, *quæ ostrea clausa in maris fundum subsidunt*. verum licet hæc ita vertenda censeam, cumque sensum sequar, numeri tamen diversitas, *bedolab* ad נסגרין referendum non esse, indicat. Sed noster cum de rore (unde margaritæ) quædam inaudivisset, non satis intellexisse videtur: itaque à quibusdam pluviam è superficie aquarum excipi tradit; deinde claudi & subsidere narrat: nec de quibus ea intelligenda, ostendit; quasi etiam hoc posterius ad aquas referatur. At non dubito, quin is unde ista

O 3

acce-

Eldadi concernit, nugatur & fabulas nobis propinat: quemadmodum interdum Benjamin, ut quum ait in sequentibus.

Lin. 23. *Nasi loco*] Turcas habere duo parva foramina: quasi verò natio illa, unde Turcæ in citeriorem Asiam profecti fuere, nos lateat; ut nobis tam facile imponere possit.

Pag. 104. l. 12. *Defluens flumen*] Tigrin defluere dicit in mare Indicum (sinum Persicum designat) ad insulam Nikrokin: quam è reliqua pagina esse eam, quæ vulgò Ormus vocatur, satis liquere existimo. Itaque an ibi unquam fuerit dubitari queat: quandoquidem Tigridis ostium quam longissimè inde remotum est. Sed erroris causa hæc, quod totum regnum Ormus etiam nuncupetur; adeoque ad Tigridis ostium extendatur. Insula tamen & emporium, de quo sequentia accipienda constat, procul à Tigride ad Borsoræ fretum conspicitur. Nubiensis etiam Geographus civitatem Hormoz ad Persicum sinum ponit; verum tanquam in continenti ad littus sitam: uti hæc verba part. 7. climatis tertii præ se ferunt, *من مدن کرمان مدینة*

هرمز الساحلية التي على بحر فارس

Ex urbibus Carmania est urbs Hormoz in littore condita, quæ mari Persico adjacet. Quod Benjamin vocet Nikrokin, errore factum videtur:

nomine

syriæ rex colonos in terram Canaan misisse
 legitur 2 Reg. 17. 24. ubi cum Babylonia
 conjungitur. Itaque Abrabaniel ex eo quod
 cum Babylone vel Babylonia conjungatur, ad
 hunc modum exponit, כות היה עיר אחרת בארץ
 כשדים, *Cuth est civitas alia in Chaldeorum regio-
 ne.* Non procul à Chaldæa fuisse facile cre-
 diderim: an civitas; num verò regio, in me-
 dio relinquo; similiter quia כוש *Aethiopia* &
 כות sono fere conveniunt (cum ת in fine ut ש
 ferme multis sonet) an Æthiopia Orientalis
 intelligatur, quam innuit Herodotus, ubi in
 hæc verba scribit in Polymnia fol. ed. H. St.
 258. Τῶν μὲν δὲ ὑπὲρ Αἰγύπτου Αἰθίοπων ἔ-
 Αἰθίοπων ἤρχε Αἰθίοπων: οἱ δὲ ἀπὸ ἡλίας ἀνατολέων
 Αἰθίοπες (διξοὶ γὰρ δὴ ἐσραβίωντος) περιετέλει χάλιο
 ποῖσι Ἰνδοῖσι, *Aethiopibus quidem qui sunt ultra
 Aegyptum, & Arabibus præerat Arsames: qui verò
 ab ortu solis erant Aethiopes (bisariam enim mili-
 tabant) ordinati erant cum Indis.* In itinerario
 Eldadi כוש pro כות usurpari non sine causa
 quis existimet. Nam quum Danitas, initio Je-
 roboami regis, cum Judæis pugnare detre-
 ctantes, ad remotissimam regionem disces-
 sisse fingit, hæc habet verba, הוּ עוֹלִים בְּנֵהָר
 פִּישׁוֹן נוֹסְעִים עַל הַגְּמְלִים וְחוֹנוֹם עַד שֶׁהִגִּיעוּ לְאֶרֶץ כּוּשׁ
*Ascendebant secundum flumen Pischon proficiscentes
 super Camelis & castrametantes, donec ad regionem
 כוש sive Aethiopiam pervenirent.* Quod historiam

moveatur , qui ad magis seria anhelat.

Pag. 97. l. 18. *Nisbon*] Postea Nisbor: sic Nebucadnezar & Nebucadrezar , litera *n* permutata cum *r*. Porrò quia Montes Nisbor flumini Gozan imminent , flumen illud longissime extra Persidem & Mediam versus Orientem sese extendere necesse est. Sed ubi Nisbor mons collocandus, non satis liquet: Abraham enim Peritsol ita loquitur, ut apud Gangem quærendus videatur ; sed eo usque Gozan procurrere, vel inde oriri minime videtur. Verum ipsi Gozan est Ganges.

Lin. 4. à fin. *Lahlah*] Eruditissimus Schikardus rectè in Taarich observat , Benjaminem omninò errare, quum voci הללל præponendo literam ב. radicalem facit lamed; nec *montes Media*, sed *urbes Media* scribendum: idque ex collatione 2 Reg. 17. 6. 1 Chron. 5. 26. Cæterum quæ noster de lato Israëli-tarum dominio in his montibus , cum p. 98. tum 100. differit, præcedentibus sunt similia: quibus hoc operam dat , ut genti suæ sceptrum nondum ablatum fuisse persuadeat: de quo errore in præcedentibus , & dissertatione ad lectorem præmissa , actum fuit.

Pag. 98. l. 13. *Aethiopum regio*] Cave Æthiopiam sub Ægypto intelligas : nam præcedentia de Oriente sermonem esse docent manifeste. Verum hæc כוש illa est, è qua As-

syriæ

tia fluvius, cujus circa Agrippæ regnum fluentis Josephus αλώσ. 7. 13. his verbis meminit, Πᾶς ἐκ τῶν πηγῶν ὀπιλείπων, ἐξ ἡμερῶν ἀριθμὸν, ξηρὸν καθάδιδωσιν ὄρεῖν τὸ τόπον. εἴθ' ὡσπερ ἐδεμιάς χρομύνης μετὰ βολῆς, ὅμοιόν τι πλὴν ἐβδόμῳ ἐκδίδωσι, Totus à fontibus deficiens, sex diebus, siccum exhibet oculis locum; postea quasi nulla facta mutatione; similis septimo die exoritur.

Cum *similis* dicitur, hoc sibi vult author, rapidè fluere, uti solet sex diebus exceptis, quibus exiccatur, vel siccum alveum relinquit. Ubi subesse naturalis quædam ratio videtur, quæ veluti in febribus certas ac statas motuum periodos servat. Tale quid in Nubiensi legitur, sed alio loco in Sicilia. Ita enim scribit parte secunda Climatis quarti, de fonte quodam in Xili castro :

تجري في اوقات
الصلوات وتجف في غير ذلك

Fluit tempore precum (non quod preces expectet quodcumque fiunt; sed, ut existimo, istis statis horis fluit quibus Arabes communiter precari solent: ista tempora fortuito concurrunt) & *arescit extra illud tempus*. Hæc mira sunt; sed ad istud figmentum Judæorum non accedūt, qui ex aqua lapides faciunt, & lapideum flumen nobis obtrudunt; quod certa intervalla servet, ne Israëlitæ conclusi elabantur. Verum de istis satis, ne cui nausea

O

movea-

ארוכים ויהודים רבים נסגרים שם לפי דעת המתנים
Ad tractus orientales India occurrit, hæc est India
intra Gangem & India extra Gangem, & regnum
Serica magnum & stupendum, regio montana ubi
magnæ sylvæ, & aromata, fera & aves peregrinae.
ubi vicinæ sunt duæ regiones ad septentrionem de-
scendentes, quarum nomen Scythia extra Imaum
montem; inter montes longissime protractos: ubi Iu-
dei quamplurimi conclusi sunt, ut quidam scriptores
opinantur. Sed crebrior istorum Israëlitarum
in Judæorum scriptis mentio, qui ad Sabba-
tionem habitare dicuntur; quemadmodum
ex utroque Talmude & Jouchasin liquet:
quinetiam ex ipso illo Abraham Peritfol. Qui
ט. 24. Orchoth Olam situm fluminis Sabba-
tionis plenius describit, & in India quærit.
 מוצא נהר סבטיון בגלילורת, *Origo flu-*
minis Sabbationis in regionibus India istius superioris
inter flumina Gangis. & postea, נהר סבטיון למעלה,
 מן אליקוט מוצאו ומפסין בין האינדואני ההם לקצת
Fluminis Sabbationis origo est supra Kalikout (Kalikout longe
 supra terminum Lamiki, quem ultra Sinum
 Barbaricum locat) *& distinctionem facit inter*
Indos istos & regni Iudæorum terminum: ibi il-
lud flumen certissime invenies. Porro ab illo flu-
mine, quod magno strepitu aquæ loco lapi-
des versat, differt loco, conditione & substan-
 tia

tia

quod spectat fluminis conditio, quæ dies noctesque semper transitum prohibet. הנהר הוא מאבנים ומחול ורעים כל ששת ימי המעשה ובשבת ישבות וינוח ומיר תעלה אש סביבות הנחל מערב שבת עד למוצאי שבת, *Flumē lapidibus & arena constans in tonat omnibus 6. diebus operariis; sed sabbatho cessat & quiescit: tum e vestigio ignis circa flumen exoritur, inde à pridie sabbathi ad exitum sabbathi.* Hac ratione nunquam eò pervenire licet, nec inde egredi. Nihil ergo miri, si de isto beato Israëlitarum statu nihil aliquot seculis auditum fuerit. Hisce nugis opus erat, ad præcedentes defendendas. Hinc istius de Israëlitarum dominio historiae vanitas apparet. Antiqua tamen est fabula, ut videre est è Gem. Talm. Hieros. cod. Saned. 29. c. 3. לשלש גליות גלו ישראל אחת לפני מנחר סנבטיון ואחד לדפני של אנטוכיא אחד שירד עליהם והענן וכיסה אותם, *In tria exilia missi sunt Israëlitæ: semel ultra flumen Sanbationem; semel ad latera Antiochiæ; denique quum in ipsos descendens nubes eos involveret.* Cæterum Abraham Perit sol Judæos clausos etiam longe versus Orientem Borealem sive ortum æstivum removeret, eosque non flumine; sed montibus conclusos dicit. Verba ejus hæc c. 9. Orchoth Olam: למצועות המזרח הודו היא ארץ הודו בגאניס ואינדואה איסטרא ומלכות סורקא הגדול והנפלא ארץ מדברות ויערים גדולים ובשמים והיות ועופות זרות עם שני גלילות הוורדים לצפון הנקרא סקיטאניה איסטרא בתוך משך הרים ארוכים

ad fluvium Gozan statuitur. Quapropter ut Gozan sit Oxus, uti censet vir longè doctissimus, mihi hæcenus persuadere non potui: sed omnes textus Benjaminis circumstantiæ suadent, ut Mediam & Persiam influere vel alluere dicamus, idque ad latus quod Parthiam respicit: ideoque ad montes etiam Gozan non immeritò quis montem Coronum retulerit. Cæterum Gozan quibusdam cum Sabbathico fluvio idem habetur: nam quemadmodum noster ad illum fluvium multorum Israëlitarum dominium in sequentibus collocat; sic isto fluvio ipsos arceri quominus ad alias regiones transeant, affirmant Judæi. Eldad Danita libro in superioribus citato, eisdem tribus quas paulo post noster ad flumen Gozan habitare testatur, ad Sabbathionem ponit; nisi quod pro Zebulone habeat Gadum: & argumentum ex Esaia petit suppeditatum sibi in Talmud. Hierosol. Saned. f. 29. col. 3. verba Eldadi inter alia hac de re quamplurima, נהר שבטין בנייהם שכתוב, בהם לאסורים צאר, *Flumen Sabbathion est inter ipsos (& alios de quibus egerat) quia de ipsis scriptum est Es. 49. 9. dicendo vincitis, exite. dixerat paulo ante, אין בני אדם רואים אותם, filii hominum eos non vident.* Sensus ergo est, quatuor istas tribus ita ab aliis hominibus segregari, ut medium flumen mutuuum accessum impediatur: quò

יש במלת מפורש שני עניינים האחד שזאת ההוראה הנאמרת עליו ותעלה היא נפרשת ונבדלת מכל הנמצאות והשני שהוא מורה על עצמו ותעלה בבירור ויהיה מלת מפורש מביאור ופי' לפי זאת הבחינה ושתי אלו הבחינות כבר רטום הרב במאמרו יורה על עצמו והוא הבחינה השנית ובאמרו אין השתתפות בה ש יורה על הבחינה הראשונה , *In nomine expositi dua sunt significationes : una est , istam notionem quæ D. laudando attribuitur separatam ac sejunctam esse à rebus omnibus ; altera , istud nomen Dei laudandi essentiam denotare explicatè , aded ut dictio expositi ab explicatone & expositione , secundum hanc considerationem derivetur . Has autem duas considerationes sive respectus jam innuit magister Maim. quum diceret , significare illius essentiam , ubi est secundus respectus ; & quum diceret , nulla cum illa societatis communio , ubi est prior respectus .* Capite sequenti Maimonides de nomine 12 literarum , & 42 literarum nonnulla addit , quæ hujus loci non sunt.

Pag. 96. l. 13. *Ad Gozan fluvium*] Quia è Media ad Persiam tendit Benjamin , uti ex hac pagina 96 liquet , & Tabrestaan , ac Ispahaan versus Parthiam , meminit ; hinc omninò constare autumo , Gozan fluvium esse qui Mediam & Persiam alluat. ideo etiam p. 92. Persidis rex in ripa Gozan carcerem habuisse legitur , & p. 88. G. cum urbibus Mediæ conjungitur , urbs etiam Persidis Gina
ad

tum non esse, jam sæpius vidimus: licet qua ratione vir doctus ei subvenire hac in parte dignetur, me non lateat.

Pag. 90. lin. 9. *Aria*] Quam vellem hanc cum Ptolemæi *Aria* eandem agnoscere! sed situs repugnat: siquidem Ptolemæi *Aria* est ultra Parthiam; & Benjamin Susis discedens versus Mediam huc tendit: ut liquet si quis pag. 86. cum hac conferre non gravabitur. Porrò hic à Beniamine Mediæ initium statuitur, ad montes Haphton, quorum incolæ ad Persiam usque pertingunt; & à montana hac regione ad Metropolin Mediæ 10 dierum iter est. Quare montes Haphton Mediæ & Persiæ conterminos agnoscamus oportet. Quid si ergo Zagrum montem cum Parchoa-tro continuatum designari dicamus? viri docti judicent.

Pag. 93. l. 18. *Expositi*] Quare nomen Jehova dicatur expositum, exponit Ephodi f. 43. p. 2. commentarii sui in More Nebuchim: ubi l. 1. c. 61. Maimonides in hæc verba loquutus erat de nomine Jehova, quod שם המפורש *nomen exponens vel expositum* dicitur, cum etymologiam explicaret, ענינו שהוא יורה על עצמו יתעלה הוראה מבוארת אין השתתפות ברא *Sententia ejus est, istud nomen notione explicata significare ipsam D. laudandi essentiam cum qua nulla sit societatis communio.* Hæc explicat Ephodi,

יש

Danita, in suo libello de tribubus Israël, secus statuit: nam Gadem conjungit cum Naphtali & Aschere, quin etiam Dane (quam tribum prius secundum flumen Pischon in Æthiopiam profectam ibique consedisse narraverat) הללו ד' שבטים דן נפתלי גד ואשר הם חונים בהחילה הקדומה אשר שם הזהב, *Ha quatuor tribus, Dan, Naphtali, Gad, & Ascher, habitant in antiqua Havila, ubi aurum reperitur.* Rubenem autem alibi apud Zebulonem collocat: בני זבולן חונים בהרי פארן ומגיעים בשכונתם ונטועים אוהלים של שער ממדינת אגימא עד נהר פרת ושבת ראובן נגדם, *Zebulonis posteri incolunt Pharanis montes & pertingunt habitatione sua & fixis tentoriis villosis, inde ab urbe Aegima ad flumen Euphratis; & tribus Rubenis coram ipsis habitat post Pharanis montes.* Inter se non conveniunt; & tamen uterque loca à se lustrata scribit. Fabulatores istos magis congruere decebat.

Pag. 86. l. 9. à fin. *Tigridis flumen*] Quia Susiana (quam Perfidi accenset) Tigride alluitur, & Susorum civitatem in Susiana sitam fluvius secat, Benjamin Tigrim per civitatem fluere putat; cum tamen is sit Eulæus fluvius. Error etiam hinc facile profluere potuit, quod ultimis seculis Eulæus Tiritiri dictus sit: unde ipse cum Tigrim ferme se audire putaret, vocem Hebræam, qua Tigris exprimitur, adhibuerit. Sed errare nostro auctori insuetum

tum

regnum excudunt. Abraham Peritfol c. 14. Orchoth Olam, Arabes inter Israëlitas collocat: & Israëlitas regna sua ibi habere narrat. Quum enim Judæi alicujus adventum describit, qui ex illis regionibus ac regnis venerat, ita inquit: עבר בקוטב אראביאה פיליצי והגיע לים סוף
Transiit per regionem Arabiae felicitis, & pervenit ad mare algosum. Similia habet cum de reditu ejusdem loquitur.

Pag. 83. l. 6. à fin. *Extracta questionum*] Jam olim quæstiones genealogicas inter Judæos agitatae fuisse, ex Apostoli epistolis ad Tim. & Tit. liquet. Ex illis qua quis stirpe ac profapia esset, sæpe erui poterat: atque hujusmodi excerpta hîc dicuntur *extracta questionum*. In Hebræo est משגרות שאלות: ubi משגרות est à שגר quod non tantum *mittere* significat; sed etiam ejus contrarium *extrahere*. unde Scaliger p. 68. משגרים exponit *extrahunt*, quod verti *avidè arripiunt*. Sic in illa formula *extracta* notantur, quæ magna cura pro more suo ex illis genealogicis disputationibus excerpserant.

Pag. 84. l. 11. *Quindecim milliaria*] Si Judæi tantam civitatem occuparent, quæ quindecim milliaria quaquaversum pateret, aliaque hic descripta haberent, latere id non potuisset: quandoquidem vicina loca incognita non fuere.

Lin. 9. à fin. *Rubenis, Gadis*] Attamen Eldad
 Danita,

pervenerit; cum tamen remotissimæ regiones à multis peragratae fuerint? Similiter in frequentibus aliud Judæorum regnum ultra desertum 28. dierum iter patens describet, eandem artem adhibens. Pagina 65. Eliman erat Arabia felix; utpote in qua esset celebris illa Arabum Mecca. Jam vero idem, se ab illis academiis ad Euphratem sitis, per regionem cui nomen Eliman in deserto (itaque sub Elimane forte Arabiam desertam completitur) à latere Mesopotamiæ septentrionali ad Rechabitas profectum narrat. An illa Arabia ad Mesopotamiæ vel Babyloniam (nam Judæi Babyloniam late extendunt) latus septentrionale? Et ne quis de illa descriptione dubitet, eadem hac pagina Israëlitas istos excursiones in Arabes, vel usque ad vicinos Arabes Scenitas (nam ita etiam reddi commode verba ista queunt) facere subjicit: qui Arabes Elimaniæ contermini sint. unde situs, quem fingit noster, satis superque liquet. Quinetiam ubi Cebarem describit ejusque incolas Israëlitas, hinc non procul distitos, ipsos cum Aquilonaribus & Elimanitis vicinis bella gerere scribit. At quis hunc grandem errorem excusabit, ut Arabia in qua Mecca sit, vel vicinus isti Arabiæ locus, ad Mesopotamiæ septentrionem collocetur? Verum alii similiter circa istam Arabiam tale

Souræ vel (ut noster habet) Souriæ schola fuit antiquior, ideo de ipsa specialiter hoc observat Benjamin , ibi olim exulum capita & confessuum sive scholarum capita fixisse sedem suam , nimirum antequam sedes Bagdadum transferretur, ubi erat Benjaminis nostri seculo . Sed in superioribus verbis attende Judæorum vanitatem : qui è privilegiis quibusdam quæ scholarum rectoribus concessa fuere, ut cum suis levioris momenti negotia transigerent , scholas & confessus suos in regia tribunalia mutarunt, præfectos suos regnare dictitantes.

Pag. 81. l. 7. à fin. *Nebardea*] Hæc uti etiam Pumbeditha & Soura ad Euphratem omnes sitæ sunt: ut ex Ebræorum testimoniis probat Hebraicæ literaturæ Phœnix Joannes Buxtorfius Commentarii Masorethici c. 6. ubi alia etiam leguntur, quæ ad illustrandum hunc Benjaminis locum facere queunt.

P. 82. l. 10. *Rechabite*] Hic nobis quoddam absolutum Israëlitarum imperium obtrudit; de quo satis in dissertat. ad lectorem. Sed imperitiam hominis spectate, qui parum memor præcedentium, regionum mirabilem situm describit: idque eò collimans ut ultra patentia & invia deserta nobis Israëlitarum regnum fabricetur, ne cui mirum videatur, quod tanti regni fama hæctenus ad nos non
perve-

ne Esaias proposuit c. 13. v. 20. 21. & 22. Nam se in itinere suo vastatam Babylonem deprehendisse, testatur Benjamin: & quum dicit, homines metu à palatio Nebucadnezaris abstinere propter serpentes & scorpiones; cum aliis, tū etiam in primis hisce Prophetiæ verbis suffragatur, *Serpentes in palatiis voluptariis* v. 22.

Pag. 81. l. 8. *Suria*] Ex iis quæ subjicit de fede Æchmalotarchæ & summi Præsidis, omninò Souram indigitare videtur, cujus mentio in Jouchasin f. 120. ולאחר שנפטר רב עשו ישיבה. בבבל על דרך אי' והיא ישיבת סורא ומלך בה רב הונא מ' שנה והוא היה ראשון לכל מי שהיה ראש ישיבה בבבל ואחר כך מלך אחריו רב הסדא ונמשכה מלכותו י' שנים ובסוף יומי של רב חסד' הלך רבה בר נחמני ועשה ישיבה בפומבדיתא ומאותו היו' ואילך *Postquam hinc migravit magister (Judas sanctus) confessum in Babylonia instituerunt ad modum terræ Israël. hic est confessus Souræ, in quo regnavit magister Houna annos 40. qui primus fuit eorum, qui confessuum capita fuere in Babylonia. Deinde post eum regnavit magister Hasda: cujus regnum in decem annos protractum fuit. Porro ultimis diebus magistri Hasdæ, discedens Rabba filius Nahmanis, Pumbeditha confessum instituit: atque hinc & deinceps fuit etiam confessus Pumbedithæ. Nehardæ antiquitus quoque schola quædam erecta fuit, uti passim Hebræorum Chronologi testantur. Sed quia*

بناء مدينة بغداد واسمها في وقت اتفق
المنجمون على اختياريه وقبل انها كانت
مرجة خضري فيها صومعة راهب اسمها
بغداد وسميت باسم الراهب وسميها
المنصور مدينة السلام ولما تم بناؤها
صارت مستقر الخلفاء العباسيين

Anno 145. (scilicet Hegiræ, id est, anno Chr. 766.) præcepit Mansor condi civitatem Bagdadum, & eam fundavit eo tempore in cujus electionem consenserant astrologi. Dicitur autem fuisse præteritum viride, in quo esset religiosa domus monachi cui nomen Bagdad, & civitatem vocatam de nomine monachi. Mansor verò eam appellavit, civitatem pacis. Quum jam absoluta esset structura ejus, evasit firma sedes Calipharum Abasidarum. Hæc civitas postea vastata fuit; ac deinde restaurata à quodam è posteris Boujæ, qui cum Caliphis regnabant: quemadmodum legimus in Jouch. f. 148. p. 1. עזר אל דולה חדש בגדאד אחר אשר נחרבה. Atsad El-doula restauravit Bagdad, postquam vastata fuisset. Id factum circa annum Hegiræ five æræ Arabicæ 366. deinde post annos complures iterum vastatam fuisse ab Hala-cho fratre regis Tatarorum idem Zacuthus eodem libro narrat f. 152.

Pag. 76. l. 9. *Vastata*] Hic manifeste videmus impletas illas minas, quas Dei nomi-

ne

rentur; similiterque singuli Israëlita qui prætereunt factitant: donec eum quinquaginta vel sexaginta comitentur ad locum quò tendit. Quum verò domum redit, eodem modo cum ipso agunt. nec unquam egreditur, antequam eum totus suus comitatus sequatur: & in incessu suo regionum principum aliquem refert.

Pag. 74. l. 2. *Dona*] Id convenit cum verbis Jouchasin f. 124. p. 1. ubi reditus recensentur: ac tandem subjicitur, כלל של דבר שמגיע אליו בכל שנה ושנה בכל אלו המקומות תש והובין ואם רצה כותב למקומות רחוקים שישמכוהו ויכבדוהו כותב ודעושים לו בקשתו, *Summa rei est, ad eum quotannis ex illis omnibus regionibus pervenire septingentos aureos. Et si velit, ad remota loca scribit ut ei subve-niant & honorarium mittant: scribit eis, inquam; & petitioni ipsius satisfaciunt.*

Lin. 22. *Pecunia vim*] Vide notarum ad p. 71. finem; ubi testimonium è Tsemah David prolatum hæc illustrat.

Pag. 75. l. 20. *Provincia Bagdadi*] Ut Babel Hebræis est civitas & provincia sive regio cognominis; similiter Bagdad civitatis & regionis circumjacentis nomen est. Hæc autem civitas condita fuit, ut antiquæ veluti Babylonis loco esset: cujus ortum Elmacinus l. 2. c. 3. tam graphicè nobis proponit, ut ipsius verba producenda duxerim, في سنة خمس وأربعين ومائة شرع المنصور بناء

conditionem, quæ cum ficto sub iisdem à Beniamine ac aliis splendore non consistat. Ita enim parte priori scribit, f. 52. p. 1. מימו ישמעאלים לא נהגו ראשי גלויות שררה כראוי וכהגון דק היו קונים אותו מן המלכים כמו מוכסים *Inde à diebus Muhammedanorum, exulum capita dominium non administrarunt, uti conveniebat & decebat; sed id à regibus redimebant veluti vectigalium redemptores sive publicani.* Precariam ergo habebant ipsius iudicio dignitatem quandam. Sed ne hanc quidem tantam fuisse, quæ alicujus imperii esset in quo sceptrum continuaretur, jam antea probatum fuit.

Pag. 72. l. 24. *Magnum regem salutatum procedit*] De splendido ipsius incessu etiam Zacuthus in Jouchasin f. 123. p. 2. ואם רוצה לצאת ולעשות צרכיו רוכב מרכבת המשנה מרכבת שרי המלך בגדים נאים והולכי אחריו עד טו אנשים ועברו יהיה רץ אחריו וכשעובר על אח' מ' ישראל רצים אליו ומחזיקין בו ומוסבירין פניו וכן עושה כל אחד מ' ישראל שיעבור עליו עד שיתקבצו עליו כמו נ' או ס' עד המקו' אשר הוא בא שם וכשהוא חוזר אל ביתו עושין לו כזה המנהג ולעולם אינו יוצא עד שהולכין אחריו כל סיעתו ודומה בהליכתו כאחד משרי המלך, *Quod si egredi velit & necessaria peragere, vehitur curru secundo, curru cujusmodi regis principes utuntur, splendidè vestitus; eumque sequuntur 15 viri cum ejus servo qui currendo subsequitur. Et quum Israëlitarum aliquos praterit, accurrunt ejusq; manum prensant & conspectum reverentur;*

rentur;

caput locus relinquatur vacuus: & supra ipsius locum, pulchrum auleum super caput ejus extendunt quod supra suggestū funibus byssinis & purpureis appenditur. Deniq; ut ad tertium perveniamus: וכשיוצא ראש גלות כל העם יוצאין לפניו ולאחריו ואומרים לפניו דברי שירות ותושבחות עד שהוא מגיע לביתו אבל ראשי ושיבות אינם הולכין עמו עד ביתו וכל התלמידים שהולכים עמו ומלוין אותו עד ביתו אינו מניח א' מהם שיצא מביתו עד ד' ימים, *Quum egreditur exulum caput, totus populus precedens & subsequens, in ejus conspectu cantica & laudes dicunt, donec ad ades suas perveniat; sed confessuum capita non comitantur ad ipsas usque ades. Et omnium discipulorum qui ipsum comitantur, eidem adherentes ad ipsas usque ades, neminem adibus suis exire permittit ante septimū diem.* Hic Judæorum ingenium & indolem spectate: qui cum imperio omni destituantur, externam pompam, ceremonias, splendorem & confictos ac vanos ritus sectantur; quò aliquid ex illo regio sceptro reliqui habere sibi, vel saltem aliis, persuadeant. Hinc etiam suos scholares confessus, quos in Babylonia ac alibi habebāt vel etiam nūm habent, synedria politica ac confessus judiciales esse fingunt. Sed in dissertatione ad lectorē ex ipsorum etiam Judæorum primariorum testimoniis & ipsa experientia, fictā istam potestatem satis debellavi. Quinetiam David Gans in suo Chronico distinctè fatetur sub Muhammedanis eam fuisse Israëlitarum

*sericeis, hyacinthinis & purpureis ac coccineis conte-
gentes, donec totus obtegeretur, nec ejus quidquam
appareret. In quo suggestu nemo, ne quidem
exulum caput initio fedet; sed loco inferiori
latens, post varias demum Dei laudes certo
ordine & modo peractas, in suggestum pro-
dit. Atque de hoc secundo pag. sequenti:*

וצא ראש גלות מהמקו' שהיה מבוטה בו וכשרואין אותו
כל העם עומדים על רגליהם עד שישב על המגדל שעשו
לו ויצא ראש ושיבת סורא אחריו וישב על המגדל לאח'
שיתן לו כריעה כפוף ויחזיר לו ואחך יצא ראש ושיבת
פומבדיתא ויתן לו גם הוא כריעה וישב לשמאלו ובכל
זה כל העם עומדים על רגליהם עד שיתקנו שלשתם
ישיבתם ויושם ראש גלות באמצע וראש ושיבת סורא
יושב לימינו וראש ושיבת פומבדיתא וישב לשמאלו ובזמן
לבוין ראש גלות מקום פנוי ועל מקומו פרשו עליו בגד
גאה על ראשו ממעל למגדל אחוה בחבלי כוץ וארגמן

*Prodit exulum caput è loco ubi tectus erat: eumque
videntes populares in pedes erecti consistunt, donec in
suggestu quem ei paraverant sedeat. Tum caput con-
fessus Sourani subsequens in suggestu confidet, ubi in-
curvatus summissè salutavit ipsum, qui & resalutat.
Deinde caput confessus Poumbedithani prodiens, simi-
liter ipsi se incurvans, ad sinistram confidet. Dum hæc
fiunt, totus populus in pedes suos insistit, donec tres isti
ordine considendi loca occupent, & caput exulum in
medio constituatur, caput autem confessus Sourani ad
ipsius dextram, caputq; confessus Poumpedithani ad
ejus sinistram confideat. Inter hos tamen & exulum
caput*

caput

מתקבצין שני ראשי הישיבות עם בני ישיבתן עם כל ראשי
 הקהל והוקני' בבית אדם גדול שבבבל מגדולי הדור
Si consentiat sententia cœtus ad eum præficiendum ,
congregantur duo confessuum capita (scil. Suræ &
Poumpedithæ) cum assessoribus suis, omnibus cœtus
primatibus & senioribus, in domum magnatis alicuj-
us in Babylonia ex seculi primariis. & paulo post:
 ומתקבצין בבית הכנס' ביום הה' ומברכין אותו ונותנין יד
 עליו ותוקעין בשופר להשמיע את כל העם מקטן ועד גדול
 וכששומעין הדבר כל אחד ואח' משגר לו מנחה כפי כחו
 והשגת ידו וכל ראשי הקהל ועשיריהם שולחין לו בגדי'
Congregantur, נאים ותכשיטי' יפים וכלי כסף וכלי זהב
in synagogam feria quinta , eique fausta precantur
& de ipso juramentum præstant , clanguntque tuba
ut totum populum à minimo ad maximum certum
faciant. Hac re intellecta singuli ipsi munus mittunt
pro viribus & facultatibus suis: omnes item cœtus
primates ac divites ipsi elegantes vestes mittunt &
eximia monilia , vasa item argentea ac aurea. &
 ׀כשמשכי' ללכת יום שבת
 בכה רבים מגדולי הקהל מתקבצין עמו ללכת בכה וכבר
 הכינו לו בכה מבעוד יום מגדל עץ ארכו ד' אמות ורחבו
 ג' ופורכין עליו בגדים נאים מן המשי ומן התכלת ומן
 הארגמן ובתולעת השני עד שיתכסה כלו ולא יראה
 ׀ממנו כלום , *Quum verò Sabbatho , summo mane*
synagogam petit, magnatum plurimi ad ipsum con-
veniunt ut ad synagogam pergant: ubi jam pridie
sug gestum ligneum longitudine septem , latitudine
trium cubitorum paraverunt , eum pulchris pannis

N

seri

sedentibus, 7 erant Capita communitatis & tres Socii. at quare nomine suo dicuntur capita communitatis? quia eorum singuli viris decem ipsius synedrii præfecti sunt, hi sunt qui duces vocantur. Talis autem mos obtinebat, ut si unius è capitibus communitatis defuncti filius locum ejus occupare posset, heres esset loci patris sui, & in eo sederet; licet immatura etate. similiter in Sociis, si cum eorum quis obiisset ipsius filius locum tenere posset, eum capiebat: nec eorum ullus alterius limen transiliebat. quod si patris sui locum tenere non valeret, sed idoneus esset alibi in quadam septem classium confidere, ibi confidebat. quod si ne cum illis quidem sedere mereretur, sedebat cum magistri pueris ac cum reliquis discipulis qui erant bis mille quadringenti viri. Itaque illi synedrium constituebant: cujus septem erant classes; prima classis confidebat, quemadmodum meminimus, & à tergo viri decem alii ad septem usque classes, omniumque facies capitis confessus vultum spectabant: omnesque discipuli post classes sedebant. Hinc omnino confessuum status ac conditio liquet; ut plura addere necesse non videatur.

Pag. 71. l. penult. Exulum caput] De hujus inauguratione multa dici possent quæ Zacuthus in Jouchasin enarrat: sed præcipua sunt quæ ipsi antequam synagogam ingreditur præstantur; & quum in synagoga tectus retegitur; ac denique egreditur. De primo ita scribit f. 122. p. 2. אם הסכים דעת הקהל למנותו מתקבצין

quando subvenitur; quædam habetur in hisce
 notis exprimenda, quò confidentium in hu-
 jusmodi confessu (quem *סנהדרין* & *ישיבה* *syn-*
nedrium vocant) officium & conditio magis
 innotescat. Non enim existimandum est, sin-
 gulorum fuisse de controversiis disceptare;
 verum multi à præside remotius sedentes so-
 lummodo discipulos se præbebant. Nam cum
 eorum leges politicæ essent Sacræ literæ,
 schola & curia conjungebantur. Sed videa-
 mus Zacuthi verba. *וזה סדר ישיבת' ראש ישוב'*
יושב ולפניו עשר' אנשים והוא נקראת דרא קמא ופניהם
אל פני ראש ישיבה והעשרה שיושבין לפניו מהם ראשי
כלות וג' הנרים ולמה נקראו שמם ראשי כלות
שכל' א' מהם ממונה על עשרה מן הסנהדרין והם
הנקראין אלופים וכך היה מנהגם אם נפטר א' מראשי
כלות ויש לו בן הממלא את מקומו יורש מקום אביו
ויושב בו ואפילו היה קטן בשנים וכן מן החכרים
כשיפטר א' מהם אם היה בנו ממלא את מקומו יושב בו
ואין אחד מהם דולג על מפתן חבירו ואם אינו ממלא
מקום אבותיו והוא ראוי לישב באחת משבעה דרי ישב
בה. ואם אינו ראוי לישב עמהם יושב עם בני רב ועם
שאר התלמידים שהם כד' מאות איש והם סנהדרין שהם
ז' שורו' שורה ראשונה יושבת כמו שזכרנו ואהריהם י'
עד ז' שורות ופני כלם אל פני ראש ישיבה וכל התלמידים
*יושבין אהריהם. *hic erat confessus ipsorum ordo: caput**
confessus sedens ante se decem homines habebat, quæ
dicebatur classis prima, eorumque facies capitis con-
fessus vultum spectabant: ex illis decem coram ipso
sedent.

sedent.

Pag. 70. l. 4. à fin. *Ordinis procurator*] In originali, ראש הסדר. Quis ille fuerit, qui eo nomine gaudebat, non alicunde melius percipiemus, quam è Jouchasin f. 120. p.1. Ante Gemaræ doctores לא היתה עדין ישיבה בבבל אלא הנשיאי' שהיו שם לא היו קורין אותם אלא רישי סדרא *nondum erat confessus in Babylonia; sed principes qui istic debebant nonnisi ordinis procuratores audiebant.* Quum postea synedria in Babylonia habuere, non summi synedrii; sed omnium synedriorum caput respondebat illi ordinis procuratori, qui antea ibidem fuerat: verum ille sine potestate ut ordine omnia fierent operā dabat; hic vero (cujusmodi pag. 71. in Benjamine nostro erat M. Samuel) jurisdictionem habebat, ideoque in Jouchasin nonnunquam *regnasse* dicitur. Quid ergo inter sit jam liquet. Cæterum quamvis jam istud officium desiisset; tamen Eleazarus iste ob generalem quandam *א"תאליאס* curam eodem titulo ornatus videtur. Porro si quis de summis confessuum capitibus plura cognoscere desideret, legat f. 124. Jouchasin. ubi non contemnenda inveniet. Siquidem illic de synedrio Poumbedithæ & Souræ prolixè ritus quosdam annotat. Et præter modum præfides inaugurandi, qui pene idem cum ceremoniis quibus caput exulum inaugurabatur (de quo postea) & modum quo ipsius egestati aliquando

quando

dicunt: *sensus est, Associatur ei qui magnus doctor noster audit.* Hic gradum obtinere videmus, qui socius dicitur; eundem licet doceat, non tamen novum dogma proponere posse; id-
 eoque doctori suo adhuc adhærere. Qua de causa & familiaris, nimirum ipsius doctoris, dici posset. Ne quis autem hic cum magno quodam viro erret, quasi חבר *socius* nonnisi cum suo relativo ponatur: nam licet *socius* eum spectet cuius est socius, tamen relativum etiam omitti & subaudiri, vel exempla in hoc Benjaminis paragrapho docent. De חבר M. Scaliger quoque contra Serarium pag. 77. & Cl. Coch in Sanedrin p. 308. Sed quò constet, Socium etiam (qui & תלמיד חכם *studiosus sapientis vel sapientie*) alios docuisse, pauca è Maimonida subjiciam è תורה c. 5. sect. 9. ubi cum de honore ipsi præceptori exhibendo egisset, subjungit: כדא ברבו מובהק שלמד ממנו רוב חכמתו אבל אם לא למד ממנו רוב חכמתו הרי זה תלמיד חבר ואינו חייב בכבודו בכל אילו הדברים *de quo hac dicuntur? De illustri ejus præceptore, à quo maximam sapientie sue partem didicit: sed si maximam sapientie sue partem ab eo non didicit, ecce is est studiosus Socius; nec alter ille ad ejus honorem tenetur in istis omnibus, puta quæ recenserat Maimonides. Ecce, docet Socius; licet pleraque dogmata ac major institutio ex aliis doctoribus hauriantur.*

stianorum ἀγάπης conferri queunt. Licet sacramentum nullum, sive fœderis tessera subjungatur; cum ita tamen in veteri ecclesia in ἀγάπης fieri consueverit. Itaque & hic, ut alibi sæpe, à veritate noster aberrat.

Pag. 70. l. 7. à fin. *Socius*] In textu originali est חבר, quam vocem concinne reddi existimo, *socius*: talis enim quodammodo erat חבר, quales sunt in Anglia collegiorum socii. Hi enim & Professorum ac Regentium discipulos se profitentur; attamen sæpe tantæ eruditionis ac scientiæ & dexteritatis, ut alios docere possint, quod etiam subinde præstant. Cum in utraque Angliæ academia ante multos annos viverem, in sociorum numero multos viros doctissimos me invenisse memini, qui cum quibusvis contendere possent. Quin etiam inter ipsos multi Baccal. & Magisterii, imo Doctoratus gradum adepti sunt. Quam hæc aptissime in Judæorum חבר quadrare deprehenduntur, si ipsius conditionem expendamus! Elias in Tisbi ad vocem חבר, ipsius dignitatem & conditionem hisce explicat, אדם שהוא נסמך לרבנות אבל אינו ראוי עדין להיות מורה הוראה להקרא מורנו הרב קורין אותו חבר הרב פירוש נתחבר אל מי שהוא מורנו הרב *homo cui ad magisterii gradum manus imposita est; sed nondum idoneus est, ut sit dogmatis doctor, quod vocetur doctor noster magnus, eum magni istius socium dicunt:*

finem Almanforis indolem exprimens inquit,

استخدم طباطبة على ان لهم الروس
والاكارع وعليهم الخطب والتوبل

*famulos in coquos conduxit, ea conditione ut eorum
quidem essent capita & crura, sed ipsis etiam incum-
beret ligna & ollas suppeditare. Vestes idem ille*

Calipha sarcinatas ac refartas gerebat; unde
ille sarcasmus in eundem قد يدرك الشرف

الفتي ورداه خلق وجيب قبضة مرقوع
jam attigit dignitas virum, cujus vestis attrita; &

*sinus indusii refartus est. Non multum ab hac
parsimonia abfuit Muhammed filius Al-Man-
foris, de quo cap. 4. legimus, cum obiisset &
sepeliendus esset, nihil præter januam fuisse*

qua exportaretur: لم يوجد له نعش يحمل

عليه فحمل علي باب ودفن تحت شجرة
جونز وكان يجلس عندها

*non inveniebatur pro eo feretrum quo portaretur; ita-
que portabatur super janua, & sepeliebatur sub nuce
arbore, apud quam sederat.*

Pag. 68. l. 22. Pascha] Arabes Pascha non
celebrant, ut testantur qui per annos aliquot
inter ipsos in Oriente & Aphrica vixerunt:
sed boves vel oves aliquando solenni ritu
amicis ac pauperibus mactant, è quibus con-
vivia instituuntur, quæ cum veteribus Chri-
stiano-

ftiano-

vocaretur. Verumenimverò cum in erroris causam inquirò, hanc deprehendo, quod in Ægypto Muktephis tempore etiam האפט quidam rerum potitus sit. Quemadmodum Zacuthus in Jouch eodem loco inter ea quæ tempore Muktephis evenere, illius regnum narrat, במצרים מת אל אמיר וימלוך אל האפיט לדין אללא בנו תחתיו, *in Aegypto mortem obiit Elamir, & regnavit El-Chaphit Ledin Alla ipsius filius loco ejus.* Hic tamen Benjaminis tempore regnasse non videtur, sed paulo ante; ejus verò tempore, si successorum seriem expendamus, in Ægypto regnasse videtur El-Phaiz. Unde clarius apparet, quod jam in præcedentibus monui, Benjaminem istis omnibus locis non fuisse, quæ tamen se lustrasse scribit. Nam si Bagdadi fuit, quî Abassidæ illius, qui tum Calipha erat, nomen ignorare potuit? Sane si quisquam ea in urbe innotuit, Calipha potissimum. Ex his & similibus lectores conjiciant, an fidem ille mereatur, quum de gente sua passim ea commemorat, quæ in eum finem excogitata, ut ψ. 10. c. 49. Geneseos detorqueatur, meritò quis suspicetur.

Pag. 65. l. 6. *Ex hoc pretio edit*] Sane tantam frugalitatem & parsimoniam nobis in Caliphis proponit etiam Elmacinus, ut Christianorum fastum & prodigalitatem retundere & coërcere meritò debeat. Lib. 2. c. 3. sub finem

ties annotatum fuit, anno Servatoris 1173. at-
 qui ab anno millesimo centesimo quinquage-
 simo primo ad annum millesimum cente-
 simum septuagesimum sextum Calipha fuit
 Muktephi. Abraham Zacuthus in Joucha-
 sin f. 149. hæc distincte annotat. על ראשון
 כליפה נאספו כל השופטים וחכמי הישמעאלים ויסירו
 מהכלאפה שנת תקל וימליכו את מקתפי בן מסתהר
*contra Raschidum Calipham convenerunt omnes ju-
 dices & sapientes Arabum & removerunt ipsum Ca-
 liphatu, anno 530. & regem crearunt Mukte-
 phim filium Mustatharis.* Tempore Benjaminis
 non regem האפצי vel אחמד; sed regem מקתפי
 habemus: id est, Muktephis rex fuit, non
 Chaphits aut Achmed. Annus enim Hegiræ
 primus, est æræ Christianæ sexcentesimus vi-
 gesimus secundus; quibus si addas 530. id est,
 numerum in illo Zacuthi testimonio anno-
 tatum, ad annum Christi 1151. pervenies. Tum
 Muktephis regnare incœpit, & multis annis
 imperavit, ad annum Hegiræ quingentesi-
 mum quinquagesimum quintum: adhuc
 modum enim Zacuthus subjicit eodem folio,
 בשנת תקנה מת מקתפי כליפה, *anno 555. obiit Muk-
 tephi Calipha.* Qui annus 555. æræ Arabum in-
 cidit in annum Christi æræ vulgaris 1176.
 Unde liquet toto peregrinationis Benjami-
 nis tempore nullum fuisse Calipham & re-
 gem (uti vocat) in urbe Bagdad, qui האפצי

hi Tatari. Quod de Tataris subjicit, istorū Calipharum interitum spectat: nam Tatarorum regis frater Bagdadum ingressus urbem vastavit & ultimum Calipham occidit, ut narratur sub finem folii 151. ubi de Calipharum interitu hæc subjungit, ומהיום ההוא והלאה לא היה עוד כלומה כנגדאד ונפסקה שלשלת העבאסיים והם חמשה ושלושים, *atque ab eo die & deinceps non fuit amplius Calipha Bagdadi; & precisa fuit catena sive series Abasidarum, qui fuerant triginta quinque.*

Pag. 64. l. 8. *Ahmed*] Quum excusorum codicum antiquissimum nactus, qui M. T. Erpenii fuerat, in margine notatum invenissem Achmed & in textu linea subductum nomen תאפצי; tanti viri autoritatem, qui Calipharum in suo Elmacino historiam ac successionem ignorare vix poterat, secutus fueram: ideoque ipsius אהמד pro altero substitueram. Verum jam accuratius illam Calipharum seriem examinans, utrumque, puta Benjaminem & eum qui in margine nomen immutaverat, sive Erpenius fuit, sive potius (uti omnino jam credo) alius à quo ille librum acceperat, utrumque inquam errare deprehendo. Cum Historia Saracenicæ quatenus excusa est, hætenus non pertingat, non aliunde certius quam è Jouchasin veritatem hauriemus. Benjamin ex itinere rediit, prout antea aliquoties

ties

erant exequerentur : adeo ut etiam conciones sacras haberent. quod non solum ex Elmacino liquet; sed etiam nostro autore, qui pag. 68. circa medium, id ipsum enarrat. Cæterum hunc Calipham ex Abasidis fuisse paulo ante narraverat : qui Abasidæ Ommiadis successerant, ut ex Almacino constat. Et Caliphæ cum antea alias sedes haberent, tandem Bagdadum se contulere : unde in loca ac regiones sibi subjectas imperium exercebant. Idque absoluto dominio, donec filii Boujæ è posteris Jizdegird Persarum regis regnarent : qui Calipharum quidem successionem & seriem Bagdadi non impediverunt; sed ea ratione ac modo, ut isti nomine tenus ferme regnarent, summa vero potestas penes Boujæ posteros remaneret. Quam historiam satis accurate Zacuthus in Jouchasin nobis reliquit. De imminuta Chalipharum potestate f. 147. p. 2. adhunc modum, לא נשאר לכליפה דבר אלא מה שהיה רוצה לתת לו מעו אל דולה *nihil relinquebatur Caliphæ, nisi quod ipsi dare volebat* Maaz El Doula è Boujæ profapia. Et f. 152 p. 1. בראשית מלכי הישמעאלים באו מלכי בני בויה אשר היו צפוניים מבני מלך פרס ויסירו כבוד הכליפ' כאשר כתבנו עד בא אלו התאחרים, *initio regum Muhammedanorum venerunt reges posteri Boujæ (qui Aquilonares erant) è profapia regis Persidis; & abstulerunt gloriam Calipharum (uti scripsimus) donec venirent*

Tigris interfluat. Est enim ad occidentem Tigridis: ut Nubiensis Geographus sexta parte climatis quarti testatur, quum paucis verbis locum describit, quæ percepisse forte juvabit.

الموصل مدينة على غربي الدجلة ولها
رساتيق عظيمة وكور كبيرة منها
رسناق لبنى وهي مدينة قديمة وهي من
موسال *Mousal est urbs ad occidentem Ti-*
gridis, cui sunt regiones amplæ, & provincia magna:
quarum est regio nris Linu, quæ est urbs antiqua, eadem-
que ad orientem Tigridis. Hinc jam liquet, quum
hic multis regionibus dominatam testetur,
olim meritò ipsam proprios reges habuisse:
de quibus Zacuthus in Jouchasin cum alibi,
tum f. 149. p. 2. *Obiit Cateb Eldin filius Zingi*
rex Mosalis,
& regnum ejus loco obtinuit Siph El-din filius
ipsius.

Pag. 62. l. 1. *Phelec*] Totum epitheton Arabicum est & scriberetur *مرهن القلك* quod sonat, *examen sphaerae caelestis.* Sensus, Josephum istum insignem fuisse astronomum, qui in orbis caelestes, eorumque motus inquireret.

Pag. 64. l. 3. *Religionis antistes*] Caliphæ in politicis & ecclesiasticis ita se gerebant, ut in utroque genere per se quoque quæ agenda erant

loco ab autore nostro scribuntur, ut de fede qua arca quievit amplius dubitemus, non fiunt: siquidem in isto montium Ararat spatium refedit, quod quatuor milliaribus ab insula filii Omaris abest; quæ insula f. Omaris inter Mozalem, cis Tigrin contra antiquam Niniven sitam, & Nisibin media, ab utraque distat itinere bidui. Porrò quum insulam istam proxime ad montes Ararat in Tigride statuit, Ararat non procul à Tigride collocat. unde liquet Ararat esse quem Gordiæum Ptolemæus aliique vocant. Quod omnino confirmatur his Elmacini verbis l. 1. Historiæ Saracen. c. 1. sub finem, quum ita de Heraclio,

صعد الى جبل جردى ونظر الى موضع الغلوك

ascendit in montem Gordi & aspexit locum arca, scilicet Noæ, ut ibi præcedit. Itaque arca, cum in Ararat esset, erat in Gordiæo monte. Vide, quam expedita hæc omnia de quibus multi disputant, atque hinc illustratur comma 4. c. 8. Genes. Cæterum si cui lubeat aliorum etiam ea de re conferre sententias & discursus, consulat iudicium doctissimi viri Nicolai Fulleri c. 4. l. 1. Miscell. similiter doctissimi Vvil. Schikardi Tarich pag. 27.

Pag. 61. l. 6. à fin. *Almozal*] Hæc non est ipsa Ninive; sed ab altera fluminis parte condita è regione rudera Ninives, ita ut

M 3 Tigris

motertio Hegiræ contigit terræmotus ingens in regione Palestina per triginta dies, quibus contremuit terra. Lib. eodem c. 13. tantum Antiochiæ dies quadraginta terræmotum fuisse scribit, ut urbem everteret.

Pag. 60. l. 5. à fin. *Duobus hinc itineribus*] Si verum dicit Benjamin, errant qui Haranem esse Charras Crassi clade nobiles affirmant: Charræ enim ad Chaboram flumen longe à fonte decurrens sitæ sunt; at Haran, ut testatur noster, superiori loco longe etiam (scilicet biduo) à fluminis ortu distat. Si prior sententia obtineat, Haran est quam nunc Orfam & Ophram vocant. At si nostri Benjaminii sententia admittatur, è situ constabit Haranem esse Edeffam Ptolemæi. Quæ à Syris Magog nuncupatur: de qua Ezech. 38. & 39. adeoque hinc liquet Ezechielem etiam de Seleucidis agere, qui istum tractum post Alexandri obitum obtinentes Judæis multa mala intulere. Quod verò flumen Haborem sive Chaboram in Mediam tendere asserit Benjamin, in eo admodum falli norunt omnes qui Ptolemæum aliosque Geographos inspexerunt. Inter Mediam & Mesopotamiam ubi Chaboræ fons & origo flumen Tigris interjacet, quo Euphrates fluvius est occidentalis, in quem Chaboras influit.

Pag. 61. l. 12. *Noachi arca*] Hæc quæ hoc loco

nem multis parasangis procul abfuerit.

Pag. 52. l. ult. *Decursus*] Hinc maximam lucem accipit comma ultimum c. 4. Deuter.

Pag. 56. l. II. à fin. *Caput Senatus*] De ordine sedentium in senatu, de capite & principe senatus aliisque notatu dignis consule doctissimum Coch in Sanedrin p.39. & seq.

Pag. 57. l. 4. à fin. *Asmodaeo*] De hoc Diabolorum principe dixi in notis ad Danielelem p. 146. ideoque non repeto.

Pag. 58. l. 17. Ne quem offendat ab Arabibus distingui Ismaëlitas : nam Judæis Ismaëlitæ quandoque generaliter dicuntur, qui Muhammedi fidem habent ; quandoque omnes ac soli Arabes ; denique soli Ismaëlis posterii, qui ab Arabibus genuinis vocantur *المستعربة*.

Pag. 58. l. penult. *Hominum millia*] Pagina 32 & 33. alius terræmotus Tripoli & in Judæa contigisse legitur ; hic iterum Hamathæ ultra Jordanem : adeo ut hæc loca calamitate ista aliquoties afflicta fuerint. Imo etiam ad plurimos dies : quemadmodum narrat Elmacinus Hist. Sarac. l 1. c. 2. sub finem, dum ait, في السنة الثالثة عشر الهجرة

عرضت رجفة شديدة يارض فلسطين
، ثلثين يوماً وبرزت الأرض
Anno decimo tertio

moniorum collatione liquet. Hujusmodi ergo longitudo voce כברה indigitatur, si כ fit radicale: sin vero servile, ברה erit milliare, quia adhuc veluti ברה restabat, inquit Moses; quasi dicas, non tota distantia ברה, sed eò quodammodo pertingebat. Si phrases eo modo propriè accipiantur, in interpretum & horum historicorum scriptis, jam liquere existimo, quid illo Mosis dicto contineatur. Alia quidem hic expendi possent; verum ea petantur è doctissimo & elegantis ingenii viro D. N. Fullero, Miscell. l. 2. c. 15.

Pag. 49. l. 2. à fin. *Schunem*] Quam hic errat! versatur adhuc circa Hierosolyma, ut narratio evincit; at Schunem est circa Aphec & montem Gilboah, ut liquet è 1 Sam. 28. 4. & historia ibidem sequenti. Ex hoc & similibus erroribus conjecturam facite lectores, quam fidem noster mereatur. In præcedentibus multos ipsius lapsus observavimus: quid ab ipso expectandum, ubi minori cum reprehensionis periculo in remotioribus locis lectori imponere potest? Porro ex priori illo errore deinde promanat alter, quum Schunem ipsi tribus parasangis Schilunte distat. Sane hic error excusari nequit: nam ubi fuerit Schunem è dictis liquet; & nemo paulo in S. literis exercitator locum Schiluntis ignorat, ut qui versus austrum à civitate Schunem

nem

tium disputant interpretes ; nam inter Ebraeos etiam est sententiarum diversitas, dum hic milliare, alius parasangam, nonnemo etiam *שבת* sive diurnum iter significari contendit; nec desunt qui certum designari spatium pernegent. Consulantur Abrabaniel, S. Jarchi, D. Kimchi, & R. Bechai. Verum primò notanda verba commatis 19. *Ephratha est Bethlehem*. Distabat ergo à Bethlehem *כברת הארץ*: atqui R. Moses f. Nachman, se oculis suis vidisse testatur, distantiam inter Bethlehem & Rachelis sepulchrum eam esse, quæ milliari contineatur. Ita enim R. Bechai ad Gen. 35. 16. *העיר הרמבן זל כי ראה בעיניו שאין ממצבת רהל לבית להם אפילו מיר*, testatur R. M. f. Nachmanis *in clytæ memoria, suis se oculis vidisse, non esse inter statuam Rachelis & Bethlehem ne quidem milliare*. Ergo *כברת ארץ*, si כ sit servile ut quibusdam placet, est *tanquam milliare terra*: sensus, milliare circiter intercessisse inter cippū istum & Bethlehem. Ideo Benjamin inquit *כחצי מיל* *dimidium circiter milliare*: sed cum præmittit *קרוב*, plusquam dimidio milliari distita illa loca fuisse indicat. Nam prope esse dicit circiter dimidium milliare; non vero remotum circiter dimidium milliare: illo distantia dimidio milliari major; hoc vero minor significatur. Itaq; spatium dimidio milliari longius, integro milliari brevius denotari, è testi-

M

monio-

dignum. Similiter è sepulchro Davidis Hyrcanus, cum aliunde non posset, pecuniam sibi congeffit, quam in usus necessarios converteret : quemadmodum Iosephus narrat Αλώσ. l. i. c. 2. pag. edit. Gr. 663. τὸν Δαυὶδ τὰ Φοιν ἀνοίξας, ὃς δὴ πλεοναστώτατον βασιλέων ἐγένετο, ἐ ἀνελόμην ἕπερ τριγίλια τάλαντα χρημάτων, τὸν τε Ἀντίοχον ἐπανίστηεν τὸ πολιορκίας πείσας τριακροσίοις ταλάντοις, καὶ δὴ ἡ ξενοδοθεῖν πρῶτον Ἰσδαίων ἐκ τὸ πειρασίας ἤρξατο, aperuit Davidis sepulchrum, qui regum ditissimus fuerat, & ablati plusquam tribus millibus talentis pecuniarum, cum Antiochum ab obsidione movit, trecentis id ei persuadens talentis ; tum etiam primus Iudeorum peregrinos milites è superfluis opibus alere incæpit. Non esse dubium existimo, quin si alicubi in spelunca sceptrum mensaque aurea, & corona aurea, denique aliud quod narrat Benj. aurum, atque argentum fuisset, Davidis sepulchrum ingressurus non fuerit.

Pag. 47. l. 11. à fin. *Dimidium milliare*] Si vera dicat Benjamin, jam solutam habemus obscuriorem illam quæstionem de כְּבֶרֶת הָאָרָא c. 35. Gen. ψ. 16. Cum Iacob Bethel discederet, atque Ephratæ jam appropinquaret, peperit Rachel Benjaminem: in cuius partu mortem obiit. Hoc evenisse, quum superesset adhuc כְּבֶרֶת הָאָרָא ut pervenirent Ephratham, narrat Moses. Quantum istud sit spatium

tium

Chrysoftomus inter miracula quæ suis temporibus edita sunt, hoc etiam commemorat homilia in Matth. 4. pag. edit. Commel. 28. *Ἰδαίων ἔν τῷ Ἱεροσολύμοις ναὸν ἀναστῆσαι ἐπιχρῆντων, πῦρ τῶν θεμελίων ἐκπιδήσαν ἀπαντας διεκάλυσε, Iudæis templum Hierosolymis edificare conantibus, ignis de fundamentis exiliens omnes prohibuit.* Nam Sozomenus & Socrates igne etiam opus prohibitum fuisse commemorant.

Lin. 16. *Etiamnum canalis*] Canalem in stabulis Salomonis non collocat; sed Hierosolymis superesse narrat: nam sic noster diversa quandoque conglomerare solet. De canali vide, si lubet, quæ pluribus exposui & auctoritatibus illustravi p. 109. & 108. codicis Middoth.

Pag. 46. l. 3. *Argento auroque*] Cui totam hanc fabellam persuadebit? Atque ut de structura hac solummodo agam, legimus quidem in Templo thesauros reconditos fuisse: ideo (l. 2. Machab. c. 3.) Simeon quidam ad Apollonium thesauros indicaturus profectus Heliodorum evocavit, qui illum raperet atque ad Seleucum regem deferret: licet divina potentia hoc impeditum fuerit. at de arcis spelunçæ, mensa coronaque aurea, auro & argento quibus palatium quoddam sepulchrale in spelunca tegetetur, nihil extat fide dignum.

ferunt. Itaque Bethalem esse Hierosolyma affirmant: quod interpretes hoc pacto excusant, ut istum scalæ situm respexisse dicantur. Sed hujusmodi, aliis occasionibus reserve-
mus atque in instituto pergamus.

Pag. 43. l. 2. *Visitur murus*] Hunc errorem testimoniis eversum habes iis quæ ad p. 41. l. 1. dicta fuere. Ex abundanti tamen insigne Dei iudicium adjiciam, quo impii Juliani & Judæorum conatum frustratus fuit, dum templi vetera etiam fundamenta miraculo quodam eruit. Nefarii Juliani auctoritate muniti Iudæi, templi restorationem moliebantur; sed (ut inquit Socrates Eccl. Hist. l. 3. c. 17.)
Διὰ τὴν νυκτὸς σεισμὸς μέγας ἐπιγυρόμενον, ἀνέβρασε τὸν λίθον τῆς πύλαις θεμελίων ἔνασ, καὶ πάντας διέσπασε, σὺν τοῖς ἑσκαφιδύοις οἰκήμασι,
noctu ingens terremotus excitatus, lapides veterum fundamentorum templi, ardore absumpsit, omnesque dispersit cum adificiis in proximo sitis. Similia habes apud Sozomenum Hist. Eccl. l. 5. c. 21. ubi sub finem etiam rem ut jam nuper factam testimonio oculatorum testium confirmat; dum adhuc vivere eos asseverat, qui ab oculatis testibus acceperint. Atque validam subnectit rationem ab experientia desumptam: quod Iudæi opus inchoatum, licet tanta muniti auctoritate & potentia, relinquere & ab incæpto desistere coacti fuerint. Quocirca beatus Chry-

Chry-

c. 34. p. edit. Græcæ 911. cladem lugenti, de urbe inter alia dicatur, *θεῶν ἱερὸν ἐν Βαθρῶν ἀνήγαγεν*, radicitus è fundamentis evulsa est.

Pag. 42. l. 9. à fin. *Aedes sancta*] Vehementer errat cum Templum sepulchri Domini nostri eo loco collocat, ubi *Ædes sancta* quondam structa fuit. Nam templum illud ab Helena in Calvariæ monte, loco istius fani Veneris ab Adriano constructi, erectum fuit. Nam Adrianus pro veteri Hierosolyma novam condēs, alio quodammodo loco ac spatio ita eam construxit, ut Calvariæ montem includeret. Satis ergo remotè ab *Ædis* priscae loco, hoc templum situm est. Quum verò subjicit, Omarem filium Elcitabi in propinquo fornicem ædificasse, jam dicta confirmat. Uti enim conjicimus ex Elmacino, ubi de hoc fornice agit l. 1. histor. Sarac. c. 3. non procul à fine; templum istud, cui fornicem adjecit, in Calvariæ monte fuit: siquidem ibi vocatur *كنيسة القيامة* *templum resurrectionis*; atqui Servator in Calvariæ monte surrexit. Porrò ubi Elmacinus ab Omare eum locum templo extruendo delectum dicit, in quo Deus cum Jacobo locutus sit; hoc ita forte accipiendum, quemadmodum Talmudici Deum veluti Hierosolymis cum Jacobo loquutum enarrant: ubi scalam Jacobi media sui parte Hierosolymis, supremâ Betheli respondisse ferunt.

rat. Muri ergo aliaque de quibus cum noster, tum alii in scriptis suis agunt, ex recentiori sunt structura, quam ut ad ea tempora referamus, quibus respublica Judæorum stetit. Hic quidem subsistendum in succinctis notis videbatur; verum quia eo modo Hierosolyma describit noster, ac si in ea urbe suo tempore hæc adhuc reliqua fuissent; nonnulla ex turri Davidis, palatium Salomonis, murus Templi occidentalis &c. ideo ex antiquiore etiam scriptore nugas istas refellam. priora suffecissent; sed sequentia robur addent. Josephus Judæorum doctissimus, ubi de clade Hierosolymitana agit, ἀλώσεως l. 7. c. 1. hæc inter alia scribit, κελύφει καὶ σὺρ τὴν τε πόλιν ἀπάσαν, καὶ τὴν νεὼν κατὰ σκάπην, jubet *Cæsar, totam urbem & templum funditus evertere*. Deinde tres turres Phasaelum, Hippicum, & Mariammen excipit, atq; aliquam muri urbis partem. Itaq; subjicit, τὸν δὲ ἄλλον ἀπαντὰ τὴν πόλεως περιβολὸν ἔτως ἐξωμάλισαν οἱ κατὰ σκάπῳντες, ὡς μηδὲ πώποτ' οἰκηθῆναι πῖσιν αὐτῶν ἐπὶ τῷ ἔργῳ τοῖς περὶ θῆσι, *totum vero reliquum civitatis ambitum ita complanavere qui eam evertebant, ut ne quidem unquam habitata fuisse, fidem amplius faceret accedentibus*. Ubi ergo istæ Benj. structuræ? Nedū ut post Adriani factum supra commemoratū remanserint. Quid de illis reliquiis post Adrianum? cum ab Eleazaro apud Jos. ἀλώσ. l. ult.

Pag. 41. l. 1. *Oppidum exiguum*] Ne quis hic erret, quasi ex priscis Hierosolymorum reliquiis ac ruderibus aliquid superfit. Cum respublica Judæorum deleta & urbs templumque vastata fuissent, Ælius Adrianus Imperator ulterius progressus fuit, atque Judaicæ rebellionis occasione hoc operam dedit, ne vel minimum ex antiquis ædificiis ac muris remaneret. Tum demum impleta omninò illa Servatoris nostri prophetia Matt. 23. 38. cum urbis primates alloquens ita concludit *relinquetur vobis domus vestra deserta*, &c. Nam antecedentia, quibus urbis præfectos politicos & ecclesiasticos alloquitur, domum hic totam urbis structuram significare edocent. Atque ut illa urbis & ædificiorum everfio magis constet, Nicephori verba, quibus eam describit, ascribere non gravabor. Itaque l. 3. c. 24. in hanc sententiam loquitur (Græca ad manus non sunt, ideo Latina subjicio) *Hadrianus quæcunque ex vetustis ædificiis reliqua adhuc fuerant, diruit prorsus, & solo ita æquavit, ut ne lapis quidem super lapidem permaneret.* & paulo post, *Civitatis pomeriis plurimum contractis, denudè eam suo sub nomine excitavit: & appellatione sua ei imposta, Aeliam vocavit.* non eodem spatio conditam; sed alio, quod vel l. 18. p. 44. agnoscit noster, cum Tisionem extra civitatem collocat, quæ olim in ipsa fuerat.

rat.

omnes mactant, *Et circumcidunt filios suos in gratiam columbae.* Hac de re vide etiam Bartenoram c. 7. sect. 1. codicis primi Talm. Quicquid dicant, posterioribus temporibus idololatria deferbuit. Itaque legem Moſis (eamque ſolam) recipiebant, atque ex ejus præſcripto multa faciebant: nam offerebant & cultū Deo præſtabant uti hic videmus; ſed ex loco quodam male intellecto, in monte Gerizzim. Unde lucem accipit Samaritanæ ſermo ad Jeſum Joh. 4. 20. *Patres noſtri in hoc monte adorarunt.* Deſignabat montem hunc apud Sichem, de cujus ſitu noſter Benjamin. Quum verò poſtea tribus literis eos carere ſcribit, id M Scaliger contra Serarium agens improbat c. 16. *Nam ipſi, inquit, manu ſua & totum Alphabetum nobis deſcripſerunt, & nomina Patriarcharum iisdem literis ad nos miſerunt.* Denique hoc de nomine addam, Judæos Gentiles & nos omnes Cuthæos vocare, atque eos oppoſnere Iſraëlitis ſive Judæis: quod paſſim in ipſorum ſcriptis videas. inſpice modo Maimonid. de damnis pecuniariis c. 10. ſent. 9. & D. Kim. Eſ. 24. 16. Non tamen me latet quandoque Cuthæum ſtrictius accipi, ut medius ſit inter Judæum & Gentilem: exem. gr. quum כותי *Cuthæum* & ארמאי, id eſt, *Gentilem* à Judæis & inter ſe diſtinguunt. quod præter alia loca edocet Gemara Babyl. Codicis de Idololatria fol. 26. p. 2.

Pag.

Matth. II. v. 23. *quæ usque ad cœlum exaltata.*

Pag. 38. l. 8. à fin. *Mosaica observatores*] Hi Cuthæi à Rege Assyriæ in Canaan missi Nergalem suum colebant; sed leonibus à Deo immissis, metu perculsi eò saltem perducebantur, ut Deum una cum idolo suo colerent 2 Reg. 17. Verum evenit sequentibus temporibus, ut relicta idololatria illa crassiori, Dei legibus per Mosen traditis propius adhærent. Idque tum imprimis factum opinor, cum Sanballathus Cuthæus genero suo gratificaturus (qui nisi filia patri remissa de sacerdotio periclitabatur, quod hujusmodi matrimonium sacerdotali generi probrosum & indecens haberetur) genero inquam aliud sacerdotium paraturus, templum in monte Gerizzim, venia ab Alexandro magno impetrata, extruxit. Nam generi societate adductus potens Sanballathus cum subditis idololatriam magis fugisse videtur. Licet Judæi odio Cuthæorū iis idololatriam manifestam ascribant, cod. עבוד' זרה f. 27. p. 1. גרזים הר לשם הר גרזים. *circumcidit* scilicet Cuthæus, *in nomen montis Gerizzim.* Hoc quid sit explicat S. J. pagina præced. cum inquit, מל לשם דמות יונה שמצאו בראש הר גרזים ועובדים לה עבודה כדאמר בהכל שוחמ' *circumcidit in nomen imaginis columbe, quam invenerunt in cacumine montis Gerizzim: cui cultum exhibent, uti dicitur cap.*

L 5 omnes

civitate fuit, vel ei proxime adhæsît; utpote à civitate nomen mutuatus. quin etiam civitas secundum hanc expositionem fons esse dicitur. Ista optime quadrant in eum qui istic etiam habitare voluit: nam ab ipso omnis *ὄνσι* *consolatio*, utpote qui omnibus calamitatibus nostris remedium præstet; ipse etiam *פונ* *fons* aquæ vivæ, utpote qui sit veritas & vita. Quomodo istam incolendo urbem, E-saiæ c. 9. prophetiam impleverit, pluribus docui notis illis quas Grammaticæ Mosis Kimchi jam olim inserui pag. 151. & seq. Cæterum quum civitatem fontem esse asserit, idem est ac si nihil ex illa civitate præter fontem reliquum esse diceret: quod sane cum minis illis convenit, quas legere est Mat. c. 11. 23. Olim erat emporium celebre ob situm commodissimum inter tribus quibus cingebatur: quo ad Jordanem & mare Genezareth ita conditum erat, ut in orientales tribus ac regiones transitum præberet. Sed hodie, quemadmodum oculati testes perhibent, vastatum est ut paucula tuguria & domunculæ tantum supersint. Quò authoris nostri verba etiam spectare autumo, quum fontem esse dicit. Tandem observari velim על הכרמל *supra Carmelum* de alto civitatis loco, non verò sola præstantia & situ magis orientali accipi posse: ut huc alludant Christi verba, ἡ ἕως τῆς ἑσπέρης ὑψωθεῖσθαι. Matth.

Matth.

ut quum de situ agitur. Hic sese dubium offert in hac Benjaminis sententia הוא מעין מקום על הכרמלי, quam reddidi, *ipsum carmelum primo aspectu superare videtur* : cui versioni & vox composita מעין & res ipsa favent. Nam מעין *ex oculo* formulam esse, quâ rei apparentia, externa species & similitudo significatur, neminem in Rabbinorum scriptis versatum negare existimo: etenim ut alia præteream, codex Berachoth multa exempla suppeditat. Notio hinc desumpta, quod oculus rei similitudinem &c. dijudicet. Loci etiam conditio astipulatur: nam præstantissimam istius regionis conditionem Josephus l. 3. de bell. Jud. c. 35. satis superque delineavit. Verumtamen ubi Josephi quædam verba diligentius expendo, alia in mentem venit istius sententiæ Benjamin. expositio. Inter alia Josephus dicto loco in hæc verba loquitur, *Regio της τῆς αἰερων ἀκρεσιᾶς, καὶ πηγῆς διάρδεται μελιωτάτη, καπερναύμ αὐτῷ οἱ ὀπιχώελοι καλεῖται*, *præter aëris præstans temperamentum & fonte irrigatur præstantissimo, quem Kapernaum indigenæ vocant.* Quid si igitur huc respexerit Benjamin, atque ejus hæc mens fuerit? *est fons loco quodam supra Carmelum.* Nam פַּיִם *fons*: & locus ac regio superior est Carmelo, id est, multo altius ad orientem ascendens, quam Carmeli mons in præcedentibus descriptus. Hic fons vel in ipsa

tur. Quis non videt, Pinteuchen & Panteuchenus inter se convenire? Et passim Judæos, peregrina sibi nomina proferentes, majori etiam differentia id facere videas. Quocirca huic meæ sententiæ, donec quis meliorem docuerit, meritò mihi inhæreere videor.

Pag. 33. l. 3. à fin. *Beeroth*] Ubi hæc atque similia lego, vix Benjaminem in terra sancta fuisse mihi persuadeo. nam p. 31. Jaboc ad Antiochiam; pag. 33. initio filios Ammon ad septentrionem terræ Canaan; & jam sub finem ejusdem paginæ Beeroth ferme in Meditullio sitam, apud Sidonem, dum eam cum Biroth eandem facit, collocat. Num hæc fidem invenient?

Pag. 37. l. 1. *Nitida*] Possset תפת etiam reddi *portuosa*; quia תפת *portus*: sed hujusmodi derivatio ita Hebræis in usu non est, ut Latinis quidem atque Græcis. Non tamen omninò displicet. Quomodocunque vertatur, epitheto quodam distinguenda hæc civitas maritima ab altera Gad trans Jordanem.

Lin. 21. *Capernahum*] Scribitur כפר נחם, unde noster exponit per *vicum consolationis*: non desunt tamen qui כפר נחם scribant, ac si amœnitatis vicum dixeris. Nam in Græco καπερναῦμ, ubi tam *y* quàm *n* elisa dici potest. Vera tamen & consueta prior lectio. Sed majoris momenti quod rem ipsam concernit:

ut

sequentis ripam sunt sequentes Gallipolis (Ptolemæo Callipolis) & Calas (Ptolemæo Cylla.) Quod verò æquales distantias inter Rodoston & Gallipolin, atque inter Gallipolin & Calas statuatur, fidem non meretur.

Pag. 30. l. 9. à fin. *Corucum*] Est Ciliciæ oppidum: cum verò Armeniæ hîc initium statuit, intellige Armeniam minorem.

Pag. 31. l. 12. à fin. *Pitivini*] Hunc Pitivinum facit Papam, id est, Patriarcham Antiochenum. At quis sit iste Pitivinus, nemo facile dixerit. Itaque omnino existimo scribam ex *vau* fecisse *jod* facilimo inter scribendum lapsu; similiterque *beth* & *caph* literas quam simillimas permutatas conjicio; denique primum *jod* esse indicium puncti dageç, in quod *nun* scævatum degenerare sæpissimè solet, autumo. Ergo pro פיטיבין scribo פיטיבין: id sonat Pitteuchen; & manente *nun*, Pinteuchen. Jam porrò an talis Patriarcha fuerit, & quidem Benjaminis seculo, expendamus. Benjamin seculo duodecimo vixit, uti initio exposui; præterea sub Emanuele Græcorum Imperatore, uti p. 25. testatur: at seculo duodecimo Patriarcha Antiochenus fuit quidam Sotericus Panteuchenus, quem officio movit idem ille Imperator Emanuel propter peculiarem quandam opinionem, quam Episcopus ille in officio Jesu Christi fovisse fer-

Latina & Græca vocabula; tum etiam ipsæ literæ: nam quod dicendum fuisse videatur פריפוס, אפריפוס non, neminem movere debet; siquidem hoc passim in Orientalium scriptis videas, ut sicubi peregrinæ voces à litera sçevata inchoentur, iis & sive lenem aspirationem ad commodiorem prononciationem præmittant. Tale est אספקלסור *spiculator*, & similia. In sequentibus nominibus præivit mihi magnus Scaliger.

Pag. 25. l. 9. *Medio templo*] Hæc de templo Sophiæ accipienda: nam quæ interfèruntur de multis templis, per parenthesis dicta censentur. Suspicio tamen cum ex orationis serie ac contextu, tum ex iis quæ ab aliis narrantur; pagina præcedenti lin. penult. פרות legendum ברות à ברא *porta*. Nam series, unum templum describi edocet: & vetus est fabula, templum Sophiæ tot habere portas, quot sunt dies anni. Hinc etiam videmus nostrum falsa veris immiscere, & ea quoque quæ non vidit ut perspecta narrare. Alioqui si פרות retineas, *fana* vertendum: nam ita passim, & hoc loco eandem vocem à nostro usurpari ex eo etiam constat, quod Sophiæ templum במה ipsi dicatur.

P. 29. l. 12. *Rodoson*] Olim dicebatur Perinthus. Urbs vicinæ Thraciæ, in Propontidis littore: quemadmodum ad Hellesponti sequen-

è situ liquere autumo. Hæc ideo, ne in ignotis nimium nos fatigemus : præsertim in tam vano scriptore.

Pag. 22. l. 19. *Seleuciam*] Plures sunt civitates, quæ eodem hoc nomine veniunt : sed quænam hæc sit, docet itineris instituti ratio. Itaque ea est, quæ Constantinopolin in hoc itinere præcedit. At talis Seleuciæ non recordor : non tamen nego quin Seleucia hic alicubi fuerit, cum Seleucus Antiochi filius novem Seleucias condidisse feratur. Verum Seleucia quam Seleucus unus ex Alexandri primariis successoribus condidisse legitur, non hic, sed procul in Asia quærenda est.

Pag. 23. l. 11. *Canistolin*] Canistolis videtur, quam vulgò *Canistro* dicunt : ubi Ptolemæus habet Canastream promontorium.

Lin. 17. *Inter montes*] Quis has nugas ferat? Propontis Constantinopolin & Abydum interjacet, lacus vel mare aliquod : noster inter montes eò tendi persuadere conatur. Transmittenda navibus Propontis; non verò terrestri itinere inter montes eò tenditur. Sed loca, locorumque distantias, & circumstantias itinerum ex auditu quoque referre videtur; nisi ipse etiam finxerit. Quare singulis refutandis non immorabor.

Lin. 6. à fin. *Præpositus*] אפריוס esse Præpositum, cum evincunt sequentia, ubi similiter

Arachus: nam à flumine, Achilon dici videtur, saltem Benjaminis seculo. Confirmatur per distantiam proximi oppidi Natolicon, quod Ptolemæo Azylea. Sane optime cum descriptione sequenti convenit. Sono tamen magis Achilon cum Alcipo congruit.

Lin. 8. à fin. *Crissam*] In textu est קרש *Kores*: ubi nihil Scaliger; rectè tamen A. Thyfius junior è locorum distantiiis *Crissam* esse observavit. idque montis Parnassi situs confirmat.

Pag. 20. l. 24. *Aegryphou*] Situs & distantia exigunt, ut Oropum Ptolemæi esse dicamus; vel vicinam Negroponte, quæ Ptolemæo Chalcis.

Lin. 4. à fin. *Iabusterisam*] Quæ sit ista *Jabusterisa* & *Robinca*, per quas triduo ab *Aegryphou* in Valachiam pervenire potuit, non facile dixerim: videtur tamen Valachiam latius extendere, quia Græciæ vicinam facit, qua ratione iter brevius fuerit. Sed mire depravata nomina iter ferme Constantinopolin usque obscurius reddunt. Conjecturis multis hic indulgere nolo: doctis etiam hic hærare aquam video. Ortelius ipse cum *Armilonem*, cujus in hoc Constantinopolin versus itinere fit mentio, describere vult, *Theodosiam* esse arbitratur in *Taurica Chersoneso*. Hoc fieri non posse ullo modo, satis è situ

Lin. 20. *Otranto*] Hanc esse eam, quæ Ptolemæo l. 3. c. 1. Ἰσπῆς nuncupatur, bene conicit Antonius Thyſius junior juvenis, ſi quiſquam, in Græcis auctoribus verſatiſſimus.

Lin. 27. אוקרופוס jam vulgò vocari Corfu obſervavit magnus Scaliger: eſtq; Corcyra inſula & ibidem civitas inſulæ cognominis. quæ licet à Sicilia longè diſtet, tempore Benjaminis Sicilia regi parebat; nunc eſt Venetæ ditionis.

Lin. 4. à fin. *Lapta*] In textu לבטה: Scaliger dubius quis locus designaretur, cum ſcripſiſſet in margine *Lepanto*, poſtea delevit, & cum hoc nomen, tum proximè ſequentia ut dubia reliquit. Mutato ב in ך *larta* legi poſſe exiſtimo. Quæ olim dicebatur Ambracia, in Epiro ſita: unde non procul proximè ſequens civitas Achilon. nec obſtat quod noſter כפר vicum vocaverit: nam de parvis oppidis etiam uſurpari כפר conſtat. Cujusmodi Benjaminis ſeculo erat Ambracia. Sed quia ס in ל mutato, vocalibus etiam mutatis, quas Rabbini non aſcribunt, legitur Sybota, vicus & portus in Epiro; hanc lectionem præfero: quia ex Corcyra transfretanti in Epirum, hic locus commodiſſimus erat.

Pag. 19. l. 4. *Achilon*] Nullus dubito, quin oppidum quoddam ad Acheloum flumen, vel non procul inde ſitum ſignificetur, forte

L Arach-

vocibus usus est: quarum una est Græcorum
 λυμω̄ consonis tantum transpositis, utpote
 cum in נמל eadem consonæ appareant; פורט
 verò est sonò idem cum portus. Ut ergo auc-
 tor utramque ad emphasin conjunxit; pari-
 ter in versione passim utramque convenien-
 tissime reddendam existimavi, licet una suf-
 fecisset, si sensum respicias. Ipsa civitas vide-
 tur esse Ptolem. Τέανον, in Apulia: nam Τέανον
 duplex est, reperitur enim etiam in Campa-
 nia. situs tamen in itineris instituti serie re-
 pugnat, si vera dicit noster Benjamin, qui
 sæpe lectorem fallit. Sed prætereundum non
 est, Beneventum male in maris littore collo-
 cari: hæc enim civitas inter mediterraneas à
 Ptolemæo l. 3. c. 1. collocatur. Verum omnes
 auctoris errores persequi non est animus; id-
 eoque sæpissime brevitati studens præteribo.

Pag. 18. l. 1. Michael de Bar] Ita recte verti
 דבר מיקלים docet situs: etiam Ptolomæus lo-
 co producto, in Apulia Βάεινον inter reliquas
 civitates recenset.

Lin. 7. Tarentum] Hic dicit esse Calabriae
 initium, cujus incolæ Græci. Quia Græci olim
 in Italia varias urbes condidere; inde Italia
 dicta fuit magna Græcia: sed cum Græci variis
 locis pellerentur, Calabria tantum hoc nomē
 retinuit, ut magna Græcia audiret. Atque huc
 respicit noster, quum incolas Græcos dicit.

Lin.

riam, quam de Tſobæ dunasta vel rege reportavit, describit autor l. 1. Chron. c. 18. & 2 Sam. 8. Verum quod de Puteolis ab eo conditis hoc loco adjicitur, fabulis reliquis annumerandum. Quemadmodum ubi hanc civitatem stupida inscitia cum Surento confundit: quum tamen aliquot miliaribus à se invicem distent. Insignis fuit civitas Puteoli, & ob justitiam celebris: unde etiam, teste Festo, vocabatur Dicearchia, quia olim justissime regebatur.

Pag. 15. l. 24. *Cum sibi à Davide*] Quis ad tantum stuporem non obstupescat? coætaneos facit Davidem & Romulum, quum Romulus trecentis circiter annis post Davidem regnare cœperit. quod in dubium vocari non potest; sed ex diversis historicis constat, & passim à Chronologis observatum, quorum verba repetere necesse non est in tanta luce. Huic parallelum est, quum Romulum talparum more in terram ac longissimas specus se recepisse fingit, sive eas metu Davidis, qui ante aliquot secula mortem obierat, excavasse scribit. Quis ad hujusmodi non stomachetur? si nos ita aberraremus, quàm superbe nobis Judæi insultarent. Hujusmodi à lectoribus colligenda, & Judæis, quum suos magistros crepant, in os regerenda.

Pag. 17. l. 8. à fin.] *Διπλω*] Auctor duabus voci-

aliquando fieret , ut אב Judæorum mensis cum Julio idem haberet initium , mensis Lunariorum conditio istam convenientiam proximo anno immutaret. Porro quare nono die mensis אב istum sudorem manare fingat, in causa est sententia de Israëlitibus in deserto sternendis olim lata & Hierosolymorum ac templi vastatio: nam utramque hanc Israëlitarum calamitatem diei nono assignant. Tantum consulatur paraphrasis Chaldaica Lament. Jer. c. i. v. 2. Hic cum paraphrastes priorem causam enarrasset, de secunda eaque primaria subjungit: Nebucadnezar צדא ית ירושלים ובית מקדשא דאב אוקיר בנורא בתשע יומין בידחא דאב *vastavit Ierusalem & domum sanctuarii combussit igni nono die mensis Ab.*

Pag. 14. l. 8. *Capua*] Capuam meritò laudat, licet aquæ insalubres essent. Nam Capuanæ deliciae tantæ, ut Annibali exitio fuerint: cum ipsius exercitus voluptatibus abutens iisq; effœminatus fortitudinem omnem exuisset, ipseq; etiam Annibal sibi deinde aliquandiu similis non videretur. Sane illecebras ac voluptates huic urbi tribuit Livius Decad. 2. l. 3. c. 4. *Prona semper civitas in luxuriam, non ingeniorum modo vitio, sed affluenti copia voluptatum, & illecebris omnis amœnitatis maritimæ terrestriisque.*

Lin. 9. à fin. *Hadar-Ezer*] Davidis victoriam,

statuas, sicuti utrobique conjunguntur omnes literæ; Benjaminem ut in *Monpeſtier* transfereſſendo, ita & hic ad partium ſignificationem in voce *Regillianus* reſpexiſſe puto. Illic in *Monpellier*, mons ab ipſo reddebatur מן; ita hic Rex omiſſa ultima litera x, redditur מל pro מלך dempta ſimiliter ultima litera ך. alteram vocis partem retinuit, ſed ut fieri ab iſtis Judæis ſolet, corruptam. Hinc ergo מןגלבן pro *Regillian*. ſubſtituitur. At palatium illud quod trecenta & ſexaginta palatia in ſe complecteretur, & tria milliaria pateret, quis vidit præter hunc Benjaminem, vel potius quis ſe vidiffe ſcripſit? quod enim non eſt, videri nequit. Hinc tamen, quod numerum trecentorum ſexaginta æquare anni dies adjiciat, in hac ſententia confirmamur, vetuſtum & uſitatum fuiſſe computum, quo ſingulis annis 360. dies aſcriberentur. Quod cum ab aliis viris doctis probatum ſit, inde calculum noſtrum ad Dan. 9. in ſeptuaginta ſeptimanis computandis juvari, ibidem oſtenditur. Denique cum prælio in iſto palatio centum millia cecidiſſe ſcribit, præliumque in parietibus exſculptum, eandem fidem atque in præcedentibus meretur. ſed quiſ omnes Judaicas nugas recenſeat? vide & p. 13. circa medium.

Pag. 13. l. 10. *Basilica S. Stephani*] In textu Rabbi-

Tarquinius perpetua successione ac serie Imperatores habuisse; eosque singulos sua Romæ habuisse palatia usque ad Pipinum. Præterea quis Titum à senatu rejectum scripsit, quod triennio, non biennio Hierosolyma cepisset?

Lin. 18. *Galbini*] Quis sit iste Galbinus, quem inter reges sive potius Imperatores collocat, ignoro. Forte legendum Galba: nam Rabb. גלבא facile in גלבין degenerare potuit; siquidem in antiquissimis codicibus manuscriptis & Rabbinicum pingitur ut גלבין nisi quod cauda טען non adeo protrahatur. exempla istius scripturæ habeo multa in codice Maimonidæ: qui tempore Maimonidæ scriptus putatur, quemque à viro doctissimo & N. Gerardo à Renesse accepi mutuò. Fieri igitur potuit, ut Benjamin גלבא scripserit, scriba verò descripserit גלבין. Fortassis etiam Clodium Albinum Imperatorem designare voluit; qui ab albedine nomen habuit, quod cum nasceretur candidissimus esset. Verum enim verò ubi exactius veterem scripturam expendo, Imperatorem Regillianum indigari posse video. Nam in utroque codice est גלבין מלך, id est, regis scilicet palatium, regis inquam *Galbini*, si statuamus in secunda voce, מל pro מלך poni usitatissima Judæis in scribendo apocope. at si גלבין unam vocem

statuas,

dinem ipsius describit, مدينة رومة مدينة
 عظيمة الدور يذكر ان محيطها تسعة اميال
*Vrbs Roma est urbs magna quoad circuitum. commem-
 moratur, illius ambitum esse novem miliarium.* Hæc
 inter se quam longissimè distant: Judæus no-
 ster viginti quatuor ponit miliaria; Arabs
 verò novem miliaribus totum ambitum cir-
 cumscribit. Sed de Romanæ urbis amplitu-
 dine consulito Georgium Fabricium in sua
 Roma & Onuphrium Panuinium lib. i. com-
 mentariorum Reipublicæ Romanæ. Ante-
 quam ad sequentia pergam, hoc addendum:
 Benjaminem verbis suis conciliationem et-
 iam suppeditare, quum utramque Romæ re-
 gionem se complecti indicat. Verba hæc sunt,
 בין המישב והחרב *quà habitata, quà vastata:* quasi
 dicat, urbem olim multo fuisse amplio-
 rem, quam hodie conspiciatur, & si vastatam par-
 tem excipias, istud relinqui spatium, quod
 multo minori ambitu circumscribatur; at va-
 stato loco simul comprehenso, circuitum ad
 viginti quatuor miliaria extendi.

Pag. 12. l. 1. *Regnum usque Pipini*] Pipinus
 huic dicitur פפוס Pipus; nisi litera *p* forte scri-
 barum incuria fuerit neglecta. Sed hoc mit-
 to; in cæteris quanta hîc se prodit rerum Ro-
 manarum ignorantia? Quis unquam Græco-
 rum aut Latinorum scripsit, Romanos inde à

Tar-

انها كرسي اعظم من كرسي الاربعة
وبانطاكية كرسي وبلاسكندرية
ايضا كرسي وببيت المقدس كرسي
*Ipsa est sedes maxima inter sedes quatuor, & Antio-
chia sedes est, & Alexandria etiam sedes, & in domo
sancta, id est, Hierosolymis sedes est.*

Pag. 11. lin. 22. S. Petri] Nubiensis etiam
Pauli nomen addit, aliaque subjungit, quæ
non prætermittenda duxi. من داخل المدينة
كنيسة عظيمة بنيت على اسم بطرس
وبولس الحواريين وهما فيها في قبرين
وطول هذه الكنيسة ثلث مائة ذراع
واركانها من نحاس مفرغ وسكها
كذلك مغطي بالنحاس الاصفر
*Intra urbem templum magnum est constructum ad
nomen Petri & Pauli Apostolorum : ipsique istic in
duobus sunt sepulchris. Longitudo hujus templi tre-
centorum cubitorum : ejus columna ex are fuso ; &
parietes similiter obducti are flavo.*

Lin. 30. Viginti quatuor] Ambitus hic major
est, quam Nubiensis Geographus exprimit :
cum enim de urbe Roma ex professo agit, &
quæ maxime observanda duxit concisè &
compendiosè annotat, hisce verbis amplitu-
dinem

Gemara Talmud qui proximè sequuti sunt, audiunt נאוים *illustres*. De quibus singulis videndus & consulendus liber cui titulus Hali-choth Olam, ubi ista omnia transtuli.

Pag. 10. lin. 13. Ducunt] in textu originali יוצאין ונכנסין בספינות *egrediuntur & ingrediuntur (cum) navibus*: quod sensu cum eo convenit, ac si dicas, *ducunt ac reducunt naves*. Sed ideo posteriorem versionem adhibui, quia apud Orientales & imprimis Arabes, præpositio significans *in* (& eo casu *cum*) subjuncta verbis adventus & discessus, ut per *adducere, auferre* & similia, tum verba exponantur, efficit. De qua loquendi formula plura vide pag. 123. Codicis Middoth, ubi exempla apposui.

Lin. 23. Caput] Nubiensis ecclesiasticam politiam considerans, Romam non omnium Christianorum caput; sed unam è columnis Christianorum esse dicit: ركن من ارکان *columna est* (inquit) è *columnis Nazærorum*; id est, Christianorum. Qui paragraphus observatione dignus: quandoquidem conditionem ecclesiæ nobis exprimit; dum alias etiam tres ecclesias ipsi associat, ut officio & potestate consortes, licet Romanam sedem magnitudine præcellere dicat. Verba subicere non gravabor, quò res fiat liquidior:

انها

Lin. 19. *Iuda &c.*] Hujus filius R. Samuel More Nebouchim Maimonidæ in linguam Ebræam ex Arabico exemplari transtulit : ut legimus in Jouchasin fol. 131. p. 2. ubi duarum versionum fit mentio : sed prior tantum approbatur. Atque is Samuel etiam filius Tibbonis dicitur ; quamvis hoc fuerit patris epitheton. Scripsit idem vocabulorum philosophicorum elucidationem , quam magni facio ob creberrimum illius usum. Antequam ulterius me confero , hic operæ pretium est annotare verba illius Abrahami Zacouthi in Jouchasin eodem fol. אירע לספר המורה ולספר אירע ששרפו אותו *contigit ut liber More , id est, Doctoris, & liber Maddah , id est, scientiæ (R. Mosis f. Maimonis) comburerentur.* Verum opposuere sese plurimi, inter quos R. D. Kimchi, qui, ut idem ibidem narrat , hac de re ad Rabbinos hujus oppidi Lunel perscripsit. Nimirum ut motus componerentur, qui tandem sedati fuere.

Pag. 8 l. 22. *Illustrissimos*] Rabbinicè גאונים : quomodo propriè nuncupantur doctores antiqui, qui proxime Talmudis authores exceperunt. Nam Misnæ sive textus Talmudici doctores הנאים nuncupantur ; commentariorum vetustissimorum sive Gemaræ authores dicuntur אמוראים , hisce tamen סבוראים quædam addiderunt ; post absolutum è Misna &

patriâ Vitrensi, qui preces illas confecit quibus contra Christianos & Romanum regnum, Deum implorant. Quia verò ille Salomon scripturam & pleraque Talmudis explicavit, ideoque magnæ inter Judæos est auctoritatis, idcirco è libro Jouchasin quædam addere non gravabor, quibus ætas ipsius &c. magis innotescant. Quamvis de natali oppido secus sentiam, uti & nomen Jarchi suadet. Verba Jouch. hæc sunt הרב ההסיד והמאור הגדול רבינו שלמה בר רבי יצחק מטרויש צרפתי קבל גם כן מר' גרשום וספריו ידועים הם ישלם ה' פעלו ונקרא בפיו החכמים פרשנתא רל מפרש הדת ונפטר הוא ור' שמחה תלמידו שעשה מחזור ויטרי שנת תתס"ה והיו ימי שמה *Magister ille pius, magnumq; luminare, Doctor noster Salomon filius D. Isaaci Trecensis Gallus, ipse etiam doctrinam hausit à R. Gerschonio. Libri ejus notissimi sunt: rependat ei Deus mercedem suam. Sapientes ipsum saepe vocant Parsandatha, hoc volo, interpretem legis. Hinc migravit cum ipse, tum R. Schimha ejus discipulus, qui fecit circulum, id est, librum precum ordinarium (Vitrensis erat)* anno 865. id est, J. Christi 1105. Vixit S. Iarchi annis septuaginta quinque. Cæterum mortis tempus evincit, Benjaminem dum Judæorum magistros aliosque in istis civitatibus, quas describit, commemorat, non tantum suo tempore viventes recensere; sed eos quandoque qui obierant.*

Lin.

hendatur. Ubi cum ex re ipsa, tum aliunde ex adjunctis expositionibus liquet, *חזן* eum esse qui & pueros doceat & ipse etiam populo Scripturam sacram prælegat. Quin etiam Scripturam exponit aliquando *חזן*: unde in sequentibus alicubi Benjamin Doctorem sive Professore in schola & *חזן* *Concionatorem* in synagoga ut communes cœtus Judaici præfectos conjungere videtur. Itaque *חזן* etiam *שליח ציבור* cœtus ipsius legatus dici consuevit, utpote ecclesiæ nomine suum munus administrans. Qui etiam sacerdotis (quem vocant) munere in benedicendo fungi nonnunquam potest, nedum concionari: unde in Josepho Karro legimus ad caput 14. Maimon. de precibus, *יכול להיות החזן כהן chazan sacerdos esse potest*. Denique *חזן* etiam nuncupatur licitor vel potius carnifex: ut manifestissime liquet cod. Maccoth c. 3. paragr. 12. ubi ejus munus in flagellando describitur.

Lin. 18. *Selomo*] hic ille est, qui vulgo audit *רשי*, id est, *Rabbi Salomon Iarchi* (potius *Ierachi*) & *ירחי* quidem cognominatur ab hac civitate Lunel, quæ à Luna nomen habet: nam hæc Ebraeis *ירח Iareach*. Quanquam à patre suo secundum eandem abbreviaturam *רשי* dicatur etiam *R. Salomon Isacides* *ר' שלמה יצחקי*: patrem enim habebat Isaakum. Obiit anno Servatoris nostri 1105. cum discipulo suo

K 3

patriâ

Lin. 17. *Samuel praelector*] In editione Constant. legitur קן *senex*: sed melius Brisgoæ editus codex קן: nam ut sequentium epitheta, sunt officiorum nomina; pariter & hic officio ab aliis ejusdem nominis distinctus fuit. Porro קן quid sit è scriptis Talmudicis liquet: ubi triplex munus eo nomine designari reperio. Codice *Bava Metfia* c. 7. f. ed. Ven. 93. facie secunda, custodes civitatis ea voce insigniuntur: prout glossa S. Jarchi enarrat ad illa verba, quibus de ejus reatu disputatur, qui non satis suæ curæ commissa servasset. Ibi civitatis custodes minime culpa vacare, si aliquod infortunium accidisset, traditur his verbis, החם בהוני מתא *istic*, scilicet agitur, *de custodibus civitatis*: ac si diceretur, etsi alii, hi tamen excusari nequeunt. Ubi S. J. שומרי העיר בלילה *custodientes noctu civitatem*. Verum hæc significatio in nostro, quo de agimus, Samuele locum non habet: huic enim civitatis custodiam non assignarunt Galli. quare aliam notionem quæramus. In codice Schabbath c. i. parag. 4. statuitur, ne vespera sive pridie Sabbati, circa Sabbati inirium קן legat; sed tantum pueris ostendat, quid legere debeant: ne forte aptet lucernam quò clarius ac distinctius videat, id est, ne admota lampade oleum ellychnio affundat, itaque contra interdictum de non accendendo igne in sabbatho venire deprehendatur.

gione Pharifæus effet; ideo inquit פרוש: quamvis magis ad nominis à separando dicti etymologiam respexisse videatur; uti sequentia suadent, quibus separationem illius à negotiis mundanis & comedenda carne enarrat. Alioqui, quantum memini, Pharifæorum institutum id non exigebat, ut à carne abstinerent; modò cibi mundi apponerentur: nam ab immundis se separabant. Notanda verba Nathanis in Aruch ad vocem פרוש quam ita explicat: designare virum שפירש עצמו מכל טומאה ומן מאכל טמא ועם הארץ שאינו מדקדק במאכל *qui seipsum separat ab omni immunditia & à cibo polluto, denique à communi populo, qui anxie cibum non examinat.* Quemadmodum autem Pharifæi epitheton honorificum habebatur; sic Paulus cum ad Philippenses contra falsos Judæorum doctores disputans, se ipsis minorem non esse ostenderet, ne quidem si ad ea attendere vellent, quæ apud Judæos magno loco haberentur, inter alia inquebat Phil. 3. 5. Fui $\text{\textcircled{X}} \nu\omicron\mu\omicron\nu\ \Phi\alpha\epsilon\iota\sigma\tilde{\iota}\text{\textcircled{C}}$. cui simile quod in oratione illa Act. 26. 5. dixisse legitur, $\text{\textcircled{X}} \tau\omega\ \acute{\alpha}\kappa\epsilon\lambda\epsilon\sigma\iota\tau\omega\ \acute{\alpha}\iota\pi\epsilon\sigma\iota\nu\ \tau\ \acute{\upsilon}\mu\epsilon\tau\epsilon\tau\alpha\varsigma\ \theta\eta\sigma\kappa\epsilon\iota\alpha\varsigma\ \acute{\epsilon}\xi\eta\sigma\alpha\ \Phi\alpha\epsilon\iota\sigma\tilde{\iota}\text{\textcircled{C}}$. Ex eo vero quod istam $\acute{\alpha}\kappa\epsilon\lambda\epsilon\sigma\iota\tau\omega$ *exquisitissimam*, contingit ut pios & devotos Talmudici vocarent פרוש: uti etiam nostrum hoc loco eam vocem usurpasse autumo.

Lin. 5. à fin. *Tutelam*] in originali עומדים
בפרץ. desumpta est phrasis è Psal. 106. 23. *nisi*
Moses עמר בפרץ *stetisset in illa irruptione*: Deus ob
idololatriam populum in deserto perdidisset,
nisi Moses intercessisset & Dei veluti in Israë-
litas hostiliter irruptentis imperum precibus
sustinuisset. ideo bene Chald. דקם ואתקף בצלו
qui obstitit & strenuè rem egit precibus. Hæc phra-
sis propriè de iis dicitur qui alios ab ingruen-
te malo eripiunt, atque se periculis objicien-
tes pericula averruncant. Hujusmodi quid
quia Moses fecit precibus, ideo Chal. addit
בצלו; Arabs verò, quia solennis pœnitentia in
hujusmodi casu plurimum valet, reddere

maluit, **قَامَ بَيْنَ يَدَيْهِ بِالتَّوْبَةِ**
nisi stetisset inter manus ejus cum pœnitentia. Vbi
èν παράδω adjiciam, hanc formulam بيد يديه
inter manus ejus, isti interpreti (ut & aliis) pas-
sim significare *coram, ante ipsum*; adeoq; hisce
verbis hoc loco reddidisse Hebr. לפני *coram*
ipso. Sic usurpatur à Georgio Elmacino in
vita Imperatoris Alis: cum hæc morientis de
occifore verba refert **أخاصمه بين يدي الله**
accusabo eum inter manus Dei, id est, *coram*
Deo. Ubi phrasis eadem.

Pag. 6. l. 9. *Separatus*] Auctor noster huic
doctori maximæ laudi putabat fore, si reli-
gione

quis suspicetur. Puta Africæ urbem vel regionem quandam maritimam navigationibus celeberrimam: vulgò Alger. Huic enim è regione objacet, licet magis ad Occidentem vergens, Mons-Pessulanus, id est, Montpellier: ideoque facile ab illius loci mercatoribus frequentatur. Itaque Alger sive Algier forte nostro *Algeria* dicta, ita ut scribæ vitio in 7 degeneraverit. Ptolemæo alio nomine dicitur, Σάλδαι πολώνια.

Lin. 17. *Vnà cum*] 7י 7י hoc loco non operam & ministerium aut causam significat, uti existimatum fuit; licet ista notio sit frequentissima: sed conjunctionem & præsentiam, ut Jobi 1. 12. ubi 7י 7י 7י est *apud, coram illis*, ideoque Chald. vertit 7י 7י 7י *ad latera eorum*; & A. E. expressius 7י 7י 7י *in loco ubi erant*. Sicuti 7י pro loco accipitur Deut. 23. 12. & à Græcis τόπος redditur.

Lin. 6. à fine, *Benefici*] 7י 7י *Domini justitia*, 7י λέξις: sed pro liberalitate in pauperes, justitiam dicere consuevere Rabbini. Nec hi tantum; sed Paulus quoque nonnunquam ita loqui amat: ut 2 Cor. 9. 10. *Deus augeat fructus justitiæ vestræ*, id est, eleemosynæ vestræ sive liberalitatis & benignitatis in pauperes. Apostolus autē ita loquitur, quia præcedens com. è Ps. 112. 9. desumserat, ubi Psalter nomen justitiæ similiter ad eleemosynam restrinxerat.

K

Lin.

Lin. 8. *Muhammed*] Nec Idumæi, nec Ismaëlita ponuntur hoc loco pro speciali gente, ut existimat nonnemo; sed, quod in Judæorum scriptis versato vel indicasse sufficiet, ארורים pro Christianis, ישמאל pro Muhammedanis, Turcisque omnibus usurpatur: prout ex commentariis R. Jahjæ in c. 11. Dan. Alschech Pf. 110. Abrab. Ef. 53. 9. aliisque patet. Itaque hic primum in genere populos distinguit; deinde speciatim varias nationes proponit, addita etiam gente Israëlitica. Edomæos autem Christianos esse volunt, ut multa quæ Deus olim Edomæis minatus est, in Christianos derivent. Muhammedanos autem eosdem cum Ismaëlitis faciunt: tum quia Muhammedis genus ab Ismaële deducitur; tum etiam quia Ismaëlita ipsis propriè sunt Arabes, qui Muhammedis placita primi receperunt.

Lin. 9. *Algarbia*] אל ערה videtur esse Algarbia, cujus incolæ Ptolemæo Ταρδαλανοὶ nuncupantur; ita ut *y* valeat *g*: notum enim est Græcos γο. passim literam *y* per *g* etiam expressisse: quod docent varia locorum nomina, ut עמרה Γόμορρα, &c. unde noster quoque Judæus *g* per *y* exprimere forte non dubitavit. Sed quia Algarbia est regio Hispaniæ, quam postea distincte commemorat, alium locum à nostro designari non immeritò quis

in terra sancta non civitatis, sed montis (ad quem tamen esset civitas) nomen fuisse: nam civitas dicebatur quandoq; *המנה סרה*, quandoque *תמנה הרס*, per literarum transpositionem in voce posteriori. Porro *המנה הרס* est *similitudo* sive *imago solis*: quia enim in celeberrimo isto prælio, quod Judicum 10. describitur, sol substiterat, ideo sepulchro Josuæ solis imaginem impositam volunt Judæorum plerique; civitatemque à solis imagine denominatam, quod ibi istud sepulchrum solis imagine ornatum conspiceretur. Etsi non ignorem quam utriusque nominis *הרס* & *סרה* etymologiam ab hac diversam tradat D. Eliezer: verum eam satis insulsam proponere supersedeo. qui eam cognoscere desiderat, codicē Baba Bathra inspiciat, ubi octonarii כ fol. pr. pag. 1. edit. Constant. (ea enim editio octonariis tantum literarum distincta est) sententia duplex in Gemara proponitur. Cæterum non est prætermittendum, in *הר געש* id est, *Monpeslier* natū fuisse Salomonem Abrahami filium: qui tantos motus per Gallias concitavit contra R. Mosen, postquam ejus liber *More Nebuchim* in linguam Ebræam conversus fuisset. Ab illo enim ejusque discipulis accensa face, se invicem diris devovere Judæi: sed liber tandem ab omnibus approbatus fuit.

Lin.

propior erit. Nam tum parasanga quatuor continens milliaria secundum Judæos, dimidium tantummodo longitudinis explebit, quam altera sententia statuit. quod quî cum aliorum quorundam virorum mensuris conveniat, aliaque nonnulla de hac re, distincte in epistola ad lectorem proposui: ubi quæ hic observanda sunt, annotata fuere.

Pag. 5. l. 2. *Vocatur Monpeslier*] Hebraicè שגג 77. Hoc nomine fuit locus quidam in terra sancta, ad cujus partem septentrionalem sepultus Josua. Fingunt autem Judæi hunc montem contremuisse ac commotum fuisse, quum Israëlita non satis Josuæ mortem lugerent: atque ex illo motu nomen accepisse. Ad eundem montem nobilis erat civitas: ideoque isti Gallorum emporio *Monpeslier* Judæos idem indidisse nomen autumo. quia non tantum *Mons* ipsis est 77; sed etiam שגג motum tremulum notat, cujusmodi in πάλω animadvertitur, quum Græci Philosophi palpitationem cordi tribuentes dicunt, πάλω ή καρδια. Vocis autem πάλω reliquiae in compositis Gallorum & Hispanorum dictionibus remanent. Itaque *Monpellier* & πόδα reddere voluerunt שגג 77. Ptolemæo dicitur Α' γαθη πόλις, Latinis *Mons-Pessulanus*. Cæterum, quamvis Judæis ista civitas isto nomine שגג 77 veniat; tamen observandum שגג 77 in

in

dotus p. 219. edit. H. S. *ἡ δὲ ἀσάγγα καλεῖται οἱ Πέρσαι τὰ τεράκοντα στάδια, Persæ singulas parasangas vocant triginta stadiorum spatium.* Ita Helych. *ἡ δὲ ἀσάγγη, inquit, ἐστὶ μέτρον ὃδὸς τεράκοντα στάδια ἔχον, mensura viæ triginta stadia complectens.* Quandoquidem autem *פרסה* secundum Judæos exactè quatuor *מילין* continet (sicut Abrab. in Dan. f. 104. *כל פרסה ד' מילין*) expendamus horum longitudinem. Rabbi Bechai in legem (f. 162. si rectè memini, sed dubito, saltem alicubi) unicuique *מיל* bis mille cubita assignat; uti & Maim. de precibus c. 4. sect. 2. *ארבעה מילין שהם שמונת אלפים אמה, quatuor milliaria, quæ sunt octo millia cubitorum: ergo milliare 2000 cubitis constat; quibus singulis si quinos palmos tribuas, ultra dimidium milliare non conficient.* Milliare enim parvum est mille passuum, passus autem pedum quinque, pes denique palmorum quatuor; ita ut vices mille palmi, uno contineantur milliari: at bis mille cubita eaque singula palmorum quinque, in universum, summam tantum reddunt decies mille palmorum. Vulgò tamen *מיל* pro milliari passuum mille accipiunt. Verum si hæc sententia retineatur, *ד'* illud mendosum esse suspicor; sin R. Bechai sententiam approbemus, manente *ה'* auctoris nostri assertio veritati pro-

pro-

naica Aphricæ regione ; illud vero בִּירֶשׁ in Gallia Narbonensi. Est igitur בִּירֶשׁ Βασιλειαν Βατιρα; etsi nomen Ebræum ad illud magis, quam hoc oppidum voce accedat. Vulgò dicitur *Besiers*.

Lin. 29. *Sunt parasangæ quatuor*] Constante in utroq; codice Ebræo legitur ד' פרסאות: attamen tanta non videtur inter Narbonam & Βατιρας distantia. Id quo liqueat magis, quædam de פרסה, quum frequenter in hoc libro occurrat, delibanda sunt. In Gemara codicis Berachoth per R. Alphesum contracta, folio mihi 65. p. 1. ita legitur, אסור להלך בערבי שבתות ותר על ג' פרסאות דאיונון יב מיר *vetitum est ne quis pridie sabbathi ultra tres parasangas iter producat, quæ duodecim milliaria complent.* Unde hoc habemus, parasangam definiiri milliariibus quatuor: nam si tres parasangæ sunt milliaria duodecim; una tertiam partem illorum 12. id est, quatuor milliaria continet. Ita in Jouchasin f. 156. Lisbona in Lusitania ab urbe Kalikout in extrema Asia, dicitur distare ותת פרסאות ג' אלפים, 3800 parasangis; quæ ibidem conficere affirmantur כמו טו אלף ור' מיליון, 15200 circiter milliaria. unde sequitur parasangam continere milliaria quatuor. Quæ non multum à communi sententia differunt, si מיל sit milliare mille passuum. nam in eandem ferme sententiam Herodotus

dotus

Venetæ, de discipulis sapientum legimus, בומן שרבים צריכים להם, *quando multi iis indigent:* adeo ut provectiores describantur, quorum opera populus jam utitur. Itaque quemadmodum Græci pro sapientum titulo, assumerunt humiliorem, & se sapientiæ amatores, id est, Philosophos dixerunt; sic Judæorum etiam doctores sæpe non sapientes, sed sapientum discipuli, id est, sapientiæ studiosi dicebantur. Sic Maimonides cod. דיעות. c. 5. sapientes & sapientum discipulos pro iisdem habet: ubi etiam virtutes prolixè describit, quibus sapientū discipuli ornari debent. Codice verò תלמוד תורה c. 6. sect. 11. Doctores, Legati & Prophetæ Dei vocantur Sapientum discipuli. Licet alibi à Sapientibus ut superioribus distinguantur.

Lin. 28. *Batira*] In Hebræo est בידרש. Annon prima fronte unius literæ transpositione esse videtur oppidum Debris? de quo Plinius l. 4. c. 5. quiddam notatu dignissimum his narrat verbis, *Vltra montem est Debris affuso* (vel ut alii legunt *effuso*) *fonte à medio die ad mediam noctem aquis ferventibus, totidemque horis ad medium diem (regentibus, lege) rigentibus.* Et quo magis eundem locum esse existimes, Ptolem. l. 4. c. 6. vocat Βέδειρον *Bedirum*. Sed ut idem sit oppidum nullo modo permittit situs: hoc enim Plinianum, *Debris*, est in Cyrenaica

naica

uxore enim Adami agitur, quæ ipsi Adamo fuit similis. Ideoque paraphrasis Hierosolymitana expressius quam Onkelos & LXX interpretes, habet *בַּר נִפְיָק בֵּיה* *sicuti tendens* sive *egrediens ad eum*: cujusmodi formula Judæi passim similitudinem exprimere consueverunt; quum pro *simili* vel *similibus* dicunt *כִּיּוּצָא בּוּ* vel *כִּיּוּצָא בֵּם*. Idem est *כַּנְגַר* *tanquam* (*contra*, è regione) si cum affixis componatur, ut hic in scriptore nostro & Gen. 2. Cujusmodi quid etiam apud Græcos invenire est: nam per *ἀντι* quod in compositione quoque est *contra*, similitudinem exprimit Homerus in voce *ἀντιθεῖς*: qua ipsi non solum qui Deo contrarius est; sed etiam qui Deo est assimilandus designatur.

Lin. 25. *Sapientie stud.*] Miretur quis, quæ inter discipulos sapientum ipsi Rabbinii censeferi queant, quod hic fieri videmus. Sed è codice *תלמידי חכמי קדושים* *de sponsalibus* observa non tantum dici pueros ac juniores discipulos; sed etiam adultiores, qui etsi ab his discant, illos tamen docere possunt. nam f. 37. p. 1. editionis Sabionetensis, cum in Gemara explicant comma 32. c. 19. Levit. *coram canitie assurgito*, ea de honore filiis sapientum exhibendo disputantes proferunt, quæ proveciores denotari evincunt. In codice etiam *הוריות* *de documentis judicum* f. 13. p. 2. editionis Vene-

Vene-

vocant **קָדָם** à **מִקְדָּם** quod sæpius in historia Saracenicâ occurrit, imprimis ubi Christianorum Antistitū inauguratio describitur.

Lin. 15. *Profapia*] Ebræum **מכונה ביהסו** quidam vertit *recta genealogia*; quam versionem nec forma participii, nec syntaxeos convenientia, nec verborum ordo admittit. Sed **מכונה** est à **כנה** in part. conj. Pual, legiturque **מכונה** & designat *denominatum*. Unde paraph. quædam Gen. 4. 26. cum honorificum Dei nomen idolis impositum docere vellet, ita ferme dixit, **בכדון שרו בני אישא למעבד להון טעון, ומכניין יתהון בשמא דה**, *tunc cœperunt filii hominum conficere sibi idola, quæ de nomine Iovæ vocarunt*. Hinc significatio **כנה** satis elucescit: quamvis paraphr. autor Ebraici contextus sensum nō satis affecutus mihi videatur; qua de re alibi scripsi prolixius. Cæterum ut in lingua Ebr. & Chald. hujusmodi est verbi illius usus; ita etiam in Arab. nam in historia Saracenicâ eo sensu passim usurpatur occurritque sæpius **يكنى** *cognominabitur*.

Lin. 24. *Aliique his similes*] Ebræis non tam parem aliis, ut existimarunt quidam; quam similem notat. Phrasis desumpta è c. 2. Gen. vers. 18. & 20. quibus locis **כתרו** *tanquam coram eo*, idem est ac si dixisset *similem*: de

accipio, quemadmodum Græci Deut. i. 28.
 בני ענקים ראינו, ὑγῆς γίγαντων ἐωσθαμεν. con-
 sentit Onkelos, cujus verba, בני גבריא הזינא.
 ubi גבריא non significat simpliciter, *robustos*,
fortes; sed idem quod Syris,

gigantes: vox enim cum Chaldaica est eadem,
 siquidem ג istud Syris otiaur; quomodo

gigas Arabibus dicitur

inficias eo, quin בני ענקי' reddi queant, *filiis*
Enac; uti Arias fecit: quia ענק primus post
 diluvium giganteæ stirpis habetur parens ac
 propagator. Verisimile tamen est, & à torque,
 quo colla sua superbe cingebant, ita dictos
 fuisse: nam ענק propriè est collum torque
 cingere. unde Arabibus *colla*.

Pag. 4. l. 7. *Legis*] Hæc civitas dicitur
 לתורה קדומה non ab antiquitate; sed à digni-
 tate & officio: quod veluti præfecta fuerit
 legi, ut ejus curam gereret atque ad eandem
 pertinentia sedulò perageret. Quemadmo-
 dum Latinis sacrorum & Deorum antistites
 dicuntur, qui sacrorum curam gerere, Deo-
 rumque cultum procurare solent. Ideo red-
 didi, *legis antistes*: sicuti etiam Arabes antisti-
 tem participio ab eadem origine deducto
 vocant

computi Judæorum minoris , millenarius
excrefcatur.

A D T E X T U M.

P Ag. 3, lin. 8. In Ebræo est שרקישה : ubi
vestigia sunt cum antiquæ, tum recentio-
ris appellationis. Nam Ptolemæus Geogr.
l. 2. c. 6. & l. 8. c. 2. hanc civitatem, sive po-
tius illius districtus metropolin vocat Καισάρ-
πειαν Ἀνγύριαν; at recentiores Saragosam: un-
de Abraham Zacouth in Jouchasin f. 130.
nominat סרגושה. Adeo ut prior pars vulga-
rem; posterior verò antiquiorem appellatio-
nem referat. Nam Benjamin ק pro g posuit:
quod mirum non est, cum sint ejusdem or-
gani literæ; ac præterea Græcorum κ, quod
Ebræico ק respondet, quandoque γ sonare
notent Grammatici: nempe si post γ induens
sonum τξ γ, collocetur. Sed ut eò respicia-
mus necesse non est: quosdam enim Orien-
tales ק tanquam g pronuntiare; satis demon-
stravi notis ad gramm. M. Kimchi p. 75. Cæ-
terum hæc civitas Salduba olim vocabatur,
teste Plinio l. 3. c. 3. *amne Ibero* (ut idem ad-
dit) *affusa* : unde liquet citerioris Hispaniæ
fuisse; ubi hic Benjamin habitabat, ideoque
suum iter aggressus fuit.

Lin. 13. *Gigantum*] ענקים pro gigantibus

I 4

acci-

fermo erit; ubi Toletum. De qua urbe hoc ἐν περιόδῳ subjiciam, quod Georgius Elmacinus vitam Walidis in historia Saracenicâ describens annotat; quum Toletum in Saracenorum manus devenisse narrasset: ad Walidem allatam fuisse مائدة سليمان وهي من خلطين ذهب وفضة وعليها ثلاثة اطواق من لؤلؤ *Mensam Salomonis ex auro & argento commistis, atque tres habentem limbos ex margaritis.* Adeo ut hæc Toleti fuisse videatur.

Ibid. 933.] Hic numerus plenus non est: sed ita scribere amant Judæi, addendo subinde לפק, id est, לפרט קטון *secundum computum minorem.* Hoc modo omittunt millenarios integros, qui à conditu mundi effluerunt; tantumque minores numeros ultra millenarios annotant. Quibus minoribus si addideris 240. numerus exurget annorum, qui addito millenario, à nato J. Christo ad tempus quod annotatur effluerunt. Unde Judæorum calculum nostro accommodare lectores poterunt. Itaque si annos 933. hic annotatos cum 240. conjungas, apparebit hic annotari annum æræ Christianæ 1173. quo anno Benjamin ad suos reversus dicatur. Nam millenarium tum demum addere debes, si nullus è compositione numeri 240. cum numero
computi

oppidum sit, cui nomen Tudela; & in utroque meo codice legatur אלה עמי, ad Benjaminem gentilitium nomen refero. Quod enim in Castiliam se receperit, varias alias causas habere potuit. Natus ergo Benjamin Tudelæ in Navarreno regno; Toletum autem Carpetanorum est in mediis Hispaniis civitas.

Lin. 18. *Quorum fama, &c.*] Sic verti debent; non verò, *easdem, scilicet res, in Hispania retulit*, ut existimatum fuit: nam quod de iis, quæ viderat vel audiverat, postea apud suos retulerit, statim in sequentibus narrabitur. Sed ut *fama* Hebræis שמע dicitur, sic נשמע (quo noster utitur) de eo quod fama percrebuit, usurpatur: quemadmodum de ipsa fama in versione Syra Matth. 4.2. legitur

שמעו ⁷אליהו, *percrebuit fama ejus.*

Hoc ergo sibi vult auctor, Benjaminem non quævis auribus percepta, literis absque ullo discrimine consignasse; sed magno delectu audita descripsisse: ut in auditis referendis nonnisi eorum autoritate niteretur, qui apud suos Hispanos fama jam essent celebres; quò apud eosdem redux fidem mereretur.

Lin. ult. Castiliam duplicem faciunt, veterem, quam olim Barduliam dicebant; & novam. atque si superiori conjecturæ de nomine gentilitio locum faciamus, de nova hic

I 3 sermo

N O T Æ

Quibus cum Benjaminis contextus illustratur, tum errores multi perstringuntur.

NOTÆ IN PRÆFATIONEM.

Pagina 1. lin. 5. In textu originali est נבארה : qua voce regio designatur, non Cantabrorum, ut nonnemo existimat; sed istis vicina: quam occupabant olim Αὐτελιγones dicti Ptolemæo. Ibi enim Βερβέσκα, vulgò Briviesca vel Bierbiesca, aliaque oppida quæ Navarrenorum sunt.

Lin. 7. Videri præterea alicui queat, gentilium nomen *Tudelensis*, id est, מטרדילה ad Benjaminem referendum non esse; sed ejus patrem Jonam: adeoque מטרדילה esse Ptolemæi Τώληλον, vulgò Toledo, syllabis transpositis; ut alias in Judæorum scriptis fieri solet. Dubitandi ratio, quod ex itinere redux Benjamin, quum procul dubio ad suos se contulit (unde hîc linea penult. pro עמא הלא *hæc secum*, quidam legit עמא לא *ad populum suum*) in Castiliam se receperit: ubi Toletum, & forte paterna familia. Quum tamen in Navarra oppi-

sodo (forte regione Elfas) sex dierum iter est Parisios usque, urbē maximam, Ludovici regis regiam: quę ad Sequanam sita eos sapientia studiosos habet, quales in toto orbe hodie invenire non est; ut qui dies noctesq; legi incumbant. hospitales in omnes peregrinantes: qui fratres & socios se præbent quibusvis consanguineis Judæis. Deus misericordia sua maxima nostri & illorum miseretur; atque cum in nobis, tum in illis istam impleat Scripturam Deut. 30. Si convertaris, iterum colliget te ex omnibus populis quò disperferat te Deus Dominus tuus. Amen, Amen, Amen.

אל סודו עד פאריז המדינה הגדולה מהלך ששה ימים והוא למלך לואיז והוא יושבת על נהר סינא ושם תלמידו חכמים אין כמותם היום בכל הארץ עוסקים בתורה יומם ולילה והם בעלוי אכסניא לכל עובר ושב אחים ורעים עם כל אחיהם היהודים. השם ברחמיו ירחם עלינו ועליהם ויקיים בנו ובהם מקרא שכתוב ושב וקבצך מכל העמים אשר הפיצך יי' אלהיך שמה: אמן אמן אמן ו

תם ונשלם:

Absolutum & perfectum est.

I 2 NOTÆ

ועור יש אשתדאן בורך ודוי
 דסבורך ומנדטך ופסינגש
 ובנבורק וצר ורשנבורק קצה
 המלכות ובאלו המדינות
 גב הרבה מושראל תלמודי
 חכמים ועשורים . ומשם
 והלאה ארץ בהם והיא
 הנקראת פראגה היא ת
 תחלת ארץ אשקלבונייה
 וקוראי' אתה היהודים
 הדרי' שם ארץ כנען בשביל
 אנשי חארץ ההיא מוכרי'
 בניהם ובנותיהם לכל אומות
 הם ואנשי רוסיא והיא
 מלכות גדולה משער פראג'
 ועד שער פני העיר הגדולה
 היא בסוף המלכות והיא
 ארץ הרים ווערי' ושם ומצאו
 החיות שקורי' וא' רגליש
 והם נכלינאן ואין אדם יוצא
 מפתח ביתו בימי החורף
 מרוב הקור ועד הנה מלכות
 רוסיא ומלכות פראנציה
 שהיא ארץ צרפת מעיר

nem fecimus, sunt Argen-
 toratum five Straesburg,
 Duisburg, vel potius Aus-
 burch, Mantern, Pefinges
 vel potius Freising, Bam-
 berg, Tfor, & Regenspurch
 in imperii confinio: in qui-
 bus etiam civitatibus Israë-
 litarum multi habitant, sa-
 pientia studiosi ac divites.
 Hinc ulterius in Bohemiæ
 regionem devenitur. quæ-
 que ibi vocatur Praga,
 Schlavoniae initium est:
 quam Judæi ibi habitan-
 tes Terram Canaan nun-
 cupant, quia istius regionis
 homines filios filiaq; suas
 omnibus nationibus prom-
 miscue dividunt, quem-
 admodum & Russi. Reg-
 num illud late patet, inde
 à porta Pragæ ad portam
 usque S. Nicolai vel potius
 Pinego, urbis in regni ter-
 mino magnæ. Regio mou-
 tosa & sylvosa est: ubi ista
 animalia reperiuntur, quæ
 Veergares dicuntur; aliàs
 martes Scythicæ. Hieme
 præ ingenti frigore nemo
 foras egreditur. Hactenus
 de Russiæ regno. Quod
 ad Franciæ regnum atti-

net, quam terrā Tfarphath

dicimus, inde ab urbe Al-
 fode

evehet, tunc unusquisque dicet, ego Judæos ducam, eosque congregabo. Cæterum in illis civitatibus sunt sapientiæ studiosi eorumque cœtus qui fratres suos diligunt; & cum propinquis, tum iis qui è remotis locis veniunt, comes se præbent. Quod si hospes accedat, eo delectatur, eique convivium dant dicentes, Lætamini fratres nostri: nam Dei salus ictum oculi celeritate æquabit. porro si non vereremur ne tempus nondum advenerit & appropinquaverit, jam congregati essemus: verū congregari nequimus, antequam tempus (Cant. 2. vers. 12.) inuritionis & vox turturis adveniat, veniant denique euangelizantes qui dicant jugiter, Magnificetur Deus. Illi mutuas inter se permutant litteras, quibus se invicem alloquuntur, Confirmamini in lege Moſis; & qui Tſionem & Hieroſolyma lugent, à Deo misericordiam implorent, deprecantes pullis veſtibus cum ſanctitate ſua induiti. Præter omnes illas Germaniæ civitates, quarum mentio-

או כל אחד ואחד אומר אני אוליך את היהודים ואני אקבצם והמדינות האלו יש בהם תלמידי חכמים וקהלות אוהבים את אהיהם ודוכרים שלום לכל הקרובים והרחוקים ואם יבא אליהם אכסנאי שמחים בו ועושים לו משתה ויאמרו שמחו אחינו כי ישועת השם כהרף עין ולולא שאנחנו מפהדי' שלא בא הקץ ולא הגיע אנחנו היינו מתקבצו אבל לא נוכל עד שיגיע עת הזמיר וקול התור ויבאו המבשרי' ויאמרו תמיד יגדל השם והם שולחים כתבים אחד לאחד ואומרים להם התחזקו בדת משה ואבילי ציון ואבילי ירושלם ובקשו רחמים מלפני השם ויתחננו לובשי בגדים שחורי' בזכותם וכל אלו המדינות בארץ אלימניוֹ שזכרנו

שלשה ימים ומן רומה דרך
 ובשה ללוקה חמשה ומל'
 ועוברי' משם הר ומוראית'
 ומעברות אומני' שני' עשר
 יום לעיר ברדון היא תחלת
 אלמני' היא ארץ הרים
 וגבעות וכל קהלות אלמני'א
 וושבים על נהר רינוס הגדול
 מעיר קולוני'א שהוא ראש
 המלכות ועד עיר קשנבורק
 קצה אלמני'א מהלך טו' יום
 הנקראת ארץ אשכנז ואלו
 הן מדינו' בארץ אלמני'א
 שיש בהם קהלות מישראל
 וכלם נדיבים על נהר משלה
 וקובפ'לינש ואודרנבה וקוב'ה
 וקרמני'א ובינגה וגרמי'סר
 ומשתראן וכל ישראל מ
 מפורדים כולם בכל ארץ וארץ
 וכל מי שובטל שלא יתקבץ
 ישראל אינו רואה סימן
 טוב ולא יחיה עם ישראל
 ובעת שהשם יפקוד על
 גלותינו וירם קרן משיחו

triduo perveniri potest ; &
 Româ itinere terrestri die-
 bus quinque Lucam : unde
 duodecim dierum itinere
 pervadunt montem A-
 penninum, urbem Morig-
 gnano, & Italiae Alpes, us-
 que ad civitatem quæ vul-
 go S. Bernardin, Germani-
 aie initium. Hæc regio
 montibus ac collibus sca-
 tet : in qua Israëlitarum
 cœtus omnes ad magnum
 Rheni flumen habitant, in-
 de à Colonia, quæ imperii
 initium est, Sufenburk us-
 que, Germaniæ terminum,
 idque per quindecim die-
 rum itinera. quondam ter-
 ra Aschcenaz dicebatur.
 Hæ sunt Germaniæ civita-
 tes, ubi cœtus Israëlitarum
 (qui omnes ad officium
 prompti) reperiuntur, non
 procul à Mosella: Coblêtz,
 Andernach, Cub, Creutz-
 nach, Bing, Germesheim,
 & Munster superior. Israë-
 litæ etiam per omnes re-
 giones dispersi sunt : sed
 cui curæ fuerit ne Israël
 congregetur, non aspiciet
 felicitatis signa, nec cum
 Israële reviviscet. at quum

Deus captivitatem nostram

visitans, Messia sui cornu

אזכל

Munimentum nuncupatur. Ibi omnia fructiferarum arborum genera: in medio autē fons magnus, quem muro cinxerunt, ibidem piscinam concinnantes, quæ Albehira dicitur. ubi multa piscium genera, & naves regię argento auroque obductæ, quibus rex cum uxoribus suis animi recreandi causa vehi solet. Visitur etiam magnum in horto exstructum palatium, cuius structuræ parietes figuris distincti, auro & argento obducti sunt; pavementum verò lapidibus marmoreis est constructum, cui omnium imaginum quæ toto orbe reperiuntur, genera sunt insculpta. Itaque istius regionis structura talis est, ut ei similis alibi non conspiciatur. Insulæ initium à Messana sumitur: quæ omnes qui mundum peragrant, suos habent transitus, qui producti per Cataniam, Syracusas, Mazaram, Petaleriam, Trapanam usque, sex dierum itinere in ista insula terminantur. Circa Trapanam autem corallium reperitur, quod Almurgan nuncupatur. Inde Romam

אלחיצ'ונה ושם כל מיני אילני פיר' ובתוכו מעיין גדול וסבבו אותה חומה ועשו לשם ביב הנקרא אל בחיר'ה ושם מיני דג' הרבה ושם ספינות למלך מצופות כסף זהב ויבא בהם המלך לטיול נפשו הוא ונשיו וגם שם בגן ארמון גדול ובנין הכותלים מצוירים ומצופים זהב ובכסף ורצפת הקרקע אבני שיש מצויר מכל מיני צוירין שבעולם ובנין הארץ ההיא לא נראה כבנין ההוא והאי תחלתו ממס'ני ובה כל מעברי עולם והולכות עד קטני'ה וטרקוטה ומז'א ופטל'יאדה וטר'אפנה מ מהלך ששה ימים באי ושם בטר'אפנה ימצא אבן הקורל הנקרא אל מור'גאן ומשם עוברים לארץ ר'ומה

triduo

דרך ים יום לטוניס היא חנם
 ושם כמו ארבעים מישראל
 והוא אי בתוך הים ועד הנה
 מלכות מצרים : ומשם דרך
 ים עשרו' יום למיסני האי
 תחלת או סקלייה היושבת
 על הזרוע הנקרא לונד הוא
 חולק בין קלבריליה ובין
 סקלייה ושם כמו מאתים
 יהודים והוא ארץ מלאה כל
 טוב וגנות ופרדסים ושם
 מתקבצים רוב הנוצרי' לעבור
 לירושלם כי שם המעבר
 הטוב ומשם מהלך שני ימו'
 למדינת פלירמו היא עיר
 גדולה כמהלך שני מילין
 באורך ושנים ברוחב ושם
 ארמון גדול ממלך גולוימו ובה
 כמו אלף וחמש מאות יהודים
 ואדום וישמעאל הרבה וארץ
 מעיינות ונחלי מים וחטה
 ושעורה וגנות ופרדסים ואין
 כמותה בכל ארץ סקלייה כי
 היא מדינת סגן המלך הנקר'

itinere, uno die distat Tun-
 nes, cujus antiquum no-
 men Hanas: ubi quadra-
 ginta circiter Israëlitæ. in-
 sula est in medio mari. Huc
 usque Ægyptiorum reg-
 num. Hinc itinere mariti-
 mo viginti diebus peninsu-
 lam Messanam appuli, ini-
 tiū insulæ Siciliæ. sinui, cui
 Siculum fretum nomē est,
 quique Calabriam à Sicilia
 separat, imminet. Illic du-
 centi ferme Judæi: regio
 ipsa omnibus bonis, hortis
 & pomariis abundat; quò
 Christianorū plurimi con-
 gregantur, Hierosolyma
 perrecturi: quod istinc
 commodus detur transitus.
 Inde biduo in urbem veni,
 cui jam Palermo nomen:
 maxima est, cum in longi-
 tudinem, tum in latitudi-
 nem duo patens milliaria.
 in qua magnum V Vilhelmi
 regis palatium: & ex Ju-
 dæis mille ferme ac quia-
 genti; Christianorum ve-
 rò & Muhammedanorum
 quamplurimi. Regio fon-
 tibus, fluviis, tritico, hor-
 deo, hortis & pomariis di-
 ves, ut in tota Sicilia similis

non reperitur: urbs enim illa est vicarii regii, qui
 אלהוציונה

Cæterum Alexandria tria ferme Israëlitarum millia degebant. Inde biduo Damiatam veni : quæ olim Caphtor dicebatur ; & jam ducentos Israëlitas habet. Unde dimidio die Sonbatum itur : cujus incolæ linum ferunt & candidas telas texunt , quas in omnes mundi regiones deferunt. Hinc Elam usq; (ea quondam Elim dicebatur) quadridui iter est : eamque Arabes , qui in deserto habitant , incolunt. Hinc Rephidim bidui itinere distat : ubi Arabes ; nulli verò Israëlita degunt. Inde uno die in montem Sinai pervenitur : in cujus cacumine cœnobium quoddam monachorum qui Syriani dicuntur. ad radices verò sita est arx magna quam montem Sinai vocant, cujus incolæ Chaldaicè loquuntur (mons iste parvus est, quinque dierum itinere ab Ægypto distans) & Ægyptiis parent. Porrò mare Suph sive rubrum à monte Sinai diei unius itinere abest : estque Indici maris sinus, qui Damiatam versus reflectitur . unde maritimo

באלכסנדריאה כמו שלשת אלפים מישראל ו ומשם שני ימים לדמי'אט היא כפתור ושם כמו מאתי' מישראל ו ומשם לסונבאט חצי יום והם זורעין פ פשתן ואורגים חור ומוליכין לכל העולם ו ומשם ד' ימים לאיל'אם היא אילים והיא לבני ערב החונים במדבר . ומשם שני ימים לרפידים ויושבים שם בני ערב ואין בה מישראל . ומשם יום להר סיני ובראש ההר כמה לכומרים הנקראים סורי'אנים ובתחתית ההר כרך גדול וקוראים אותו טור סיני ויושבו מדברים בלשון תרגום והוא הר קטן וחוק ממצרים חמשה ימי' והם תחת עול' מצרים ו יום סוף ויחוק מהר סיני דרך יום והוא זרוע מים הודו ויחזור לדמי'אט . ומשם

itine-

ופראניויה ופויטו ואנגו ו
 וברגוניוא ומדיאנה ופרובינצא
 וגינואה ופישא וגשקונט
 וארגון ונבאר'ה ו מצד ה
 המערב לישמעאלי' אל א
 אנדלוס ואל ערוה ואפריקיה
 וארץ אלערב ו מצד הודו
 ומחווילה ואל הבש ולוביה
 ואלירמן ושנער ואל שאם
 ויון הנקראים גריגיש ואל
 תורך ושם מבואים סחורה
 מהודו כל מיני בשמים
 סחורי אדום קונים מהם
 והעיר הומיה לסחורה ולכל
 אומה ואומה פונדק בפני
 עצמה ויש שם על שפת
 הים קבר אחד של עיש ובו
 מצוייר כל מיני עופות והיות
 והכל בכתיבת הקדמונים
 ואין אדם מכיר הכתיבה
 ואומרי' מסברא שהיה מלך
 בימי קדם קודם המבול
 ובאורך הקבר חמש עשרה
 זרתות וששה רחבו ושם
 quindecim spithamarum
 באלכסנדריאה

Franciæ, Pictonum, Ander-
 gavorum, Burgundiæ, Med-
 diolani, Provinciæ, Genuæ,
 Pifarum, Aquitaniæ, Ara-
 goniæ & Navarra. Simili-
 ter è plaga occidentali Mu-
 hammedanorum, Andalu-
 zia & Algarbia, Aphrica &
 Arabiæ regionibus: quin-
 etiam ex Indicis locis, &
 Havila, Æthiopia reliqua,
 Lybia, Aljerman, Meso-
 potamia, Syria, & Javanen-
 sibus qui dicuntur Græci,
 ac deniq; Turcia. Eò etiam
 multi merces ex India, id
 est, omnia aromatu genera
 deferunt: quæ ab istis Chri-
 stiani mercatores coëmüt.
 Itaque civitas commerciis
 tumultuatur: in qua singu-
 læ gentes distinctas taber-
 nas habent. Ibi in maris
 littore marmoreum con-
 spicitur sepulchrum, cui om-
 nia avium aliorumque
 animalium genera inscul-
 pta sunt, omnia cum pri-
 scorum inscriptione, quam
 nemo legere potest. E con-
 jectura ferunt, olim ibi re-
 gem quendam ante dilu-
 vium fuisse sepultum: cu-
 jus sepulchri longitudo
 erat; latitudo autem sex.

repetierunt. Ab eo tempore ac deinceps Edomæi eò scaphis magnisq; navibus venire cœperunt, atq; illis insulam magnam Cretam, & Cyprum tandem eripuerunt: quæ in hodiernum usque diem Græcorum imperio parent. Nec Ægyptii ultra vires suas coram Græcis obtinere potuerunt. Et hæcenus turris ista speculatoria, iis qui mare sulcant, itineris index est: qui enim Alexandriam ex omnibus locis tendunt, eam eminus à centum usq; miliaribus conspiciunt; ut quæ facis lumine interdiu ac noctu lucem præbeat. adeo ut nautæ ignem è longinquo videntes, in ejus conspectu iter faciant. Regio hæc commerciis frequentata, omnium populorum est negotiatrix: & è toto Christianorum imperio Alexandriam veniunt, è regionibus Valentia, Toscanæ, Longobardia, Apulia, Malchi, Sicilia, Cracovia, Cordubæ, Hispania, Russia, Germania, Helvetia, Dania, Gelats, Flandria, Hitar, Normandia,

Fran-

ההוא ומאותו היום והלאה התחילו בני אדום לבא שם בדוגיות ובספינות גדולות ולקחו מידם את הארץ הגדולה קריסט וגם כיפרוס שהם תחת עול יונים עד היום הזה ולא יכלו אנשי ארץ מצרים עוד לעצור כח לפני היונים ועד היום הזה מגדל המנורה סומן להולכי הים כי כל הבאים אל אלכסנדריאה מכל המקומות רואים אותה מרחוק מהלך ק' מילין ביום ובלילה מאורה מאור אנוקה ורואי' הספנים האש מ מרחוק והולכין כנגדו והיא ארץ סחורה וכולת לכל העמים ומכל מלכות אדום באים שם אל אלכסנדריאה מארץ בלונסיויא וטוסכנרה ולומברדיאה ופוליה ומלכי וסקיליויה ורקופיה וקרטויה ואספניוא ורוסיויא ואלמאניויה ושושנאה ודנא כרְקָא וגלאץ ופלנדריש והיטר ולרמנדיה

חמשים יום היו רואין אותן
 טן המראה של זכוכית והיו
 שומרין עצמם מהם עד
 שיום מימים באה ספינה
 מארץ יון לימי' רבים אחרי
 מות אלסכנדרוס ושם הספן
 שודורוס איש יוני חכם בכל
 חכמה והיו היונים משועבדים
 תחת עול מצרים בימים
 ההם והביא האיש ההוא
 הספן דורון גדול למלך
 מצרים כסף וזהב ובגדי משי
 וחנה לפני המראה כי כך
 היה מנהג כל סוחר שיבוא
 לחנות שם ובכל יום ויום
 היה אוכל עמו שומר מגדל
 המנורה הוא ועבדיו עד
 שמצא חן בעיניו והיה יוצא
 ובא כל הימים שם ויום
 אחד עשה לו משתה ו
 והשקהו יין הרבה לו ולכל
 עבדיו עד שהיו ישנים כולם
 וקם הספן ועבדיו ושברו
 המראה והלכו לדרכם בלילה

bus quinquaginta hinc ab-
 essent, ex hoc speculo indi-
 genæ prospicerent, & hoc
 pacto sibi ab illis caverent.
 Donec tempore quodam,
 diu post Alexandri mortē,
 quædam è Græcia navis ap-
 pulsa est, cujus navarchus
 dicebatur Theodorus, Græ-
 cus natione, omnium re-
 rum intelligens (eo autem
 tempore Græci Ægyptio-
 rum jugo subjecti erant.)
 Qui Ægyptiorū regi ma-
 gnum argenti, auri & seri-
 ceorum vestium munus af-
 ferens, ante speculum sub-
 stitit: quod mercatores om-
 nes qui accedebant, ibi
 navalia habere soliti es-
 sent. Cum illo singulis die-
 bus cibum capiebat præfe-
 ctus turris speculatoriæ,
 cum ipse, tum ministri: ad-
 eo ut ille hujus tenens gra-
 tiam, quotidie illuc irer, indeque rediret. Itaq; quo-
 dam die præfecto sym-
 posium instituens, eum vi-
 no inebriavit: & tam lar-
 giter ipsi omnibusq; servis
 infudit, ut omnes somno
 sopirentur. Tum navarchus
 cum classiariis ubi surrexif-

sent, speculum fregerunt, & iter suum eadem nocte
 ההוא

missimâq; ac pulcherrimâ
 structurâ condidit; domos,
 inquam, palatia, & muros
 opere pulcherrimo. Extra
 urbem Aristotelis præcep-
 toris Alexandri schola est:
 ubi pulchra & magna stru-
 ctura, marmoreis colum-
 nis inter scholas collocatis.
 Nam viginti ferme scholæ
 visuntur: quia eò ex toto
 mundo confluebant, quò
 Aristotelis Philosophi sa-
 pientiam addiscerent. Urbs
 ipsa est superiori loco con-
 dita; ab inferiori parte con-
 vexa, innitens fornicibus.
 Et fora in ipsa frequentan-
 tur ex ejus plateis, quas ne-
 mo videt: quarum una ad
 milliare inde à porta Ra-
 schid ad maritimâ portam
 extenditur. Ubi aggerē ad
 portum Alexandria per in-
 tegrū milliare intra ipsum
 mare, Alex. duxit. Ibi tur-
 ris magna ab eo exstructa
 fuit, quæ dicitur Magraa,
 Arabicè verò Megar Ale-
 xandriæ. in cujus fastigio
 vitreum confecit specu-
 lum: ita ut naves omnes,
 quæ illam è Græcia vel Oc-
 cidente oppugnatam ac
 læsum veniebant, ubi die-

H 5 bus

זכנה אותה בנין חזק ויפה
 עד מאד הבתים והארמונים
 והחומות מבנין יפה עד
 מאד וחזן למדינה מדרש
 ארסטו רבו של אלכסנדרוס
 ושם בנין יפה וגדול ועמודי
 שיש בין מדרש למדרש
 ושם כמו עשרים מדרשות
 שהיו באי' שם מכל העולם
 ללמוד שם חכמת ארסטו
 הפילוסוף והעיר בנויה ל
 למעלה וחלולה למטה על
 ירי גשרי' וחוצותיה ישרתו
 בתוכה בשוקים שאינם
 רואים אדם מהם מהלך
 מיל משער רשיד ועד שער
 הים ושם בנה מסלה על
 הנמל של אלכסנדריואה דרך
 מיל בתוך ים ושם עשה
 מגדל גדול הוא הנקרא
 המגרא והלשון ערב מגרא
 אלכסנדריואה ועשה על ראש
 המגדל מראה של זכוכית
 וכל הספינות שהולכות ל
 להלחם בה להויק לה מארץ
 יון ומארץ המערב ממהלך

מימי קדם ושם זקן אחו
 פרנס שמש של הכנסת
 והוא תלמיד חכם וקדוין
 אותו אל שוך אבונאצר ו
 ובמצרים החרבה כמהלך ג'
 מילין . ומשם לארץ גושן
 שמנה פרסאות היא ב
 בולסיר סלבים ושם כמו
 ג' אלפים יהודים והיא
 עיר גדולה . ומשם חצי
 יום לעיוקאל לעין אל
 שמש היא רעמסס והיא
 חרבה ושם מהבנין שבנו
 אבותינו עה ושם כמו מ
 מגדלי' בנויים מלבנו' ומשם
 יום לאל בוביאויג ושם כמו
 מאתים יהודים . ומשם ל
 למנז'ופתא חצי יום ושם כמו
 מאתים יהודים . ומשם ל
 לרמ'רה ארבע פרסאות
 ושם כשבע מאות יהודים .
 ומשם חמשה ימים ללמח'לה
 ושם כמו חמש מאות מ
 מישראל . ומשם שני ימים
 לאלכסנדריאה ואלכסנדרוס
 מוקדון קראה על שמו
 ובנה

synagoga antiquissima cō-
 spicitur : ibidemque senex
 quidam eam regit, syna-
 goga minister : quem sa-
 pientum discipulum Al-
 schesch Albounatser nun-
 cupant, Iter autē per Mits-
 raim devastatam est trium
 milliarium. Inde ad regio-
 nem Goschenis octo sunt
 parasanga: eaque est Bol-
 zir Salbis : ubi tria ferme
 Judæorū millia. Urbs ma-
 gna est. Hinc dimidio die
 perveni Iskaal Lein Alsche-
 mes : quæ & Rameses, jam
 devastata : ubi structuræ,
 quam struxerunt beati pa-
 tres nostri, exstant reli-
 quia; & veluti turres ex la-
 teribus structuræ. Hinc Albu-
 biigh diei unius iter est: ubi
 ducenti circiter Judæi. in-
 de dimidio die Manziph-
 tam veni: ubi etiam ducen-
 ti ferme Judæi. Ulterius
 Remiram usque quatuor
 sunt parasanga: ubi septin-
 genti circiter Judæi. Un-
 de Lamhala quinq; diebus
 distat : ubi Israëlitæ ferme
 quingenti. Hinc ad Ale-
 xandriam bidui iter est :
 eam Alexander Macedo
 de suo vocavit nomine, fir-

veo Damiatam tendit (quæ & Caphor) ubi in mare illabitur; alio alveo ad urbem Rasid Alexandria proximam defluit, ibique in mare descendit; tertio alveo delabitur viâ Asmonis urbis in Ægypti confinio maximæ, &c. Secundum quatuor istos alveos ab utroq; latere civitates sunt, castella & pagi: quò omnes cum navibus, tum continenti pervenire possunt. Nec ulla in orbe regio, quemadmodum ista habitatur: estq; amplissima regio, omnibus bonis instructa. Cæterum ab antiqua Mitsraim ad novam duæ sunt parasangæ. illa antiqua devastata est: vestigia tamen antiquorum murorum & domorum in hodiernum usque diem conspicua sunt. quinetiam Josephi horrea ibidem plurima. Eodem loco pyramis quædã est, magica arte structa; cui nulla in toto orbe sive ullibi terrarum par reperitur. Illa vero (scilicet horrea) è calce & lateribus firmissima structura fuere ædificata. Ibi extra

דמיאט היא כפתור ונופל
 שם בים. ושביל אחר
 הולך לעיר רשיד הקרובה
 לאלכסנדריאה ונופל שם
 בים. ושביל השלישי הולך
 דרך אשמון העיר הגדולה
 בגבול מצרים ועל ד' ראשים
 האלו מדינות וכרכים וכפרים
 מזה ומזה וכל בני אדם
 הולכי בספינה וביבשה ואין
 בארץ ארץ נושבת כמוה
 והיא רחבת ידים מלאה כל
 טוב. וממצרים החדשה
 למצרי' הקדמונה שני פ'
 פרסאות והיא הרבה ומקום
 בנין החומות והבתים נראין
 עד היום הוזה וגם אוצרות
 יוסף שם הרבה מאד ויש
 שם עמוד אחד עשוי בבשוף
 ולא נראה כמוהו בכל
 הארץ ובכל המקומות והם
 בנויים בסיד ואבני' בנין חזק
 עד מאד ושם חוץ לעיר
 כנסת משה רבינו ע"ה

urbē Doctoris nostri beati

H 4

fyna-

רפואה להם ושואלין בני
 אדם ואומרי' להם מפני מה
 היא עלות היאור ואומרים
 אנשי מצרים כי למעלה
 בארץ אל חבש והיא ארץ
 חזילה יורד בה מטר הרבה
 בזמן עלו' היאור ומרובם
 הוא עלות היאור ומבסה פני
 הארץ ובשע' שאין היאור
 עולה אינם זורעי' והרעב
 כבר בארץ והם זורעין ב
 במרחשון לאחר שוב היאור
 למקומו ובאדר קוצרים ה
 השעורים ובניסן החטי'
 ובניסן יש להם גודגניות
 ואגוזים וקשואים ודלועים
 וחרובין ופולים וגלבונים
 ואפונים ומיני ירקות כגון
 פרפתנים וירבונים וקטפים
 וחזרת וכוסברת ועולשין
 וכרובים וענבים והארץ מלאה
 כל טוב והגנות והפרדס'
 משקיין אותם ממקוה המים
 וממי היאור כי היאור כשיבוא
 למצרים משם יפרד לארבעה
 ראשים שביל' אחד הולך
 דמיאט

aqua medicamēti loco erit.
 Caterum hominibus aliis
 de fluminis inundatione
 quærentibus respondēt Æ-
 gyptii: in regionem quan-
 dam supra Æthiopiā
 (quæ est Havila) largos de-
 mitti imbres, quum flumē
 exundat, & hanc ut pluri-
 mum incrementi esse cau-
 sam, quo regio inundatur.
 Quo tempore flumen non
 intumescit, nec etiam fe-
 ritur: ideoque gravis re-
 gionem invadit fames. A-
 gros sub finem Octobris
 conferunt, flumine jam in
 locum suum recepto; men-
 se Februario metunt hor-
 deum; Martio triticum.
 Quo mense Ægyptiis ma-
 tura sunt cerasa, nuces, cu-
 cumeres, cucurbitæ, sili-
 quæ Græcæ, fabæ, frutex
 galbani, ciceres: item ole-
 rum genera, portulacæ &
 asparagi, balsamum, lactu-
 ca, coriandrū, cichorium,
 brassicæ & uvæ. Regio om-
 nibus bonis affluit: hor-
 tosque ac pomaria cum è
 lacubus, tum è flumine ir-
 rigan. Nam flumen Mits-
 raim influens, inde in qua-
 tuor fertur capita: uno al-

bus quidam ea omnia dimensus Tsoane & in urbe Mitfrain proclamat dicēs, Tribuite Deo gloriam, quia hac vel illa quantitate excrevit flumen: sic quotidie dimetitur & proclamatur. Si flumen totam columnam obtegat, saturitas magna toti terræ Ægypti supervenit. flumenq; paulatim crescit, donec terram ad itineris quindecim dierum extremitatē operiat. Tum quicumq; agrum habet, conducit operarios, qui in agro alveum magnum effodiant: quò deinde pisces crescente aqua ingressi, deficiente paulatim aquâ in istis alveis relinquuntur. Hos captos agrorum possessores comedunt, mercatoribusque divendunt, qui eos salitos ad quævis loca devehunt. Hi pisces pinguissimi sunt: adeoque regionis proceres sumto eorum adipe, lucernas in ista regione accendunt. Quod si quis, quum ex istis piscibus plus satis edit, aquam ex illo biberit flumine, hoc nullum damnum inferet: quia ista

H 3 aqua

מורד אותם אדם אח' ומכריו בצוען ובמצריו ואומר תנו שבת לאל כי עלתה היאור כך וכך ובכל יום הוא מורד ומכריו אם מכסה היאור העמוד כלו יש שובע גדול בכל ארץ מצרים והיאור עולה מעט מעט עד ש שמכסה הארץ לקצה חמשה עשר יום. ומי שיש לו שדה שוכר פועלים וחופרין לו הפירה גדולה בשדהו ובאים הדג' בעלות המים נכנסו' בחפירו' ובשעה ש שיחסרו המים נשארו' הדג' בחפירות ולוקחין אותם בעלי השרות ואוכלו' וטוברים לסוחרו' שמוליכין אותם ממולחין בכל מקום והדגים שמנים מאד ביותר וגדולי הארץ לוקחין מן השומן של הדגים ומדליקין נרותיהם בארץ ואם אכל אדם מאותם הדגים וישתה אחריהם ממי היאור לא יזיק לו כי אותם המי'

אהת בערת חגם והשגורת
 כשיוצא נילוס הנהר וצוען
 מוקפת חומה ומצרי' אין לה
 חומה כי היאור מסבב אותה
 מצד אחד והיא עיר גדולה
 וברו שווקים ופונדקאות
 ויהודי' עשירי' הרבה בה
 ולא ירד שם מטר ולא קרח
 ולא שלג לא ראו מעולם
 ההארץ חמה ביותר והיאור
 יוצא פעם אחת בשנה בחדש
 אלול ומכסה כל הארץ
 ומשקה אותה מהלך טו' זמי'
 והמו' נשאר' אלול ותשרי
 על פני הארץ להשקותה
 ולהרוותה ויש להם עמוד
 של שיש שבנו שם בחכמה
 והוא לפני אי א' בתוך המו'
 והוא יב אמורת ארכו על
 פני המו' ובשעה שעולה
 היאור ומכסה אותו יורע' כי
 כבר עלה וכסה ארץ מצרי'
 מהלך טו' יום ואם כסה
 חצי העמוד לא יכסה כי אם
 חצי הארץ ובכל יום ויום
 מורד

in illorum festo; præterea
 quum Nilus flumen exun-
 dat. Cæterum Tsoan mu-
 ro cingitur; non item
 Mitsraïm, sed eam ab una
 parte flumen alluit. Vrbs
 magna est, foris ac taber-
 nis instructa, Judæis mul-
 tis, iisque divitibus eam in-
 habitantibus. Eò nec pluvia
 descendit, nec gelu aut nix
 unquam visa fuere; sed re-
 gio calidissima est. Porrò
 flumē semel in anno exun-
 dans mense Augusto to-
 tam terram operit, eamq;
 ad quindecim dierum iter
 irrigat: aquis mense Augu-
 sto & Septembri terræ fa-
 ciem ad eam irrigandam
 & humectandam occupan-
 tibus. Habent autem col-
 umnā marmoream, quam
 ibi prudenter ante insulam
 quandam in media erexe-
 runt aqua: quæ ex ipsa aqua
 duodecim cubitis exstat.
 quocirca exundante aqua
 eamque operiente, jam in-
 tumuisse aquam & Ægy-
 pti regionem ad quindecim
 dierum iter obtexisse
 cognoscunt; quod si colu-
 mnæ medium operiat, nō-
 nisi dimidiam regionem obtexisse. Singulis verò die-

niis fieri solet; adeoque legem singulis annis absolvunt: at in Israëlitica nati hunc morem non servant; sed singulas sectiones in tres tractatus dispescentes, legem triennio demū absolvunt. Inter eos receptū & constitutum, ut in legalis festivitatis similiterq; legislationis solennitate congregentur omnes & simul precentur. Utrisque; ut summus princeps præest D. Nathanaël cōfessus caput, omniumq; Ægypti cœtuū, ut magistrōs & lectores creet, antistes; idemque minister coram magno rege, qui in Tsoanis palatio ad urbē Mitfraim habitat. Hæc omnium Arabum civitas regia est: ubi fidelium Imperator Ali filius Abitalebis. Omnes regionis ipsius incolę dicuntur rebelles: quia contra Imperatorem fidelium Abasidam, qui Bagdadi habitat, rebellarunt. Alter alteri perpetuo invidet. Hic folium suum Tsoane collocavit, quod hic esset locus qui ipsi arrideret: singulisque annis bis in publicum progreditur, semel

H 2

in

ובכל שנה מסוימים את התורה ואנשי ארץ ישראל אינם נוהגים כך אבל עושים מכל פרשה שלשה סורים ומסוימון את התורה לסוף שלש שנים ויש ביניהם מנחג ותקנה להתחבר כלם ולהתפלל ביהוד ביום ש שמחת תורה וכן ביום מתן תורה ובניהם רבי נתנאל שר השרים ראש הושיבה. והוא ראש לכל קהלות מצרי' להקים רבנים וחזנין והוא משרת פני המלך הגדול היושב בארמון צוען מצרי' המדינ' והוא עיר מלוכה לכל בני ערב ושם אמיר אל מומנין עלי בן אבוטאלב וכל בני ארצו נקראי' מורדי' אשר מרדו באמיר אל מומנין אל עבאסי היושב בבגדאד ובניהם קנאה עד לעולם והוא הושיב כסאו בצוען כי הוא הדומה לו והוא וצא שני פעמי' בשנה

קטניות ומלח ומבואי' משם
 הזהב והמרגליו' היקרות
 והיא בארץ כוש הנקראת
 אלהב'ש מירכתי מערב'
 ומחלואן דרך יג ימי' לקוץ
 המדינה היא ראש תחלת
 מצרי' ובה כמו שלשי' אלף
 יהודי'. ומשם עד פיום
 חמשה ימים והיא פיתום
 ובה כמו עשרי' יהודי' ועד
 היום הורה נראה שם טן
 הבנין שכנו אבותינו ו משם
 למצרים ד' ימים והיא עיר
 גדולה היושבת על שפת
 נילוס והוא אל ניל ובה כמו
 אלפי' יהודים ושם ב' בתו
 כניסיות אחת לאנשו ארץ
 ישראל כניסיה אל שאמיון
 ואחת כנסת אנשי בבל
 כניסיה אל עירחקיון ואינם
 נוהגים מנהג אחד בפרשיות
 ובסדרי' של תורה כי אנשו
 בכל נוהגי' לקרות בכל שבוע
 פרשה כמו שעושין בכל ספרד

ac leguminum genera & sal una secū portant: quin-
 etiam inde aurum & pre-
 tiosas margaritas afferunt.
 Provincia est Æthiopiæ
 quæ Alhabasch cognomi-
 natur, versus occidentem.
 Porro ex Halavā tredecim
 diebus in civitatem Kouts
 devenitur, quæ regni Æ-
 gyptiaci initium est: ubi
 triginta circiter Judæorum
 millia. Hinc Pium usque
 quinque dierum iter est,
 quæ olim Pithom diceba-
 tur: ubi viginti ferme Ju-
 dæi. Et ad hæc usque tem-
 pora structuræ patrum no-
 strorum conspiciuntur ru-
 dera. Hinc ad Mirfraim
 quadridui iter est: quæ urbs
 magna in Nili (sive Al Nil)
 ripa, duo ferme Judæorum
 habet millia. Hic duæ sy-
 nagogæ: una eorum qui in
 Israëlitica regione nati
 sunt, quæ est Syrorum sy-
 nagoga; altera Babylonio-
 rum, sive synagoga Irha-
 kijim: quæ in sectionibus
 & tractatibus legis eundem
 morem non servant. quia
 Babylonii singulis septi-
 manis singulas sectiones

legere consueverunt, quemadmodum in totis Hispa-
 וכל

Pischon crescentibus ve-
scentes; nudi per agros va-
gantes; nec aliorum homi-
num instar ratione uten-
tes, utpote qui cum foro-
ribus rem habeant, promi-
scuo ac obvio concubitu
ardentes. Regio ipsa cali-
dissima est. Cum alii Asvva-
næi horum regionem ad
prædandum invadunt, unâ
secum panē, triticum, uvas
passas & ficus afferunt &
coram iis projiciunt: quos
ad cibum accurrentes cap-
tivos abducunt, & in Æ-
gypto, omnibusque regnis
vicinis dividunt. Hi sunt ni-
gri isti servi ex Hamo pro-
gnati. Ab Asvvaan ad Hala-
van duodecim dierum iter
est: ubi trecenti ferme Ju-
dæi. Hinc mercatorum ca-
tervæ diebus quinquaginta
per desertum Altsahra
dictum ad provinciam Ze-
vilam nomine (quæ eadem
est cum illa Havila Gineæ)
proficiunt. Porro in il-
lo deserto arenosi montes
sunt: ideoque exortus ven-
tus catervas illas arenâ ob-
ruit, omnesq; in arena suf-
focantur. Qui verò eva-
dunt, ferrum, æs, fructuum

H ac

פישון והולכין בשדות ערומי'
ואין להם דעת כשאר בני
אדם שוכבין עם אהותיהן
ועם מי שימצאו והיא ארץ
חמה מאד וכשהולכין אנשי
אסוואן לשלול שלל בארצם
מוליכין עמהם לחם וחמ'י'
וצמוקי' ותאני' ומשליכי'
אליהם והם באי' אחרי
המאכל ומביאין אותם שבוי'
ומוכרין אותם בארץ מצרי'
ובבל הממלכות אשר ס'
סביבותיהם והם העברי' ח'
השחור' בני חם ו מאסוואן
עד חלאן שנים עשר יום
וכה כמו ג' מאות יהודי'.
ומשם הולכין בשוירות
מהלך חמשי' יום דרך מדבר
הנקרא אל צחרא למדינת
זוילא היא חוילה בארץ
גאנה ובאותו המדבר יש הרי
חול ובעת שיקום הרוח
פגסה השוירות בחול ומתי'
כולם בתוך החול והנצלו'
מהם מוליכין עמהם ברזל
ונחשת ומיני פירות ומיני

ישראל . ומשם שנים עשר
 ימים לזבֵיד ושם יהודים
 מעטים . ומשם שמונה ימים
 להודו אשר ביבשה הנקרא
 בעראן והיא ערן אשר ב
 בתלסר ובה הרים גדולים
 ושם מישראל הרבה ואין
 עליהם עול גוים ולהם
 ערי ומגדלים בראשי ההר'
 ויורדי' לארץ המעטום ה
 הנקראת לוביא היא ממשלת
 אדום והם הלובי' אשר
 בארץ לוביא ונלחמו' עמהם
 היהודי' ולקחין שלל ובה
 ועולין אל ההרים ואין אדם
 יכול להלחם עמהם ובאי'
 שם מאותם היהודי' אשר
 בארץ עדאן רבי' לארץ פרס
 וארץ מצרי' . ומשם לארץ
 אסואן מהלך עשרים יום
 במדבר שבא על נהר פישון
 היורד מארץ כוש שיש להם
 מלך וקוראין אותו סולטאן
 אל חבש ויש מהם קצת
 שהם כבהמות לכל עניוניהם
 אוכלי' העשבו' על שפת
 פישון

Israëlita. Hinc duodecim
 diebus Zebid usque perve-
 ni: ubi pauci Judæi. Hinc
 diebus octo in Indiam con-
 tinentem: quæ Baadan vo-
 catur, estque eadem cum
 Adan in Telassar sita. Hic
 magni montes plurimique
 Israëlitæ, nulli gentium ju-
 go subditi; sed urbes atque
 turres in montium jugis
 incolentes, in regionem
 Hammaatam descendunt,
 quæ Lybia dicitur, & Edo-
 mæorum ditio est, ipsique
 sunt Lybies Lybiam inha-
 bitantes: atque Judæi bella
 cum iis gerunt, spolia ac
 prædam reportantes; post-
 eaq; in montes ascendunt.
 nec quisquam eos bello
 aggredi potest. Istinc ex
 illis Judæis, qui in regione
 Adan degunt, multi in
 Persidem & Ægyptum ve-
 nire solent. Inde in regio-
 nem Asvvaan per desertum
 Schebæ viginti dierum iter
 est secundum Pischon flu-
 men, quod ex Æthiopia
 descendit. Habet illa re-
 gem, quem Sultan El-Ha-
 basch vocant. ex incolis
 quidam bestias in omnibus
 referunt, herbis ad flumen

naves hac ratione pereunt. Verumenimverò homines artem quandam excogitarunt, qua ex hujusmodi funesto loco evadere possent: nam sumptas secum juvencorum pelles, si ventus ille irruat, eosque in mare Concretum protrudat, arripiunt; ac se iis inserunt gladium singuli manu tenentes, pellesque intus consuentes, ut eò aqua penetrare nequeat: posteaque sese in mediam aquam projiciunt. Quos prospicientes magnæ aquilæ gryphes dictæ, jumenta esse putant: & descendentes arripiunt eos atque in aridam exportant, iisque in monte aut valle ad devorandum insident. Sed homines inclusi festinant & illas gladiis cædentes occidunt: & è pellibus egressi incedunt, donec ad terram habitatã perveniant. Mortalium multi hoc modo evadunt. Inde post triduum quindecim dierum navigatio per mare in Gingham instituta fuit: ubi mille ferme Israëlitæ. Unde in Cholan septem diebus per

אובדות בזה הענין אבל בני אדם למדו חכמה להמלט מן המקום הרע הזה ללוקחין עורות בני בקר עמהם ואם יבא אותו הרוח וימשלכם בים הנקפא יקה העור ויכנס בתוכו וסכין אחד בידו ותופר את העור טבפנים כדי שלא יכנס בו המים ומפיל עצמו בתוך המי' ורואה אותו הנשר הגדול הנקרא ג'ר'פו והוא סבור שהיא בהמה יורד ולוקח אותו ומוציאו ליבשה וחוננה עליו בהר עמק ללאכול אותו ומטהר האדם ומטהר אותו בסכין והורגו ויוצא מן העור והולך עד שמגיע לישו והרבה בני אדם ניצלין בענין זה ומשם שלשה ימים אל ג'נגלה מהלך טו ימים דרך ים ושם כמו אלף מישראל ומשם לכולן שבעה ימים דרך ים ואין שם

mare vectus fui: ubi nullus Israë-

חובותי לבני ביתי ולשכני
 והוא עושה צואה ומחלק
 נכסיו לבניו ומצורה לפרוע
 כל מה שהוא חייב לכל
 אדם ולקבל מן בני אדם מה
 שהם חייבין וכתבו העריל
 צואתו לילך לדרכו ואינם
 רואים אותו כלגם ועל פי
 השקר והמרמה הזאת ו
 והכשוף הזה שעושים להם
 הכומרי' האלו הם מתחזקי'
 ואומרו' כי אין כמותם בכל
 הארץ. ומשם לעבור לארץ
 אל צין מהלך ארבעי' יום
 והוא קצה המזרח ויש אומרו'
 כי שם דרך ים הוא ים
 הנקפא ובאותו ים שולט
 כבב כסיל שיוצא שם רוח
 סערה לפעמים ואין אדם
 ספן יכול לילך על הספינה
 מכובד הרוח עד שמשליך
 הרוח את הספינה באותו
 ים הנקפא ואינה יכולה לזוז
 ממקומה ואנשים יושבים
 שם עד כלות מחיותם אחר
 כך ימותו וכמה ספינות
 אוברות

filiis domesticis & vicinis
 debita exolverit. Postea
 edicta proponit & faculta-
 tes suas liberis distribuit,
 præcipiens ut quicquid ulli
 debet, persolvant; & quic-
 quid homines alii debent,
 ab iis exigatur: testibus
 mandata ejus excipienti-
 bus, quò in viam suam di-
 scedat. illi deinde cum nul-
 lo modo vident. Hoc men-
 dacio ac dolo, & hisce præ-
 stigiis, quas ipsis struunt isti
 sacerdotes, obfirmantur:
 atque sibi nullos esse in to-
 to orbe pares, prædicant.
 Inde in Sinam Orientis ter-
 minum tendentibus, qua-
 draginta dierum iter est: &
 maris, quo iter faciunt, no-
 men esse ferunt, mare con-
 cretū; ubi sydus Orion do-
 minatur procellosum & vi-
 ventum subinde excitans.
 itaq; tum nullus nauta navī
 ob venti vehemētiam vehi
 potest, adeoq; etiam ven-
 tus navem in istud mare
 concretum protrudit, ut è
 loco isto extricari nequeat.
 quo fit ut homines illic do-
 nec commeatus absuma-
 tur hærentes, postea mo-
 riantur. quapropter multæ

Quum verò is qui votum concipit filiis suis domesticis & cognatis indicat, ecce de me ipso votum concepì, ut me vivum in ignem projiciam; respondent omnes ac dicunt, ô te beatum, bene sit tibi. Qui ipso voti exolvendi die convivium ei magnum parant: ac ipse deinde equo suo vectus, si dives sit; aut si fuerit pauper, pedibus suis ad vallis usque marginem procedit, seque in medium ignem projicit, tota sua familia cum tympanis & tibiis jubilante, donec totus combustus fuerit. Elapso triduo, è primariis sacerdotibus duo ædes ejus filiosque adeunt, atque ita præcipiunt, Domũ præparate, quia pater vester hodie ad vos veniet, ut vobis facienda injungat: postea ipsi assumunt è civitate testes. Ecce autem satanæ illius formâ accedenti obviam procedunt uxor ac liberi; eumque, qui in illo mundo sese habeat, percunctantur. ille respondet, se ad socios suos accessisse quidem, sed ab ipsis non recipi, priusquam

וכשהנודר אומר לבני ביתו ולקרוביו הנה נדרתי על עצמי להשליך עצמי באש בחייו ענין לו כלם ואומרי' לו אשריך וטוב לך וכשיגיע זום הנדר עושים לו משתה גדולה ורוכב על סוסו אם הוא עשיר ואם הוא עני הולך ברגליו עד שפת העמק ומשליך עצמו בתוך האש וכל משפחתו מרננין בתופי' ובמחולות עד שישרף כלו ולקץ שלשה ימי' יבואו שני' מהכומרים ההם מ מהגדולים שבהם אל ביתו ואל בניו ואומרי' להם תתקנו הבית כי היום יבא אליכם אביכם לצוות לכם מה תעשו והם לוקחי' עדי' מן העיר והנה השטן בא בדמותו ובאי' אשתו ובניו ושואלי' לו היאך הוא באותו העולם והוא אומר באתי עד חברי ולא קבלוני עד שאשלים

filiis

בכל אלה המקומות כמו מאה
 יהודים בכלל המדינות וכל
 אנשי הארץ שחורים ו
 והיחודים כמו כן והן יהודים
 טובים בעלי מצות וביניהם
 תורת משה ונביאי' ודבר
 מועט מתלמוד והלכה ומשם
 שנים ועשרים יום לאוי כנר'ג
 והם שוכניה עובדי האש
 הנקראין דוגב'יין וביניהם
 שלשה ועשרי' אלפי' יהודים
 ויש להם לדוגב'יין כומרי'
 בכל מקום כבית עבודה וזה
 שלהם ואותם הכומרי' כ
 כשפנים גדולי' אין כמותם
 בכל הארץ בכל מיני כשוף
 ולפני הבמה של בית תפלתם
 עמק גדול ומדליקין כל ימיו
 עולם שם אש גדולה וקוראין
 אותה אלהותא ומעבירין
 בה בניהם וגם מיתיהן
 משליכי' בתוך האש ויש שם
 מהם גדולי הארץ שנודרים
 עצמן בחייהן לשרף באש
 וכשהנודר

ipfos passim centum ferme
 Judæi degunt, in omnium
 civitatū complexu: & sicuti
 omnes indigenæ atri sunt,
 pariter & Judæi. Jud. viri
 boni, præceptorum obser-
 vantes: ut qui legem Mosis
 ac Prophetas habeant, &
 pauca è Talmude ac Con-
 stitutionibus. Hinc viginti
 duobus diebus ad insulas
 Chenerag appuli: ubi sunt
 incolæ qui colunt ignem,
 vocanturq; Dugbijim. In-
 ter quos viginti tria Judæo-
 rum millia. Illi vero Dug-
 bijim ubiq; in templo suo
 idololatrico sacerdotes ha-
 bent: qui sacerdotes exi-
 mii præstigiatores sunt; ad-
 eo ut in toto orbe pares
 non habeant in ullo præ-
 stigiarum genere. Porro
 ante excelsum sive altare
 oratorii sui vallé magnam
 habent, ubi singulis mundi
 diebus magnum ignem ac-
 cendunt, quem vocant di-
 vinitatem; per quem filios
 suos transmittunt: mor-
 tuosque suos etiam in me-
 dium ignem projiciunt.
 Quin & istic inter eos re-
 periuntur regionis istius
 magnates, qui se vivos igni
 comburendos devovent.

locant, superfusa aqua calida; & ad solem exiccant, quò indurescat & solidetur, itaque nigrorem contrahat. Hic similiter calamus odoratus & zinziber, aliaq; multa aromatum genera reperiuntur. Incolæ mortuos suos non sepeliunt; sed variis aromatibus cōdiunt, ac in scamnis secundum distinctas familias sepositos findonibus obtegunt. Sic exiccata carne & ossibus, hominibus vivētibus similes videntur: adeo ut hīc illorum singuli suos parentes totamque familiam ab hoc tempore multis retro annis dignoscant. Solem venerantur: habentq; aras five excelsa magna, ubique extra civitatem ad dimidiatum milliare disposita. Mane itaque foli obviam occurrunt: nam in singulis aris five excelsis veluti solaris orbis est magicis artibus cōfectus, qui ex oriente sole maximo strepitu vertitur. Tum singuli cum viri, tum fœminæ, manuthuribulum suum tenētes, foli adolent. Hac sua via suā stultitiam produnt. Inter ipsos

ונותנין עליו מים חמים ומיבשין אותו לשמש כדו שיתחזק ויתקיים והוא חוזר שחור ושם ימצא הקנה והזנגביל ומיני בשמים הרבה ואנשי הארץ ההיא אינם קוברים את מתיהם אלא חונטו אותם במיני בשמי ומשימין אותם בספסלום ומכסין אותם בסדנוני כה משפחה ומשפחה לכו ומתיבש הבשר עם העצמות והם דומים כבני אדם היים ומכירין כל אחד ואחד מהם אבותיו וכל משפחתו מהיום לכמה שנים והם עובדים לשמש ויש להם במות גדולות בכל מקום חוץ לעיר כמהלך חצי מיל ובבקר הם רצים לקראת החמה כי יש בכל במה כמו גלגל חמה עשוי במיני כשוף ובצאת השמש חוזרת הגלגל בקולות גדולות וכל אחד וא' מחתתו בידו ומקטרין לשמש אנשי ונשים זה דרכם כסל למוי בנייהם

שמם ומביאין אותם בפניו
 והמלך מקבל על עצמו ממונם
 שהניחו אותו על פני השדה
 בלא שומר ושם פקיד אחד
 יושב בחנות וכל אברה
 שימצא אדם בכל מקום וביא
 אותה אליו ובעל האברה
 יאמר סימניה ויתננה לו וכן
 מנהגו בכל מלכותו מהמלך
 ההוא ומפסח עד ראש השנה
 כל ימי הקיץ חום גדול
 ומשלש שעות מן היום ומעלה
 מתחבאים בני אדם כלם
 בבתיהם עד הערב ואחר
 כך יוצאין ומדליקין נרות
 בכל השוקים והחוצות
 ועושין מלאכה בלילות כל
 הלילה כי ביום לא יוכלו
 מרוב החום הגדול ובארץ
 ההיא הוא הפלפל שהם
 נוטעין האילנות שלהם על
 פני השדה כל העיר וכל אחד
 ואחר מהם יודע פרדסו
 ואילנות קטנות הן והפלפל
 לבן הוא אבל כשלוקטין
 אותו משומין אותו באגנות
 ונותנין

in ipsius conspectum ad-
 ducunt. Rex autē quam in
 agro sine custode relinqui-
 rūt pecuniam in se recipit:
 & præfectum constituit in
 publico hospitio commo-
 rantē, ad quem quamcunq;
 ullibi rem amissam quis
 invenit, apportet: qui rei
 ipsius domino signa osten-
 denti eandem reddit. Hic
 ei mos est in toto suo re-
 gno, regi inquam illi. Cæ-
 terum à Paschate ad anni
 usque initium, omnibus æ-
 statis diebus æstus ingens
 est. adeo ut à tertia (sive
 nona nostra) diei hora ac
 deinceps omnes homines
 in ædibus suis lateant usque
 ad vesperam: ubi egressi
 luminaria per omnia fora
 & vicos accendunt; opusq;
 suum noctu faciunt per no-
 ctem totam, quia interdium
 præ nimio & summo æstu
 nequeunt. In hac regione
 piper crescit: nam arbores
 suas in agro plantant, &
 quidem totius civitatis; ubi
 unusquisque novit hortum
 suum. arbores depressæ
 sunt, ipsum verò piper al-
 bum: sed quum istud de-
 cerpant, in crateribus col-

diarum etiam incolæ huc plurima aromata devehūt; insulares verò ipsi inter illos proxenetæ sunt: atque hinc tantum victum quæritant. ibidem Judæi ferme quingenri degunt. Hinc maritimo itinere in Kati- pham veni diebus decem: ubi quinque erant Israëli- tarū millia. Hic bdellium invenitur. die mensis Ni- fan five Martii vigesimo- quarto delapsam in super- ficiem aquarū pluviam ex- cipiunt; quæ conclusa in maris fundū demittitur: de- inde circa Tisri, idest, Sept. medium eò ad maris fun- dum homines duo funibus descendentes, reptilia illa collecta educunt; posteaq; diffecantes, has inde gem- mas depromunt. Inde se- ptem dierum itinere in Haoulam veni, initium re- gni ubi solem colunt, è po- stteris Chusch, qui astrologiæ incumbunt. omnes atri, fidi in negotiatione. Quum ad eos mercatores è longin- quis regionibus commeāt, & in portū recipiuntur, ac- cedentes tres regis scribæ nomina annotant; eosque

G 5 in

אנשי הודו מביאים שם בשמים לרוב מאד ואנשי האי סרסורי' ביניהם ומה הדבר בלבד הוא הווהם ויש שם כמו חמש מאות יהודים ומשם עשרה ימים בים עד קתי'פה ושם חמש אלפים מישראל ושם ימצא הברולח ובארבע ועשרי' בנוסן יורד שם מטר על פני המים ומקבלי' המטר ההוא ונסגרים ונפלין לתוך קרקע הים ובחצי תשרי באין שם שני בני אדם לקרקע הים בחבלים ומלקטים את השרצי' ההם ומוציאינ אותם ומבקעי' אותם ומוציאי' מתוכם אבנים הללו ומשם מהלך שבע ימים להאולם הוא תחלת מלכות עובדי השמש והם בני כוש והם חוזים בכוכבים וכולם ש שחורים ובעלי אמונה במשא ובמתן וכשיבואו אליהם התגרים מארץ מרחק ונכנסין אליהם בנטל נכנסין אליהם שלשה סופרי המלך וכותבים

אדוני המלך לא אוכל ל
 לעשות הדבר הזה אז לקחו
 המלך ושימיהו בבית הרב
 שר שלום מן קהל אספהאן
 ונתן לו הרב בתו לאשה
 והוא רבו משה זה ספר לי
 את כל הדברים האלה ו
 ומשם חזרתי לארץ כ
 כוזסתאן אשר על שפת
 חזקל ומשם יורד הנהר
 ויורד בים הודו אל אי אחד
 נקרוקיש מהלך האי ששה
 ימים ואין זורעין שם
 ואין להם אלא מעין אחד
 ואין שם בכל האי נהר כי
 ממי גשמים הם שותים
 ותגרים באים מארץ הודו
 ומן האיים והונים שם
 בסחורה ואנשי ארץ שנער
 ואלומן וארץ פרס מביאים
 שם כל בגדי משי וארגמן
 ופשתן פרוקטון קנבוס מ
 מוך הטום ושעורים ודוחן
 ושפון וכל מיני מאכל
 וכל מיני קטניות ועושין
 סחורה אלו עם אלו כי
 אנשי

Serenissime rex, id facere
 nequeo. Eum itaque tum
 assumptū collocavit in ædi-
 bus magistri Sar-Schalom
 in coetu Asphahaan; eique
 magister iste filiam suam in
 uxorem dedit. Qui idem
 D. Moses hæc omnia mihi
 narravit. Inde ad Choza-
 stan iter deflexi, regionem
 quam Tigris alluit: unde
 defluens flumē in mare In-
 dicum delabitur, ad insu-
 lam quandam, cui nomen
 Nikrokis. Hæc insula sex
 dierum iter patet: ubi se-
 mentem non faciunt, &
 unum tantum fontem ha-
 bentes, nullo in tota insula
 reperto fluvio, imbrium a-
 quas bibunt. Huc mercato-
 res ex India insulifq; com-
 meant, atque ob mercatu-
 ram diverfantur. huc enim
 Mesopotamiæ incolæ, Eli-
 mania & Persidis quævis
 fericearum ac purpurea-
 rum vestium genera deve-
 hunt; linum etiam fluviati-
 cum, cannabum, stragula,
 triticum, hordeum, mi-
 lium, avenam, & quævis
 eduliorum & leguminum
 genera. Ita mercaturam
 inter se exercent: nam In-

scilicet quotquot desertum illud incolebant. Itaque quum Perfidis rex eos oppugnatum veniret, in ipsa via cum illo manus conseruerunt: atq; progressi viri Copher-Alturc in exercitu Perfico plurimos interfecerunt, ut Persarum rex cum paucis ad regionem suam refugeret. Et equitum non nemo ex ipsius ministris Judæum aliquem illius regionis, Mosen nomine, pellexit: quem ex illa regione abductum postea in Perfide mancipium fecit. Die quodam cum sagittarii coram rege ludicrum exercerent, sagittariorum nemo huic Doctori Mosi par reperiebatur. Unde rex per interpretem quisnam esset rogavit: eumque, ubi quidnam sibi contigisset, & qui ab equite illo fuisset seductus, enarrasset, libertate donavit; & byssinis ac sericeis vestibus induto dona multa largitus est. quum subiecisset, si religionem nostram amplecti volueris, benignitatem erga te exercebo, ut admodum ditatus aulæ meæ præficiaris; in hæc verba respondit ille,

כל החונים במדבר ההוא וכשיצא מלך פרס להלחם עמהם ערכו אתם מלחמה בדרך ונסעו אנשי כופר אל תוך ההרנו בחיל פרס חללים רבי' וינס מלך פרס במתי מעט אל ארצו ופרש א' מעבריו רמה את יהודי אחד מהארץ ההיא ושמו רבי משה והוציאו מאותה הארץ וכשהיה בארץ פרס כבש אותו לעבד ויום אחד מימים באו דורכי קשת לשחוק לפני המלך ולא נמצא בכלם רובה קשת כרבי משה שאל המלך על ידי תורגמן והגיד לו את אשר קרהו ואיך רמה אותו הפרש ההוא מיד עשה אותו המלך בן חורי' והלביש אותו בגדי שש ומשי ונתן לו מתנות ואמ' לו אם תרצה לשוב לדתנו ואני אעשה עמך הסדר ותהיה עשיר גדול וממונה על כל ביתי ענה ואמר לו

ויפחד מלך פרס פחד גדול
 ויום שני שלחו אליו לערוך
 עמו מלחמה והוא השיב לא
 באתי להלחם בכם כי בכופר
 אל תורך אויבו באתי ל
 להלחם. ואם נלחמ' אתם
 בי אני אקח נקמתי ואהרתי
 את כל היהודים אשר בכל
 מלכותי כי אני יודע כי אתם
 חזקים ממני במקום הזה אבל
 אתם עשו עמו חסד שלא
 להלחם בי והניחו אותי עם
 כופר אל תורך אויבי ותמכרו
 לי מזון מר שאתי צריך לי
 ולחילותי והיהודים לקחו
 עצה ביניהם להתרצות למלך
 פרס בשביל היהודים אשר
 במלכותו ונכנס בארצם הוא
 וכל חיילותו וישב שם מו
 יום וכבדו אותו כבוד גדול
 ושלחו כתב לכופר אל תורך
 בעלי בריתם והודיעום הדבר
 הזה והם עמדו כלם על
 מעברות ההרים בהול כנר

regi narrat: qui magno pa-
 vore percussus fuit. Cum
 postridie ad eum mitteret
 qui praelium conferent,
 respondit, Vos oppugnatu
 non veni; sed cu Turciae pa-
 ganis, inquit, inimicis meis
 pugnatum accessi. Quod
 si mecum manus confera-
 tis, ita ulciscar ut omnes Ju-
 daeos qui in universo regno
 meo sunt interficiam: vos
 enim in hac regione me
 potentiores novi. Potius
 (addebat) vos benignitate
 erga me exercete, ne pra-
 lio me lacestatis; sed cum
 hostibus meis Copher-Alt-
 ture agere sinatis: vendite
 mihi cibos, qui mihi ac co-
 piis meis sufficiant. Quare
 Iudaeis consultantibus ami-
 citiam cum illo colere pla-
 cuit, propter Iudaeos quos
 suo imperio subditos ha-
 bebat. unde ipse cum co-
 piis suis omnibus illorum
 regionem ingressus, ibide
 quindecim dies substitit,
 magnoq; honore affectus
 fuit. Interea missis literis ad
 Copher-Alt ture confaede-
 ratos suos, totum hoc ne-
 gotium significarunt. Qui

universi montium transitus occuparunt magno exercitu,

כל

modo ad illos habitatores penetrarent, sive navigando, sive natando. Ibi magnum pontē invenerunt, in quo tures erant cum porta clausa; & ante pontem, scilicet ab illa parte ulteriori, urbem magnam. Itaque à citeriori montis parte inclamarunt, donec quidā accederet, quidnam vellent, aut cui parerēt rogians: quem non intellexerunt, antequam interpres veniret; qui eorum linguæ peritus de ipsis percunctatus est. Cui in hæc verba responderunt, Subditi Persarum regis sumus, atque percunctatum venimus, quinam sitis, cuique pareatis. Tum illi, Judæi sumus, nec regem, nec principem ullum è Gentibus nobis præfectum habemus; sed unum principem Judæum. Rogarunt itaq; quæ ad idololatrias filios Guts (qui erant ex illis Turciæ paganis, sive profanis Turcis) attinerent, quibus Judæi responderūt, Confœderati sunt; ideo qui illorum malū quærit, quærit & nostrum. Postea viri illi duo reversi hæc Persidis

ולעבור אליהם על כל פנים בספינות או לשוט על פני המי' ושם מצאו לשם גשר גדול ועליו מגדל ופתח סגור ולפני הגשר מאותו הצד עיר גדולה וצעקו לפני הגשר עד שבא להם אדם אחד ושאל להם מה תרצו או למי אתם ולא הבינו עד שבא התורגמן שהיה יודע לשונם ושאל אותם ואמרו עבדי מלך פרס אנחנו ובאנו לשאול מו אתם ולמי אתם עובדי אמרו להם יהודי אנחנו אין עלינו לא מלך ולא שר מן הגו' אלא שר אחד ויהודי. ושאלו אותם על דבר הכומרי' בני גוי' מן כופר אל תורק והם אמרו להם כי הם בעלי בריתנו וכל המבקש רעתם מבקש רעתנו וישובר שני האנשים האלה ויגורו למלך פרס

אשר עמם ויקרא המלך
 לתייר ויאמר לו איה דברך
 שהבטחתנו למצוא את א
 אויבנו ויען ויאמר לו ת
 תעיתי בדרך ויחר אפו ויצו
 להתיו את ראשו וצוה
 המלך בכל מחנהו כל אדם
 שיש לו שום מחירה להלוק
 וחלוק עם חברו ואכלו מה
 שבירם וגם הבהמות והלכו
 במדבר עדין יג ימים עד
 שבאו אל הרי ניסבור ו
 והיהודי' יושבי' שם והם
 באו שם ביום וחזו בגנות
 ופרדסי' ועל מעיונו' הטל'
 אשר מצד לנהר גוזן ו
 והימז' ימי הפירות ואכלו
 והשחיתו ואין אדם יוצא
 אליהם אבל היו רואים
 על ההרים מדינות ומגדלי'
 הרב' וצוה המלך לב' א
 אנשי' מעבדיו ללכת לשאול
 מה אומה וושבת בהרו'

quæ secum duxerant, mo-
 rerentur. Quapropter rex
 advocatum exploratorem
 rogat, Ubi jam verba tua,
 quibus nos de hostibus no-
 stris inveniendis securos
 reddidisti? Cui respondens,
 à via aberravi, inquit. Ita-
 que accensâ irâ caput ejus
 amputari iussit. & hoc per
 totum exercitū mandatum
 promulgavit, Cuicumq; ali-
 quid edulii superest quod
 communicari possit, cum
 socio suo partiatur. Tum
 comedentes quicquid præ-
 manibus erat, ipsa etiam
 jumenta, per deserta aliis
 tredecim diebus iter fa-
 ciebant, donec ad mon-
 tes Nisboris devenirent,
 ubi Judæi habitabant. Per-
 sæ cum de die eò venis-
 sent, in hortis & poma-
 riis castrametabantur &
 juxta fontes, qui secundum
 Gozan flumen scaturiunt.
 Cum ergo fructus maturi
 essent, edebant & vasta-
 bant, nemine contra eos
 prodeunte: cæterū in mon-
 tibus multas civitates ac
 turres videbant. Itaque rex

ministris duobus in mandatis dedit, ut profecti, quæ-
 nam gens in montibus degeret, rogarent; & quovis
 ולעבור

mile in tota Perfide visum fuit. Eo audito, Perfarum rex in ipsos admodum excaudit, addens, Majorum meorū temporibus ex illo deserto nulla turba erupit: quocirca jam vadam & eorum nomen è terra delebo. Itaque nunciis per totum regnum missis, omnes copias suas collegit: & exploratorem quendam querenti, qui ubi castra illi haberent, ostenderet; ibi repertus est quidam, qui regi promitteret, se ei locum illorum ostensurum: nam ex eorum, inquietabat, sum numero. Cui rex divitias promisit, si locum sibi ostenderet, & quæ dixerat præstaret. Postea rex, quanto, inquit, commeatu ad institutū iter, magnumque desertum superandum egemus? Tum ille, Sumite panem & aquam in dies quindecim: non enim ulla edulia reperietis, donec ad illorum regionem perveneritis. Quo præstito, per desertum quidecim dierum emensi iter nihil invenerunt; & præ manibus nonnisi perpauca edulia habebant: adeo ut homines quidam & jumenta,

לא נראה כדבר הזה בכל מלכות פרס וכששמע מלך פרס הרה אפו עליהם ואמר לא בימי אבותי יצא עלי היל מהמדבר הזה ועתה אלך ואכרות את שמם בן הארץ והעביר קול בכל מלכותו וקבץ כל חיילותיו ובקש תיור אחד להראותו מקום חנותם ונמצא לשם איש אחד ואמר למלך אני אראה לך מקומ' כי אני מהם ונדר לו המלך להעשירו אם יראה לו ואם יעשה הדבר הזה אמר לו המלך כמה אנו צריכין הוצא' לדרך זה ולמדבר הגדול הזה אמר להם קחו לחם ומים לחמשה עשר יום כי לא תמצאו שום מחיה עד ארצם וכן עשו והלכו במדבר הרך טו ימי' ולא מצאו כלום ולא נשאר בידם מחיה אלא דבר מועט עד שהתחילו למות האדם והבהמה

G 2

quæ

מדינות וזרכים בהרים מצד
 אחר מקיף אותם נהר גוזן
 ואין עליהם עול גוים כי אם
 נשיא אח' עליהם ושמו ר'
 יוסף אמרכלא הלוי וכיניהם
 תלמודי חכמים וזורעים
 וקוצרי' והולכים למלחמה
 לארץ כוש דרך המדברות
 ויש להם ברית עם כופר אל
 תורך שהם עובדי הרוח
 וחונים במדברות והיא אוטה
 שאינם אוכלים לחם ולא
 שותי' יין כי אם בשר חי כמות
 שהוא בלתי מבושל והם
 בעלי אפוס ובמקום האף יש
 להם שני חוריץ קטני' שיוצא
 מהם הרוח ואוכלין כל בהמות
 טהורות וטמאות והם אוהבי
 ישראל. והיום י' שנה
 כשבאו לארץ פרס בחיל גדול
 ולקחו את מדינת ראי והכו
 אותה לפי חרב ולקחו את
 כל שללה והלכו להם דרך
 המדבר ומהיום לכמה זמים

tates & castella in monti-
 bus habet, quæ ab uno la-
 tere Gozan flumen alluit:
 nec ullo gentium jugo
 premuntur; sed Principi
 præposito parent, cui no-
 men Doctor Joseph Præ-
 fectus summus Levita. Nō
 destituuntur sapientiæ stu-
 diosis, iisque qui sementem
 & messem faciunt: & in
 prælium proficiscuntur ad
 Æthiopum regionem, per
 deserta iter facientes. Fœ-
 dere vero juncti sunt cum
 Turciæ paganis, qui ven-
 tum colunt & deserta in
 habitant. Gens est quæ nec
 panem edit, nec vinum
 bibit; sed carnem crudam
 qualis ex se est, non co-
 ctam vorat. homines om-
 nes feri, quique nasi loco
 bina parva foramina ha-
 bent, quibus spiritum du-
 cunt: quolibet animali cum
 puro, tum impuro vescun-
 tur. Cæterum Israëlitas di-
 ligunt. jam xv agitur an-
 nus, ex quo in Perfidiæ ma-
 gna manu profecti urbem
 Rai occuparunt, eamque
 internecone deleverunt;
 & omni abacta præda, de-

ferta repetiere. Multis autem abhinc annis, nihil si-
 לא נראה

ex omnibus gentium nationibus commeant : habetque amplissimā regionem. Hinc dierum quinque itinere distat Samaritan urbs magna, in regni confinio condita : in qua quinquaginta ferme Israëlitarum millia, quibus præfectus est Doctor Obadia Princeps, quorum etiam diversi sapientia & divitiis eminent. Inde quatruiduo petitur Tuboth, civitas in cuius vicinis sylvis moschus invenitur. Unde viginti-octo dierum emenso itinere ad montes Nisbon venit, flumini Gozan imminentes. Ibi in Perfide scilicet, sunt Israëlitarum quidam, qui ex illo loco ortum ducunt & affirmant, in urbibus Nisboris quatuor Israëlitarum tribus residere, tribum Danis, Zebulonis, Ascheris, & Naphthali, captivam multitudinem primam quam Schalmaneser Assyriæ rex abduxit. secundum illud, *Et abduxit eos in Lablah & Habor montes Gozani ac montes Media.* Illorum Is-

maëlitarum regio ad viginti dierum iter protensa civi-

תאי אליה בטחורה מכל
לשונות הגוי' והיא ארץ
רחבת ימים. ומשם חמשה
ימים לסמרכנת העיר הגדולה
אשר בקצה המלכות ושם
כמו חמשי' אלף מישראל
ורבי עובדיה הנשיא ממונה
עליהם ובניהם חכמים
ועשירים גדולי'. ומשם
ארבעה ימים לטובות היא
המדינה שנמצא המור ביערי'
שלה. ומשם מהלך שמנ'
ועשרי' יום להרי ניסבון
אשר על נהר גוזן ויש שם
אנשי' מישראל בארץ פרס
שהם משם ואומרי' כי בערי
ניסבור ארבעה שבטי' מ
מישראל שבט דן ושבט זבולן
ושבט אשר ושבט נפתלי
הגולה הראשונה שהגלה
שלמנאסר מלך אשור כמו
שכתו' ויגלם בלחלח וחבור
הרי גוזן הרי מדי'. ומהלך
ארצם עשרים יום ויש להם

עשרה ימים היא מדי העיר
 הגדולה ושם כמו חמשים
 אלף מושאל ושם לפני
 כנסת אחת קבורים מרדכי
 ואסתר ו' ומשם ד' ימים
 עד דברותאן ויש בה כמו
 ארבעה אלפים יהודי' על
 נהר גוזן ומשם שבעה
 ימים למדינת אסבהאן היא
 העיר הגדולה והיא עיר
 המלוכה והיא מהלך לב
 מיל ובה כמו טו' אלף
 מושאל ושם שר שלום
 הרב שהיה ממונה על יד
 ראש הגולה ועל כל ה
 הכרכים אשר בכל מלכות
 פרס ומשם ארבעה ימים
 לשפאז היא פרס המדינה
 ובה כמו עשרת אלפים
 יהודי' ומשם שבעה ימים
 לגינה העיר הגדולה שעל
 שפת נהר גוזן ובה כמו
 שמונת אלפי' מושאל
 ואותה העיר ארץ סחורה

monte decem dierum iti-
 nere Hemdanem venit;
 quæ est magna illa civitas
 Media, toti provinciæ co-
 gnominis: quam Israëlita-
 rû quinquaginta fere mil-
 lia inhabitant. Hic ante sy-
 nagogam quandã humati
 fuere Mardochæus & Ester.
 Inde quatuor dierum iti-
 nere distat Tabreztaan; ubi
 quatuor pene Judæorum
 millia ad Gozan fluvium.
 Hinc septē diebus perve-
 nitur ad civitatē Ispahaan
 urbem illam magnam, re-
 gnique metropolin, quæ
 duodecim milliarum patet:
 ubi quindecim ferme Is-
 raëlitarum millia, & magi-
 ster Sar-Schalom, cum istis
 Æchmalotarchæ authori-
 tate præfectus, tum omni-
 bus totius Persidis regni
 oppidis. Hinc quatuor die-
 bus distat Schiphaaz, quæ
 est metropolis Persiæ, re-
 gno cognominis: quam
 decem fere Judæorû mil-
 lia inhabitant. Inde septem
 diebus Ginam veni, civita-
 tem illam magnam in ripa
 Gozan conditam: ubi octo
 fere Israëlitarum millia.

Hæc civitas emporium est, quò commerciorum causa

באי

rati isti, Princeps & Videns, ut exhortarentur, & illū iusti ac æqui commonefacerent: sed ista omnia nō admisit. Nec à via pessima destitit, donec exoreretur rex quidam, cui nomē Zin Al-din, Turcarum rex & Perfarum regis vafallus: qui legatos misit, foceri Davidis Al-roi causa, cui sic munus decies mille aureorum tradidit, quò clanculum Davidem Al-roi occideret. Quod ille præstitit, quum domū illius ingressus, dormientem in lecto interficeret: ut hac ratione illius consilium & solertiam irritam reddiderit. Attamen ira Perfarum regis in Judæos cum montanos istos, tum in sua ditioe habitantes concepta nondum deferbuerat. quod cum ipsi animadverterent, Æchmalotarcham accersiverūt, quò sibi ad Persidis regem auxilio veniret. Quocirca is ipsum benigna oratione & placidis verbis aggressus, placare studuit: unde & placatus fuit, centum circiter aureis talentis

הנוכרים כתבים אליו לזרוו ולהזהירו ולא קבל ולא שב מדרכו הרעה עד שקם מלך א' ושמו זין אל דין מלך תוגרמו' עבד מלך פרס ושלה בשביל חמיו של דוד אל רואי ונתן לו שוחד עשרת אלפים זהובים ל להרוג את דוד אל רואי כסתר וכן עשה בא אל ביתו והוא ישן והרגו על מטתו ונתבטלה עצתו ו ותחבולותיו ולא שב חמת מלך פרס מעל היהודי אשר בהר ואשר בארצו ו וכשראו כן שלחו אל ראש הגולה לבא בעזרתם אצל מלך פרס ויבוא בדברי טובי ודברי פיוס ופיוסו ותפיוס ונתן לו כמאה נכרים זהב ותשקוט הארץ אחרי כן וחמתו שכב' ו ומאותו ההר עד חמדן מהלך

prius numeratis. Postea jam Regis ira. A dicto monte

ובעת ההוא היתה צרף
 לכל הקהלות ארץ פרס
 ושלחו כתבים אל ראש
 הגולה ואל ראשי הישיבות
 שבגראד למה נמות לעיניכם
 גם אנחנו גם כל הקהלות
 אשר במלכות מנעו את
 האיש הזה ולא ישפך דם
 נקי ו אז כתבו אליו ראש
 הגולה וראשי הישיבות דע
 לך כי לא הגיע זמן הגאולה
 עדין ואותותינו לא ראינו
 כי לא ברוח יגבר איש
 ואנו אומרים לך שתמנע
 עצמך מעשות עוד כדברים
 האלו ואם לאו תהיה מנודה
 מכל ישראל מיד שלחו
 לו כמו כן אל זכאי הנשיא
 אשר בארץ אשור ולרבי
 יוסף החזן המכונה בור"האן
 אלפלך אשר שם לשגר
 כתבים אל דוד אל רואי
 ועוד כתבו הנשיא והחזרה

quum omnes cœtus Perfidi-
 dis in magna angustia ver-
 farentur, ad exulum prin-
 cipem & synedriorum ca-
 pita qui Bagdadi habita-
 bant, hujusmodi literas de-
 dere, Quare in conspectu
 vestro moriemur, cum nos,
 tum omnes hujus regni
 cœtus? prohibete virum
 istum, ne sanguinem inno-
 xium fundat. Quocirca in
 hanc sententiam scripsit
 ipsi Æchmalotarcha & sy-
 nedriorum præfides, Scito,
 redemptionis tempus nõ-
 dum advenisse, necdum si-
 gna nostra à nobis conspe-
 cta: nam inflato suo animo
 nemo prævalebit. Itaque
 jubemus, ut te cohibeas,
 quominus talia in posterũ
 moliaris; quod si non pa-
 reas, esto excommunicatus
 à toto Israële. Has literas
 e vestigio transmisere: & si-
 militer dedere literas ad
 Zachæum principem, cu-
 jus in Assyria sedes, & D.
 Josephum Videntem (co-
 gnomine Burhan Al-Phe-
 lec, id est, examen astro-
 logiæ) ibidem commo-

rantem, ut Davidi Al-roi literas mitterent. Quapro-
 pter addiderunt & ipsi literas, scilicet commemo-
 הנזכרים

fisto. Ita abeuntem rex sequutus est, regemq; suum omnes principes & ministri pariter sequuti: donec ipsis ad fluminis ripam accedentibus, David ille accepto sudario & super aquas extenso transfret. Tū omnes regis ministri eum super sudario suo per aquas transeuntem spectarunt: & lintribus insequentes eum assequuti non sunt, fassi in toto orbe incantatorem nō esse parem. Eodem die decem dierum emenso itinere Amariam venit, idque virtute nominis expositi, id est, Jehovæ: ibique eum quæcunque sibi accidissent narrantem Judæi omnes propter sapientiam demirati sunt. Postea hic Persarum rex principem creditium, Calipham Bagdadi residentem, Muhammedanorum Imperatorem per literas compellat, ut cum capite exulum sive captivitatis principe & syndriorum capitibus agat, quò David Al-roi ab hujusmodi factis prohibeatur; sin minus, inquit, omnes

Judæos in toto regno meo repletos interficiam. Itaq; quum

והוא הולך והמלך הולך
אחדיו וכל שרו המלך ועבדיו
הולכים אחריו מלכם עד
בואם אל שפת הנהר והוא
לקח סודרו ופרש על פני
המים ועבר עליו באותה
שעה ראו אותו כל עבדי
המלך שהיה עובר במי' על
סודרו ודלגו אחריו ברוגזות
קטנות ולא השיגוהו ואמרו
כי אין מכשף בעולם כמו
זה ובאותו היום הלך מהלך
ו' ימים עד אל עמאריה בשם
המפורש והגיד ליהודים כל
אשר קרהו ותמהו כלם על
חכמתו ואחר כך שלח מלך
פרס זה אל אמיר אלמומנין
כליפיה אשר בכגדאד אדון
הישמעאלים לרבר עם ראש
הגולה ועם ראשי הישיבות
ולמנוע את דוד אל רואי
מלעשות כדברים האלה ואם
לאו אהרוג את כל היהודי'
הנמצאים בכל מלכותי

quum

עמו אמ' לו האתה הוא מלך
 היהודים ענה ואמר אני מיד
 נכנס המלך וצוה לתפשו
 ולהשימו בבית חסוהר מקום
 אשר אסורי המלך אסורים
 עד יום מותם בעיר דבסתאן
 אשר על נהר גוזן הוא הנהר
 הגדול ולסוף שלשה ימי'
 ישב המלך לדבר עם שריו
 ועבדיו על דבר היהודי אשר
 הרימו יד במלך והנה דוד בא
 שהתיר עצמו מבית חסוהר
 בלא רשות בני אדם ובעת
 שראה אותו המלך אמר
 לו מי הביאך פה או מי
 התירך אמר לו חכמתי ו
 ותחבולותי כי אני איני ירא
 ממך ולא מכל עבדיך מיד
 צעק המלך לאמר תפשוהו
 ענו לו עבדיו ואמרו לו אין
 אנו רואים אותו אלא
 בשמיעת קול בלבד מיד
 תמה המלך על חכמתו וענה
 ואמ' למלך הנני הולך לדרכי
 והוא

dienti quæstionem propo-
 suit, An tu es Judæorum
 rex. Quod cum respondens
 affirmasset, cum rex pro-
 pius accedens extemplò
 comprehendi & in carce-
 rem abduci jussit, nempe
 locum ubi regis captivi ad
 mortem usque vincti deti-
 nentur in urbe Dabaſtan,
 in ripa maximi fluminis
 Gozâ. Elapſo triduo, quum
 rex confediſſet ut una cum
 principibus & ministris ſuis
 de factò Judæorum deli-
 beraret, qui adverſus re-
 gem rebellaverant, ecce
 David ille per ſe è carcere
 ſolutus, à nemine accepta
 venia accedit: atque regi
 ipſum intuenti & percun-
 ctanti, quis te huc adduxit,
 aut quis vincula tua ſolvit;
 reſpondet, ſapientia mea &
 ſolertia mea, quia nec te,
 nec ullos ſervos tuos me-
 tuo. Eveſtigio inſclamans
 rex eum capi jussit: verum
 reſpondentes ſervi ſe eum
 non videre dixerunt; ſed
 eundem vocis tantum au-
 ditu percipere. Quum con-
 feſſim rex ſapientiæ ipſius
 admiratione obſtupeſce-
 ret, ita regem affatus eſt,

Ecce ego viam meam in-

והוא

tur. Iam decimus agitur annus, ex quo illic fuit vir quidam, cui nomen David Alroi, Amariensis: qui discipulus fuerat principis exulum Hafdai, & principis synedrii Eli qui Jacobi erat decus in civitate Bagdad; legis Mosaicæ, constitutionum & Talmudis peritissimus, imo omnium exoticarum scientiarum & linguæ Arabum eorumque scripturæ; minime etiam librorum magicorū & veneficorum ignarus. Huic in mentem venit, ut in Persarum regem rebellaret, Judæosque in montibus Haphton habitantes colligeret, & quasvis gentes oppugnans expugnatum iret Hierosolyma. Judæis ergo signa dabat in miraculis falsis: quibus se à Deo ad occupandum Hierosolyma missum asseribat; atque ut vos, inquit, à gentium iugo subducam. Adeoque Judæorum pars ipsi fidem habuit: hoc etiam imposto nomine, Messias noster. Id quum Persarum rex intellexisset, eum ad colloquium accersivit: & intrepide accedenti & congreganti

והיום עשר שנים קם שם איש אחד ושמו דוד אל רואי מעיר עמאריה ולמד לפני ראש הגולה הסדאי ולפני ראש הישיבה עלי גאון יעקב במדינת בגדאד והיה גדול בתור' משה ובהלכה ובתלמוד ובכל חכמה היצונית ובלשון ישמעאל ובכתיבתם ובספרי החרטומים והמכשפים ועלה נדעתו להרים יד במלך פרס ולקבץ היהודים היושבים בהרי חפתון ולצאת ולהלחם בכל הגוים וללכת לתפוש ירושלים והיה נותן ליהודים סימונים באותות שקר ואומר להם כי השם שלחני לכבוש ירושלים ולהוציא אתכם מתחת עול הגוים והאמינו בו מקצת יהודים וקראו אותו משיחנו שמע מלך פרס הדבר הזה שלח לבא לדבר עמו והוא הלך אליו בלא פחד ובהתחברו

dienti

בז ועולים להרים ואין אדם
 וכול להלחם עמם והיהודים
 שבארץ בנייהם תלמידיו ח
 חכמים והם תחת רשות ראש
 הגולה שבבבל ומשם חמשה
 ימים לעאריה ושם כמו
 חמשה ועשרים אלף מישראל
 והיא תחלת הקהלות הדרי'
 בהרי חפתון כי שם יותר
 ממאה קהלות מושראל
 והיא תחלת ארץ מדי והם
 מן הגלות הראשון שהגלה
 שלמנאסר המלך והם מדברי'
 בלשון תרגו' וביניהם ת
 תלמידיו חכמים והם שכני'
 למדינת עמאריה יום עד
 מלכות פרס ורשות מלך פרס
 עליהם ולוקח מהם מס על יד
 פקידו והמס שפורעין בכל
 מלכות ישמעאל על כל אחד
 ואחד מן הזכרים מן חמש
 עשרה שנה ומעלה פורעין
 בכל שנה זהוב אמורי
 שהוא זהוב ושליש מוראבטי

montes denuò ascendunt;
 nec quisquam cum ipsis
 bellum gerere potest. Qui
 inter hos ex Judæis habi-
 tant, sunt sapientiæ studio-
 si, & imperio parent capi-
 tis exulum qui Babylone
 degit. Hinc quinq; dierum
 itinere Ariam devenitur,
 quæ viginti quinque fermè
 Israëlitarum millia habet:
 estq; initium istorum cœ-
 tum, qui in montibus
 Haphton habitant; hic è-
 nim plusquam centum Is-
 raëlitarum cœtus commo-
 rātur (est Mediæ initium.)
 Isti prima captivitate à re-
 ge Schalmanesere abdu-
 cti fuere, & Chaldaïcè lo-
 quuntur: inter quos et-
 iam sapientiæ studiosi. Ab
 Amaria diei unius itinere
 dissi, habitacula ad Persi-
 dis regnum extendunt: &
 huic regi parent, qui ab iis
 per suum præfectum tri-
 butum etiam exigit. Tri-
 butum, quod in toto Mu-
 hammedanorū regno pro
 singulis maribus decimo
 quinto anno majoribus
 pendunt, hoc inquam tri-
 butū est annuus aureus im-

peratorius, qui aureo sesquitercio Moravetino æstima-
 והיום

deret, sive Judæus sive peregrinus. Ad hunc usq; diem Danielis loculus è ponte dependet. Interdixit etiam rex ne quis ullibi in flumine piscationem intra milliare sive superiori sive inferiori spatio exerceret, idque in Danielis honorem. Inde tribus diebus devenitur Robad-bar: ubi viginti circiter Israëlitarū millia, in quibus diversi sapientiæ studiosi & divitēs; sed sub captivitatis jugo habitant. Hinc bidui iter est ad fluvium Vanath: atq; hic quatuor fere Judæorum millia sunt. Inde quatruidui iter est in regionem Molhath: ubi populi degunt, qui Muhammedanorum doctrinæ fidem non habent, & in magnis montibus habitāt; seniores suæ regionis Alcaschischin, quasi senes dicas, appellantes. Inter ipsos quatuor Israëlitarum cœtus degunt: qui cum iis non solum habitant; sed etiam in prælium proficiscuntur. Persarum regis jugo non subsunt: nam in altis montibus domicilia habent, & cum ad spoliandum & prædandum descenderunt, in

בין יהודי בין ארמי ועד היום
 הזה ארונו של דניאל תלוי
 מן הגשר וצוה המלך שלא
 יצוד דייג בכל הנהר שעור
 מיל למעלה ושעור מיל
 למטה בשביל כבודו של
 דניאל ומשם ג' ימים לרובד
 בר ושם כמו עשרים אלף
 מושראל ובניהם תלמודי
 וחכמים ועשירים אבל בגלות
 הם יושבים שם ומשם שני
 ימים לנהר ואנת ושם כמו
 ארבעה אלפים יהודים
 ומשם ד ימים לארץ מולחאת
 הם אומרת אשר אינן
 מאמינים בדת ישמעאל
 ויושבי בהרים גדולי והם
 עונים לזקן שבארץ אל
 כשישק ובניהם ד' קהלות
 מושראל ויושבין ויוצאין
 עמהם למלחמה ואין עליהם
 עול מלך פרס כי בהרים
 הגבוהים הם דרים ויורדים
 מן ההרים לשלול שלל ולבז

ועד נהר גוזן ועד מדינת
 גיסבור וכל נהר גוזן וערי
 מדי והרי הפתון ועד מ
 מדינות טובות שימצאו שם
 ביערי' שלה היות שיצא
 מהן המור וממשלתו מהלך
 ד' חדשים וארבע ימים
 וכבואו שם האינפרדור
 הגדול הזה סניגאר מלך
 פרס וראה שמטלטלי' א
 ארונו של דניאל מצד אל
 צד ועוברים בגשר יהודים
 וישמעאלים ועם רב עמו
 ושאל מה זה והגידו לו
 כל אלו הדברי' אמר אין
 נכון לעשות זה הבוון ל
 לדניאל אלא תמדדו מזה
 ומה בשה ותשימו ארונו
 של דניאל בתוך ארון של
 זכוכית ותתלוהו מן הגשר
 בשלשלאו' של ברזל בתוך
 ובאותו מקום תכנו בירת
 הכנסת לכל באי עולם
 מי שירצה יבא בה ויתפלל

flumen Gozan, provinciam
 Gisbor, totam ripam Go-
 zanis, urbes Mediæ, mon-
 tesque Haphton, ut & alias
 insignes regiones, in quarum
 sylvis feræ reperiuntur, un-
 de moschus colligitur. In
 summa, regnum ipsius ad
 quatuor mēsum quatuor-
 que dierum iter extendi-
 tur. Quum igitur Impera-
 tor iste magnus Senigar,
 rex Perfidis huc venisset,
 atque Danielis loculum de
 loco in locum volutari ob-
 servaret, & Judæos ac Is-
 maëlitas confertumq; po-
 pulum per pontem unam
 incedere, quid rei esset,
 rogavit: & postquam ipsi om-
 nia ista enarrassent, in-
 decens esse pronanciavit,
 ut Daniel ita contemptui ha-
 beretur; sed dimetiemini,
 inquit, spatium utrimque
 æquale, & Danielis loculum
 vitreo conditorio impone-
 tis, quod de ponte ferreis
 catenis suspendetis in me-
 dio. Præcepit etiam ut eo-
 dem loco magnam quan-
 dam synagogæ structuram
 ædificarent, quibusvis è to-
 to orbe accedentibus: ut

cuicunq; collibitum esset,

בך

fora aut commercia habēt, nec hortis aut pomariis instructi sunt. Atq; hinc tandem concepta invidia ita secum statuebant, omnes has divitias totumq; splendorem illis nonnisi ex eo provenire, quod beatum Daniele Prophetam penes se haberent sepultum: quapropter ut in medio sui Daniele sepelire liceret, petierunt. Sed alteri id ipsis non permisere, nec permittere voluere; sed diu inter se gessere bella: donec tandem inter defessos hac conditione transactū fuit, ut Danielis locus alternativim locum mutaret, & hoc anno ab hac fluminis parte, altero ab altera esset. Promissa ergo fecerunt, & utrique ab utraque parte conventis steterunt: donec eò tempore quodam accederet Senigar Saas filius Saax, qui in omnes Perfidis reges, nempe quadraginta quinque qui ejus imperio parent (Arabice vocatur, magnus Perfidis Imperator) imperium habet. Is est cujus dominium ab ostio fluvii Somræ extenditur adusq; civitatem Semarchothi,

שווקים ולא סחורה ולא ננות ופרדסים עד שלבשו קנאה ואמרו אין כל העושר והכבוד הזה אליהם אלא בשביל דניאל הנביא עליו השלום שהוא קבור אצלם ושאלו להם לקבור דניאל בתוכם ולא נתנוהו א אליהם ולא רצו ועשו עמהם מלחמה ימים רבים ביניהם עד אשר קצר' נפשם ועשו פשרה ביניהם שיהיה ארון דניאל שנה אחת מצד זה ושנה אחרת מצד זה ועשו כן ונתפשרו כלם אלו ואלו משני הצדדין עד שנא לשם יום אחד סניגר שאה בן שאה המולך על כל מלכי פרס על חמשה וארבעים שהם תחת ידו והוא סולטאן אל פרס אל כביר בלשון ערב והוא המולך משער נהר סומרה עד עיר סמרכות

של עזרא הסופר הכהן שהלך
 מירושלם אל ארתחששתא
 המלך ומת שם ועשו לפני
 קברו כנסת גדולה ומצד אחר
 הישמעאל' עשו בית התפלה
 מרוב חבתם בו ואוהבי' את
 היהודים מפני זה באים
 הישמעאל' להתפלל ומשם
 ארבע מילין לכוֹסְתָאן והיא
 עילם המדינה הגדולה אבל
 אינה מיושבת כלה כי היא
 חרב' מקצתה ובתוך חרבותיה
 שושן הבירה זהו ארמון
 המלך אחשורוש ויש בו כנין
 גדול ויפה מימים קדמונים
 ובה שבעת אלפים יהודים
 ובה ארבע עשר בתי כנסיות
 ולפני הכנסת האחת קברו
 של דניאל עליו השלום
 ונהר חדקל חולק את ה
 המדינה והגשר ביניהם ובצד
 האחד שדרים שם היהודים
 שם הם השווקים ושם
 הסחורות כלם ושם וושבים
 כל העשירים והצד האחר
 הם עניים מפני שאין ביניהם
 שווקים

& sepulchrum Ezræ scribæ
 ac sacerdotis , qui Hiero-
 solymis ad Artaxerxem re-
 gem profectus , ibi diem
 obiit. Ante cujus sepulchrū
 magna synagoga ædificata
 fuit ; & ab altera parte Mu-
 hāmedani magno in ipsum
 amore oratorium constru-
 xere ; Judæosque diligunt
 Muhammedani , qui ideo
 ad preces cōveniunt. Hinc
 ad Cuzeftaan quatuor sunt
 milliaria ; hæc est Elam ma-
 gna illa provincia , quæ
 jam omnibus partibus non
 habitatur ; sed ex parte va-
 stata est. In cujus ruinis est
 Schufan metropolis , regis
 Affueri quondam regia ;
 ubi magnum & elegans æ-
 dificium inde à priscis die-
 bus remanet. Hic septem
 Judæorum millia & qua-
 tuordecim synagogæ : qua-
 rum uni objacet beati Da-
 nielis sepulchrum. Tigridis
 flumen civitatem secat in
 partes duas , quas pons in-
 terjacet. ab hac parte , ubi
 Judæi habitant , fora sunt
 & commercia omnia , ad-
 eoque omnes divites com-
 morantur ; ab altera verò
 parte pauperes , quia nulla

re posse quenquam : nimirum quum per deserta & solitudines octodecim dierum iter superandum sit, neminē eò penetrare posse. Cæterum Cebur maxima civitas quinquaginta ferme Iisraëlitarum millia habet:& in his cum sapientia studiosos, tum viros fortes qui acie decertant cum Babylonix incolis, & regione septentrionali, nec non vicinis Elymanitis. Hic Indiarum est initium. Ab Iisraëlitarum autem regione ad Viram flumen, quod regionem Elymanis interfluit, viginti quinque dierum iter est: atque hic tria fere Iisraëlitarum millia. Istinc septem diebus Nasetum veni, & viginti circiter Iisraëlitarum millia reperi, inter quos erat Magister Nedajan, Hinc iterum diebus quinque Botram, in qua ad Tigris ripam sita duo ferme Iisraëlitarum millia: quorū plurimi sapientia studiosi ac divites. Vnde bidui iter est ad Samuram flumen, regni Persia initium: ubi mille ferme & quingenti Judæi,

ליכנס אליהם שמנה עשר יום הולכים במדברות בלא ישוב ואין ליכנס אליהם וכיבר עיר גדולה מאד ושם כמו חמשים אלף מישראל זבה תלמידו חכמים ו אנשים גבורים עורכי מ מלחמה עם בני שנער וארץ צפון וארץ אלימן ה הקרובים אליהם שהיא תחלת ארץ הודו ומאדצם ורך חמשה ועשרי' יום לנהר ויראה אשר בארץ אלימן ו ושם כמו שלשת אלפים מישראל. ומשם שבעה ימים לנאכט ושם כמו עשרה אלפים מישראל ובניהם רב נדיון. ומשם מהלך חמשה ימים לבוצרה היושבת על נהר חדקל ובה כמו אלפים מישראל ובניהם תלמידו חכמי' ועשירי' ה הרבה ו ומשם שני ימים לנהר סמורה היא תחלת ארץ פרס ובה כמו אלף וחמש מאות יהודים ושם קברו

בגלות ויש עם כמו ארבעים
 מדינות ומאתים כפרים
 ומאה כרכים וראש המדינה
 תנאי' ושם בכל המדינות
 האלו כמו שלש מאות אלף
 יהודים והיא עיר בצורה
 מאד כי בתוכה זורעים
 וקוצרים והיא מהלך חמשה
 עשר מילין באורך וטו' ב
 ברוחב ושם ארמון הנשיא
 סלמון והיא עיר יפה עד
 מאד ובה גנות ופרדסים
 וטילמאם כמו כן היא עיר
 גדולה ובה כמו מאה אלף
 יהודים והיא בצורה מאד
 יושבת בין שני ההרים
 גבוהים ושם אנשי' חכמים
 ונבונים' וכיניה' עשירים ו
 ומטילמאס לכיכר' שלשה
 ימים ואומרים בני אדם שהם
 שבט ראובן וגר וחצי שבט
 מנשה ששבם שלמנאסר
 מלך אשור והלכו שם ובנו
 הערים האלה גדולות ו
 ובצורות ונלחמים בכל
 הממלכות ואין אדם יכול
 לזכנס

vivunt. Ibi quadraginta ferme civitates, ducenti pagi, & castella centum. Thanaï regionis metropolis est (in omnibus vero istis civitatibus trecenta circiter Judæorum millia) & civitas muris amplissimis cinctæ utpote in qua sementem & messem faciunt, & in longitudinem quindecim patet milliaria, totidemque in latitudinem. Hic Principis Salmonis palatium: civitasque pulcherrima est, hortis & pomariis instructa. Tilimas similiter urbs ampla centum circiter Judæorum habet millia: per se munitissima, utpote inter duos altos montes tuta. Incolæ sapientes & prudentes, inter quos multi divites. A Tilimase tribus diebus Cebarē devenitur. Vulgò hic esse tribum Rubenis, Gadis, & dimidiam Manassis tribum ferunt: quas Schalmaneser Assyriæ rex captivas duxerit. Hos Israëlitas huc profectos magnas istas munitasq; civitates condidisse ajunt, & cum omnibus regnis bella gerere; nec ad eos accede-

agriculturam & pecuariam
 exercent, regionemque
 habent amplissimam. Hi
 Judæi omnium bonorum
 decimas largiuntur sapien-
 tiæ studiosis, qui jugiter in
 scholis resident, & Israëli-
 tis pauperibus & devotis:
 qui Tſionē lugent & Hiero-
 solyma, qui nec carnem
 edunt, nec vinum bibunt,
 quique atrati in speluncis
 vivunt, aut casulis; & per
 totam vitam morerent sab-
 bathis & festis diebus ex-
 ceptis, assiduè divinam mi-
 sericordiam pro Israëlita-
 rum exulibus implorantes,
 ut eorum propter nomen
 suum maximum misereatur.
 Quinimo omnes Judæi
 Themæ incolæ & Tili-
 masis, ubi circiter centum
 millia Judæorum degunt
 (& Salmon Princeps, cujus
 frater est Annas Princeps,
 qui sunt è progenie beati
 regis Davidis; habent enim
 librum genealogiæ, & ex-
 tracta quæstionum penes
 Æchmalotarcham) discif-
 fis vestibus humilitatem
 quotannis profitentur die-
 bus quadraginta, pro om-
 nibus Judæis qui in exilio

ובעלי מקנה וארצם רחבת
 ודים ונותנים עישור מכל
 אשר להם לתלמודי חכמי'
 היושבי' תמיד בבית ה
 המדרש ולעניי ישראל ו
 ולפרושיהם אבילו צדון
 ואבילו ירושלם אין אוכלי'
 בשר ואין שותי' יין והם
 לובשי' בגדים שחורים והם
 יושבים במערות או בבתים
 גרועים ומתענין כל ימי
 חייהם חוץ מן השבתות
 וימים טובים ומבקשים
 תמיד רחמים מלפני השם על
 גלות ישראל שירחם עליהם
 בעבור שמו הגדול וגם כל
 היהודי' אנשי ארץ תימא
 וטולימאס שיש בה כמו
 מאה אלף יהודים ושם
 שלמון הנשיא ואחיו חנן
 הנשיא והם מורע דוד המלך
 עליו השלום כי כתב היחס
 יש להם ומשגרות שאלות
 לראש הגולה קרועי בגדים
 ומתעני' ארבעי' יום בשנה
 על כל היהודי' היושבים

ולפניהם קבריהם ו ומשם
 דרך מדבר ארץ שבא ה
 הנקראת ארץ אלומן לצד
 שנער כנגד הצפון מהלך אחד
 ועשרי' יום במדברות ושם
 חונים היהודים הנקראי'
 בני ריכב אנוש תימא ו
 ובתימא ראש הממשלה
 שלהם ושם רבי חנן הנשיא
 מושל עליהם והוא עיר
 גדולה ומהלך ארצם י' יום
 בין ההרים הרי צפון ויש
 להם ערים גדולות ובצורות
 ואין להם עול גוים עליהם
 והולכי' לשלול שלל ולבוז
 בו לארץ מרחק עד בני
 ערב שכיניהם בעלי בריתם
 והם בני ערב החונים ב
 באהלי' דרך מדבר ארצם
 ואין להם בתים והולכי'
 לשלול שלל ולבוז בו ב
 בארץ אלומן וכל שכיני ה
 היהודים מפחדים מהם
 ובהם עובדי אדמה

bus è regione ipforum sepulchra objacent. Inde itinere facto per desertum regionis Schebæ, quæ vocatur regio Eliman, emensâ ad septentrionale Babylonix latus via unius & viginti dierum per deserta, eò veni ubi Judæi habitât, qui Rechabitæ dicuntur, aliâs homines Themæ. Themâ autem est initium regni ipforum, in qua magna civitate D. Annas Princeps in reliquos dominatur. Districtus verò ditionis illorum inter montes septentrionales sedecim dierum itinere terminatur, & magnas munitasque habet civitates: nulliusque gentis imperio premuntur incolæ; sed insuper ut spolia & prædam auferant, remotas regiones adoriuntur, ipsos etiam vicinos Arabes, eosque confederatos. Hi sunt Arabes Scenitæ per regionis suæ deserta habitantes: ædes enim non habent; sed ad spoliandum & prædandum ad regionem etiam Eliman discurrunt.

Porro omnes Judæorum

vicini ab iis sibi admodum metuunt: ipforû verò multi
 ובעלי

veni: in qua civitate magnificè structum est Jechoniae regis sepulchrum; cui è regione objacet synagoga, quam septem ferme Judæorum millia frequentant. Hinc sesquidiei itinere distat Suria: hæc est illa civitas Mahasia, quam initio incolebant exulum capita & synedriorum Præsides; inter quos D. Scherira, Doctor noster Hai ipsius filius, Doctor noster Saadias Orator, Magister Samuel filius Hophni Sacerdos, & Tsephanias f. Cuschi filii Gedaljæ Prophetæ, aliiq; multi exulum præfæcti familiæ Davidicæ Principes, & synedriorum capita, quæ initio illic ante vastationem fuere. Inde Schephithib usq; bidui iter est: ibi exstat synagoga, quam Israëlita ex Hierosolymitana terra & lapidibus constructam vocarunt Schephithib in Nehardea. Hinc sequidie Elnebarum veni: quæ etiam Poumbeditha dicitur, sita in Euphratis ripa; in qua tria ferme Iisraëlitarū millia, cum synagoga Rabi & Samuelis,

מהלך יום ושם קברו של
וכניה המלך בנין גדול וכנסת
לפניו ושם כמו שבעת אלפים
יהודים ו משם יום וחצי
לסוריא היא מתא מחסיא
שהיו בה ראשי גלוות
וראשי ישיבות בתחלה ושם
רב שרירא ורבינו האי בנו
ורבינו סעדיא אל פיומי
ורב שמואל בן חפני הכהן
וצפניהו בן כושי בן גדליה
הנביא ורבים מראשי הגולה
נשיאי בית דוד וראשי
ישיבות שהיו שם בתהלה
קודם חרבנה ו משם
שני ימים לשפית'יב ושם
כנסת שבנו ישראל מעפר
ידושלם ומאבניה וקורין אות'
שפית'ל'ב אשר בנהרדעא
ומשם יום וחצי לאילנבר
היא פום בדיתא אשר על
שפת פרת ושם כמו שלשת
אלפי' מישראל ושם כנסת
רב ושמואל ובית מדרש'

synagoga Rabi & Samuelis, eorumque scholis, qui-

F

bus

קבר וקבר כפה גדולה ו
 ושעת החירות אין אדם
 בעולם נוגע בעבורו של
 יחזקאל עה לרעה לא
 בישמעאלים ולא ביהודי
 ומשם שלשה מילין לעיר
 אל קוצונאת ובה כמו שלש
 מאות יהודים ושם קבר רב
 פפא ורב הונא ורבי יוסף
 סיני ורב יוסף בר חמא
 ולפני כל אחד ואחד כנסת
 ומתפללין שם ישראל בכל
 יום ו משם לעין שפתח
 שלש פרסאות ושם קבר
 נחום האלקושי הנביא עליו
 השלום . ומשם לכפר ל
 לפרס יום ושם קבר רבי
 חסדאי ורבי עקיבה ורבי
 דוסא . ומשם חצי יום
 לכפר מהמדר ושם רבי דוד
 ורבי יהודה ורבי קובריה
 ורבי סחורא ורבי אבא .
 ומשם יום לנהר ליגא ושם
 קברו של צדקיהו המלך
 עליו השלום ועליו כיפה
 גדולה . ומשם לעיר קופה
 מהלך

unumquodq; magno for-
 nice. Belli autem tempore
 nemo in toto orbe, præ re-
 verentia beati Ezechielis,
 loca ista ad lædendum
 tangere audet ; tam inter
 Muhammedanos , quam
 inter Judæos. Inde tribus
 milliaribus distat civitas
 Alkotsonath : ubi trecenti
 circiter Judæi, & sepulchra
 magistri Paphæ, M. Hounæ
 & Doctoris Josephi Sinæi
 ac M. Josephi filii Hamæ.
 Ante singula synagogæ,
 quò Iisraëlitæ quotidie ad
 preces conveniunt. Hinc
 Ein-Siphta tribus parasan-
 gis disita est : & hic beati
 Prophetæ Nahumi Alko-
 schæi sepulchrum visitur.
 Inde ad pagū Lephras diei
 iter est : ubi sepulchra Do-
 ctoris Hasdai, D. Akibæ, &
 D. Doufæ. Unde dimidiato
 itinere ad Pagum-deserti
 profectus , ibi Doctorem
 Davidem, D. Judam, & D.
 Kobriam deprehendi, cum
 D. Sehora & D. Aba. Inde
 uno die ad Ligam fluvium;
 ubi erat sepulchrum beati
 regis Tfedekæ, quod ma-
 gno fornice tegebatur : &
 eodem spatio Kupham

folent. Ibi productum magnum librum, quem Ezechiel Propheta sua scripsit manu, legunt expiationis die. Super Ezechielis sepulchro die nocteque ardet lampas, inde ab eo tempore quo eam ipse accendit: & hactenus ellychnia identidem mutant, oleumque addunt, qui eum sequuti sunt. Ibidem sancta quædam magnaue domus libris plena, ubi etiam cum è prima, tum è secunda æde libri servantur: & quicunque liberis carent, illic libros suos consecrant. Iudæi etiam, qui eò ad preces è Persia & Media cõveniunt, pro se regionum istarum incolis, vota ad Ezechielis Prophetæ synagogam defefunt. Quinetiam magnatum inter Muhammedanos filii eò ad precandum veniunt, ob ardentem beati Ezechielis Prophetæ amorem: locumque vocant habitaculum elegantix vel pulchrum. Eo omnes Arabes ad preces congregantur. Inde non amplius dimidiato milliari distant Ananix, Mischaëlis & Azariæ sepulchra cum suo

זמוציאין ספר גדול מכתובת יחזקאל הנביא וקורין בו ביום הכפורים. ועל קברו של יחזקאל עששית דולקת כל היום וכל הלילה מיום שהאיר אותה הוא בעצמו וחולפין הפתילות ומוסיפין שמן עד היום הזה ושם בית גדול של הקדש והוא מלא ספרו' ומבית ראשון ומבית שני יש שם ספרים וכל שאין לו בן יקדיש ספרו לשם ומביאין היהודים הבאים להתפלל שם מארץ פרס ומדי נר על עצמם אנשי הארץ לכנסת יחזקאל הנביא. וגם בני גדולי ושמעאל באים להתפלל שם טרוב חבתם מיחזקאל הנביא עליו השלום וקורין שמו דר' מליחא וכל בני ערב באים שם להתפלל ושם סמוך לכנסת כהצי מיל קברי חנניה מישאל ועזריה. ועל כל unum-

ובין כל מגדל ומגדל כנסת
 ובחצר הכנסת התיבה ו
 ואחרי הכנסת קברו של
 יחזקאל בן בוזי הכהן ועליו
 כיפה גדולה ובנין יפה עד
 מאד מבנין יכניה מלך יהודה
 וחמשה ושלושים אלף יהודים
 שבאו עמו כשהוציא אותו
 אויל מרודך מבית הכלא
 וזה המקום על נהר כבר
 מצד ומצד אחד נהר ויכניה
 וכל הבאים עמו הקוקי'
 בכותל יכניה בראש יחזקאל
 בסוף ואותו המקום עד היום
 הזה מקדש מעט באים מארץ
 מרחק שם להתפלל מראש
 השנה עד יום הכפורים
 ועושים שם שמחה גדולה
 וגם ראש הגולה וראשי
 ושיבות באים שם מבגדאד
 וחונים על פני השרה
 שנים ועשרים מילין ובאים
 שם סוחרים בני ערב ושם
 יריד גדול הנקרא פירא

inter singulas est synago-
 ga. In illius atrio librorum
 sacrorum theca est; & post
 synagogam Ezechielis filii
 Buzi sacerdotis sepulchrū:
 cui magna pulcherrimique
 operis testudo impendet,
 quam construxit Jechonias
 Judæorū rex cum triginta
 quinque Judæorū millibus
 qui eum sequebantur, cum
 ab Evil-Merodacho è car-
 cere dimissus esset. Hic lo-
 cus una sui parte flumen
 Chobar respicit; altera verò
 Euphratem. Cæterū Iecho-
 nias omnesq; qui eum co-
 mitati sunt, in pariete scul-
 pti visuntur: Jechonias pri-
 mo loco; Ezechiele, ultimo.
 Is locus ad hunc usq; diem
 quadamtenus sanctuarium
 est: huc enim è locis remo-
 tissimis precandi causa cō-
 fluunt, inde ab anni initio
 ad festum expiationis us-
 que; magnaq; gaudia agi-
 tant. Quin etiam exulum
 caput & syndriorum præ-
 fides Bagdado huc profe-
 cti, per agros ad duodecim
 usque milliaria tentoria di-
 sponunt: & eodem merca-
 tores Arabes veniunt; ma-

gnusq; est confluxus, quem nundinarum voce denotare
 ומוציאין

Doctoris Meir, qui ante eam sepultus est cum M. Zeiri filio Hamæ & M. Mari. Atque hic Judæi quotidie precantur. Hinc ad turrim, quam illud ædificavit seculum quo linguæ divisæ sunt, quatuor sunt millia: lateribus quos Lagour vocant constructa est, & fundamenti longitudo ad duo circiter millia extenditur; latitudo turris ducentis quadraginta cubitis finitur, & longitudo centum cannis. Inter dena cubita viæ erāt, quibus in gyrum ascendebant, & ad supra usque orbiculariter tendebant: unde prospectus ad viginti pertingebat millia, quia regio latissima est ac plana. Sed hoc ædificium cœlitus igni tactum fuit, qui ad ima usque omnia diffregit. Inde dimidiato itinere Naphham devenitur: ubi ducenti ferme Judæi, & synagoga D. Isaaci Naphhæi, qui ante eam sepultus est. Hinc tres parasangæ numerantur ad beati Ezechielis Prophetæ synagogam in ripa Euphratis: ubi è regione synagogæ sexaginta turres sunt, &

דמי מאיר והוא קבור לפניה ורב זעירי בר חמא ורב מארי ומתפללין שם בכל יום יהודים. ומשם ד' מילין למגדל שבנו דור הפלגה והוא בנוי מלבנים הנקראים לאגור אורך יסודו כשני מילין וברחבו רם אמה וארכו כמו מאה קני' ובין ד' ועשר' אמות דרכים שם ובהם עולים בעגול מסבבין עד למעלה ורואי' ממנה מהלך עשרים מיל כי הארץ רחבת ידים ומישור ונתוכו נפלה אש מן השמים ובקעה אותם עד התהום ומשם חצי יום לנפחא. ושם כמו מאתים יהודים ושם כנסת ר' יצחק נפחא והוא קבור לפניה. ומשם ג' פרסאות לכנסת יחזקאל הנביא עה שעל נהר פרת ובמקום הכנסת כנגדו שש' מגדלים

inter

ובתוכה כנסת גדולה ושם
 קבור בבית סמוך לכנסת
 ותחת קברו מערה קבורים
 בה יב מתלמידיו ומשם
 יום לבבל היא נבלה
 הקדמונה החרבה והיא
 מהלך שלשים מילין ב
 ברחובותיה ועדין ארמון
 נבוכד נצר שם הרב ויראים
 בני אדם ליכנס בו מפני
 הנחשים והעקרבי שיש ב
 בתוכו וקרוב משם עשרים
 מיל יושבים עשרים א
 אלפים מושראל מתפללין
 בכנסיות ועליית דניאל
 עליו השלום היא הקדומה
 שבנה דניאל והיא בנויה
 אבני גזית ולבני ובית ה
 הכנסת וארמון נבוכד נצר
 אתון נורא וקידתא אשר
 הושלכו שם חנניה מושאל
 ועזריה והוא עמק ירוע
 לכל ומשם להילה חמשה
 מילין ושם כמו עשרה
 אלפים מושראל ובה ארבע
 בתי כנסיות אהת של
 רבו

magna synagoga. Ibi se-
 pultus N. loco synagogæ
 proximo: & infra ejus se-
 pulchrum spelunca, qua
 duodecim ex ipsius disci-
 pulis humati sunt. Inde Ba-
 bel unico itinere distat: hæc
 est antiqua illa Babel jam
 devastata; quæ plateis suis
 ad triginta milliaria exten-
 debatur. Ubi etiamnum
 vastatum Nebucadnesaris
 palatium visitur. eoque ho-
 mines ingredi verentur,
 propter serpentes & scor-
 piones locum occupantes.
 Viginti inde milliariibus
 habitant vicies mille Iisraë-
 litæ, qui preces concipiunt
 cum in synagogis, tum in
 ἱερατικῶν five superiori illo
 beati Danielis antiquo æ-
 dificio, quod ipse struxit.
 Lapidibus cæsis & lateribus
 constructum est; sicuti &
 synagoga ac palatium Ne-
 bucadnesaris, nec non for-
 nax ignis ardētis, quò inje-
 cti olim Ananias, Mischaël
 & Azarias. atque ista vallis
 cunctis nota est. Inde Hila
 quinque milliariibus abest:
 ubi decem pene Iisraëlita-
 rum millia, cum quatuor
 synagogis: quarum una fuit

Bagdadi viginti octo sunt synagogæ Iudæorum, cum in ipsa civitate, tum in Alpherec sive suburbiis trans Tigrin: nam flumen civitatem secat. Visitur etiam magna synagoga capitis exulum, constructa columnis marmoreis omnium colorum, quæ auro & argento sunt obductæ: in ipsis columnis commata quædam psalmodiarum aureis literis expressa sunt. Ibi ante librorum sacrorum thecâ, decem gradus è marmore constant: in quorum supremo exulum caput cum familiæ Davidicę principibus confidet. In provincia Bagdadi civitas est tria patens milliaria in circuitu. Regio palmetis, hortis & pomariis dives, adeo ut in tota Babylonia ei nulla par sit. Eo ad negotiationem ex omnibus regionibus confluent: habetque viros sapientes & philosophos omnium scientiarum gnaros, magos & cujuscvis veneficii peritos. Hinc Gehiagan bidui itinere distat, quæ est Resen magna illa civitas: in qua ferme quinquies mille Iisraëlitæ, &

בגדאד שמנה ועשרים בתי כנסיות ליהודים בין בגדאד ובין אל פרך אשר מעבר חדקל כי הנהר חולק את המדינה וכניסה גדולה של ראש הגולה מבנין עמודי שיש מכל מיני צבעים מצופים נוהב ובכסף ובעמודים אאותיות של זהב בפסקי תלים ושם לפני הארון מדרגות מאבני שיש כמו עשרה ובמדרגה העליונה ראש הגולה עם נשיאי בית דוד ובמדינת בגדאד עיר שלשה מילין גדולה בהקפת העיר והיא ארץ תמרים וגנות ופרדסים שאין כמותם בכל ארץ שנער ובאים אליה בסחורה מכל הארצות ובה אנשים חכמים פילוסופין בכל חכמה חרטומים יודעים בכל מיני כשוף ו ומשם לנה"אגן שני ימים והיא רסן העיר הגדולה ובה כמו חמשה אלפים מישראל

magna

ומבואים לפנוי דורונות ו
 ומתנות מאפסי ארץ ויש לו
 פונדקאות וגנות ופרדסים
 בבבל ונהלות רבות מאד
 מנחלת אבותיו ואין אדם
 רשאי לגזול ממנו כלום ויש
 לו פונדקאות של יהודים
 ובשווקים ובסוהרי הארץ מס
 ידוע בכל שנה ושנה הוצ
 ממה שמביאי מארץ מרחק
 והאי עשיר גדול והכם
 בפסוק ובתלמוד ואוכלין על
 שולחנו רבים מישראל בכל
 יום אבל העת שמקוימי
 ראש הגולה הוא מוציא ממון
 גדול על המלך ועל השרי
 ועל הסגנים ביום שעושה לו
 המלך הסמיכה על השררה
 ומרכיבים אותו במרכבת
 המשנה אשר למלך ומבואים
 אותו מבית המלך הגדול
 לביתו בתופים ובמחולות
 והוא עושה הסמיכה ה
 לאנשי הישיבה והיהודים
 שבמדינה בה תלמידי חכמים
 ועשירים גדולים ובעור
 בגדאד

potestatem accipiant; & ab
 ultimis finibus dona & mu-
 nera deferunt. Hic idē Ba-
 byl. hospitia, hortos & po-
 maria habet, plurimaq; præ-
 dia à majoribus hæreditate
 accepta: nec ulli quicquam
 ab ipso vi auferre integrum
 est. Habet etiam hospitia
 Iudæis destinata: & in nun-
 dinis ac inter mercatores
 certum quotannis ipsi assi-
 gnatur tributum, præter id
 quod è remotis regionibus
 ei defertur. Dives igitur
 est, & potēs, in sacris literis
 & Talmude etiam versatus:
 in cujus mensa quotidie a-
 luntur Iisraëlitæ plurimi.
 Ceterum quo tempore ex-
 ulum caput creare solent,
 ingentem pecuniæ vim cū
 regi, tum principibus &
 magistratibus erogat: id-
 que eo die quo ipsi Rex
 manuum impositione po-
 testatem confert. Tum in
 curru regis secundario col-
 locatū, ab aula Regis ma-
 gni domum propriam cum
 tympanis ac fistulis dedu-
 cunt: ubi deinde Academi-
 cis manum imponit. Judæi
 istius civitatis sunt sapien-
 tiæ studiosi, ac ditissimi. Et

indutus, capite obvoluto
 cidari magna, cui imposi-
 tum magnum albumq; su-
 darium torque cingitur.
 Porro omnes cœtus Baby-
 loniæ, Perfidis, Chorefanis
 & Schebæ, (quæ & Aliman
 dicitur) nec nō Diar-bech,
 totiusq; Syriæ interamnis,
 item regionis Kot (cujus
 incolæ montes Ararat in-
 habitant) & Alaniæ (quæ
 regio montibus cingitur,
 nec ullum exitum habet
 præter portas ferreas, quas
 Alexander fixit; ubi po-
 pulus degit qui Alan dicitur;
 præterea cœtus Sice-
 riæ, totiusque Turciæ usq;
 ad Afnæ montes, item re-
 gionis Gergenorum usque
 ad flumen Gihon (in qua
 Gergesæi sive Georgiani
 habitant, religione Chri-
 stiana imbuti) imo usque
 ad claustra provinciarum
 & regionum præstantissi-
 marum, ad ipsam Indiam
 usque: hi omnes Israëlita-
 rum cœtus ab exulum ca-
 pite potestatem accipiunt,
 sibi in singulis congrega-
 tionibus Professore &
 Concionatore præficien-
 di. Nam ipsum conveniunt

ומצנפת גדולה על ראשו
 ועל המצנפת סודר לבן
 גדול ועל הסודר רביד וכל
 קהלות ארץ שנעד ופרס
 וטרסאן ושבא היא אלימן
 ודיאר ביד וכל ארץ ארם
 נהרים וארץ קוט היושבים
 בהרי אררט וארץ אלניה
 היא הארץ המוקפת ה
 הרים ואין להם יציאה
 אלא שערי ברזל שעשה
 אלכסנדרוס ושם האומה
 הנקראת אלאן וארץ ס
 סיכריא וכל ארץ התורגמי'
 עד הרי אסנה וארץ גרגנין
 עד נהר גיחון והם הגרגשים
 והם בדת הנוצרים ועד
 שערי המדינות וארצות ה
 טובות ועד ארץ הודו ראש
 הגולה נותן להם רשות
 בכל הקהלות האלו לשום
 על כל קהל וקהל רב
 וחזן כי הם באים אליו
 לקחת הסמיכה ורשות

ut manuum impositione

וקוראים אותו היהודים
 אדונינו ראש הגולה ו
 וישמעאלים קוראין אותו
 סידנא בן דוד ויש לו שררה
 גדולה על כל קהלות ישראל
 תחת יד אמיר אלמומנון אדון
 הישמעאלים כי כן צוה לזרעו
 ועשה לו הותם על כל
 קהלות ישראל הדורים תחת
 יד תורתו וכך צוה לכל בר
 אינש ישמעאלים ויהודים
 או מכל אומה שבכל מלכותו
 שיקו' לפניו ויתן לו שלום
 וכל מי שלא יקום מפניו
 מלקין אותו מאה מכות
 והולכים עמו פרשים מן
 הגוים ומן היהודים בכל יום
 שהוא הולך לראות פני
 המלך הגדול ומכריון לפניו
 עשו דרך לאדונינו בן דוד
 כראוי לו אומרים בלשונם
 אעמלא טריק לסאודנא
 בן דאוד והוא רוכב על סוס
 ומלוכש בגדי משו ורקמה

videm usque scripto deducere potest. Hic ergo à Judæis vocatur, Dominus noster, exulum caput; à Muhammedanis autem, Dominus noster filius Davidis. Latissimum habet dominium in omnes Iisraëlitarum cœtus, sub imperio Principis fidelium, sive Muhammedanorum Domini. Is enim hujusmodi posteritati suæ etiam mandavit; & confecto sigillo dominium in omnes Iisraëlitarū cœtus, qui legibus suis tenentur, firmavit. Similiter omnibus Iisraëlitis & Judæis omnibusque populis suo imperio subjectis præcepit, ut illi assurgant & salutem dicant: qui verò illi assurgere denegaverit, cœtum plagis luat. Quoties autem magnum regem salutatum procedit, eum equites comitantur cum ex Gentibus, tum ex Judæis; & Præfecti acclamant, Parate viam Domino nostro filio Davidis, quemadmodum eum decet: nā lingua sua dicunt, Omulou' tarik lesejidina ben Davvoud.

Ipsè equo vehitur vestibus

ו צנפת

quemadmodū musici cum sanctuarium etiam nū staret modulabantur) caput five præses est quinti synedrīi; Doctor Hafdija Scholasticorū decus, sexti synedrīi; D. Haggæus Princeps, septimi; Doctor Ezra, octavi; Doctor Abraham appellatus Abou Tahir (id est, pater sanctus) noni synedrīi caput; denique D. Zachæus filius Bultanæi generalis ipforum quæstor, præses est decimi synedrīi. Hi ociosi dicuntur: quia non occupantur ulla in re, nisi in necessariis populi negotiis. Atque omnibus istius regionis Judæis jus dicunt, singulis diebus septimanæ, excepto die secundo: quum omnes conveniunt ad M. Samuelem caput synedrīi, quod ab eminentia Jacobi, nomen habet; ipseq; cum decem illis ociosis, synedrīorum capitibus, præsto est, ut omnibus promiscue accedentibus jus dicat. Omnibus autem istis præest D. Daniel filius Hafdai, qui exulum caput vocatur, item Dominus noster; & genealogiam suam ad regem Da-

במו שהיו המשוררי' נוגנים
 בזמן שבית המקדש קיום
 והוא ראש הישוב' ה
 החמישית ו' ור' הסדיה
 פאר החברים ראש הישיבה
 הששית ו' ורבי חגי הנשיא
 ראש השביעית ורבי עזרא
 ראש הישיבה השמינית ו'
 ורבי אברהם הנקרא אב'ו
 טאהר ראש הישיבה הט'
 ורבי זכאי בן בסתנאי בעל
 הסיום ראש הישיבה ה'
 הם הנקראים בטלנים שאין
 מתעסקים בדבר אחר אלא
 בצרכי צבור ובכל ימי השבוע
 הם דנין לכל אנשי הארץ
 היהודי' חוץ מיום ב' שבאים
 כלם לפני הרב שמואל ראש
 ישיבת גאון יעקב ועומד
 עם העשרה בטלנין ראשי
 הישיבות לדון לכל הבאים
 אליהם ובראשם של כלם
 רבי דניאל בן הסדאי הנקרא
 ראש גלות ושם אדונינו ויש
 לו ספר היותם עד דוד המלך

בודקין אותם פקורי המלך
 אם חזרו לדעתם מתורין
 אותם והולכי לדרכם וכל
 זה עושה המלך לצדקה לכל
 הבאים לעיר בגדאד בין
 חולים בין משוגעים והמלך
 איש חסיד וכונתו לטובה
 בזה הענין ויש שם בבגדאד
 כמו אלף יהודים והם יושבים
 בשלוח ובהשקט ובכבוד
 גדול תחת יד המלך הגדול
 וכיניהם חכמי גדולים וראשי
 ישיבות מתעסקים בתורת
 משה ושם בעיר י' ישיבות
 וראש הישיבה הגדולה הרב
 רבי שמואל בן עלי ראש
 ישיבת גאון סגן הלוי ראש
 השנייה ור' דניאל ראש
 הישיבה השלישית ורבי
 אלעזר החבר ראש הישיבה
 הר' ורבי אלעזר בן צמח
 ראש הסדר והוא מיוחס
 עד שמואל הנביא ע"ה והוא
 ואחיו יודעים לנגן הזמירות

enim mensibus regii præ-
 fecti in eos inquirunt, & si
 mens restituta sit dimit-
 tuntur, ut ad suos redeant.
 Hæc omnia facit, ut mi-
 sericordiam exerceat in om-
 nes, qui Bagdadum in-
 gressi vel ægroti vel furiosi
 deprehenduntur: rex enim
 pius est, atque bona inten-
 tione id facit. Cæterum,
 Bagdadi mille ferme Judæi
 degunt, qui tranquillitate
 ac quiete fruuntur, imo
 gloria magna, sub maximi
 regis imperio: inter quos
 etiam sapientissimi sunt &
 confessuum primores in
 lege Mosaica occupati. De-
 cem in ista civitate sunt
 confessus sive synedria: &
 summi synedrii caput, M.
 Doctor Samuel filius Eli,
 caput inquam eminentissi-
 mi synedrii; Præfectus Le-
 vitarum est secundi caput;
 D. Daniel tertii synedrii
 præses est; D. Eleazar So-
 cius (sc. D. magni vel Scho-
 lasticus) præses quarti sy-
 nedrii; D. Eleazar filius Tse-
 mah ordinis procurator,
 cujus genealogia ad bea-
 tum Samuelem Prophetã
 reducitur (is ejusq; fratres
 cantica modulari norunt,

כמו

non redit: & viam fecundum fluminis ripam toto anno custodiunt, ne quis illac hominum transeat, scilicet per vestigia plantæ pedum illius. Deinde toto anno, è palatio suo non egreditur unquam: vir sanctus & pius. Ultra flumen etiam palatium struxit in ripa cujusdã brachii Euphratis, fluentis ab altera civitatis parte: ubi magnas domos ædificavit, porticus & hospitia in usum pauperum ægrotantium, qui eò ut curentur se conferre solent. Hic sexaginta fere sunt tabernæ medicinales, quibus ex aula regia de aromatibus aliisque necessariis prospicitur. Quicumque illuc ægroti veniunt, sumptibus regis donec convalescant aluntur. Ibidem magnus est ædificium, cui nomen Dar Almeraphtan, id est, habitaculum clementiæ: quo omnes furiosos ætate inventos concludunt, singulos compedibus ferreis vinctos. donec ad mentem redeant, ibi eos relinquunt; tum singuli domum suam redeunt. Singulis

E 3 enim

ובאותו הדרך שעל שפת הנהר שומרון אותו כל השנה שלא יעבור משם שום אדם במקו' מדרך כף רגליו ואינו יוצא מהארמון יותר בכל השנה והוא איש טהור וחסיד ועש' ארמון מעבר לנהר על שפת זרוע פרת שהוא מצד האחד של העיר ובנה בו בתים גדולים ושוקים ופונדקאות לעניים החולים הבאי' להתרפאות שם ושם כמו ששים חנויות מרופאים וכלם יש להם בשמים וכל צרכם מבית המלך וכל חולה שיבא שם יתפרנס מממון המלך עד שיתרפ' ושם ארמון גדול שקורין אותו דאר' אל טראפתאן והוא ארמון שאוסרים בו כל המשוגעים הנמצאים בקיץ ואוסרין כל אחד וא' מהם בכבלי ברזל עד שחורין לדעתם מניחין אותם וכל אחד וא' הולך לביתו כי בכל חדר וחדש

ומרקדו' לפני המלך הגדול
הנקרא כל־יפה ונותני לו
שלום בקול גדול ואומרים לו
שלום עליך אדונינו המלך
והוא מנשק בבגדו ורומז להם
שלום בבגדו בתפישת יד
והולך עד חצר התפלה
ועולה במגדל עץ ודורש
להם תורתם ויקומו חכמי
ישמעאלים ומתפללין עליו
ומשלחין אותו על רוב גדולתו
והסידותו ועונין הכל אמן
ואחר כך הוא מברך אותם
ומביאין לפניו גמל ושוחט
אותו וזהו פסחם . ונותן
לשרים והם משגרים סמנו
לטעום משחיטת יד המלך
הקדוש שלהם והם שטחים
בדבר ואחר כך יוצא מבית
התפלה והולך על שפת נהר
חרקל לבדו עד ארמונו וגדולי
ישמעאלים הולכים באניות
בנהר כנגדו עד שיכנס בארמונו
ולא ישוב בדרך אשר בא בו

cantantes & saltantes coram rege maximo, quem Calipham vocant. Eumque alta voce salutantes, acclamât, Bene fit tibi, domine noster Rex; ipse verò vestem suam osculatur, quam manu prehensens salutem vicissim denotat; & hoc modo ad precû atrium pergit. Ubi conscenso suggestu ligneo illis legem suam enarrat: affurgentes autem Iismaelitarû sapientes pro eo precantur, summaque ejus majestate & pietate commemorata eum dimittunt, reliquiq; omnes Amen accinunt. Postea ipsis benedicit, & adductum sibi camelum mactat: atque hoc eorum Pascha est. Portiones principibus distribuit; qui avidè ab ipso arripiunt, ut victimæ manu sancti sui regis mactatæ aliquid degustent: quo lætantur. Deinde ex oratorio discedit: & in Tigris fluminis ripa ad palatium suum usque solus ambulat; dum Muhamm. magnates in ipso flumine navibus in ejus conspectu vehuntur, donec is suum

palatium ingrediatur. Eadem autem qua venit via, ובאותו

bus gemmarū generibus: unde nonnisi semel quotannis prodire solet, idque festo Ramadan, ut ipsi vocant. Hoc die è remotis locis ejus videndi causa conflunt: quum ipse in mula equitat vestibus regiis ex auro argentoque confectis indutus, cidarim in capite gestans gemmis inæstimabilis pretii ornatam; cui nigrum sudarium incumbit ad testandam convenientem huic mundo modestiam: ac si diceretur, videtis totam hanc gloriam; sed mortis tempore eam occupabunt tenebræ. Et eum comitatur omnes Muhammedanorū duces elegantibus vestibus induti, equisq; infidētes, Principes Arabiæ, Mediæ, Persidis & regionis Touboth trimestri itinere ab Arabia remota. Ita à palatio suo incedit usque ad oratorium, quod proximum Botfræ portam maximum est. Quicumq; cum ipso incidunt viri ac mulieres, vestitu sericeo ac purpureo induuntur. Invenias per omnes plateas ac fora, quovis musice genere

E 2 can-

וכל אבן יקרה ואינו יוצא מארמונו אלא פעם אחת בשנה בחג שקורין אותו ומאדן באי' מארץ רחוקה באותו היום לראות פניו והוא רוכב על הפרדה ולובש בגדי מלכות עשויים מזהב ומכסף ועל ראשו מצנפת ועליה אבנים יקרות שאין להם שער לשווי' ועל המצנפת סודר שחור בשביל צניעו' העולם כלומר תראו כל הכבוד הזה השך יגשש אותו ביום המיתה ובאים עמו כל קציני ישמעאל' מלובשים בגדים נאים ורוכבי' על סוסים שרי ערב ושרי מדי ופרס ושרי ארץ טובות מערב מהלך שלשה חדשי' והולך מארמונו ועד בית התפלה שהיא בשער בצורה והיא בית התפלה הגדולה ההולכים כלם מלובשים בגדי משי וארגמן האנשי' והנשי' וותמצא בכל החוצות ובשווקים כל מיני זמרה מרננים

והוא בעיניהם כמו הנביא
 שלהם והולכים לבתיהם
 שמחים על פי הרבד שדבר
 להם השר שנתן להם שלום
 ונושקים בבגדו כל אחיו וכל
 משפחתו וכל אחד ואחד יש
 לו ארמון בתוך ארמונו אבל
 כלם אסורים בשלשלאות
 של ברזל ועל כל בית ובית
 שומרו' שלא יקומו על המלך
 הגדול כי פעם אחת קמו עליו
 אחיו והמליכו אחד מהם
 ונגזרה גזרה על כל בני
 משפחתו שיהיו אסורים
 בשלשלאות של ברזל שלא
 יקומו על המלך הגדול וכל
 אחד ואחד יושב בארמונו
 בכבוד גדול ולהם כפרים
 ומדינות ומבואים להם
 המס פקודיהם והם אוכלים
 ושותים ושמחים כל ימי
 חייהם ובארמון המלך ה
 הגדול בניינים גדולים ג
 ועמודי כסף וזהב ומחבואות
 וכל

tarum. Eumque Prophetæ
 suo parem censent; & do-
 mum redeunt læti, propter
 sermonem quem habebat
 ille Princeps, dum salutem
 impertitam diceret. Om-
 nes etiam fratres totaque
 familia vestē ejus deoscu-
 latur: habentque singuli sua
 palatia in ipsius palatio; sed
 catenis ferreis vincti in sin-
 gulis ædibus custodes ha-
 bent, qui ne adversus ma-
 ximum regem insurgant
 attendunt. Factum enim a-
 liquādo ut fratres adversus
 eum rebellarent; & ex se
 quendam crearent regem:
 quapropter decretum de
 omnibus ejus consanguineis
 factum fuit, ut catenis
 ferreis constringerentur,
 ne in maximum regem in-
 surgerent. Singuli tamen
 in suis palatiis admodum
 splendide vivunt, & pagos
 ac civitates imperio suo
 subjectas habent, quarum
 præfecti ipsis tributa sol-
 vunt: itaq; edunt, bibunt, ac
 lætantur omnibus vitæ suæ
 diebus. Cæterum in illo
 maximi regis palatio ma-
 gna sunt ædificia cum ar-
 genteis ac aureis columnis,

conclavibus atque omni-

וכל

frui cupit : storeas enim conficit, quas sigillo suo signatas per principes suos in foro divendit, easque viri summi emunt; atq; ex hoc pretio edit ac bibit. Vir bonus est ac fidelis, & obvios quosque salute impertit. Ismaëlitis tamen eum videre non datur. Peregrini verò qui è longinquis regionibus Meccâ in regionem Elyman tendunt, eum adire allaborant, & è palatio eum inclamant; Domine noster, Ismaëli-tarum lux & legis nostræ lumen, ostende nobis vultus tui splendorem : sed ipse eorū verba susque deque habet. Deinde principes & servi qui ei ministrant accedentes inquirunt; Domine noster, salute tua eos imperti, qui è remota regione accedentes, ad umbram decoris tui se recipere gestiunt. Tum is sublatam vestis suæ alam è fenestra demittit, quam accedentes peregrini osculantur. Deinde ad eos Principum non nemo; Abite cum salute: jam enim vobis propitius salutem impertitus est dominus noster lux Ismaëli-

תחתו בהן ומכרין אותם שריו בשוק וקונים אותם גדולי הארץ ומדמיהן הוא אוכל ושותה והוא איש טוב ובעל אמונה ודובר שלום לכל הבריות ואינן יכולים בני ושמעאל לראותו והתועים הבאים מארץ מרחק ללכת לטיקה בארץ אלימן מבקשים ללכת לפניו ואומר' לו מהארמון אדונינו אור ה' הישמעאל' וזהר תורתנו הראנו ויו פניך ואינו חושש לבריהם ובאים שריו ועבדיו המשרתים אותו ואומר' אדונינו פרוש שלומך על האנשי' הבאים מארץ מרחק המתאווים להסות בצל נעימותך ובאותה שעה ירום ומניח כנף בגדו מן החלק ובאי' התועי' ונושקים אותו ואומר להם שר אחד לנו לשלום כי כבר רצה ונתן לכם שלום אדונינו אור הישמעאלים

E

tarum.

שלהם והוא הממונה על
 רת הישמעאלים וכל מלכו
 ושמעאל מודים לו והוא
 עליהם כמו הפפא על
 הנוצרים ויש לו ארמון בתוך
 בגדאד כהלך שלשה מזלן
 ובתוך הארמון יער גדול
 מכל מיני אילני העולם בין
 עושי פרי ובין שאינן עושי
 פרי ושם כל מיני חיות
 ובתוך היער מקוה מים באים
 מנהר חזקל ובשעה שירצה
 לטיול עצמו בו ולשמוח
 ולשתות צדים לו עופות והיות
 ודגים ובה לארמונו עם
 יועציו ושדיו ושם המלך
 הגדול אל עבאסי אחמד והוא
 אוהב ישראל מאד ולפניו
 משודתים רבים מישראל והוא
 יודע בכל הלשונות ובקי
 בתורת משה וקורא וכותב
 בלשון הקדש ואינו רוצה
 ליהנות אלא מיגיע כפיו
 ועושה מחצלאות וחותר

Prophetæ familia genus
 ducit. Hic Muhammeda-
 norum religionis antistes
 est, ipsique omnes Muham.
 reges fasces submittunt : iis
 enim eodem modo præest,
 quo Papa Christianis. Bag-
 dadi palatium habet, quod
 tria patet miliaria : in cu-
 jus medio sylva magna est,
 omnibus arborū cum fru-
 ctiferarum, tum sterilium
 generibus quæ in orbe re-
 periuntur, instructa; quin
 etiam omnibus ferarum
 generibus. In media sylva
 receptaculum est aquarū,
 quæ è Tigri flumine deri-
 vantur. Quam exspatiari &
 se oblectare ac convivari
 inibi desiderat, aucupio a-
 ves ipsi parantur, similiter
 feræ & pisces venatione
 & piscatione; ipse deinde
 palatium suum ingreditur
 cum consiliariis & princi-
 pibus suis. Nomen magni
 istius regis est Abasides Ah-
 med. impense amat Israë-
 litas, quorum plurimi ipsi
 ministrant: omnes callet
 linguas, legisque Mosaicæ
 peritus est, ac sanctum idio-
 ma non solum legit, sed etiam scribendo exprimit.

Nulla re quam manuum suarum labore porta frui
 חותמו

itineribus distat Aljobar, quæ eadem cum Pombeditha in Nehardea : ubi duo ferme Judæorum millia; in quibus sunt sapientiæ studiosi, quorū antesignani Magister Hen, Doctor Moses & D. Eliakim. Hic sepulchrum magistri Judæ & Doctoris Samuelis; atque ante unumquodq; propria synagoga, quam quisque ante obitum struxerat; præterea sepulchrum D. Bastenæi Principis qui fuit caput exulū, Doctoris Nathanis & D. Nahmanis filii Paphæ. Inde Hardam usque quinque sunt itinera : ubi quindecim ferme Judæorum millia; quorū primores D. Zaken, D. Joseph & D. Nathaneel. Hinc profectus, biduo post veni Okberam; quam civitatem Jeconias rex Judæorum condidit: in qua decem ferme Judæorum millia; quorum primates D. Josua & D. Nathan. Hinc eodem temporis spatio Bagdadum veni, civitatem maximam : quæ metropolis est imperii Caliphæ præfecti credentium Abasidæ, qui ex ipsorum

Pro-

שני ימים לאל יובר היא
 בום בדיתא אשר בנהרדעא
 ושם כמו אלפים יהודים
 וביניהם תלמידי חכמים
 ובראשם חן הרב ורבי משה
 ורבי אליקים ושם קבר רב
 יהודה ורבי שמואל ולפני
 כל אחד ואחד בית כניסתו
 אשר בנו הם לפני מותם
 ושם קברו של רבי בסתנאי
 הנשיא דאש הגולה ורבי
 נתן ורב נחמן בר פפא.
 ומשם חמשה ימים ל
 להרדה ושם כמו חמשה
 עשר אלף יהודים ובראשם
 רבי זקן ורבי יוסף ורבי
 נתנאל. ומשם שני ימים
 לעוקברה היא המדינה
 אשר בנה יכניה מלך י
 יהודה ובה כמו עשרת
 אלפים יהודי ובראשם ר'
 יהושע ור' נתן ומשם שני
 ימים לבגראד היא העיר
 הגולה ראש ממשלת כ
 כלפת אמור אל כומנין אל
 עבאסו ממשפחת הנביא

והוא חוזה למלך זין אל דין
 אחיו של נור אל דין מלך
 דמשק והיא תחלת ארץ פרס
 היא עיר גדולה מאד מימי
 קדם והיא יושבת על נהר
 חדקל ובינה ובין נינוה הגשר
 לבד והיא חרבה אבל יש שם
 כפרים וכרכים רבים ומנינוה
 מהלך פרסה עד עיר ארבאל
 והעיר נינוה על שפת חדקל
 ובמדינת אשור כנסת עובדיה
 וכנסת יונה בן אמתו וכנסת
 נחום האלקושי ומשם
 מהלך שלשה ימים לרחבה
 היא רחובות אשר על שפת
 נהר פרת ובה כמו אלפי
 יהודי ובראשם רבי חזקיה
 ורבי אהוד ורבי יצחק והיא
 עיר מוקפת חומ' ויפה
 עד מאד וגדולה ובצורה
 וסביבותיה גנות ופרדסים
 ומשם מהלך יום לקרקסיא
 היא כרכוש על שפת
 נהר פרת ובה כמו חמש
 מאות יהודי ובראשם רבי
 יצחק ורבי אלהנן ומשם
 שני

phelec, id est, astronomus,
 qui regi Zin-Aldino Nor-
 Aldini Damascenorum re-
 gis fratri à sacris erat. Ista
 civitas, jam inde à diebus
 priscis maxima, Perfidis ini-
 tium est, ad Tigrin flumen
 sita: inter quam & Niniven
 pons tantū intercedit. Hæc
 devastata est: attamē mul-
 tos pagos & arces habet. A
 Ninive Arbeelem usq; una
 est parasanga. Ninive au-
 tē Tigridis ripæ imminet.
 Affchoure vero tres syna-
 gogę visuntur, Obadiæ, Io-
 næ filii Amittæi, & Nahu-
 mi Elkoschæi. Hinc tridui
 itinere profectus sum Ra-
 habam antiquitus Roho-
 both: quæ ad Euphratis ri-
 pam sita à bis mille Judæis
 inhabitatur; quorum pri-
 marii D. Hizkija, D. Ehud,
 & D. Isaac. Urbs muro cin-
 cta, pulcherrima, magna &
 munita, circumcirca hortis
 & pomariis ornatur. Inde
 uno die Karkefiam (quæ
 olim Carcemis dicebatur)
 deveni. Euphratis ripæ im-
 minet: & quingentos fer-
 me Judæos habet, quorum
 primarii sunt D. Isaac &
 D. Alhanan. Hinc duobus

Judæi. Inde itinere bidui
 Netfubin veni, civitatē ma-
 gnam fluviiſque abundan-
 tem: quæ mille circiter Ju-
 dæos habet. Ulterius biduo
 profectus fui ad civitatem,
 cui nomen erat infula filii
Omaris in medio flumine
 Tigridis conditæ, ad radi-
 ces montium Ararat. Qua-
 tuor miliaribus ab eo loco
 distat, ubi Noachi arca
 quievit: sed Omar Alcitabi
 filius arcam è cacumine
 duplicis montis defumpſit,
 atque inde Muhammeda-
 norum ſynagogā ſive tem-
 plum ſtruxit. Non procul
 ab arca etiamnum exſtat
 Ezræ ſcribæ ſynagoga que-
 dam: quò Judæi feſtis die-
 bus è vicina civitate ad pre-
 candū conveniunt. In iſta
 civitate, ſcilicet Infula O-
 maris filii Alcitabi, Judæi
 ferme ſunt quater mille:
 quorum primates D. Mub-
 char, D. Joſeph & D. Ha-
 jim. Hinc biduo profectus
 ſum Almozaem, id eſt, Af-
 ſchurem magnam: in qua
 ſeptem Judæorum millia,
 quorum primores D. Za-
 chæus princeps è Davidis
 regis proſapia, D. Joſeph

יהודי'. ומשם שני ימים
 לנצ'יבין והיא עיר גדולה
 ונחלו מים ובה כמו אלף
 יהודים ומשם שני ימים לגזיר
 בן עמר והוא בתוך נהר
 חוקל לרגלי הרי אררט מהלך
 ד' מילין למקן שנחה שם
 תבת נח אבל עמר בן אל
 כטאב לקח את התיבה מעל
 ראש שני ההרים ועשה
 אותה כנסת לישמעאלים.
 ובקרוב התיבה כנסת עזרא
 הסופר עד היום הזה וביום
 ט' באים יהודים מן המדינה
 להתפלל שם ובאותה
 מדינה של גזירה עמר בן אל
 כטאב כמו ד' אלפים יהודים
 ובראשם רבי מובחר ורבי
 יוסף ורבי חי' ומשם ב' ימים
 לאל מוצל הוא אשור הגדולה
 ושם כמו ד' אלפים יהודים
 ובראשם רבי זכאי הנשיא
 מורע דוד המלך ור' יוסף
 המכונה ברהן אל פלך

cognomento Berhen Al-
 phelec,

Gzira Ebn
 Omar

Mozal

התוגרמי' ארצם והנריהום
 אל המדברות ושם כמו אלפים
 יהודים ובראשם רבי צדקיה
 ורבי הייא ורבי שלמה. ומשם
 יום לרקיא והיא כלנה
 בתהלת ארץ שנער החולקת
 בין מלכות התוגרמים וארץ
 שנער ובה כמו שבע מאות
 יהודים ובראשם רבי זכאי
 ור' נדיב והוא סגיא נהור
 ורבי יוסף ושם כנסת מבנין
 עזרא הסופר בעלותו מבבל
 לירושלים. ומשם שני ימים
 להרץ הקדמונה ובה כמו
 עשרים יהודי' ושם כנסת עזר'
 כמו כן ובאותו מקו' שהיה
 שם ביתו של אברהם אבינו
 אין עליו בנין וישמעאלים
 מכבדו אותו מקום ובאים
 שם להתפלל. ומשם מהלך
 שני ימים ומשם יוצא נהר
 אל כבור והוא חבור והוא
 הולך לארץ מדי ונופל
 בהר גוזן ושם כמו מאתיים
 יהודי'

Turcæ ipsorum regionem occuparent, eosque in deserta abigeret. Ibi duo ferme Judæorum millia; quorum primates D. Tfedekias, D. Hija & D. Salomon. Inde Rakiam uno die profectus fui, quæ olim Calne dicebatur ad Mesopotamiæ ingressum condita, Turcarum regnum à Mesopotamia distinguens. ubi septingenti circiter Judæi; quorum primates D. Zachæus, & Doctor Nadib omnium celeberrimus, nec non D. Josephus. Ibidem synagoga ab Ezra scriba, quum è Babylonia Hierosolyma ascenderet, condita fuit. Hinc itinere bidui *Haranem* Hananem antiquam veni: ubi viginti ferme Judæi, & consimiliter quædam Ezræ synagoga. Quo vero loco ædes Abrahami patris nostri quondam fuere, nullum extat ædificium: eumque Muhammedani religiosè colentes, precandæ causa frequentant. Duobus hinc itineribus erumpit flumen Alcabor, id est, Harbor, inque Mediam tendens in montem Gozen incidit; ubi ducenti ferme

Haranem

rum primarii D. Oula sacerdos, senex Abou-Algalieb, & Muchtar. Hinc dimidiato die Schiham, olim Hatfor dictam; indeq; tribus parasangis Lamdin profectus fui; & postea bidui itinere Habebum, sive Aram Tsobæ. Hæc est regia regis Nor-Aldini, in cujus medio palatium habet altissimo muro cinctū. Nallus in civitate fons aut fluvius; sed imbres bibuntur, quos singuli in ædibus suis cisterna Algub vocata excipiunt. Hic mille & quingenti ferme Israëlitæ: quorum capita Doctor Moses Constantinopolitanus, D. Israël & D. Seth. Hinc ad Balits bidui iter est, quæ aliàs Pethora dicta fuit, in Euphratis ripa: ubi etiam hodie visitur turris Bileami filii Beoris, (putrescat impiorum nomen) quam ea ratione ædificavit, quæ diei horis respondeat. In eadem civitate justus aliquis Judæorum numerus habitat. Hinc dimidiato die Kalagaberum sive Sela-Midbarum profectus sum: quam Arabes retinuerunt, quam Turcæ

ובראשם רבי עולה הכהן ושׁך אבו אל גאלב ומוכתי ומשם חצי יום לשׁהא היא חצור ומשם שלשה פרסאות ללמדׁן ומשם מהלך שני ימים לחלב היא ארם צובה והיא עיר מלוכה למלך נור אלדׁן ובתוך העיר א ארמונו מוקף חומה גדולה מאד ואין בה מעין ולא נהר אלא מימי המטר הם שותים וכל אדם יש לו בור בביתו שקורין אלגוב ובה כמו אלף וחמש מאות מ מישראל ובראשם רבי משה אלקושטנדיני ורבי ישראל ורבי שרת ומשם שני ימים לבאלין היא פתורה על נהר פרת ועד היום הזה שם מגדל בלעם בן בעור שם רשעי' ירקב שבנה על ענין שעות היום ושם כמו מנין יהודים ומשם חצי יום לקלע גבר היא סלע מדברה והיא נשארה ל לבני ערב בשעה שלקחו

Halopium

וגנות ופרדסים בתוך המדינה
 וגם תדמור במדבר אשר בנה
 שלמה כמו זה בנין אבנים
 גדולות והעיר תדמור מוקפת
 חומה והי' במדבר רחוקה
 מן היישוב ומבעלת הנזכרת
 ארבעת ימים וכאלפים י
 יהודים בתדמור גבורי מ
 מלחמה ונלחמים עם בני
 אדום ועם בני ערב שהם תחת
 ממשלת נור' אלדין ועוזרים
 לשכיניהם הישמעאלים ו
 ובראשם רבי יצחק היוני
 ורבי נתן ורבי עזיאל ז"ל.
 ומשם לקריתין מהלך חצי
 יום והוא קריתים ואין
 בה יהודים אלא אחד צבע.
 ומשם דרך יום לחמה והיא
 חמת היושבת על נהר יבוק
 תחת הר הלבנון ובימים
 ההם בא רעש גדול בעיר
 ומתו ביום אחד חמשה עשר
 אלף אנשי' ביום אחד ולא
 נשארו כי אם שבעים איש
 ובראשם

vii: cui in ipsa civitate mo-
 læ, horti, & pomaria adja-
 cent. Tadmor etiam in de-
 ferto : quam urbem Salo-
 mon pariter magnis lapidi-
 bus condidit, quæque mu-
 ro cingitur. In deserto sita,
 procul ab inhabitata regio-
 ne abest, & à cōmemorata
 Baalath quatuor dierū iti-
 nere. In ipsa urbe duo fere
 reperiuntur Judæorū mil-
 lia, fortes bello, qui cum
 Christianis & Arabibus, quī
 imperio Nor-Aldini parēt,
 bellum gerunt; & vicinis
 suis sc. Iisnaëlitis suppetias
 ferunt: habentque sibi præ-
 fectos Doctorem Isaacum
 Græcum, D. Nathanem &
 D. Ouzielem laudatæ me-
 moriæ. Quum hinc dimi-
 diato die Kirjathin sive
 Kirjathajim profectus, nul-
 lum ibi Judæum, uno tin-
 ctore excepto, reperissem;
 unius diei itinere Hamam
 veni. Hæc Hamath olim
 dicta ripæ Jaboki imminet,
 sub ipso monte Libano.
 Tunc temporis magno ter-
 ræ motu in ista civitate uno
 die periere quindecim ho-
 minum millia, uno inquam

die : adeo ut septuaginta tantum remanerent ; quo-

Doct̄or Heman Pastor ac denique Doct̄or T̄faddik Medicus. Karait̄æ, sive qui soli Scripturæ sacræ adherent, istic ferme ducenti; Samaritani vero quadringenti: hi pacem quidem colunt; sed inter se connubia non jungunt. Istinc unius diei itinere distat Galaad, quæ Gilead olim: ubi sexaginta ferme Israëlitæ (quorum primas Doct̄or T̄fadoc.) loco vivunt amplo, qui aquarum rivis, hortis ac pomariis abundat. Unde dimidiato die Salcatham, sive Salecam profectus; postea eodem temporis spatio veni Baal-be-cum: quæ quondam Baalath dicebatur, à Salomone in Libani valle in filia: Pharaonis gratiam condita, vel restaurata, Palatium maximis lapidibus, quorum longitudo viginti spithamas; latitudo duodecim æquat, constructum est: ita tamen ut lapides nulla re cohæreant; ideoq; vulgò ferunt, solius Asinodæi opera istud ædificium structum fuisse. Ante civitatem fons magnus scaturiens, mediam

ורבי הימץ הפרנס ורבי צדוק הרופא ושם מן הקראין כמו מאתים ומן הכותים כמו ארבע מאות וביניהם שלום ואין מתחתנים אלו עם אלו ומשם מהלך יום לגלעד הוא גלעד ושם מישראל כמו ששום ובראשם רבי צדוק והוא רחבת ידים נחלו מים וגנות ופרדסים. ומשם חצי יום לסלכאת היא עיר סלכא. ומשם לבעל בוק חצי יום והוא בעלת בבקעת הלבנון אשר בנה שלמה לבת פרעה ובנין הארמון מאבנים גדולות אורך ה האבן עשרים זרתות ורחבה שתים עשרה זרתות ואין בין אבן ואבן כלום ואומרים בני אדם שלא נעשה בנין זה אלא על ידי אשמדאי ובראש המדינה מעין גדול יוצא והולך באמצע המדינה כמו נהר גדול ועליו ריהים

perlabitur instar magni flu-

D. 5

vii;

על מדרגו' יב כנגד שעות
 היום ובני אדם מכירו' בו
 שעות היום ובין הארמון
 בתים בנויים בזהב ובכסף
 והוא גדול כמו גגית אחת
 ויכולין ליכנס בתוכ' לרחוק
 כמו ג' אנשי' ושם תלו
 בתוך הארמון צלע אחת
 מענק אחד ארכו ט' זרתות
 ורחבו ב' זרתות והו' היה
 מלך ענק מן הקדמוני' ושמו
 המלך אבכמו ש כך מצאו
 חקוק על אבן אחת על קברו
 ובה כתוב שמלך בכל העולם
 ויש בה כמו שלשת אלפי'
 מישראל וביניה' תלמודי
 חכמים ועשירים ושם ראשי
 ישיב' של ארץ ישראל ושמו
 רבי עזרא ואחיו שר שלום
 אב בית דין ורבי יוסף
 החמשי בשיבה ורבי מצלוח
 ראש הסדר הדרשן ורבי
 מאיר פאר החכמים ורבי
 יוסף אבן פלאות סוד הישיבה
 ורבי

decim istis gradibus de-
 scendit, qui diei horis re-
 spondent: ideoq; homines
 in isto muro diei horas di-
 gnoscunt. Intra palatium
 loca ex auro & argento ex-
 structa sunt, quorum fia-
 gula magnum labrum re-
 ferunt; ut eò ad lavandum
 tres simul ingredi queant.
 In palatio medio gigantis
 alicujus costa quaedam de-
 pendet, quæ longitudine
 spithamas novem, latitu-
 dine duas æquat. Is fuit rex
 giganteus unus ex anti-
 quissimis illis, cujus nomen
 Abcamaz: nam ita scul-
 ptum erat in quodâ sepul-
 chri lapide, ubi addebatur,
 per totum orbē regnasse.
 Hic tria ferme Israëlitarum
 millia, in quibus erant di-
 versi sapientiæ studiosi &
 divites: ibidem Caput sen-
 atus terræ Israëliticæ, cu-
 jus nomen D. Ezra, ejusque
 frater Sarschalom Princeps
 senatus, D. Josephus in sen-
 atum quintum locum obti-
 nens, D. Matssiah ordinis
 præfectus & Concionator,
 D. Meir sapientum decus,
 D. Josephus petra admi-
 nistranda sive fundamentum
 consultantium in senatu,

ac pulcherrima, muro undique cincta: cujus regio hortis & pomariis instructissima est: patetq; in singula latera milliaria quindecim. Nulla in toto orbe civitas cum hac, fructuum ubertate conferri potest: nam eò etiam ex Hermone monte defluunt Amana & Parpar, (nam urbs sub monte Hermone sita est) adeo ut Amana in mediam urbem descendat, adeoque per ligneos aquæductus ad omnes magnatum ædes aquæ deriventur, nec non in plateas & fora. Urbs ipsa omnium regionum mercatoribus frequentata. Cæterum Parpar extra urbem hortos & pomaria interfluit, omnesq; horti & pomaria inde irrigantur. Ibi templum est Muhammedanorum, quod vocatur synagoga Damascena, cui par non est ædificium in orbe toto; & olim Ben-hadadi palatium fuisse dicitur. Hic magorum artificio vitreus murus constructus est, in quo foramina sunt solaris anni diebus paria: per quorū singula sol illapsus duo-

D 4 decim

ויפה עד מאד ומוקפ' חומ'
והיא ארץ גנות ופרדסי'
מהלך טו מילין מכל צד
לא נראה מדינת פירות
בכל הארץ כמוה ויורדים
אלוה מהר הרמון אמנה
ופרפר כי היא יושבת תחת
הרמון אמנה יורד בתוך
העיר והולכים המים על
דיו גשרים על כל בתי
הגדולים ובחוצות ובשוקים
והיא ארץ סחורה לכל
הארצות. ופרפר הולך בין
הגנות והפרדסי' חוץ לעיר
ומשקין ממנו כל הגנות
והפרדסים שלהם ושם
בניסרה אחת לישמעאלים
הנקראת גומאע דמשק אין
בבנין ההוא בכל הארץ
ואמר' כי היא הית' א'
ארמונת בן הדר ושם
עשו במלאכת ההרטומים
כתל של זכוכית ועשו בו
הורין כמנין ימרת החמה
ויכנס שמה השמש בכל
אחד ואחד מהן ויורד בו

יהודים ובית הקברות גדול
 לישראל. ומשם חצי יום
 לקאד'ים היא קדש נפתלו
 על שפת הירדן ושם קבר
 ר' אלעזר בן ערך ור' אלעזר
 בן עזריה וחוני המעגל
 ור' שבג ורבי יוסי הגלילי ושם
 קבר ברק בן אבינוע' ואין בה
 יהודי' ומשם יום לבל'נוס
 היא דן ושם מערה אחת
 ומשם יוצא הירדן עד הרן
 ג' מילין מתחבר אליו נחל
 ארנון הירדן מגבור מואב
 ולפני המערה נכר מקום
 המזבח של פסל מיכה שהיו
 עובדים בני דן בימי' ההם
 ושם מקום המזבח של ירובעם
 בן נבט שהיה שם עגל הזהב
 ועד הנה גבול ישראל מצד
 הים האחרון. ומשם ב' ימים
 עד דמשק העיר הגדולה היא
 תחלת ממשלת נור אל
 דין מלך תוגרמים הנקרא'
 מורקוש והיא עיר גדולה

quaginta Judæis inhabitata: quæ sepulchretum Israëliitarum magnum continet. Unde dimidiati diei itinere distat Kadis, quæ est Kadesch Naptali in Jardenis ripa condita: ubi sepulchra D. Eleazari filii Arachi, D. Eleazari filii Azariæ, Houni Circulatoris, D. Simeonis f. Gamalielis & D. Josæ Galilæi, cum sepulchro Baraki f. Abincami: nec ulli istic Judæi sunt. Hinc uno die Belinos veni, cujus nomen fuit Dan: ubi antrum quoddã, unde Jarden profluens tertio millia. ri jungitur Arnonis fluento, quod è Moabi limite descendit. Ante ipsum antrum dignosci adhuc potest locus altaris idoli, quod Micha quondam ditavit & Danitæ illis diebus coluerunt. vestigia etiam sunt illius altaris Jeroboami filii Nebati, in quo erat vitulus aureus. Hucusque limites Israëliitarum, quoad mare superius. Inde iter est bidui Damascum usque, urbem magnam, initium regni Nor-Aldini regis To-

garmanorum, qui Turcæ vocantur. Urbs permagna est

ויפה

fus collis : nam egressus Jarden irruit in mare Sodomæ five mare falis. Tiberiade quinquaginta circiter Judæi sunt : quorum primates D. Abraham vidēs, D. Muchtar & D. Isaac. Ibidem aquæ calidæ ex abditis terræ locis scaturientes, quas thermas Tiberiadis vocant. In proximo etiam Calebi synagoga f. Jephunnæ. Ibidē sepulchretum Israëlitarum cum sepulchris Domini Joannis filii Zachæi & Doctoris Jonathanis f. Levi. Omnia hæc in Galilæa inferiori. Inde duobus dieb⁹ Timin deveni, sive Timnatham: ubi sepulchrū visitur Samuelis justī, & multorum Israëlitarū. Hinc uno die profectus fui Afchath, quæ olim Gousch Halebi: ubi viginti ferme Judæi. Inde sex numerantur parasangæ Maranē usque, quæ olim Maron. Ubi in propinquo est quædam spelunca, cum sepulchris Hillelis & Schammæi, sepulchris etiam viginti discipulorum, sepulchris denique D. Benjaminis filii Jephethi & D. Judæ filii Bethiræ. Hinc iterum sex parasangæ Almam usque à quin-

הפסגה ויוצא ונופל בים סדום
 וזא ים המלח. ובטבריה כמו
 יהודי' ובראשם רבי אברהם
 החווה ור' מוכתר ורבי יצחק
 ושם מים חמוץ נובע' מתחת
 הארץ וקורין להם חמי
 טבריה ושם כנסת כלב בן
 זמנא בקרוב ושם מקום
 קברי ישראל ושם קברו
 של רבן יוחנן בן זכאי ורבי
 יהונתן בן לוי הכל בגליל
 התחתון. ומשם שני ימי'
 לטימון היא תמנתה ושם
 קבר שמואל הצדיק והרבה
 מישראל. ומשם יום לעשת
 הוא גוש חלב ושם כמו כ'
 יהודים. ומשם ו' פרסאות
 לטמן היא מרון ושם מערה
 א' קרוב משם ושם קברי
 הלל ושמאי ושם כ' קברים
 מתלמידיהם ושם קבר ר'
 בנימן בר יפת ור' יהודה
 בן נתורה. ומשם ו' פ'
 פרסאות לעלמה ושם נ'
 D 3 qua-

יהודים רבנים ובראשם
 רבי צמח ורבי אהרן ורבי
 שלמה ושם כמו מ' קראין
 ושם כותיים כמו ג' מאות
 ושם בתוך העיר בור ש
 שקוראין לו בִּיר אברהים
 אל כליל אשר חפר בומו
 פלשתים . ומשם לסגור'ש
 היא לוד . ומשם יום וחצי
 לזרזין היא יורעאל ושם
 מעין אחד גדול ובה יהווי
 אחד צבע . משם שלשה
 פרסאות לשיפור'יה היא
 צפורי ושם קברו של רבינו
 הקדוש ורבי חייוא שעלח
 מבבל ויונה בן אמתי הנביא
 והם קבורים בהר ויש שם
 קברים הרבה . ומשם ה'
 פרסאות לטיבר'יה היושבת
 על הירדן הנקרא ים כנרת
 ושם נופל הירדן ושופך ים
 המלח אל ארץ הכנרת והוא
 המקום הנקרא אשדות

Judæi Rabbanæi five tra-
 ditionū observatores, quo-
 rum antistites D. Tsemah
 & D. Aaron cum D. Salo-
 mone : ibidemque 40 Ka-
 raitæ sunt , qui Scripturæ
 soli adhærent : quin etiam
 Samaritani ferme trecenti.
 In media urbe puteus : quæ
 vocant puteum perfecti A-
 brahami, quippe quem Pe-
 lischthæorum temporibus
 foderat. Hinc Seguras pro-
 fectus sum, quæ olim Lud
 dicebatur: & postea sesqui-
 die Zarzin, quæ olim Iis-
 reël; ubi magnus conspicit-
 ur fons, & unus habitat Ju-
 dæus qui tincturâ exercet.
 Hinc tribus emensis para-
 fangis Sipuriam veni, quæ
 Tisipori dicebatur olim: ubi
 est sepulchrum J. Doctoris
 nostri sancti, & D. Hijæ qui
 è Babylonia venerat, nec
 nō Prophetæ Jonæ f. Amit-
 tæi; qui omnes in monte
 sepulti. Sunt & alia ibi se-
 pulchra plurima. Inde quin-
 que confectis parasangis
 Tiberiadem veni, Jardeni
 imminentem: ubi Jarden
 dicitur mare Genezareth,

magnoque fluens impetu effundit mare salis in ter-
 ram planitieci. Hic est locus qui aliàs dicitur decur-

הפסגה

hoc loco, civitate olim permagna, tres sunt Judæi. Hic magnum quoddam Israëlitarum cœmeterium ad duo usque milliaria extenditur. Inde quinque parasangis Gapham devenitur, quæ & Joppe dicta, inque littore sita unum tantum habet Judæum, qui tincturam exercet. Hinc Ebalin usque tres parasangæ: olim dicebatur Jafne. Adhuc scholæ vestigia remanent; sed nullus est Judæus. Hucusque Epræimi limites extenduntur. Ulterius duabus emensis parasangis Palmin veni, quæ est ipsa Aschdod Pelisthæorum jam vastata: unde nec ullus ibi Judæus. Duabus inde parasangis Aschkalon distat: quæ est Aschkelon nova, quam sacerdos Ezra p. m. ad mare condidit, quam initio Benibefam appellabant. Hæc ab Aschkalone antiqua, quæ jam devastata est, quatuor parasangis abest. Nova autem urbs permagna est & elegans: quò ad negotiationem undique confluent, eo quod in confi-

niorum Ægypti extremitate sita sit. hic ducenti ferme

כמו שלשה יהודי' והיא
היתה עיר גדולה מאד ושם
בית הקברות גדול לישראל
מהלך שני מילין. ומשם ה'
פרסאות לגאפה היא יפו
אשר על שפת הים ושם
יהודי אחד צבע. ומשם ג'
פרסאות לאי'בלין היא יבנה
ועדין נראה מקום המדרש
ואין בה יהודים עד הנה גבול
אפרים. ומשם ב' פרסאות
לפלמי'ם היא אשדוד אשר
לפלשתים החרבה ואין
בה יהודים. ומשם שני
פרסאות לאשקלונה היא
אשקלון החדשה שבנה עזרא
הכהן זל על שפת הים והיו
קורין אותה מתחלה בני'ברה
והיא רחוקה מאשקלון
הקדומה החרבה ד' פרסאו'
והיא עיר גדולה מאד ויפה
ונאים אליה מכל מקום
לסחורה כי היא יושבת בקצה
גבול מצרים ובה כמו מאתיים

לשנט שמואל דשילה היא
 שילה הקרובה לירושלם
 ב' פרסאות וכשלקחו בני
 אדם את רמלה היא רמה
 מיד בני ישמעאל מצאו קברו
 של שמואל הרמתי אצל
 כנסת היהודים והוציאוהו
 בני אדם מקברו והוליכוהו
 לשילה ובנו עליו במה גדולה
 וקראו אותו שנט שמואל
 דשילה עד היום הזה. ומשם
 שלשה פרסאות להר מורי'
 לפשיפה היא גבעת שאול
 ואין בה יהודי' והיא גבע
 בנימן. ומשם שלשה פרסאות
 לבית נובי היא נוב עד
 הכהני' ובאמצע הדרך שני
 הסלעי' של יהונתן שם
 האחד בוצץ ושם השני סנה
 ושם שני יהודים צבעים.
 ומשם שלשה פרסאות לרמש
 היא הרמה ושם מבני ה
 החומות מימי אבותינו כי כך
 מצאנו כתוב על האבנים ושם

garum itinere ad Sanctum
 Samuelem Schiluntis veni.
 Hæc est illa Schilo, quæ
 duabus tantum parasangis
 Jerosolymis distat. Quum
 autem Christiani Ramlam
 (hæc est Rama) Muhâme-
 danis eripuissent, & Samue-
 lis Ramathensis sepulchrū
 apud Judæorum synago-
 gam reperissent; eum è se-
 pulchro suo desumptum
 Schiluntem detulere: ubi
 magnum struxere templū,
 quod hæctenus vocant San-
 ctum Samuelem Schilunti-
 num. Hinc tribus emensis
 à latere montis Moria: pa-
 rasangis, Pefipuam deveni:
 quæ est Gibeæ Saulis, & ea-
 dem cum Geba Binjami-
 nis: ubi nulli Judæi. Ulte-
 rius ad Beth-nobi tres pa-
 rasangæ, ipsa est Nob civi-
 tas sacerdotalis. In media
 via duo saxa Jonathanis,
 quorum uni nomen erat
 Botsets, alteri Sene. In ci-
 vitate duo sunt Judæi, iiq;
 tinctores. Hinc tribus pa-
 rasangis Ramas (quæ ea-
 dem cum Harama) distat:
 ubi murorū inde à patrum
 nostrorum temporibus ru-

dera; sicuti è lapidum inscriptionibus liquet. Atque

כמו

& Leæ; quæ sibi invicem opposita, singula literis incisis obfignata sunt, ut sepulchro Abrahami hæc incisa legantur, hoc est Abrahami beati patris nostri sepulchrum, similiter super Isaac sepulchro, imo singulis sepulchris hujusmodi inscripta erant. In spelunca lampada accendunt, quæ die nocteque ad sepulchra ardeat. Ibidem dolia visuntur, plena Israelitarum ossibus: quia huc mortuos suos inferunt Israëlita, nempe singuli patrum suorum ossa, quæ hic ad hodiernum usque diem deponunt. In agri *Duplicationis* extremitate domus beati Abrahami patris nostri, & ante domum fons: nec ut ibi domus alia extruatur permittitur, ob Abrahami reverentiam. Hinc ad Beth Gebarin quinque sunt parafangæ, olim dicebatur Marescha: tres istic tantummodo Judæi habitant. Unde quinque parafangis distat Torondolos Gabralerisch, dicta quondam Schunem: ubi trecenti sunt Judæi. Inde trium parafan-

D

garum

ולאה זה כנגד זה וכלם
 התומים אותיות הקוקות
 על קבריהם על קבר אברהם
 הקוק זה קבר אברהם אביו
 עה ועל קבר יצחק כמו כן
 ועל כל הקברים גם כן
 וכן לכלם. ובמעה מדליקין
 שם עשורת אחת דולקת
 ביום ובלילה על הקבר'
 ושם חביות מלאות עצמות
 מישר' שהיו מביאים שם
 מותיהם בית ישראל כל
 אחד וא' עצמות אבותיו
 ומניחם שם עד היום הזה
 ובקצה שדה המכפלה ביתו
 של אברהם אביו עליו
 השלום ומעין לפני הבית
 ואין מניחי' שם לעשות בית
 מפני כבוד אברהם. ומשם
 חמשה פרסאות לבית גברין
 והוא מרשה ואין שם אלא
 שלשה יהודים. ומשם
 חמשה פרסאות למרוון ד
 דולוש גברא לדיש היא
 שונם ויש בה ג' מאו' יהודי'.
 ומשם שלשה פרסאות

צבעים יהודים והוא ארץ
 נחלי מים ברות ומעינות
 ומשם שש פרסאות לחברון
 אבל מדינת חברון היתה
 בהר והיא חרבה היום
 הוזה ובעמק השרה בשרה
 המכפלה שם העיר ושם
 הבמה הגדולה שקורין שנת
 אברהם והיא היתה כנסת
 יהודים בימי ושמעאלים
 ועשו שם הגוי' ששה קברים
 על שם אברהם ושר' ו
 יצחק ורבקה יעקב ולאה
 ואומרים להולכים שהם
 קברי האבות ונותנין שם
 ממון. אבל אם יבא ו
 יהודי שותן שכר לשוער
 של מערה יפתח לו פתח
 ברזל שהיה עשוי מומי
 אבותינו ע"ה וירד אדם ל
 למטה בנר דלוק בידו במערה
 א' ולא ימצא שם כלום
 וגם בשנייה ער שיבא
 אל השלישית והנה שם
 ששה קברים קבר אברהם
 יצחק ויעקב ושרה ורבקה
 ולאה

duodecim Judæi sunt, qui
 tincturam exercent: locus
 ipse rivis, puteis & fontibus
 abundat. Hinc ad Hebronē
 sunt parasangæ sex: sed
 hæc civitas in monte olim
 sita, jam devastata est. In
 agri valle quadam scil. in
 agro illo *Duplicationis* ho-
 die oppidum est, & templū
 magnum, cui nomen, San-
 cti Abrahami: olim verò
 Ismaëliarum temporibus
 fuit synagoga Judæorum.
 Christiani hic sex sepulchra
 fecere, quibus ab Abra-
 hamo, Sara, Isaaco, Rebecca,
 Jacobo & Lea imposuere
 nomina: & peregrinanti-
 bus hæc Patriarcharum se-
 pulchra esse dicunt, ideoq;
 pecunia erogatur. Sed Ju-
 dæo accedenti, qui merce-
 dem speluncæ janitori sol-
 vat, aperitur porta ferrea,
 quæ jam inde à beatorum
 Patriarcharū temporibus
 confecta fuit. Huc qui de-
 scendit facem ardentem
 manu tenens, nihil in pri-
 ma spelunca deprehendit,
 nec in secunda; donec in
 tertiâ deveniat: ubi sex sunt
 sepulchra, Abrahami, Isaa-
 ci, Jacobi, Saræ, Rebecca

ore duorum illorum expo-
fuisse, qui inde venerant;
hoc tulit à D. Abrahamo
responsum; illa esse fami-
liæ Davidicæ sepulchra, in
usum eorum regum qui ex
Juda genus ducerent. Po-
stridie cū ad duos illos qui-
dam missi fuissent, utrum-
que in lecto suo deprehen-
derunt decumbentem, ac
cum pavore dicentem; Eò
non revertemur, quia Deo
non libet ulli homini istū
locum ostendere. Præcepit
ergo Patriarcha, ut locus
iste occluderetur, & ab ho-
minibus ad hunc usq; diem
occultaretur. Ipse Abraham
Pius omnia hæc mihi nar-
ravit. Inde duabus parasan-
gis Bethlehemum Iudæ de-
veni, quod oppidum abso-
lutè Bethlehem dicitur: cui
ad dimidium milliare vi-
cinus est sepulchri Rache-
lis cippus, in bivio è duode-
cim lapidibus pro numero
filiorum Jacobi exstructus,
& testudine quadam, quæ
columnis quatuor inniti-
tur, tectus. Hic omnes Ju-
dæi quotquot prætereunt,
nomina sua in cippi lapidi-
bus exarant. Bethlehemi
duo-

הדבר' עפ' שני האנשים
האלו שבאו משם וענה לו
ר' אברהם וא' כי קברי
נות דוד למלכו בית יהודה
הם ולמחר שלחו בשביל
שני האנשי' ומצאו אות'
כל אחד ואחד מושכב על
טתו ופחדו ואמרו לא
ננס שם כי אין חפץ ה'
להראות אותנו לשו' אדם
וערה הפטריאקה לטתום
אותו מקום ולהעלימו מבני
אדם עד היום הזה ור'
אברהם החסיד הזה ספר
ליכל אלו הדברים . ומשם
שני פרסאות לבית לחם
יהודה הנקראת בית לחם
וקרוב לבית לחם כחצי מיל
מצבת קבורת רחל על
אם הדרך והמצבה עשויה
מאחת * עשרה אבנים
למנין בני יעקב ועליה כיפה
בנויה על ד' עמודים וכל
היהודים העוברים חותמים
שמן על אבני המצבה .
ובבית לחם שנים עשר

עד שהגיעו אצל ארמון אחר גדול בנוי על עמודי שיש מצופ' בכסף וזהב ולפניו שולחן ושרביט הזהב ועמדת זהב והוא קבר דוד מלך ישראל ולשמאלו שלמה כמו כן וכן קברי כל המלכי' הקבורי' שם ממלכי יהוד' ושם ארגזות סגורו' שאין אדם יודע מה בתוכם ורצו שני אלו האנשי' ליכנס בארמון והנה רוח סערה מפו המערה והכה אותם ונפלו לארץ כמתים ושכבו שטח לארץ עד הערב והנה רוח אחר בא וצועק כקור' אדם קומו צאו מן המקו' הוה ויצאו רחופי' משם האנשי' מבוהלי' והלכו אל ה הפטריאקה והגידו לו כל הדברי' ושלה הפטריאקה להביא לפני' ר' אברה' חסיד הפרוש אל קושטניטני שהיה מאבלי ירושלים וספר אל'

quoddam palatium pervenirent, columnis marmoreis inædificatum, argento auroque obductum: in cuius conspectu mensa erat & sceptrum aureum, unà cum aurea corona. quod fuit sepulchrum Davidis tegis Israelis. Ad sinistram aliud Salomonis; similiterque omnium regum sepulchra qui istic è stirpe Iudaica sepulti fuerunt. Ibidem arcæ clausæ, in quibus quid contineatur, nemo novit. Quum verò duo illi viri palatium ingredi vellet, ecce ex antri ostio ventus turbineus ita eos prostravit, ut in terram delapsi mortuorū instar ibi ad vesperam usq; jacerent: quum exortus alius ventus instar vocis humanæ clamaret, Surgentes faceffite hinc. Quapropter egressi ac inde expulsi & attoniti, ad Patriarcham se receperūt: cui omnia enarrarunt. Unde Patriarcha Constantinopolin literas misit, quibus D. Abrahamum pium Pharisæum (unum ex iis qui Hierosolymorum rui-

nam lugerent) ad se evocaret. Isti cum omnia ex

חרברי

locus ignotus est. Etenim quindecim jam sunt anni, ex quo fani illius montis Tsfionis murus aliquis corruit; ideoque Patriarcha sacerdoti præcepit, ut fanū istud restauraret: hæc addens, Desume lapides ex antiquo Tsfionis muro, iis fanum instaure. Itaque hic paruit & operarios pervulgata mercede viginti ferme conduxit, qui lapides è fundamento muri Tsfionii eruerent. Inter hos fuerunt duo amici, fœderis tenaces: quorum cum unus die quodam alterum convivio excepisset, sumptoque cibo ambo ad opus rediissent; dixit ipsis præfectus, Quare distulistis adventū? tum responderunt, quid istuc ad ipsum attineret: qua hora focii nostri ibunt pransum, nos opus nostrū perficiemus. In educendis igitur lapidibus, erecto quodam saxo spelunçæ ostium repererunt: unde eorum alter alterum alloquutus dixit, Ingressi num hic pecunia lateat videamus. Quocirca per spelunçæ in-

אחריו ואינו נכר המקום כי היום טו' שנה נפל כותל אחד מהבמה אשר בהר ציון וצוה הפטר' יארקה אל הכהן לבנות הבמה ההיא ואמר לו קח את האבני' מחומת ציון הקדמוני ובנה בהם הבמה והוא עשה כן שכר פועלי' בשכר ידוע כמו כ' אנשים והיו מוציאין את האבנים מיסוד חומת ציון ובין האנשים ההם היו שני אנשים אוהבים בעלי ברית ויום אחד עשה לחברו משתה ואחר אכילתן באו אל המלאכה אמר להם הממונה מדוע אחרתם לבא ענו מה יש לו בשעה שילכו חברנו לסעוד נעש' אנחנו מלאכתנו זהם היו מוציאין את האבנים והקדמו אבן ומצאו פי המערה ואמר אחד ל לחברו נכנס ונראה אם יש ממון הלכו כמבוא המער'

troitum eousque perrexerunt, donec ad magnum quod-

בבתיהם ועולים מעמק י
 והושפט אל הר הזותי כי אין
 בין ירושלם והר הזותי אלא
 העמק בלבד ומהר הזותי
 רואי ים סדום ומים סדום
 לנציב מלח שהיא היתה
 אשתו של לוט שני פרסאות
 והצאן לזכורת ממנה ואחר
 כך הוזרת וצומח' כבראשונה.
 וכל ארץ הככר ונחל השטים
 על הר נבו ו לפני ירושלם
 הר ציון ואין בנין בהר ציון
 כי אם במה אחת לנוצרים.
 ולפני ירושלם כמו שלשה
 בתו' של קברי ישר' שהו
 קוברין מיתיהם בימים ה
 ההם וקבר יש בו תאריך
 אבל בני אדום הורסין
 מן הקברים ובונים מהם
 בתיהם מן האבנים וסביב
 ירושלם הרים גדולים
 ובהר ציון קברו בית דוד
 וקברו המלכי אשר קמו

cisternas habeant. Ulterius
 ex valle Josaphati ad oliv-
 arum montem ascenditur:
 quum Jerosolyina & oli-
 varum montē ista tantum-
 modo vallis interjaceat. Ex
 hoc monte despiciunt ma-
 re Sodomiticum : à quo
 mari ad falis statuam , quæ
 Loti uxor fuerat, duæ sunt
 parasangæ. Statua quidem
 à gregibus lambēdo dimi-
 nuitur; sed denuò excrescit
 ad pristinam quantitatem.
 Prospicitur etiam ex eodē
 monte tota planities &
 torrens Schittim ad mon-
 tem Nebo. Ante Jerosoly-
 ma est mons Tsfion: nec ul-
 la in hoc monte structura,
 si unum Christianorum fa-
 num exceperis. Præter-
 ea in conspectu Jeroso-
 lymorum tria veluti cœ-
 meteria Israëlitarum : ubi
 diebus priscis mortuos suos
 sepeliebant. Inibi sepul-
 chrum, in quo æra inscripta
 est. Verum Christiani sep-
 ulchra minuunt; ut qui ex
 eorū lapidibus domos suas
 exstruant. Ambiunt vero
 Jerosolyina montes ma-

gni : in Tsfionis autem monte familiæ Davidicæ extant
 sepulchra , regumque qui post eum regnarunt ; sed

אחריו

suas concipiant. Exadverso visitur murus occidentalis, illorum unus qui in Aedis loco sanctissimo fuerunt olim; diciturque porta misericordiae: atque huc omnes Judaei ante murum istum in atrii locum precatum veniunt. Jerosolymis in aula Salomonis equorum stabula supersunt, quae Salomon firmissima structura, magnis lapidibus aedificaverat: nec ullibi locorum simile aedificium reperitur. Ibi etiamnum canalis conspicitur, ubi veteres victimas suas mactabant: omnesque Judaei hic nomina sua pariete inscribunt. Prodeunti est porta Josaphati objacet Populorum desertum: in quo statua illa dicta olim *locus Absalonis*; sepulchrum Uziae regis; magnus etiam fons aquarum Schiloae ad torrentem Kedronis; & juxta fontem magnum aedificium, à majorum nostrorum temporibus reliquum. Hic non nisi parum aquae invenitur: itaque pars maxima eorum qui Hierosolymis degunt, aquam pluvialem bibunt; utpote qui in aedibus suis

לפני אותו מקום כותל
 מערבי אחד מהכותל' שהיו
 במקדש בקדש הקדשי' ו
 וקראין אותו שער הרחמי'
 ולשם באי' כל היהודים
 להתפלל לפני הכותל בעזרה.
 ושם בירושלם בבית שהיה
 לשלמה ארוות הסוסי' אשר
 ננה שלמה בנין חזק מאד
 מאבני' גדולות ולא נראה
 בנין ההוא בכל הארץ ושם
 נראה עד היום הזה הנריכה
 שהיו שוחטין בה את ז'
 ונחיהם וכל היהודי' שם
 מתבי' שמם על הכותל ויצא
 אדם משער יהושפט ושם
 מצבת יד העמי' ושם מצבת יד
 אבשלום וקבר עזויה המלך
 ושם מעין גדול מי השילוח
 בנחל קדרון ועל המעין
 בנין גדול מימי אבתונו ולא
 ימצא שם אלא מים מעמי'
 ואנשי ירושלם רובם שותי'
 ממי המטר שיש להם גבי'
 cister-

שלמון והוא ארמון שעשה
 שלמה המלך ושם חוני'
 בשפיתלי ויוצאי ממנו ד'
 מאות פרשי בכל יום ל
 למלחמה הוץ מן הפרשי'
 הבאי מארץ פרנקוש ומארץ
 אדום ונודרי' על עצמם
 ויעמדו ימי' או שנים עד
 מלאת נדרם' ושם הנטה
 הגדולה שקורין שפולקרי
 קבר אותו האיש שהולכין
 כל הנודרי' אליו ויש ב
 בירושלם ארבעה שערי'
 שער הקורי' שער אברם
 ושער דוד ושער ציון ושער
 יהושפט לפני בית המקדש
 שהיה בימי קדם' ושם
 טמפלו דומינו והוא היה
 מקום המקדש ובנה עליו
 עמר בן אל כטאב כיפה
 גדולה ויפה עד מאד ואין
 מכניסין שם גוי' שום צלם
 ולא שום תמונה אלא
 שבאי' להתפלל תפלתם'.

Xenodochium Salomonis, fuit enim palatium à Salomone exstructū) in hoc inquam Xenodochii collegio commorantur, indeq; ad præliū expediri queunt in singulos dies quadringenti equites: istis exceptis equitibus qui ex Gallicis & cæteris Christianorum regionibus voto obstricti eò conveniunt, ut ibi subsistentes anno vel biennio votum impleant. Hic præterea fanum illud magnū visitur, quod dicitur sepulchrum, nimirum illius viri sepulchrum, quem omnes voto cōstricti adeunt. Hierosolymorum portæ sunt quatuor: una quam portam Abrami appellant; deinde porta Davidis; porta Tſionis; porta deniq; Josaphati è regione Ædis illius sanctæ quæ fuit temporibus priscis. Ubi est templum Domini; scilicet hoc loco Ædes sancta fuit quondā. In propinquo Omar filius Citabi magnū & pulcherrimum exstruxit fornicem: quò Gentes nullam inferunt imaginem aut similitudinem; sed tantummodo ingrediuntur quò preces

ולפני

oppidum exiguum tribus munitum muris. Incolæ frequentes, Jacobitæ, Syri, Græci, Gregoriani, & Franci: ut verbo dicam ex omnibus gentium nationibus. Hic etiam est locus inficiendis lanis accommodus: quem Judæi annuatim à rege ea conditione conducunt, ne cuiquam præter Judæos istam artem Jerosolymis exercere concedatur. Sunt autem numero ducenti in oppidi angulo sub turri Davidis habitantes: in cujus turris Davidis muris, antiqua fundamenti structura ad decem cubita assurgit, ex majorum ædificio, quod ædificarunt patres nostri, etiamnum remanens. Cum reliqua structura sit Ismaëliitarum; nullum in toto oppido ædificium turri Davidis firmitus invenitur. Ibidem etiam duo sunt xenodochia: è quorum collegio uno in bellum prodeunt quadringenti equites. Istic ægroti omnes, quotquot eò deveniunt, decumbunt; quibus omnia necessaria cum in vita, tum in morte suppeditantur. In altera domo (quæ vocatur

היא עיר קטנה ובצורה תחת שלשה חומות ובה אנשי הרבה יעקובין וארמיו ויונים וגורגריין ופרנקוש טבל לשונות הגוים ויש שם ברת הצביעה שקונין אותו היהודי בכל שנה מהמלך שלא יעשה שום אדם צביעה בירושלם כי אם היהודי לבדם והם מאתי' יהודי' הרים תחת מגדל דוד בפאת המדינה ובהומת שבמגדל דוד הבנין הראשון של יסוד כמו עשר אמות מבני' הקדמוני' שבנו אבותינו והשאר בנין ישמעאלי' ואין בכל העיר בנין חזק יותר ממגדל דוד ושם שתי בתי' אשפיטלי' ויוצאלי' כמנון ארבע מאות פרשי' ושם ינוחו כל החולים הבאלי' שם ונותנין להם כל ספוקם בחיותם ובמותם ובבית שני קוראין אותו שפתלי

Xeno-

אלו האותיות משומין א'
 ובוה הדבר נכרי' שאינם מודע
 ישראל כי הם יודעי' תורת
 משה חוץ מאלו שלש אותיות
 ושומרי' עצמם ממומאת מת
 ועצם וחלל וקבר והנגד'
 שלובשי' בכל יום מסורי'
 מעליהם בשעת לכתם לבית
 הכנסת שלהם ורוחצי' גופם
 במי' ולובשי' בגדי' אחרים
 וכן מנהגם בכל יום ובהר
 גריזו' מעיונות ופרדסים והר
 עיבל יבש כאבני' וסלעים
 וביניהם בעמק עיר שכם.
 ומשם ארבע פרסאות להר
 הגלכוע וקוראי' להם אדום
 מונטו גלבווי. והיא ארץ יבשה
 מאד. ומשם ה' פרסאות
 לעמק אילון וקוראין אותו
 אדום וואל דלונא. ומשם
 פרסה אחת להר המורוח
 לגראן דוד היא עיר גבעון
 הגדולה ואין שם יהודי'.
 ומשם שלש פרסאו' לירושלם

suetudinem, adhibent: quo-
 circa in his dictionibus u-
 tuntur litera א. Atque hoc
 indicio, ex Israël's posteris
 non esse, cognoscuntur:
 quia Mosis legem absq; hi-
 sce tribus literis agnoscunt.
 Sollicite sibi cavent à mor-
 tuorum, ossium, occisorum
 & sepulchrorum contami-
 natione: vestesque, quibus
 vestiuntur quotidie, cum
 ad synagogam suam sese
 conferunt, deponūt; & cor-
 poribus aqua ablutis, alias
 quotidiano ritu induunt.
 Cæterum in monte Geriz-
 zim diversi sunt fontes ac
 pomaria: at mons Ebal aridus
 est instar lapidum ac
 petrarum. Inter utrumque
 in valle Sichem despicitur,
 Inde quatuor parasangis
 distat Gilboa, qui Christianis
 dicitur *monto Gilboë*, si-
 tus in regione aridissima.
 Hinc quinque parasanga-
 rum iter est ad vallem Aja-
 lon, quam Christiani vo-
 cant *vael de Luna*. Unde
 unica parasanga ad montē
 Moria, ad Garan Davidis,
 sive magnam illam urbem
 Gibeon: ubi nulli sunt Ju-

dæi. Ab hac distant Hierosolyima tribus parasangis:

הוא

Sunt tamen legis illorum sacerdotes, parantq; victimas ac offerunt holocausta in illorum congregatione, idque in monte Gerizzim. Quemadmodum in lege scriptum est Deut. II. 29. *Edes benedictionem hanc in monte Gerizzimorum*: ideoque hanc esse domum sanctuarii affirmant. Offerunt autem holocausta cum Paschate, tum aliis festis in altari, quod in monte Gerizzim ex illis structū fuit lapidibus, quos Israhelita Jardenem transgressi erexerant. Ex Ephraimi tribu se oriundos profitentur: & in diocesi sua habent sepulchrum Josephi justii filii Jacobi patris nostri qui in pace quiescit; secundum illud Jos. 24. 32. *Tum ossa Iosephi, qua deportaverant filii Israhelis ex Aegypto, sepeliverunt Sichemi*. Tribus his carent literis ה, ח & י: ה in nomine Abrahami patris nostri, unde & desideratur nomen הור *gloria*; ח in nomine Isaaci patris nostri, unde etiam desideratur חסד *benignitas*; י in nomine Jacobi patris nostri, unde nec vocem ינוה signif. *man-*

אבל הם כהני תורתם ועושים זבח ומעלים עולה במנסת שלהם בהר גריזים כמו שכתוב בתורה ונתת את הברכה על הר גריז' והם אומרים כי הוא בית המקדש ו ומעלים עולה ביום פסח ובימים טובים על המזבח שכנו בהר ג גריז' מהאבנים שהקימו בני ישראל כשעברו הירדן. והם אומרים כי הם משבט אפרים ו בניניהם קבר יוסף הצדיק בן יעקב אבינו עליו השלום שנאמר ואת ע עצמות יוסף אשר העלו בני ישראל ממצרים קברו בשכם. ואין להם שלש אותיות ה' וח' וע'. ה' מן אברהם אבינו ואין להם הוד ו ה' מן יצחק אבינו ואין להם חסד ו ע' מן יעקב אבינו ואין להם ענוה ו ובמקו'

ומש' חצי יום לקקו היא
 קעילה ואין בה יהודי ו
 ומשם חצי יום לשרגורג
 והיא לזו ושם יהודי אחד
 צבעו ומשם וום לשבשת
 היא שומרן ועדן ניכר שם
 ארמון אחאב מלך ישראל
 והיא היתה עיר בצורה
 בהר מאד ובה מעוינו' וארץ
 נחלו מים וגנות ופרדסים
 וכרמים וותים ואין שם
 יהודים. ומשם שני פרסאות
 לנבולש היא שכס בהר
 אפרים ואין שם יהודים
 והיא יושבת בעמק בין הר
 גרזים והר עיבל ו ובה כמו
 מאה כותיים שומרים תורת
 משה לבדה וקורין להם
 שמרוטנוש ו ויש להם כהני'
 מורע אהרן הכהן עה וקורין
 להם אהרני' דאין מתחתני'
 עמם אלא כהנים עם
 כהנים שלא יתערבו עמם

vit. Hinc dimidiato itinere
 Kakum veni, sive Kegilam;
 nullisq; repertis Judæis al-
 tero dimidiato itinere pro-
 fectus fui Schargoreg, quæ
 olim dicebatur Luz; & uni-
 cum reperi Judæum lanæ-
 rum infectorem. Unde die
 uno Sebasten me contuli,
 dictam ab antiquis Sama-
 riam; hodieque Achabi Is-
 raëlitarū regis aulæ digno-
 scuntur ibi vestigia. Urbs
 in monte quondam muni-
 tissima fontibus est irrigua;
 regioque aquarum rivis,
 hortis, pomariis, vinetis &
 olivetis dives est: à nullis
 tamen Judæis inhabitata.
 Hinc duabus parasangis di-
 stat Neapolis, olim dicta
 Sichem, intra montes E-
 phraïm condita: nec ulli hic
 Judæi. In valle jacet inter
 montē Gerizzim & mon-
 tem Ebal; ubi centum cir-
 citer Cuthæi legis tantum
 Mosaicæ observatores;
 quos Samaritanos appellāt.
 Hi sacerdotes habent ex
 Aaronis sacerdotis in pace
 quiescentis profapia, eosq;
 Aaronæos appellant: qui

cum illis matrimonio non junguntur; sed inter se qui
 ex sacerdotali sunt genere, ne cum illis confundantur.

אבל

phas abest, five Gad niti-
da, in littore condita; cui ex latere altero Carmel mons imminet. Ad montis radices multa visuntur Israëliitarum sepulchra: in monte verò Eliæ l. m. spelunca; ubi duo Christiani fanum exstruxerunt, quod sancti Eliæ dictum fuit. In ejusdē montis cacumine altaris diruti & ab Elia l. m. Achabi temporibus reparati vestigia agnoscuatur: cujus satium orbiculatum quatuor circiter patet cubita. Porro ad imum montem in ejus latere defluit torrēs Kischon. Hinc quatuor parasangis distat Capernahum, ac si dicatur vicus consolationis: & ipsum Carmelum primo aspectu superare videtur. Inde sex parasangis abest Schizeria, dicta quondam Gad Palæstinorum: ubi decem pene Judæi & Cuthæi ducenti. Hi sunt Judæi Schomronitæ, qui vulgò Samaritani audiunt. Urbs ipsa pulcherrima est ac elegantissima, ad mare sita, structura imperatoris ac regis Cæsaris: qui eam de suo

הוא גר החפה אשר על שפת הים ומצד אחר הר הכרמל עליה ובתחתית ההר קברי ישראל רבים ושם בהר מערת אליהו ול ועשו שם שני בני אדם במה וקראוה שנט אליה ובראש ההר ניכר מקום המזבח ההרוס שרפא אליהו ז"ל בנימי א אחאב והוא מקום המזבח העגול כמו ארבע אמות ובתחתית ההר יורד נחל קישון בצדו ומשם ד' פרסאות לכפר נחום והוא כפר נחום והוא מעין מקום על הכרמלי ומשם ששה פרסאות לשוריא היא גר אשר לפלשתים ושם כמו עשרה יהודים ומאתים כותיים הם היהודי' השומרונים הנקראי' שמרטניש והיא עיר יפה וטובה מאד על הים מבנין קיסר אינפרדור המלך וקרא שמה קיסריה.

nomine Cæsaream vocavit.

אומני הזכוכית הטוב הידוע
 צורי החשוב בכל הארצות'
 ושם ימצא הסוקר הטוב
 ועולה אדם בחומת צור
 החדשה ורואה צור ה
 המעטירה אשר כסה אותה
 הים והיא רחוקה מן ה
 החדש' כדריקת אבן ואם
 ירצ' אדם לבא באני בים
 רואה המגדלים והשווקים
 והחוצות והארמונים ג
 בקרקע הים והיא צור
 ההדשה עיר סחור' באים
 אליו מכל מקום ומשם
 זום אחד לאקרי היא עמו
 אשר היתה לגבול אשר
 והיא תחלת ארץ ישראל
 והיא יושבת על הים
 הגדול ושם נמל גדול שקרוין
 פורטו לכל הנודדים ה
 ההולכים לירושלם בספינות
 ויורד לפניו נהר הנקרא נחל
 קדומים ושם כמו מאתים
 יהודים ובראשם רבי צדוק
 ורבי יפת ורבי יונה ז'ל'
 ומשם ג' פרסאות לנ'פש
 היא

artifices qui vitrum præstantissimum conficiunt, quod Tyrii nomine celebre est, quodque in omnibus regionibus fit maximi: quin etiam saccharū optimum hic reperitur. Novæ Tyri mœnia si quis conscendat, Tyrum illam coronariam (Ef.23.9.) conspiciat mari obrutam: quæ à nova jactu lapidis distat. Quod si cui scapha ingredi mare collibitū fuerit, turres & fora cum plateis, palatiaque in fundo despiciet. Cæterum Tyrus nova est emporium, quò undique conveniunt. Unde diei itinere distat Akadi, quæ est ipsa Acco, olim in Ascheris confinio: eaq; terræ Israëlitis initium in maris magni litore sita, λιμὴν spatiosum habet, quem portum nominant; iis omnibus commodū qui concepto voto Hierosolyma navibus contendunt. Illam præterfluit fluvius qui Torrens orientalium dicitur: & in eadem ducenti ferme Judæi; quorum præcipui R. Tsadok, R. Japheth & R. Jona l. m. Hinc tribus parasangis Ni-

tatem suam produnt. Nulli inter eos Judæi; nisi quod artifices & infectores ipsos adeant, & inter eos opificii ac mercaturæ ergo commorati domum redeant: Judæos autē diligunt. Cæterum in montibus & collibus percurrendis velocitate pollent: nec ulli eos bello laceffere sustinent. Deinde unico itinere veni Tyrum novā, urbem elegantissimam: quæ λιμὴν five pörtum intra se habet; quò naves inter duas turres appelluntur. Noctu verò publicani catenā ferream inter easdem turres extendunt: ut nemo vel navi, vel alia via, è navibus aliquid auferens, evadere queat. Nec ullus exitus vel portus huic λιμὴν in toto orbe similis est. In hac eleganti urbe quadringenti fere reperiuntur Judæi: inter quos nonnulli Talmudis sunt peritissimi; quorum primarii R. Ephraim Ægyptius judex & R. Meir Carceschonæ natus, ut etiam R. Abraham totius cœtus præfectus. Judæi hinc navibus mare sulcant. Hic degunt

ודכם כסל למו ואין בנייהם
 יהודי' כי אם באי' בנייהם
 בעלו אומנו' וצבעי' ויושבי'
 בנייהם באומנו' ובסחורה
 וחורוי' לבתייהם והם אוהבי'
 ליהודי' והם קלוי' על ההרי'
 ועל הגבעות ואין אדם יכול
 להלחם עמם ו משם מהלך
 וים לצור החדשה והיא עיר
 טובה מאד ונמל הפורט
 שלה בתוך העיר ונכנסות
 הספינות בתוך שני המגדלים
 ונלוולה ושליוכו בעלי המכס
 שלשלת של ברזל בין מגדל
 ומגדל ולא יכול אדם לצאת
 לא באניה ולא בשום דרך
 לגנוב דבר מן הספינות ואין
 גרב או פורט כנמל ההוא
 בכל הארץ כמוהו והיא
 עיר יפה ובה כמו ארבע
 מאות יהודים ובנייהם
 חכמי תלמוד ובראשם רבי
 אפרים מצרי דיון ורבי מ
 מאיר מקרקשונה ור' אברהם
 ראש הקהל ויש ליהודים
 שם ספינות בים ו שם

ורבי עובדיה ורבי יוסף
 ומשם מהלך יום אחד לצידודא
 היא צידון והיא עיר גדולה
 ובה כמו עשרי' יהודי' וקרוב
 מהם כמו עשרה מילין א'
 אומה אחת נלחמי' עם
 אנשי צידון והאומה נקראת
 דוג'יאין והם הנקראי' פ'
 פגאנוש כופרים ואין להם
 דת ויושבים בהרי' הגדולי'
 ובנקיקי הסלעי' ואי' מלך
 ושר שולט עליה' כי מעצמם
 הם יושבי' בין ההרי' והסלעי'
 ועד הר חרמון גבולם מהלך
 שלשה ימי' והם שטופי זמא
 והוא לוקח את בתו ויש
 להם חג אחד בשנה ובאי' כלם
 אנשי' ונשי' לאכול ולשתות
 ביחד וחולפי' נשותיהן כל
 אחד ואחד עם חבירו ואומרי'
 שהנפש בעת יציאתה מגוף
 אדם טוב תכנס בגוף ולר'
 קטן הנולד באותה שעה
 שתצא הנפש מגופו וואם
 אדם רע הוא תכנס בגוף
 הכלב או בגוף הבהמה זה
 דרכם

Obadias & R. Joseph. Hinc
 unico itinere Tsfidam, id
 est, Tsfidonem profectus
 urbem magnam, viginti
 fere Judæos inveni. Unde
 decē pene milliaribus na-
 tio quædam distat, quæ
 cum Tsfidoniis bella gerit,
 & appellatur Dogziin: sunt
 iidem qui pagani & athei
 dicuntur. Hi nullius reli-
 gionis in altis montibus &
 rupium antris habitāt: qui-
 bus neque rex neque prin-
 ceptus ullus imperat; sed suo
 arbitrio inter montes ac
 rupes vivunt, ad montem
 usque Hermon tridui iti-
 nere pertingentes. In in-
 cestus effusi, proprias filias
 sibi jungunt; & certo quo-
 dam anni festo, quo omnes
 viri fœminæque ad convi-
 vandum conveniunt, uxores
 singuli alii cū aliis per-
 mutāt. Animam, quum ex
 alicujus probi corpore mi-
 grat, occupare tradūt cor-
 pus cujusdam pueruli qui
 eo momento, quo anima è
 corpore suo migrat, nasci-
 tur; sin ex improbo disce-
 dat, occupare canis aut ju-
 menti corpus. Hujusmodi
 cum sit, via istorum; stolidi-

eodemque tempore tales
ruinæ in tota Israëlitarum
regione fuere; adeo ut istis
diebus viginti hominum
millia & amplius perierint.
Illinc diei unius itinere ab-
est altera Gebal, terminus
filiorum Ammon & sedes
centum ferme & quinquaginta
Judæorum: in regno
septem societatum, qua-
rum princeps est Gilianus
Imbiremus. Hic reperta
vestigia fani olim filio-
rum Ammon cum idolo fi-
liorum Ammon: quod so-
lio sive throno infidebat,
lapideo quidem, sed obdu-
cto auro: cui ad dextram &
sinistram duæ adjungeban-
tur mulieres, hinc una; in-
de altera. In ejus conspectu
altare, in quo coram ipso
cum sacrificabant; tum suf-
fitum faciebant, filiorum
Ammon temporibus. Hic
etiam ducenti ferme Ju-
dæi: quorum primates R.
Meir, R. Jacob & R. Schim-
ha. Oppidum ipsum mari
regionis Israëlitarum allui-
tur. Unde ad Birot (quæ
eadem est cum Beeroth)
iter est bidui: ubi quinquaginta
ferme Judæi; quorum primarii R. Salomon, Rab.

מפולת באותו זמן ובכל
ארץ ישראל מתו יותר מ
מנשרים אלפים בני אדם
נימי' ההם ומשם מהלך יום
לגיבל האחרת שהוא גבול
בני עמון ושם כמו קנ' יהודי'
הז' ממשלת ז' הג'נוטין
והשלטון שלהם גיליאנוס
אינבירינו ושם מצאו מקום
הבמה שהיא לבני עמון בימים
ההם ושם שקוץ בני עמון
יושב על קטר'גה הנקרא כסא
והוא עשוי מאבן ומצופה
זהב ושתי נשי' וישבו' מימינו
וטשמאלו מזה אחת ומזה
אחרת ומזבח לפניו שהיו
מזבח' ומקטרין לפניו בזמן
בני עמון ובר' כמו מאתי'
יהודי' ובראשם רבי מאיר ר'
יעקב ורבי שמחה והוא על
שפת הים של ארץ ישראל.
ומשם שני ימי' לבירוט היא
בארות ושם כמו המטל'
יהודי' ובראשם רבי שלמה

ימים לגיבל היא בעלגד תחת
 הר הלבנון הסמוכה לאומה
 שקורין לה אלחשישין ואינם
 מאמינים ברת הישמעאלים
 אלא לאחד שחושבין אותו
 כמו נביא כנבט וכל מה
 שואמר להם יעשו אם למות
 אם לחיים וקורין לו שיד אל
 חשישין והוא הזקן שלהם
 ועל פיו יצאו ועל פיו יבואו
 כל אנשי ההרים ומקום
 ישיבתו בעיר קרמוס היא
 קדמות בארץ סיחוץ והם
 בעלי אמונה ביניהם על
 מאטר הזקן שלהם ומפחדים
 בכל המקומות מהם מפני
 שהורגין את המלכים ב
 במסירה ומהלך ארצם שמה
 ימים. והם נלחמים עם בני
 אדום הנקראים פרנקוש
 עם השלטון טריפול היא
 טראבלוט של שאם ובימים
 ההם הרעיש' הארץ של
 טריפול וכסה הרבה מן הגוים
 ומן היהודים כי נפלו הבתים
 והחומות עליהם והיתה
 מפולת

distat Gebal, sive Baalgad
 sub monte Libano: cui cō-
 termina est natio quam
 vocant Elhaschischorum,
 qui Mūhammedanorū re-
 ligioni non assentiuntur;
 sed Canbato cuidam quem
 prophetæ loco habēt. Huic
 enim in omnibus obe-
 diunt; sive ad mortem, sive
 ad vitam: eumq; appellant
 Dominum Elhaschischoro-
 rum. Estque ipso senator,
 cujus arbitrio domi ac foris
 agunt omnia omnes mon-
 tium incolæ: habitationis
 locus oppidum Kormos,
 quondam in regione Siho-
 nis situm. Montani perpe-
 tuam inter se fidem servant
 ex præcepto senatoris sui:
 omnibusq; passim sunt ter-
 rori, quia reges serra dis-
 fecant. Horum regio octo
 dierum itinere peragratur.
 Bella gerunt cum istis Edo-
 mæis sive Christianis, qui
 Franci appellantur, & cum
 rege Tripolis quæ & Tra-
 belos Syriæ dicitur. Illis
 diebus Tripolis terræmotu
 concussa fuit, & Gentilium
 ac Judæorum plurimi ob-
 ruti fuere; siquidem ædes
 ac muri eos opprimebant:

vocāt. Inde duobus itineribus Malmiftras, sive Thar-
fis in littore sita: quæ ad-
huc filiorum Javanis, quos
Græcos dicunt, regno ac-
cenfetur. Hinc duobus iti-
neribus Antiochiam mag-
nam veni, quæ fluvii Phir-
ripæ imminet in valle tor-
rentis Jabok, qui à monte
Libano defluit è regione
Hamathæ. Hæc est civitas
illa magna quam rex An-
tiochus condidit: cui altissi-
mus mons imminet mœ-
nibus contentus: in cujus
vertice conspicitur fons;
fontique aliquis præfectus
est, qui aquam per canales
subterraneos ad magnatū
istic habitantiū ædes trans-
mittit. Altera sui parte civi-
tas fluvio alluitur: estq; to-
tius imperii, ferocium Piti-
vini Papæ fidem amplectē-
tium, munitissima. Hic ali-
quot numero Israëlitæ, vi-
triarum: quorum capita sunt
R. Mardocheus, R. Hajim
& Ismaël. Hinc duobus iti-
neribus Ligam sive Laodi-
ceam veni: & ducentos pe-
ne Judæos reperi; ac inter
eos R. Hijam & R. Jose-
phum. Inde duobus diebus
distat

ומשם שני ימים למלמושטרש
היא תרשיש היושבת על
הים עד הנה מלכות היונים
הנקראים גריגוש ומשם
שני ימים לאנטוכ' הגדולה
היושבת על נהר פיר נחל
יבוק היורד מהר הלכנו
מארץ חמת והיא העיר
הגדולה שבנה אנטוכוס
המלך. ויש על המדינה הר
גבוה מאד והחומ' מקפת ההר
ובראש ההר מעין ושם אדם
טמונה על הכעין ומשלח את
המים בגשרים תחת הקרקע
אל בתי הגדולים אשר בעיר
וטצד העיר האחר מקיף
אותה הנהר והיא עיר
בגורה מאד ממשלת פרוצן
אמונת הפיטיבין הפפא ויש
בה כמו מנין מ' ישראל והם
אומני הזוכירת ובראשם
רבי מרדכי ורבי חיים ורבי
ישמעאל. ומשם שני ימים
לליגא היא לודקיא ובה כמו
מאתים יהודים ושם רבו
הייא ורבי יוסף ומשם שני

בראשם ושם ימצאו האילנות
 שלוקטין ממנו המצטייקין ו
 ומשם שני ימים לאיסמו
 ובה כמו שלש מאות יהודים
 ובראשם רבי שמריא ורבי
 עובדיה ורבי יואל ושם
 באיים קהלות רבות מישראל
 ומשם שלשה ימים דרך ים
 לרודוס ובה כמו ארבע מאות
 יהודים ובראשם רבי אבא
 ורבי הננאל ור אליה ומשם
 ארבעה ימים לדופרוס ושם
 יהודים רבנים וקבוץ ועוד
 יש שם יהודים מיני' קפרוסין
 והן האפיקורוסין ישראל
 מגדן אותן בכל מקום
 והם מחללי' ליל שבת
 ושומרי' ליל ראשון ומשם
 ב' ימי' לקורקוס היא ת
 תחלת ארץ אדו' הנקראת
 ארמני' והוא תחלת ממשלת
 טורוש בעל ההר' מלך א
 ארמניא המולך עד מדינת
 הדוכי' ועד ארץ התוגרמ'
 הם הנקראי' טורקוש'
 Dochiam & Togarmanorum regionem, quos Turcas
 ומשם

primarii. Eodem loco reperiuntur arbores, è quibus colligitur mastyx. Hinc duabus stationibus Samos: ubi trecenti pene Judæi; quorū primores R. Samarias, R. Obadias & R. Joël. In istis insulis multi sunt Israëlitarum cœtus. Deinde mari Rhodū tertio die ap-puli: & quadringentos ferme Judæos inveni; eorumque primates R. Abbam, R. Chananeelem & R. Eliam. Inde quatuor dierum itinere distat Cyprus: ubi Judæorum Rabbanæorum, sive qui majorum institutis vivunt, cœtus est; nec non Judæi alii, hæretici Cyprii, nempe Epicurei. Hos ubique excommunicant Israëlitæ: quandoquidem Sabbathi vesperam profanant, primamque vesperam observant. Postea duabus stationibus Corucum profectus sum, illius Christianorum ditionis initium quæ Armenia dicitur. Ibidem initium est regni Turiregis Armeniæ, qui montes sibi subjectos habet, regnatque ad civitatem usq;

scrimine : siquidem contra
 Judæos mundum concitāt,
 eos in plateis verberant &
 dura premunt servitute. At
 Judæi opibus abundantes
 viri boni sunt benignitatis
 & præceptorum observan-
 tes, qui exilium æquo ani-
 mo ferunt. Loco, ubi Ju-
 dæi habitant, nomen Pera.
 Inde bidui itinere mariti-
 mo distat Rodoston : ubi
 Israëliticus cœtus quadrin-
 gentorum ferme; quorum
 primates R. Moses, R. Abia
 & R. Jacob. Unde duabus
 stationibus Gallipolin veni:
 ubi ducenti ferè Judæi;
 primores R. Elias procura-
 tor, R. Schabtræus parvus
 & R. Isaac μέγας : Græcis
 turris (potius *magnus*) vo-
 catur μέγας. Postea itinere
 bidui Calas : Judæosq; fere
 quinquaginta inveni, qui-
 bus præerant R. Juda, R.
 Jacob & Rab. Schemaja.
 Hinc biduo Mitylenen de-
 venit unam ex maris in-
 fulis: in qua decē locis Ju-
 dæi suas habent synago-
 gas. Unde ad Chium est iter
 tridui: ubi quadringēti pe-
 ne Judæi; in quibus R. Elias,
 R. Themā, & R. Schabtræus pri-

טבבירים עולם עליהם ומכים
 אותם בחוצות ומעבירים
 אותם בפרך אבל היהודים
 הם עשירים ואנשים טובים
 בעלי חסד ומצות וטובלים
 הגלות בעין יפה ושם המקום
 שרדים בו היהודים פירא.
 ומשם שני ימים דרך ים
 לדודוסטו ושם קהל מישראל
 מארבע מאות ובראשם רבי
 משה ורבי אביה ורבי יעקב.
 ומשם שני ימים לגאל'פולי
 ושם כמו מאתי' יהודים
 ובראשם רבי אליה קפוד ורבי
 שבתאי זוטרא ורבי יצחק מיגש
 ותלשוץ יוז קורין למגדל
 מיגש. ומשם ב' ימים לקלש
 ושם כמו חמשים יהודים
 ובראשם רבי יהודה ורבי
 יעקב ורבי שמעיה. ומשם
 שני ימים למ'טולין מאיי הים
 ושם באי' קהלות מישראל
 בעשרה מקומות. ומשם
 שלשה ימים דרך לח'כא ובה
 כמו ארבע מאות יהודי' ורבי
 אליה ורבי תימן ורבי שבתאי

מצד אחד ואינם יכולים
 לצאת אלא דרך ים לסחורה
 עם בעלי המדינה ושם כמו
 אלפים יהודים רבנים ומהם
 כמו חמש מאות קראין בצד
 אחד וביניהם ובין הרבנים
 שהם תלמידי חכמים מחיזה
 ובראשם רבי אבטליון הרב
 ור' עובדיה ור' אהרן כושפו
 ורבי יוסף שרגנו ורבי א'
 אליקים הפרנס וביניהם
 אומנים של בגדי משיוסוחרים
 הרבה ועשירים גדולים
 אבל אין מניחין שם יהודי
 לרכוב על סוס הוין מרני
 שלמה המצרי שהוא רופא
 למלך ועל ידו מוצאים ה'
 היהודים ריוח גדול בגלותם
 כי בגלות כבוד הם יושבים
 והשנאה רבה עליהם על ידו
 הברסקנין עובדי העורות
 שמשליכין המים המטונפים
 שלהם בחוצות לפני פתחי
 בתים ומלכלכין היהודים
 ועל זה שונאים היונים כל
 היהודים בין טוב ובין רע כי
 מכבדים

parte altera, & non nisi via
 maris egredi permittuntur,
 ut mercaturam cum civita-
 tis incolis exercean. Illic
 ferme bis mille Judæi, iique
 magistrorum doctrinæ ob-
 servatores; alii quoque dis-
 creti quingenti, iique Ka-
 raitæ: inter quos & priores
 sapientum discipulos est
 intergerinus paries. Horū
 primores sunt magnus R.
 Abtalion, R. Obadiah, R.
 Aaron Cuspus, R. Joseph
 Scharginus & R. Eliakim
 Synagogæ moderator. In
 iis artifices sericarum ve-
 stium, multi mercatores,
 hominesq; ditissimi. Sed ibi
 Judæo fas non est ut equo
 vehatur, excepto R. Salo-
 mone Ægyptio regis me-
 dico: cujus opera Judæi
 magnum in suo exilio ex-
 periuntur levamen: gravi
 enim in exilio versantur,
 magnumq; sustinet odium
 coriariorum, qui pelles præ-
 parant: adeoque conspur-
 catam suam aquam in pla-
 teis ante illorum portas ef-
 fundunt & Judæos inqu-
 nant. Similiter Græcis om-
 nes Judæi invisi sunt nullo
 bonorum & malorum di-

ra eò confluunt. Porrò regionis incolæ Græci sunt divites, cum auro, tū margitis abundantes: ideoque vestibus incedunt sericis, quibus alias ocellatas auro intextas & acupictas superinduunt. Ita equis vecti regum filiis videntur perfimiles. Regia latissime patet, præstantissimis omne genus fructibus dives; pane etiam, carne & vino plenissima: nec illorum divitiis pares est invenire in orbe universo. Sunt etiam in omnibus Græcorum libris versatissimi, comedentes & bibentes quisque sub vite & ficu sua. Atque ex omnibus gentium nationibus, quas Barbaras vocant, milites conducunt, qui cum Sultano rege Togarmanorum, quos Turcas dicunt, prælia ineant: quia nullo animi ardore ad præliandum imbuti, mulieribus habentur similes, quum viribus ad retundendum hostem destituantur. In ipsa urbe nulli sunt inter illos Judæi: quia trans aquarum ingentem alveum ablegati sunt; & maris Sophiæ brachium ipsos cingit à

היוונים אנשי הארץ עשירים גדולי בזהב ומרגליות והם הולכי מלוכשי' בגדי משי ומשבצות זהב באריגה וזקקמה על לבושיהם ורוכבים על סוסים ודומים לבני מלכים והארץ רחבת ידים מאד בכל מיני מגדים וגם לחם ובשר ויין הרבה מאד ולא נראה בכל הארץ כעשרם והם בעלי חכמה בכלם ספרי היוונים ואוכלים ושותים איש תחת גפנו ותחת תאנתו ושוכרים מכל לשונות הגוים הנקראים להם לעוים ולחום עם השלטון מלך ונורמים והם הנקראים טורקוש מפני שאין להם להב לב למלחמה והם נחשבים כנשים אשר אין בהם כח לעצור ואין היהודים בתוך המדינה בינם כי העבירות אחר זרוע המים וזרועים שופיא מקיף עליהם

parte

וצפה העמודים והכותרות
 זהב וכסף צרוף וציוור במ
 כל מלחמות הקרמונים אשר
 היו לפניו וגם המלחמות
 אשר עשה הוא בעצמו ועשה
 שם כסאו של זהב ואבן
 יקרה ועטרת זהב תלויה
 בשלשלת של זהב על הכסא
 במדת ישיבתו תחתיה ובה
 מרגליות שאין שום אדם
 יכול לשער דמיהם כי בלולה
 אין צריכין שם נרות כי הכל
 רואין מאור המרגליות אשר
 מאירים להם עד מאד ושם
 עניינים שאין אדם יכול
 לספר אותם ומביאים מכל
 ארץ יון כל המכס בכל שנה
 ושנה וממלא ממנו מגדלים
 מבגדי משי וארגמן וזהב ולא
 נראה הבני' ההוא והעושר
 ההוא בכל הארץ ואומרי' כי
 המס של המדינה עצמה
 עולה בכל יום עשרים אלף
 זהובים בין שכירות החנויות
 והשווקים ומכס הסוחרים
 הבאים בים וכיבשה
 והיונים

chernas vocavit: & columnas ac earum ornamenta auro & argento probato obduxit; iisque cum bella ab antiquis antequam nasceretur gesta; tū quæ ipse gesserat insculpsit. Ibidem folium suum ex auro & gemis paravit: folioque aurea corona ex aurea catena impendet, æquali cum inferiori sedili ambitu. In ista margaritæ, quarum pretium nemo facile æstimet: etenim noctu nullis ibi lucernis opus habent; siquidem omnes margaritarum luce fruuntur, quæ ipsos admodum illumināt. Sunt & alia quæ nemo recensere facile queat. Atq; eò annuatim è tota Græcia omnia tributa inferunt, ut turres inde impleantur; cum vestibis fericis & purpureis, tum etiam auro. Nec structura; nec divitiæ tantæ in ulla regione reperiuntur. Ipsius civitatis tributum singulis diebus viginti aureorum millia conficere ajunt, cum ex locatione tabernarum; tum ex foris venalitiis & mercatorū vectigalibus, qui mari ac ter-

gens est, ut ratio iniri nequeat, pecuniæ summa: quã eò quotannis ex utraque regione, arcibus, munitisque locis illius ditioris conferunt, ut in nullis totius orbis templis tantæ divitiæ reperiantur. In medio templo conspiciuntur aureæ & argenteæ columnæ, aureaque ac argentea candelabra plura quã quifquam dinumerare possit. Est quoque locus in quo se oblectare rex solet, isq; aulae muro proximus, dictus hippodromus: ubi rex quotannis die natalitio Jesu Nazareni magnum edit spectaculum. Nam in isto loco coram rege & regina omnia hominum totius mundi genera suis imaginibus exhibentur quolibet præstigiæ genere. Producere etiam solent leones, urfos, pardos atq; onagros: quos emittunt ut inter se concertent; ut & aves. Nec ullibi par visitur spectaculum. Ipse autem rex Emanuel in regiam suam magnum in littore ædificavit palatium, præter illud à majoribus exstructum: idque Bla-

B 5 cher-

לאין מספר שמביאין אליה בכל שנה משני אוי' ומגדלו' וברכים שיש שם וכעושר הזה לאנמצא בכל הבמות שבעולם ונתוך הבמה עמודים של זהב וכסף ועששיות של כסף וזהב יותר ממה שיוכל אדם לספר ושם יש מקום אחד מקום שחוק המלך סמוך לכותל הארמון הנקרא אופדרומוי ובכל שנה ושנה עושה המלך שם ביום תולדת ישו הנוצרי שחוק גדול ובאותו מקום מצויירי' כל מיני בני אדם שבעולם לפני המלך והמלכה בכל מיני כשוף ומביאים אריות וחובים ונמרים וחמור הכר ומשלחים אותם להתקוטט זה עם זה והעופות כמו כן ולא נראה כשחוק ההוא בכל הארצות והוא המלך עמנואל בנה ארמון גדול לכסא מלכותו על שפת הים חוץ מן הארמון שבנו אבותו וקרא אותו בולכרנש

אוקנמוס מגלי ושאר השמות
 שלהם כענין הזה ועיר ק
 קושטאנטינה בהקפת העיר
 יש בה ית מול וחציה על
 הים וחציה על היבשה
 והיא יושבת על שתי זרועות
 ים אחד שיבא מים רוסיה
 ואחד מים ספרד וכל הסוחרים
 הבאים מארץ בבל ובבל
 ארץ שנער וארץ מדי ופרס
 וכל מלכות ארץ מצרים
 וארץ כנען ומלכו' רושיא
 ואונגריאה ופסיונקי ובוריא
 וארץ לונברדייא וספרד ו
 והיא עיר הומיה באים אליה
 בסחורה מכל הארצות בין
 בים בין ביבשה אין כמותה
 בארצות חוץ מבגדיד העיר
 הגדולה אשר לישמעאלים
 ושם במה של תוספיה ושם
 הפפא של יונים מפני
 שאינם עונים לדת הפפא של
 רומא ושם במות כמנין
 השנה ויש שם ממון גדול

magnus œconomus: reli-
 quaque illorum nomina
 hisce sunt similia. Cæterum
 Constantinopolis in cir-
 cuitu octodecim patet mil-
 liaria, idque ea ratione, ut
 medietas una mari allua-
 tur; altera verò in conti-
 nente hæreat: imminet-
 que duobus maris brachiis,
 quorum unum è Rus-
 siæ; alterum ex Hispania-
 rum mari oritur. huc et-
 iam cujusvis generis mer-
 catores conveniunt è Ba-
 bylonia, totaque Meso-
 potamia, Media, Persia,
 totoque Ægypti regno,
 Cananæa, regno Russiæ,
 Hungaria, Pesiunki & Bu-
 ria, Lombardia denique &
 Hispania. Hic ingens ho-
 minum strepitus: quum eò
 negotiationis ergo ex om-
 nibus regionibus con-
 veniant, quæ mari, quæ
 terra: adeo ut huic urbi
 nulla, excepta maxima Is-
 maelitarum civitate Bag-
 ded, par uspiam reperiat.
 Hic etiam templum So-
 phiæ: & Græcorum Papa;
 quia religioni Papæ Ro-
 mani non consentiunt.

Fana ibidem dies anni numero æquant. Et tam in-
 לאון

tractant. Hinc duabus stationibus abest Mitrifi: ubi viginti fere Judæi, inter quos R. Esaias, R. Machir & R. Eliab. Inde duobus diebus Darmam veni: Judæosque ferme centum & quadraginta inveni; & in iis primas tenebāt R. Michael & R. Joseph. Postea unico itinere Canistolin profectus, viginti fere Judæos inveni. Hinc tridui spatium ad Abidum civitatem in littore sitam conficitur iter: unde ulterius inter montes quinq; dierum iter est magnam usq; Constantinopolin. Quæ regni caput est in universa ditione Græcorū quos Græcianos vocant: Regiaque est Imperatoris Emanuelis, cujus imperio parēt reges duodecim; quibus singulis suum est Constantinopoli palatiū. Turres habent & urbes, dominiumque in totam terram obtinent. quorum caput rex. Primo nomen Prepositus magnus; secundo Μέγας δαμεισιγῆς sive domesticus major; tertio Dominus; quarto Μέγας δ᾽αξας sive magnus Dux; quinto

ומשם שני ימים למיטריוס
ושם כמו עשרים יהודים
ושם רבי ישעיה ורבי מ
מכיר ורבי אליאב. ומשם
שני ימי' לדרמה ובה כמו
קם יהודים. ובראשם רבי
טכאל ורבי יוסף. ומשם
מהלך יום לקנישתולי ושם
כמו עשרים יהודים. ומשם
דרך שלשה ימים דרך לאבירו
הדושב על שפת הים מהלך
המשה ימי' בין ההרים
עד מדינת קושטנטינה ה
הגדולה והיא ראש המלכות
בכל ארץ יון הנקראים
גודואינוש ושם כסא המלך
מנואל אינפרדור ושנים
עשר מלכים תחת ידו וכל
אחד ואחד יש לו ארמון
בקושטנטינה ולהם מגדלים
ומדינות ושולטים בכל
הארץ ובראשם המלך א
אפיופוס הגדול והשני מיגה
דמשטוקוק והשלישי דומינות
והרביעי מקדוקוס החמישי
Οἰνοβόμης μέγας, id est,
B 4 magnus

ומשם שני ימים לארמיליו
 והיא עיר גדולה על שפת
 הים והיא עיר סחורה
 לבינצ'אנוש ולפ'שניש ו
 ולגינוביש ולכל הסוחר' ה
 הבאים שם והיא ארץ רחבת
 רי' ובה כמו ארבע מאות
 יהודים ובראשם הרב ר'
 שילה ורבי יוסף הפרנס ורבי
 שלמה הראש. ומשם מהלך
 יום לכ' שינה ושם כמו מאה
 יהודי' ובראשם רבי שבתא
 הרב ורבי שלמה ורבי יעקב.
 ומשם דרך שני ימים בים
 לעיר סלוסקי שבנה סליקוס
 המלך אחד מארבעה שריגי
 וזן שקמו אחרי אלכסנדרוס
 והי' עיר גדולה מאד ובה
 כמו חמש מאות יהודים
 ושם הרב רבי שמואל ובניו
 תלמידי חכמים והוא שם
 ממונה על היהודים תחת
 יד המלך ורבי שבתאי התנו
 ורבי אליה ורבי מיכאל
 ושם גלות גדול ליהודים
 והם מתעסקים במלאכות
 ומשם

colunt. Ulterius bidui itine-
 nere Armilonem urbem
 magnam eamque mariti-
 mam, Venetis, Pisanis &
 Genuensibus, omnibusque
 mercatoribus eò venienti-
 bus emporium commodū.
 Regio est spatiosa, quę qua-
 dringentos circiter Judæos
 habet: quorum primores
 magnus R. Schilo, R. Ioseph
 œconomus, & R. Salomon
 præfectus. Hinc diei unius
 iter est Bissinam petenti-
 bus: ubi centum ferme Ju-
 dæi; quorum primores ma-
 gnus R. Schabta, R. Salo-
 mon & R. Jacob. Inde ma-
 ri itinere bidui Seleuciam
 appuli: quam Seleucus rex
 (unus ex illis quatuor Græ-
 cię propaginibus, quę post
 Alexandrum surrexerunt)
 statuit. Urbs maxima est;
 in qua Judæi fere quingen-
 ti degunt, & inter alios ma-
 gnus R. Samuel cum filiis
 sapientię studiosis. Hic Ju-
 dæis istius loci præfectus
 est, sub potestate regis.
 Sunt præterea R. Schabtæus
 ipsius gener, R. Elias & R.
 Michael: adeoque magna
 exulantium Judæorū tur-
 ba, qui artes mechanicas

R. Samuel, & R. Nethanja. Inde Robinica unius diei itinere distat : ubi Judæi ferme centum, quibus præpositi R. Joseph, R. Eleazarus, & R. Isaac. Unde iterum uno die distat *Κωποταμύς*: in qua quinquaginta circiter Judæi; quorū præfecti R. Salomon, & R. Jacob. Hæc est Valachia initium; cujus incolæ montes incolunt : gens ipsa Valachorum nomē gerit. celeritate cum capreolis conferendi, è montibus in Græcorum regionem descendunt, ut spoliū & prædam auferant. Nemo illos bello laceßere potest: necque rex ullus eos domare potest. Christianorum instituta non observant: suisque Judaica nomina imponunt. unde nonnulli Judæos fuisse asserunt, Judæosque appellare fratres suos; quumque hos offendunt, eos spoliare, sed non occidere, quemadmodum occidunt Græcos: vivere denique exleges. Inde duabus stationibus deveni Gardegin urbem vastatā: quam pauci Græci ac Judæi incolunt.

ורבי שמואל ורבי נתניה.
ומשם לרובינקה מהלך
שם אחד ושם כמו מאה
והודי' ובראשם ר' יוסף ורבי
אלעזר ורבי יצחק ומשם
מהלך יום לשיונון פוטמו ובה
נמו חמשים יהודים ובראשם
רבי שלמה ורבי יעקב והוא
תחלת בלכיא שיושבים
בהרים והיא האומה הנקראת
בלכיון והם קלים כצבאים
וירדים מן ההרים לשלול
ולבוז אל ארץ יוון ואין אדם
יכול לעלו' אליהם למלחמה
ואין מלך יכול לשלוט ע
עליהם ואינם חזקים בדת
הנוצרים וקוראים שמש
מיניהם כשמות היהודים ויש
אומרים שהם יהודים היו
והיו קוראים ליהודים אחינו
וכשימצאו אותם בוזים
אותם ואינם הורגי' אותם
כמו שהורגי' ליוני' ואין להם
שום דת. ומשם שני ימים
לגרדיגי והיא חרבה ואנשי'
בה מעט מיונים ומיהודי'

עד עיר קורונטו המדינה
 ושם כמו שלש מאות יהודים
 ובראשם רבי לואן ורבי
 יעקב ורבי חזקיהו ומשם
 שלשה ימים לטיבש עיר
 גדולה ובה כמו אלפים ו
 יהודים והם האומנים ה
 הטובים לעשות בגדי משי
 וארגמן בארץ היונים ובהם
 חכמים גדולים במשנה
 ובתלמוד והם גדולי הדור
 ובראשם הרב הגדול רבי
 אהרן קוטו ור' משה אחיו
 ור' חיה ורבי אליה תורתינו
 ורבי יקטן ואין כמותם בכל
 ארץ יון חוץ ממדינת ק
 קושטטינופולי ומשם מהלך
 יום לארְגירפו והיא עיר גדולה
 על שפת הים וכאים אליה
 תגרים מכל צד ופנה ושם כמו
 מאתים יהודים ובראשם רבי
 אליה פשלטורו ורבי עמנואל
 ורבי כלב ומשם דרך יום
 עד יבושטרוסה והיא מדינה
 על שפת הים ושם כמו מאה
 יהודי ובראשם רבי יוסף
 ורבי

stat urbs Corinthus metro-
 polis: in qua trecenti fere
 inveniuntur Judæi, quorū
 primores R. Leo, R. Jacob
 & R. Ezechias. Unde tertio
 die Thebas deveni, urbem
 magnam. Hic bis mille
 circiter degunt Judæi, eo-
 rum qui in Græcia habi-
 tant peritissimi sericarii,
 purpuræq; artifices. Inter il-
 los etiam quidam doctissi-
 mi, constitutionum & Ge-
 maræ peritissimi, seculi hu-
 jus maximi. Quibus præ-
 cellunt magnus ille doctor
 R. Aaron Cutæus ejusque
 frater R. Moses, R. Hija,
 R. Elias Thirtinus, R. Jo-
 etan: quos nulli æquant in
 tota Græcia, excepta urbe
 Constâtinopolitana. Istinc
 unius diei itinere profectus
 fui Ægriphou civitatē ma-
 gnam ad mare sitam: ad
 quam è quavis mundi pla-
 ga & angulo mercatores
 commeant. Ibi ducenti
 circiter Judæi: quorum ca-
 pita R. Elias Pfallterius, R.
 Emanuel & R. Caleb. Hinc
 una statione ad Jabusteri-
 sam urbem maritimam:
 ubi centū fere Judæi; quo-
 rū præfecti sunt R. Joseph,

ter Judæi habitant; quorum primarii Rab. Schelahja & R. Hercules. Inde biduum est ad Achilonem (forte Alcipum) ubi decem ferme Judæi; quorum caput R. Schabtæus. hinc dimidii diei itinere distat Natolicon in brachio maris sita. Unde mari statione una Patram veni, Antipatri Græcorum regis urbem: qui unus fuit è quatuor illis regibus, post Alexandrum regem imperantibus. Hic magna & antiqua sunt ædificia, quinquaginta etiam ferme Judæi; inter quos primas tenent R. Isaac, R. Jacob & R. Samuel. Ab hac urbe ad Lepantum dimidii diei maritimum iter est: ubi in littore maris centum fere sunt Judæi; quorum præstantissimi R. Gizri, R. Schallum & R. Abraham p. m. Hinc sequidiei iter ad Criffam: ubi in monte Parnasso soli habitant ducenti fere Judæi, qui serunt ac metunt in hærediis suis & fundis suis; sibi que præpositos habent R. Salomonem, R. Hajim & R. Jedajam. Inde tridui itinere di-

B 2 stat

יהודים ובראשם רבי שלחיה ורבי ארקולים. ומשם שני ימים לאכילון ושם כמו עשרה יהודים ורבי שבתאי בראשם. ומשם חצי יום לנטוליקון היושבת על זרוע הים. ומשם לפטרה יום א' דרך ים היא המדינה של אנטפויטרוש המלך של יון. הוא היה אחד מארבעה מלכים שקמו אחרי אלכסנדרוס המלך ושם בניונים גדולים קדמונים ושם כמו חמשים יהודים ובראשם רבי יצחק ורבי יעקב ורבי שמואל ומשם חצי יום דרך ים ללפנטו ושם כמו מאה יהודים על שפת הים ובראשם ר' גזרי ורבי שלום ורבי אברהם זל. ומשם מהלך יום וחצי לקורש ושם חונים כמו מאתים יהודי' לברם בהר פרנש והם זורעים וקוצרים בנחלתם וקרקעותיהם. ובראשם ר' רבי שלמה ורבי חיים ור' ידעיה. ומשם שלשה ימים

דבר היא המדינה הגדולה
 אשר החריב המלך גילמו של
 ציקלירי ואין שם היום
 מישראל מפני שהיא חרבה וטן
 הגוים כמו כן ומשם יום חצי
 לטר'אנטו היא תחלת מלכות
 ארץ קלאברזאה ויושבת
 יונים והיא עיר גדולה ובה
 כמו ש' יהודים וכן חכמים
 ובראשם רבי מאלו ורבי נתן
 ור' ישראל ומשם מהלך יום
 לברנדיש אשר על שפת הים
 ושם כמו ו' יהודים צבעים
 ומשם שני ימים לאוט'רנו
 אשר על שפת הים ארץ יון
 ושם כמו חמש מאות יהודים
 והראש שלהם רבי מנחם
 ורבי כלב ורבי מאיר ורבי
 מאלו ומשם עובר אדם בים
 דרך שני ימים לאוק'רופוס
 ושם יהודי אחד ושמו ר' יוסף
 ועד הנה מלכות ציקלירי
 ומשם דרך שני ימים בים
 לארץ לבטה היא תחלת
 מלכות מנואל מלך היוונים
 והיא כפר ובה כמו מאה
 יהודים

Bar civitas olim magna
 quam vastavit Siciliae rex
 VVilhelmus. Quia vero
 plane devastata est, hodie
 nulli hic Israëlitæ, pariterq;
 nec Gentiles ulli. Ulterius
 dimidiato die Tarentum
 veni, initium regni regio-
 nis Calabriae: ubi incolæ
 Græci. Urbs magna est, in
 qua trecenti ferme Judæi:
 quorum quidam sapientia
 eminent, inter quos primas
 tenent R. Mali, R. Nathan,
 & R. Israël. Hinc diei iti-
 nere distat Barnedis, in lit-
 tore condita: ubi decē cir-
 citer Judæi, qui coccineas
 vestes tingunt. Inde itinere
 bidui abest civitas Otranto
 in maris littore, ditio Græ-
 corum: ubi quingenti fere
 Judæi; quorum præstantif-
 simi R. Menaem, R. Ca-
 leb, R. Meir & Rab. Mali.
 Hinc transfretantes bidui
 spatio Corfu pervenire pos-
 sunt; ubi Judæus unicus cui
 nomen R. Joseph: atq; hæ-
 ctenus Siciliae regno accē-
 setur. Hinc itinere bidui
 maritimo distat Labra (for-
 te Larta) initiū regni Ema-
 nuelis Græcorum regis: vi-
 cus est, in quo centū circi-

hortis & pomariis. Nec quisquam cum ipsis bello contendere potest. Hinc unius diei itinere Beneventum deveni urbē magnam in littore & monte quodā fitam: ubi ducenti pene Judæi; quorum præcipui R. Kalonymus, R. Zera & R. Abraham l. m. Inde bidui itinere distat Malchi in Apuliæ regione, quæ fabis abundat. Hic inter ducentos circiter Judæos primores erant R. Ahimaats, R. Nathan & R. Tsadok. Ulterius ad Æsculum est iter unius diei: atque hic inter quadraginta Judæos excellunt R. Kontilus, ejusque gener R. Tsemah & R. Joseph l. m. Hinc abest duabus stationibus Trane in littore sita: quò conveniunt quicumque Hierosolyma versus transfretare cupiunt; quia hic est portus sive *λίμνη* commodissimus. Ibi dem cœtus ducentorum ferme Israëlitarum: quorum primores R. Elias, & R. Nathan concionator, & R. Jacob. Urbs ipsa elegans & spatiosa. Ab hac una statione abest Michael de

B

Bar

וגנות ופרדסים ואין אדם יכול להלחם עמם. ומשם דרך יום לבנאבינטו היא עיר גדולה יושבת על שפת הים והר אחד ושם קהל סוהודים כמו מאתים ובראשם רבי קלונימוס ורבי זרה ורבי אברהם זל. ומשם שני יומי למלכי שבארץ פוליא והיא ארץ פול ושם כמו מאתים יהודים ובראשם רבי אחימעץ ורבי נתן ורבי צדוק. ומשם מטהלך יום לאשקולי ושם כמו ארבעים יהודים ובראשם רבי קונטילו ורבי צמח חתנו ורבי יוסף זל ומשם שני ימים לטרנאה אשר על שפת הים ושם מתקבצים כל היוצאים לעבור לירושלם כי שם פורט הנמל הנכון ושם קהל מישראל כמו מאתים ובראשם רבי אלזה ורבי נתן הדרשן ורבי יעקב והיא עיר טובה וגדולה. ומשם מהלך יום למיקילס

ומשם רך יום עד עיר
 שלירפה ושם ושיבת ה
 הרופאים לבני אדום ושם
 כמו שש מאות יהודים
 ושם חכמים רבי יהודה בר
 רבי יצחק ורבי מלכו צדק
 הרב הגדול שהיה מעיר
 ציפונת ורבי שלמה הכהן
 ורבי אליה היוני ורבי א
 אברהם נרבוני ורבי תמוך
 והיא עיר מוקפת חומה מצד
 היבשה ומצד האחר על
 שפת הים והמגדל בראש
 ההר חזק מאד. ומשם חצי
 יום לאמלפי ושם כמו עשרי'
 יהודים ושם חננאל ה
 הרופא ורבי אלישע ואבואל
 גור הנדיב זל והגויים א
 אנשי הארץ תגרים הולכי'
 בסחורה ואינם זורעים
 אלא קונים הכל בכסף מפני
 שהם שוכנים על ההרי'
 הגבוהים ובראשי הסלעים.
 אבל יש להם פירות ה
 הרבה ארץ כרמים וותים
 וגנות

è monte Horo oriundus.
 Hinc diei itinere Salernum
 venit, scholam medico-
 rum Edomæorum: ubi præ-
 terea sexcēti pene degunt
 Judæi, in quibus sapientia
 præcellunt R. Juda filius R.
 Isaaci, R. Melchisedek ma-
 gister insignis Sipontinus,
 R. Salomon sacerdos, R.
 Elias Græcus, R. Abraham
 Narbonensis, ac denique
 R. Thimmon. Oppidum à
 continente muro cingitur;
 ab altera autem parte ma-
 ris littori imminet: turrim-
 que hæbet in montis cacu-
 mine munitissimam. Inde
 dimidii diei itinere distat
 Malfi: ubi viginti circiter
 Iudæi, inter quos Hananeus
 Medicus & R. Elifæus, ma-
 gnificus etiam ille Abu-
 Algidus faustæ memoriæ.
 Gentiles autem qui regio-
 nem incolunt mercatores
 sunt, qui huc illuc merca-
 turam exercentes profici-
 scuntur: agros non conse-
 runt, sed quævis sibi pecu-
 nia comparant; quippe qui
 in altis montibus & petra-
 rum cacuminibus habitât.
 Abundant tamē terræ fru-
 ctibus è vinetis, olivetis,

conspiciuntur. Ex ipso loco
medius scaturit fons : ubi
olearia materia invenitur,
(vulgò vitriolum) quam
ex aquæ superficie colle-
ctam ad medicamenta cõ-
ficienda seponunt. Ibidem
thermæ sive balnea aqua-
rum calidarum, quæ ex
fundo scaturiunt in maris
littore. Sunt autè duo bal-
nea quæ ab omnibus mor-
bo laborantibus frequen-
tantur: quippe quæ saluti-
fera doloremque lenientia
deprehenduntur. Et ægroti
omne genus è Lombardia
èò æstate confluunt. Hinc
per milliaria quindecim
sub montibus iter confici-
tur. Operis author est Ro-
mulus, qui Romam condidit,
atque hæc omnia fecit
cum sibi à Davide Israëli-
tarum rege & Joabo exer-
citus duce metueret. Alia
etiam cum supra, tum infra
montes urbis Neapolis ex-
struxit: quæ civitas muni-
tissima in littore maris sita
est, à Græcis olim condita.
Ibi quingenti ferme Judæi:
inter quos Rab. Eze-
chias, R. Schallum, R. Elias
sacerdos & R. Isaac b. m.
è mon-

נבע מתוך התחום וימצא
שם השמן הנקרא פיטרוליו
ומלקטין אותו על פני המים
ומשימין אותו רפואות ויש
מרחצאות של מים חמין
נבעין מתחת הקרקע והם
על שפת הים והם כמו שני
מרחצאות שכל אדם שיש בו
שום חולי ילך וירחוק בהם
וימצא מרפא ומרגוע וכל
החולים מבני לונברדיאה
באים שם הקיץ ומשם ילך
אדם דרך חמשה עשר מילין
תחת ההרים הוא הבנין
אשר בנה רומרום המלך
שבנה רומ' הכל עשה מפני
פחד דוד מלך ישראל ויואב
שר צבאו ועשה בנין על
ההרים ותחת ההרים נאפולי
המדינה והיא עיר בצורה
מאד יושבת על שפת הים
מבנין היונים ושם כמו חמש
מאות יהודים ושם רבי חזקיה
ורבי שלום ורבי אליה הכהן
ורבי יצחק מהר' ההר ז"ל.

שכנה קושטנדינה ועל שמו
נקראת קושטנטינופוליו . ו
הוא מצוייר מנחשת וסוסו
ומצופים בזהב . ויש בניונים
אחרים וענייני' ברומא ש
שלא וכול' אדם לספרם .
ומשם ד' ימים לקפואה
היא המדינה הגדולה ש
שבנאה קפוס המלך והיא
טובה אבל המו' רעים
והארץ משכלת ויש בה
כמו שלש מאות יהודים
ובם חכמים גדולי' נכבדי'
ארץ ובראשם רבי קונפשו
ורבי שמואל אחיו ורבי זקן
והרב רבי דוד זל' וקוראין
לזה פרינציפנו . ומשם לפוצול
הנקראת סודיונטו העיר ה
הגדולה שבנה צינצן הדרעור
שברח מפני פחד דוד המלך
עה ויצא הים וכסה אותם
בשני חלקי' מן העיר . ועד
היום הזה רואי' בני אדם
השווקים והמגדלים שהיו
בתוך המדינה ושם מעיין
נובע

qui Constantinā exstruxit
de nomine ipsius vocatam
Constantinopolin. Sculp-
tura ejus & equi ex ære, sed
obducta erat auro. Alia et-
iam sunt Romæ ædificiā ac
opera, quæ nemo recēdere
queat. Hinc ad Capuam est
iter quatruidui. civitas ma-
gna est, quam Capys rex
quondam struxisse fertur:
elegantia etiam eximia; a-
quæ tamen insalubres, ut
regio quasi abortū faciat.
Habet trecentos pene Ju-
dæos, nonnullos etiam sa-
pientissimos & ubique ce-
lebres: quorum primarii
R. Konpassus & R. Samuel
fratres, præterea R. Zaken
& magnus ille Rab. David
f. m. quem *principem no-*
strum vocant. Ulterius pro-
fectus fui Puteolos quon-
dam Surrentum dictam, ur-
bem magnam, quam olim
condidit Tsintsan Hadar-
Ezer, quum metu Davi-
dis regis (in pace quiescen-
tis) aufugisset. Verum-
enimverò mare inundans
cives utraque urbis parte
obruit. Ac etiamnum fora
& turres, quæ in mediā ci-
vitate fuerunt, à quovis

secula prælium antiquum ob oculos poneret. Ibidem invenitur spelunca subterranea continens regem ac reginam conjugem thronis infidentes & centū fere homines regni proceres, omnes opere pigmentario cælatos in hodiernum usq; diem. In basilica S. Steph. apud ejus imaginē in facello duę sunt columnę æneę, opus regis Salomonis, qui in pace quiescit: & cuiq; columnę hæc insculpta verba, *Salomon f. Davidis*. Narrarunt autem mihi Judæi ibi degentes, singulis annis nono die Julii ex illis sudorem aquæ instar manare. Illic etiam spelunca ubi Titus filius Vespasiani vasa ædis sacre seposuit, quæ Hierosolymis attulerat. Est & alia crypta in monte ad fluminis Tiberis ripam, ubi sepulti decem justī laudatæ memoriæ, qui sub regno tyrannico occisi fuerunt. Porro ante templum imaginis Lateranensis sculptus est Samson globum lapideum manu tenens: deinde Absalon filius Davidis, & rex Constantinus qui

המלחמה שהיתה בימי קדם
זשם ימצא מערה שהולכת
תחת הארץ ונמצאו המלך
והמלכה אשתו על כסאותם
ועמם כמו מאה בני אדם
שרי המלוכה וכלם חקוקים
במלאכת הרופאים עד היום
הזה. ושם בשלטיאני אל
אטושיני ובבמה שני עמודים
מחשרת ממעשה שלמה
המלך עליו השלום ובכל עמוד
ועמוד חקוק שלמה בן דוד
ואמרו לי היהודים אשר
ברומא כי בכל שנה ושנה בימי
ט' באב נמצאה זיעה עליהם
נרת כמים. ושם מערה שגנו
טיטוס בן אספסינוס כלי בית
המקדש שהביא מירושלם
וגם מערה אחת בהר על שפת
הנהר טיברו. ושם קבורים
הצדוקים ול עשרה הרוגי
מלכות ולפני שלגוזן דלמרה
מצוויר שמשון וכידור בידו
של אבן. וגם אבשלום בן
דוד וגם המלך קושטדינוס

qui

מלכות פפוס אביו של קרלו אשר כבש ארץ ספרד מיר הישמעאלים בתחלה. ושם היכל טיטוס לחוץ לרומא שלא קבלוהו שלש מאות יועציו בשביל שלא עשה מצותם שלא לקח ירושלם אלא לג' שנים וגזרו הם עליו ב' שנים ושם כמו היכל ארטון המלך אספסיונוס בנין גדול וחזק מאד. ושם ארטון המלך מלך גלבין ויש בתוך ארטון שלו שלוש מאות וששים ארטונים כמנין ימות השנה. והקפת הארטונים ג' מילין. והיתה מלחמה ביניהם בימי קדם ונפלו בתוך הארטון יותר ממאה אלף בני אדם הרונים והיה העצמות עד היום הזה תלוין וציור המלך ענין המלחמ' מצד ומצד מערכה לקראת מערכה בני אדם וסוסיהם וכלי מלחמתם הכל אבן שיש להראות לבני העולם המלחמה

regnum usque Pipini patris Caroli, qui omnium primus Hispanias Iismaëlitis eripiens sibi subjugavit. Ibi extra Romam est palatium Titi: quem trecenti senatores suscipere ideò detrectarunt, quod ipsorū mandato non paruisset: utpote qui elapso demum triennio Hierosolyma cepisset, cum biennium præscriptū fuisset. Præterea instar templi conspicitur palatium regis Vespasiani, structura maxima ac firmissima. Ad hæc palatium regis, regis inquam Galbini: in cuius palatio trecentæ & sexaginta aulæ, quæ dierum anni numerum æquant; ut earum ambitus ad tria millia extendatur. Quum autem inter se quondam bellū gererent, in isto palatio ultra centum millia Edomæorum ceciderunt: quorum ossa ibi ad hodiernum usque diem suspensæ. Rex etiam sculptura totum bellum in omnibus lateribus expressit, acie aciei opposita, hominibusque cum equis suis & armis marmoris insculptis: ut post longa

juvenis formosus, prudens ac sapiens, qui in aula Papæ conversatur, utpote aulae omniumque ipsius facultatum administrator. Nepos est R. Nathanis qui librum Aruch composuit unà cum commētariis. Inter primarios etiam R. Ioab f. magni R. Salomonis, R. Menahem ipsius academiae caput, R. Jehiel trans Tiberim habitans, & R. Benjamin f. R. Schabtai l.m. Cæterum Roma duabus constat partibus: quas ita Tiberis flumen interfluit, ut urbis pars una ab hoc, altera ab altero latere conspiciatur. In priori parte est templum maximum quod S. Petri Romanum vocatur: ubi etiam palatium magni Julii Cæsaris cum multis ædificiis operibusq; longe diversis à cæteris omnibus quæ toto exstant orbe. Atque hæc urbs quæ habitata, quæ devastata viginti quatuor patet millia: continens palatia octoginta regum octoginta, qui sui juris periti vocantur omnes Imperatores: inde à Tarquinii regno ad regnum

משרת של פפא והוא בחור
 יפה נבון וחכם והוא יוצא
 ובא בבית הפפא והוא פקיד
 ביתו ועל כל אשר לו והוא
 נכדו של רבי נתן שעשה
 ספר הערוך ופירושו ורבי
 יואב בן הרב רבי שלמה ורבי
 מנחם ראש הישיבה ורבי
 יהואל הדר במרשטיברי ורבי
 בנימן בר ר' שבתי זל והוא
 רומא העיר שני חלקי והנהר
 טיברוס חולק באמצע המדינה
 חלק אחד מצד אחד וחלק
 אחד מצד שני ובחלק הראשון
 הבמה הגדולה שקוראין לה
 שלביטרא די רומא ושם
 היה ארמון של יוליוס קיסר
 הגדול ויש שם בניני הרב'
 ומעשים משונים מכל בנין
 שבעולם ובי' המיושב החרב
 מן רומא כד מילין ושם
 שמונים היכלות משמונים
 מלכים גדולים בתורה ה
 הנקראים כלם אינפורדור
 ממלכות טרקיונוס ועד

הוא

בבתים שלהם ללחום בעת
 המחלוקת וכל אנשיה גבורים
 ואין מלך ואין שר שולט
 עליהם כי אם השופטים אשר
 הם מקימים עליהם ובה כמו
 עשרי' יהודים והראש שלהם
 רבי משה ורבי חיים ורבי
 יוסף ז'ל ואינה מוקפת חומה
 והיא רחוק' מן הים ארבעה
 מילין ויוצאין ונכנסין אליה
 בספינות על יד הנהר היותר
 בתוך המדינה. ומשם ארבע
 פרסאות לעיר לוקא יש כמו
 ארבעים יהודי' והיא גדולה
 והראש של היהודי' רבי דוד
 ורבי שמואל ורבי יעקב ומשם
 מהלך ששה ימי' לעיר רומא
 רבתא והיא ראש מלכות
 אדום. ושם כמו ר' יהודים
 נכבדים ואין פורעי מס לשום
 אדם ומהם משרתי הפפא
 אלכשדורוש הוא ההגמון
 הגדול הממונ' על כל דת אדום
 ושם חכמי' גדולים ובראשם
 רבי דניאל הרב ורבי יהואל
 משרת

exstructis orto dissidio ad
 mutua bella utuntur. Cives
 sunt viri fortes: ideoq; nec
 regi nec principi parent;
 sed senatoribus quos sibi
 præficiunt. Reperiuntur et-
 iam viginti circiter Judæi:
 quorum primarii R. Mo-
 ses, R. Hajim & R. Joseph
 l. m. Cæterum civitas nul-
 lo cincta muro à mari qua-
 tuor distat milliaribus: quò
 tamen ducunt ac reducunt
 naves fluvio quodam, qui
 ipsam civitatem influit.
 Succedit post quatuor pa-
 rasangas Luca (ubi quadra-
 ginta ferme Judæi.) Civi-
 tas magna: ubi Judæorum
 primarii R. David, R. Sa-
 muel & R. Jacob. Hinc sex
 dierum itinere abest urbs
 illa maxima Roma, caput
 regni Edomæorū. Hic du-
 centi ferme Judæi, viri hon-
 orati, nemini tributum
 pendentes: inter quos suos
 habet ministros Papa Ale-
 xander; qui maximus est
 princeps, totius Edomæo-
 rum religionis præfectus.
 Ibidem inveniuntur viri sa-
 pientissimi: quorū prima-
 rius magnus R. Daniel, &
 R. Jehiel Papæ minister,

collegio præfecti sunt. In collegio autem inferiori eminent R. Jacob Phirphienus ditissimus, R. Abraham ejusque gener R. Meir, R. Isaac & alter ille Meir laudatæ memoriæ. Hæc civitas maritima celeberrima est commerciiis.

Hinc conscensa nave Genuam tendere consuevere, urbem in littore sitam, quò post quadriduum appellere queunt. Duo hic fratres Judæi, R. Samuel f. Celami ejusq; frater, Sebathenses, viri boni. Vrbs muro cincta nulli regi paret; sed senatoribus, quos sibi cives arbitrio suo præficiunt. Singuli in ædibus suis turrim habent: unde exorto dissidio sese in vicem oppugnant in turrium fastigio. Dominium maris obtinēt: in quo confectis actuariis navibus, quas galeras dicunt, huc illuc excurrunt prædatum ac spoliatum prædas ac spolia, quæ Genuam devehunt. Bellū gerunt cum Pisanis, unde bidui itinere distant. Est autem hæc civitas maxima decies mille turribus instructa: quibus in ædibus

A 5 extru-

ראשו של מעלה ובראש הקהל של מטה רבי יעקב פירפיונו העשיר ורבי אברהם ור' מאיר חתנו ורבי יצחק ור' מאיר זצ"ל והיא עיר סהורה מאד על שפת הים ומשם יכנס אדם בספינה לעיר גינואה היושבת על שפת הים והוא מהלך ארבעה ימים בים ושם שני יהודים אחים רבי שמואל בן כלאם ואחיו שהיו מעיר סבתה והם אנשים טובים והעיר מוקפת חומה ואין מלך שולט עליהם כי אם השופטים שהם מקימים עליהם כרצונם וכל אחד ואחד מהם מגדל בביתו ובשעת מחלוקתם נלחמים אלו עם אלו על ראשי המגדלים והם מושלו הים ועושים דוגיות הנקראות גליראש והולכי לשלול שלל ולבוז בכלה מקומות שלל ובוה ומביאים אל גינואה והם נלחמו עם אנשי פישר ובניהם ובין פישר מהלך שני ימים והיא עיר גדולה מאד ובה כמו עשרת אלפים מגדלי

ורבי משה ורבי יעקב בן הרב
 רבי לוי זל והוא מקים קבוץ
 לגוים ולאיוס מאפסי הארץ
 והיא קרובת מן הים שלש
 מילין ויושבת על שפת הנהר
 הגדול הנקרא רודי והוא
 הסוכב כל ארץ פרובנצה ושם
 הנשיא ר' אבא מרי בר רבי
 יצחק זל והוא פקיד השלטון
 דמון . ומשם שלש פרסאות
 לעיר ארליז ושם כמו מאתים
 מישראל ובראש רבי משה
 ורבי טובי ורבי ישעיה ורבי
 שלמה ורבי נתן הרב ורבי
 אבא מרי זל . ומשם שלשה
 ימים למרשילייה והיא עיר
 גאונים וחכמים והם ב' קהלות
 ובם כמו שלש מאות יהודים .
 הקהל האחד יושב על שפת
 הים למטה . והקהל האחר
 יושב על שפת הים יושבים
 במגדל למעלה והם ישיבה
 גדולה ותלמידיו חכמים רבי
 שמעון בר רבי אנטוליו ור'
 יעקב אחיו ורבי לבארו והם
 ראשי

R. Moses, & R. Jacob f. ma-
 gni doctoris Levi p.m. Lo-
 cus hic ab ultimis usq; terris
 frequentatur variis genti-
 bus ac insularibus ; nec à
 mari ultra tria milliaria di-
 stat, in ipsa ripa magni flu-
 minis Rodani, quod totam
 provinciam alluit: ibi degit
 Princeps , R. Abba-Mari f.
 R. Isaaci l.m. præfectus gu-
 bernatoris Damani. Ulte-
 rius tres parasangæ ad civi-
 tatem Arelatû: ubi ducen-
 ti Israëlitæ , quorum pri-
 marii R. Moses, R. Tobias,
 R. Jesaias , & R. Salamon,
 magnus R. Nathan , deni-
 que R. Abba-Mari f. m.

Tandem tridui itinere
 Massiliam deveni. Quæ ci-
 vitas multos illustrissimos
 & sapientes habet , adeo ut
 duo sint collegia trecento-
 rum fermè Judæorû : quo-
 rum unum maris littori in-
 ferius imminet ; alterum
 verò similiter mari adjacet,
 sed in turri quadam loco
 superiori, venerandum ex-
 hibens confessum, sapien-
 tiæ inquam studiosos, R. Si-
 meonem f. R. Antolii, fra-
 tremq; Rabbi Jacobum &
 R. Lebarum, qui superiori

& redemptor) distatq; à mari duabus parasangis. Inde duæ parasangæ ad *Beaucaire* civitatem amplissimam : in quâ Judæi fermè quadraginta , celebriſque academia eximio Professore doctore Abrahamo f. Rab. Davidis f. m. hic factis erat celebriſ & ſapientiâ excellēbat, cum in Talmudicis, tum in Scriptura, adeo ut legis addiſcendæ cauſa ipſum adirent è longinquis etiā regionibus. atque in ſuis ædibus otium ac quietē nactos inſtituebat ; quin etiā ſi cui ſumptus non ſuppeterent, ipſe de ſuo ex facultatibus ſuis quibuſcunq; opus eſſet erogabat, utpote ditiffimus. Ibidem ſapientes alii, Rab. Joſeph f. Rab. Menahem, R. Benbenſchath, R. Benjamin, R. Abraham, denique Iiſaac f. R. Moſis f. m. Hinc tribus paraſangis abeſt oppidum Nogres, quod dicitur Burgus Ægidii: ubi cœtus Judaicus centum circiter ſapientum, quorum primarii R. Iſaac f. R. Jacobi, R. Abraham f. R. Judæ, Rab. Eliezer, R. Iſaac,

וחוקה מן הים שתי פרסאות ומשם שתי פרסאות ל לפותיוקירש והוא כרך גדול ויש בו יהודי' כמו ארבעים ושם ישיבה גדולה על ידה רב הגדול רבי אברהם בר רבי דוד וזל' רב פעלים חכם גדול בתלמוד ובפסוק ובאי' מארץ מרחק אליו ללמוד תורה ומוצאי' מ מנוחה בביתו והוא מלמד ומי שאין לו להוציא הוא מוציא להם משלו וממנו לכל צרכיהם והוא עשיר גדול ושם חכמים רבי יוסף בר רבי מנחם ורבי מננשת ורבי בנימן ורבי אברהם ורבי יצחק בר רבי משה זל' ומשם ג' פרסאות לנוג'ש הנקרא בורק' של גיל' ושם קהל מיהודים כמו מאה חכמים ובראש רבי יצחק בר רבי יעקב ורבי אברהם בר ר' יהודה ורבי אלעזר ורבי יצחק

ושם רבינו משולם הרב
 הגדול ז"ל וחמשה בניו ח
 חכמים גדולים ועשירים ר'
 יוסף ור' יצחק ורבי יעקב
 ורבי אהרן ורבי אשר הפרוש
 שנפרש מעניני העולם ועומד
 על הספר יומם ולילה
 ומתענה ואינו אוכל בשר
 והוא חכם גדול בתלמוד
 והרב רבי משה גיסו ור'
 שמואל החזן ורבי שלמה
 הכהן ורבי יהודה הרופא
 בן תבון הספרדי וכל הבאי'
 מארץ מרחק ללמוד תורה
 מפרנסים אותם ומלמדים
 אותם ומוצאים שם פ
 פרנסה ומלבוש מאצל ה
 הקהל כל ימי היותם בבית
 המדרש והם אנשים ח
 חכמים וקדושים בעלי מ
 מצות עומדים בפרץ לכל
 אחיהם הקרובים והרחוקים
 ובה קהל יהודים כמו
 שלש מאות יצו והוא

bant. Ibidem olim doctor
 noster Meschulam ma-
 gnus ille magister faustæ
 memoriæ; cujus in eodem
 loco quinque filii sapientif-
 simi & divites, R. Joseph,
 R. Isaac, R. Jacob, R. Aa-
 ron, & R. Ascher verè de-
 votus ille, qui separatus à
 negotiis mundanis libro
 legis inhæret interdium no-
 ctuque, atque se ipsum af-
 fligens carne non vescitur,
 Talmudicæ doctrinæ periti-
 tissimus. Præterea magnus
 ille R. Moses Giffo, & R.
 Samuel prælector, denique
 R. Selemo sacerdos cum
 R. Juda medico filio Tib-
 bonis Hispani. Quicun-
 que autem eò è regioni-
 bus longinquis ad discen-
 dam legem veniunt, hos
 alunt eosdemque docent:
 etenim ibi alimenta ac ve-
 stimenta è publico suppe-
 ditant quamdiu in schola
 versantur. Sanè sunt viri sa-
 pientes ac sancti, præcepto-
 rumque cultores: qui qui-
 bulvis fratribus sive pro-
 pinquis sive remotis opem
 ferunt. Locus iste continet
 cætum Judæorum cir-

citer trecentorum (quos conservet, opto, eorum rupes
 רהוקה

Montem Pessulanum qui vocatur *Montpefier*. Locus est negotiationi accommodus, duabusque parafangis abest à mari: quò ex omni loco ad mercaturam confluunt Christianorum & Muhammedanorū plurimi, è regionibus Algarbia, Lombardia, & regno magnæ illius Romæ, universo regno Ægyptio, terrâ Israëlitica, & Græcia, Gallia, Hispania, & Anglia: adeoque ex omnium linguarum populis ibidem reperiuntur una cum Genuensibus & Pisanis. Ibidè sunt celeberrimi hujus seculi sapientum discipuli: atque inter eos primarii R. Reuben f. Theodori & R. Nathan f. R. Zacharjæ, R. etiam Samuel omnium Magister, deniq; R. Schemja cum R. Mardocheo felicis memoriæ. Inter eos reperiuntur homines ditissimi, ideoque in egenos benefici, tutelam iis præstantes qui ad eorum potentiam confugiunt. Distat hinc quatuor parafangis Lunel: ubi sanctus erat

cœtus Israëlitarum qui dies noctesque legi operam da-

מונפושלייר והוא מקום יפה לסחורה . קרוב מן הים ב' פרסאות ונאים אליו מכל מקום לסחורה אדם וישמעאל מארץ אל עורה ולונברדיה ו ומלכות רומא רבתא ומכל ארץ מצרים וארץ ישראל וארץ יון וארץ צרפת וארץ ספרד ואינגלטרה ומכל לשונות הגוים נמצאים שם על ידי גינואייין ופישנין ושם תלמידיו חכמים ה חשובי הדור ובראשם רבי ראובן בר טודרוס ור' נתן בר זכריה ורבי שמואל הרב שלהם ורבי שלמואל ור' טרדכי זל . ויש ביניהם עשירים גדולים ובעלי צדקה ועומדים בפרץ לכל הנאים ליום . ומשם ארבע פ פרסאות ללונגל ושם קהל קדוש מושראל מתעסקים בתורה יומם ולילה .

גבוליה . ומשם טהלך יום
 וחצי לגירונדה ובה קהל קטן
 מיהודים . ומשם טהלך
 שלשה ימים לנרבונה והיא
 עיר קדומה לתורה וממנה
 תצא תורה לכל הארצות
 ובה חכמים גדולים ונשיאים
 ובראשם רבי קלונימוס בן
 הנשיא הגדול רבי מודרוס
 ז"ל מורע בית דוד מכונה
 ביחסו ויש לו נחלות ו
 וקרקעות מאת מושלי ה
 הארץ ואין אדם יכול ליקח
 ממנו בחזקה . ובראשם
 רבי אברהם ראש הישיבה
 ורבי מכיר ור' יהודה ואחרים
 כנגדם הרבה תלמידי חכמים
 ויש בה היום כמו שלש
 מאות יהודים . ומשם ד'
 פרסאות לבירוש העיר ו
 ושם קהל תלמידי חכמים
 ובראשם רבי שלמה ח
 חלפתא ורבי יוסף בר רבי
 נתנאל ז"ל . ומשם שני
 ימים להר געש הנקרא
 מנפישלויה

finiisque ejus omnibus. De-
 hinc sesquidiei itinere Ge-
 rundam profectus fui : ubi
 exiguus Judæorum cœtus.
 Postea trium dierum spa-
 tio Narbonam: quæ civitas
 legis est antistes, indeq; lex
 ad quasvis regiones pro-
 manat. habet enim docto-
 res insignes, eosque princi-
 pes; inter quos primarius
 R. Kalonimus filius magni
 principis Rabbi Theodori
 beatæ memoriæ, qui à pro-
 fapiâ Davidis in genealogia
 sua denominatur, cuiq; sunt
 possessiones ac prædia, quæ
 à dominis istius regionis
 accepta ipsi nemo vi eripe-
 re potest. Inter primarios
 etiam est R. Abrahâ ipsius
 confessus caput, nec non
 R. Machir & R. Jehuda, a-
 liique his similes multi, om-
 nes sapientiæ studiosi. At-
 que istic hoc tempore tre-
 centi fermè Judæi degunt.
 Hinc ad oppidum Bâtiras
 sunt parasangæ quatuor.
 Ibi cœtus est studiosorum
 sapientiæ: inter quos excel-
 lit R. Selomo Halaphta &
 R. Joseph f. Rab. Natha-
 naëlis piæ memoriæ. Istinc
 digressus biduo perveni ad

ITINERA
 Doctoris Binjami-
 nis, f. m.

Ta in fit Binjamin filius Jonæ faustæ memoriæ. Initio egressus Cæsar-Augustâ secundo Iberi flumine Tortosam appuli: unde bidui itinere Tarracona petii, urbem antiquam, quæ remansit ex antiquis Gigantum & Græcorum ædificiis; nec æqualis structura in totis reperitur Hispaniis: marique adjacent. Hinc iterum bidui itinere Barcelonam appuli: ubi sacer cœtus virique sapientes ac prudētes quin etiam eximii præsides, puta, Rabbi Sefath, Rabbi Schealthiel, denique Rab. Schelomo filius R. Abrahami f. R. Hhafdai faustę memoriæ. Oppidum est parvum, attamen elegans, & in maris littore situm. Quò negotiationis ergò mercatores ex omnibus locis confluant: è Græcia, Pisis, Genua, Sicilia, Alexandria Ægypti, terra Israël con-

A 2

finit.

מסעות

של רבי בנימין ז"ל

רבי בנימין בר
 אמר יונה ז"ל יצאתי
 תחלה מעיר
 שקושטה וירדתי דרך נהר
 אוברי לטורטושה ומשם
 הלכתי דרך שני ימים לעיר
 טרכונה הקדמונה והיא היתה
 מבנין ענקים ויונים ולא נמצא
 מבנין ההוא בכל ארצות
 ספרד והיא יושבת על הים
 ומשם שני ימים לעיר ברצלונה
 ושם קהל קדוש ואנשים
 חכמים ונבונים ונשואים
 גדולים כגון רבי ששת ז"ל
 שאלתיאל ז"ל רב' שלמה בן רמ
 אברהם בן חסראי ז"ל והוא
 עיר קטנה ויפה ויושבת על
 שפת הים באים אליה
 בסחורה תגרים מכל מקום
 מארץ יון ופישה וגינואה
 וסיסילויא וארץ אלכסדריא
 של מצרי' ומארץ ישראל וכל

והיה רבי בנימין הנזכר
 איש מבין ומשכיל בעל
 תורה ובכל דבר ודבר
 שבדקוהו כדי לפשט
 אחריו נמצאו דבריו
 מתוקנים ויציבים כפי
 כוונה היה איש אמת :

Ceterum hic jam me-
 moratus doctor Benjamin
 perspicax fuit ac rerum
 intelligens, legumq; sacra-
 rum peritus. Quacunque
 etiam in re eundem exa-
 ctè explorarant, quò post
 ipsum rem investigarent,
 in ejus ore verba com-

posita veraque fuisse deprehenderunt : fuit enim
 veritatis sectator.

מסעות



PRÆFATIO.

Hic liber compositus fuit è narrationibus viri cujusdam Navarreni, cui nomen doctor Benjamin, filii Ionæ Tudelensis (justus cum laude memoretur) Hic continuis peregrinationibus plurimas remotissimasq; regiones peragravit; sicuti verbis ipsius sequentibus exponetur. Et quocunque locorum perveniret, describebat quodcunque vel videret, vel audiret è viris fide dignis, quorum fama ad ipsas pervenisset Hispanias. Similiter multorum magnatum principumq; meminit, qui diversis locis degebant. Reversus autem hæc omnia secum in Castiliam detulit anno 933. id est, anno Servatoris 1173.

הקדמה

הספר מחובר
 מדברים שספר
 אדם אחד מארץ
 נבאה שמו רבי בנימן
 בר יונה מטודילה וצ'ל:
 וילך הלוך ויבא בארצות
 רבות ורחוקות' כאשר
 יתפרש בדבריו אלו ובכל
 מקום שנא בו כתב כל
 הדברים שראה או שמע
 מפי אנשי אמת אשר נ
 נשמעו בארץ ספרד: וכך
 הוא וזכר מקצת הגדולים
 והנשיאים שבמקצת מ
 מקומות וכשבא הביא
 דבריו אלה עמו לארץ
 קאסטיליא בהשנת תתקל"ג:

D. CONSTANT. L'EMPEREUR
ab ОРРУСЪ, S. S. Th. Doct. ac S. L. Pro-
fessori, BENIAMINIS Tudelensis ITINE-
RARIVM edenti & illustranti.

MENS orta cœlo, grande Musarum decus,
Albo perennitatis inscriptum caput,
Orientis Astrum, cujus accensas faceis
Miratur orbis. Te sibi totum tenent
Hebri nepotum scripta. Non unquam tulit
Documenta quis mājora, quam fragili loco
Gens cœca stare, splendor illa gentium,
Dum sceptrâ Judæ gestat, & Solyma potens
Dominatur aula. Sacra moles Ausonum
Everſa ferro est. Nomen & famam tibi
Debet renatam: dum propinas seculo
Quod impeditum *Thalmud* arcanum tegit.
Nunc *Danielis* scita vatis explicas:
Strophas Magistri, vixque constantem sibi
Fucum retundis. Pergis, in lucem trahens
Quod *Tudelensis* scripsit olim *Benjamin*
Iter; sed omneis orbis amplexum plagas.
Tuum, *Imperator*, illud est. Dignum tuis
Auguste, curis. Non vacat vanis diem
Trivisse nugis. Nullus est famæ modus,
Nullus labori. Leyda te suum vocat
Batava Sydus. Rhenus & Pelagi Deæ
Suum fatentur. *Benjamin* nomen tuum
Solio reponet, nulla quod vertet dies;
Doctæque gentis Imperator audies,
Magnisque major Imperator omnibus.

MARCUS ZVERIUS BOXHORNIVS.

PRÆ-

*Maclandus, Triviamq; consecrandus
Fame & frigore, non honore ferri.*

*Tantum est. Non tamen, erudite Lector,
Tantum est: nec volo te manu abstinere
A tam frugifero & bono libello.
Si Regi malè convenit Philippo,
Nec Rheni faciles ministrat undas;
Si nec cornua prodit, alveosq;
Aut Mosæ, Vahalisve, Videla&ve;
Si pontum oppositum silet Britannis;
Tutis non malè convenit Batavis.*

*Ergo praestitit (inquires) Philippum
Seduci per iter tenebricosum;
Ratus lampada non decere tradi,
Monstrariq; viam. Nequit negari,
Ita heic omnia luculenter edi,
Ut sint, si volet, usui Philippo.
In fraudem Patria tamen negamus
Quamvis increpet exiisse Momus.
Circumspectiùs egit IMPERATOR,
Cujus munere Cantaber patescit:
Captat otia, ponderatq; tempus;
Cernit detumuisse nunc Iberum,
Pacatisq; animis coire Belgas.
Quondam sub Iove pauperes eramus;
Ignarusq; Leo timebat hostem,
Nunc belli vetus excipit Molossos.
Nunc Respublica civitasq; major,
Et viri sine fine Martiales.
Hispanum timeat? domat Batavus.*

Ludebam

P. S. Lugd. Bat. 1633.

D.CON.

ITER BENIAMINI,

Olim Latinè semel à Benedic̃to Aria Montano editum,
& nunc simul Hebraicè Latineque, novâ Inter-
pretatione & NOTIS illustratum,

à Viro N. & D.

CONST. L'EMPEREVV, ab OPPYCK.

Ad nostrates, jocus.

IONÆ filius ille BENIAMINVS,
Laus non ultima Sabbatariorum,
Prudens, ingeniosus, & peritus
Olim Callaïcis profectus oris,
Dum toto peregrinus errat orbe,
Remetitus ITER, quod heic videtis,
Libro Cantaber explicavit uno.

Donum nobile! sed malignus Ævi
Dens arroserrat, optimamq; partem,
Intervalla via, situmq; terra,
Delibaverat integro labori.

Et passim quoque cespitans Arias
Corrupit pretiosus liquamen:
Gerres lingimus, & garum putamus.

Sic Regi dominisq; Celtiberis
Inconstans Breviarium relictum,
Distortum, ambiguumq; deviumq;
Meras, Iuppiter, oscitationes!

Nempè hoc rex hominum deumq; summus
Cunctis censuit expedire terris:
Ne quisquam, duce fortè Beniamino,
(Hispanus putà somnians Monarcham)
Quem spe ceperat, Orbe perfruatur,
Et, si bella paret, laboriosâ
Miles protinùs in viâ fatiscat;

Maetan-

AD LECTOREM.

ibi longius à recepta ratione deflexit: modo ea accipiamus quæ supra de maritimi itineris mensura produxi. Sed dicam quod maxime verisimile hic videtur: Benjaminem primū secundo Rodani flumine in mare descendisse; deinceps vero legendo littus tertio die Massiliam appulisse. Atque hoc modo plurima excusari poterunt: nec etiam phrasis, qua aliquando utitur, aliud efflagitat. Atque hæc sunt, quæ ut *περὶ παραγωγῶν ἀσικῶν* præmittenda censui: quò cum de authoris fide, imprimis cum suæ gentis conditionem & statum extollit; tum etiam de viarum & distantiarum mensuris ea in procinctu essent, quæ prudens lector jure summo desideraret. Jam autem ad ipsum Benjaminem perge, & si Rabbini-
cus textus quandoque videatur obscurior, subsistere noli; ἀλλ' ἵσθι σιγῇ τοῖον ἐγὼ δ' ὁδὸν ἠγέμεον ἄλκιω, *Sed eas ita tacitè, ego viam monstrabo:* ut verbis utar Minervæ ad Ulysssem cum Alcinoi domum quæreret. Vale.

Dab. Lugd. Bat. 16 Kal.

Apr. an. 1633. part. sal.

Tui studiosus

CONSTANTINVS L'EMPEREUR
ab ОРРΥСК.

ITER

DISSERTATIO

rias examinabit, meritò nonnulla desiderabit: adeò ut pene existimem, eum non tam ad usitatas *σθημων* mensuras, quam ad itineris sui tempus respexisse: ut licet ad eundem locum usitate vel celerius vel tardius perveniretur, ipse tantum id spectaverit, quot diebus suum iter perfecisset; quamvis fortè quievisset horas aliquot, vel ultra consuetudinem in multam noctem iter produxisset. Ut pag. 4. quum biduo Bætiras Monte-Pesfulano distare scriberet, ordinarias stationes non designavit: nam teste Nubiensi Geographo ipsa Narbona vix biduo à Monte-Pesfulano sive Monpeslier aberat, من نربونه

الى مدينة منت بشاير ثمانية وثلاثون ميلا

A Narbona ad urbem Monpeslier triginta octo miliaria. atqui Bætira sunt propiores. Ita p. 8. quum se Arelato Massiliam triduo devenisse scriberet, si terrestre iter designavit, ordinarias stationes intelligere non potuit: quia Massilia Arelato propior est. Nam Burgus Aegidii tantum uno die & paulo remotius à Massilia distat; ut docet Nubiensis Geogr. من شنت جبلي

الى مشبلي على البحر خمسة وعشرون ميلا

A Sancto Aegidio ad Massiliam ad mare sitam viginti quinque miliaria: at Arelatum minus à Massilia distat, si maritimum iter spectavit,

ibi

AD LECTOREM.

Quia tamen istæ stationes magis propriè diversandi locum (uti etymon docet) & viæ terminum spectabant, prætereaque diversoria & pernoctandi loca ob viarum iniquitatem vel minorem commoditatem æqualibus intervallis semper distare non poterant; hinc factum, ut apud Herodotum etiam, qui 150. stadia stationibus assignaverat, postea in omnibus itineribus hic numerus non deprehendatur; sed ad 120. circiter minuatur: cum certa quadam de causa justum diei iter absolvi nequit, puta ob viæ incommoditatem vel ulterioris diversorii longinquitatem, aliave similia. Denique cum octo stadia milliaria exhibeant, centum quinquaginta stadia novemdecim circiter milliaria suppeditabunt. Licet eruditissimi Maronitæ viginti quinque milliariibus diurnum iter definire maluerint. An verò Benjamin mensuras accuratè observaverit, cum diebus sua itinera definivit, meritò dubitari potest: nam si hoc ipsi propositum fuisset, ut ἀνεβῶς stationibus locorum distantias dimetiretur, minora diei segmenta non prætermisisset; cum civitates ac regiones præcisè diebus vel dimidiato die vel sesquidie aliisque similibus distitas fuisse probabile non sit: quemadmodum etiam in superioribus ad ipsius parasangas &c. observavi. Quinetiam ubi quis accuratè locorum distantias

tias

rodotus in eo convenient, ut singulis stath-
 mis quinque assignent parasangas. Sed è po-
 sterioribus Herodoti testimoniis liquet, fuisse
 & minores stationes, quæ solummodo qua-
 tuor parasangas circiter complecterentur,
 quemadmodum etiam in aliis Persarum men-
 suris diversitatem observavit Plin. l. 6. c. 26.
 sub finem: nam cum de parasangis & schœ-
 nis pronuntiat, *Persæ quoque schœnos & para-
 sangas alii alia mensura determinant*, diversa eo-
 rum genera fuisse supponit, quibus diversis
 diversi usi sint. Quod de stathmis etiam præ-
 cedentia testimonia docent, eorum diversa
 fuisse genera; ita tamen ut plerunque quin-
 que essent parasangarum, sive stadiorum cen-
 tum quinquaginta. Unde etiam Herodotus
 eodem loco, de eadem via differens, diur-
 num iter eò usque extendit: πεντήκοντα δὲ ἑ-
 κατὸν στάδια ἑφ' ἡμέρη ἑκάστη διεξιῶσι ἀνασι-
 μῶνται ἡμέραι ἀπαρτὶ ἐννεήκοντα, *Centum &
 quinquaginta stadia singulis diebus peragrantibus
 consumuntur solidi nonaginta dies*. Quali dicat,
 si quis ordinarias stationes 150 stadiorum
 observet, nonaginta diebus iter absolvet.
 Similiter Ebræi unius diei iter ad centum &
 quinquaginta stadia extendunt: sicuti S. Jar-
 chi ad Es. 24. 16. נמצא מירושלים לדרך מהלך יום אחד.
*Deprehenditur Hierosolyma à Iardene distare unius
 diei itinere; at distabat ad minimum 150. stad.*

Quia

bus quinque; & amplius parasangæ ascribantur. Herodotus tamen eodem loco, cum de Armenia loquitur, secus sentire videtur, ubi inquit, Σταθμοὶ μὲν εἰσι κατὰ σωγέων πεντήκοντα, καὶ χοάσπαι δὲ ἐξ ἑ πενήκοντα καὶ ἡμισυ, Stationes quidem sunt diversiorum quindecim, parasangæ autem quinquaginta sex cum dimidia. Hic si divisio instituat, singulis stationibus vix quatuor parasangas attribui deprehendetur, si in numeris exprimendis error admissus non sit. Eadem pagina subjungit Herodotus, Ἐς τὴν Κισσίαν χώρην μετὰ Βαϊνονίη, ἕνδεκα σταθμοί, καὶ χοάσπαι δὲ δύο καὶ τεσσαρτήκοντα καὶ ἡμισυ ἐστὶ ἐπὶ ποταμὸν χοάσπην, In regionem Cissiam transeunti (scilicet è Mantiena) sunt undecim stationes, parasangæ verò quadraginta due & dimidiata ad fluvium Choaspen. ubi iterum ferme quatuor parasangæ singulis stationibus ascribuntur. At ubi Herodotus summam totam colligit, puta itineris longinqui quod membratim descriperat, ita concludit, Οὗτοι οἱ πάντες σταθμοὶ εἰσὶ ἕνδεκα καὶ ἑκατόν . . . καὶ χοάσπαι γὰρ ἑόντων πενήκοντα ἑ τετρακισίων, Omnes hæ stationes sunt centum & undecim . . . quum sint parasangæ quadringentæ quinquaginta. ubi parasangarum quatuor est statio, & tanto major, quam senarius numerus in centum & undecim divisus. Communiorem stationem è dictis haurire promptum est, quum Xenophon & He-

*** 5

rodo-

DISSERTATIO

ut duplicis mensuræ simul mentionem faciant historici. Insignis in hac materia locus apud Xenophontem extat libro 2. de expeditione Cyri pag. edit. Basil. 217. Ἀριθμὸς δὲ τῶν ὁδῶν ἡλθον ἐξ Ἐφέσου τῆς Ἰωνίας μέχρι τῆς μάχης, σταθμοὶ τρεῖς ἑννεήκοντα, ἡξακισχίλια πέντε ἢ τετράκοντα καὶ πεντακῆσοι, στάδια πενήκοντα ἑξακισχίλιοι ἢ μύριοι, *Summa autem via, qua Epheso Ionia oppido venerunt, usque ad pugnam, complectitur stationes tres ἑννεήκοντα, parasangas quingentas trigintaquinque, stadia sedecim millia ἑννεήκοντα.* Hic perspicuè quid σταθμὸς sit, ex adjunctis parasangis & stadiis addiscimus: ubi 93. σταθμοὶ, stationes, sunt parasangæ 535. & stadia 16050. Unde si parasangas 535. per 93. stationes divides, singulis stationibus quinque parasangas & paulo plus attribues: similiter si 16050. stadia per 535. parasangas divides, unicuique parasangæ triginta relinques stadia. Jam si parasanga est stadiorum triginta, & statio quinque parasangas continet, σταθμὸς statio centum & quinquaginta stadia complectitur. Cum hoc calculo convenit Herodotus in Terpsichore, ubi quum de itinere per Ciliciam loquitur p. 193. edit. H. S. hæc habet verba, Τρεῖς εἰσι σταθμοὶ, ἡξακισχίλια δὲ πεντηκῆδεκα ἢ ἡμισυ, *Tres sunt stationes, parasanga autem quindecim ἑννεήκοντα ἢ dimidia.* ubi iterum vides lector, quæ singulis stationibus

bus

AD LECTOREM.

quam quisquam vel ullis dromadibus assequi valeat. Multum etiam interest, num quis pedes incedat, an verò curru vel equo vehatur. Quis adhæc Alexandri M. in expeditionibus quibusdam militaribus celeritatem ac pernicitatem non obstupescat? Exempli gratia in Ariis, qui rebellabant, opprimendis tanta celeritate usus fuit, ut Arriano teste, duobus diebus sive duobus *σάβμωϊς* sexcenta stadia confecerit. Quis tamen hinc cuique *σάβμωϊ* trecenta assignabit stadia? Nec etiam salebrosa & aspera ac prærupta loca pari facilitate cum planis transiri solent. Quapropter ne hac in parte longissime aberremus, id primò expendere convenit, quantum viæ ut plurimum & communissime, non mari, sed in continenti per loca commoda homines emetiri soleant: nam maritima itinera quod concernit, plusquam centum milliaria sæpissime absolvunt nautæ. Ideoque meritò doctissimi Maronitæ in præfatione Geographiæ Nubiensis, ex ipso autore stationem & cursum distinguunt. *Cursus, qui cursum navis diurnum, seu navigationem diei, hoc est, spatium centum millium passuum explet*; statio autem est qua diversi terrestrem viam metiri solent. Secundo ut in statione certi quid nobis constare possit, mensuram hanc cum aliis comparatam quærere convenit: fit enim nonnunquam

DISSERTATIO

quum h^{m} ea ratione sedecim tantum palmo-
rum millia exhibeat. Sed parasangæ Arab.
pars quarta (id est, milliare, nam parasanga
continet milliaria quatuor) propius ad mil-
liare Italicum accedit, ut quæ octodecim pal-
morum millia complectatur. Verum de his
fatis ad eam parasangæ & milliariis notitiam,
quæ in Benjaminis itinerariis distantis intelli-
gendis requiritur: ad diurna itinera perga-
mus. Biduo vel triduo vel pluribus diebus se
huc vel illuc accessisse scribit; quandoque
etiam uno vel dimidiato die: eapropter
quantum spatium definiatur omninò in-
quendum venit. Atque non solum nostro au-
ctori hoc in more positum; sed aliis etiam, ut
civitatum alicorumq; locorum distantias diur-
nis itineribus explicent: quemadmodum hoc
modo apud Græcos $\alpha\theta\mu\delta\upsilon\nu$ usurpari videas,
 $\omega\delta\epsilon\tau\omega\sigma\alpha\iota\sigma\upsilon$ à statione dictum. quia post
tantum itineris emensum eo die non progre-
diebantur, sed subsistebant, corpusque quieti
mandabant, sive privati iter facerent; sive
exercitus locum moveret. Vnde Hesychio
 $\alpha\theta\mu\delta\upsilon\varsigma$ inter alia est $\sigma\pi\alpha\lambda\omega\pi\kappa\eta\ \kappa\alpha\tau\alpha\lambda\upsilon\zeta\iota\varsigma$, *man-
sio castrensis*. Hujus spatii dimensionem ex-
pressam apud veteres me legisse non memini:
& sanè non omnes æquale itineris spatium
eodem die emetiebantur. Qui mari iter fa-
ciunt longe celerius sæpissime provehuntur,
quam

quam

AD LECTOREM.

pollices quatuor digitos conficiunt; pollice digitus tertia sui parte minor est: & hisce convenienter, si Judæi cum lege hac in parte loquantur, spatia illa milliarium quodammo- do conciliari poterunt. Siquidem conveni- enter quantitati digitorum Ebraicorum, è quibus palmi, & è palmis cubiti; tria millia cubitorum Judaicorum conficiunt in Geogra- phia Arab. millia quatuor. adeo ut nec inter duo millia cubitorum Judaicorum & tria A- rabicorum tam ingens sit intervallum, quam primo videbatur. Quod enim ad digitos Geo- graphi Nubiensis attinet, ne quis majores so- lito existimet, ibi prohibet, dum loco pro- ducto ipse addit, الأصبع ست حبات شعير
Digitus sex granorum hordei. Ex iis quæ hacte- nus observavimus etiam constat, milliare Ita- licum mille passuum non admodum ab E- bræorum מיל, palmorum numero differre. Milliare, uti in notis sequentibus dicitur, in se vicies mille palmos complectitur: at cubi- ti bis mille (si maximos accipias) parem nu- rum exhibent; siquidem singuli sunt digito- rum quadraginta, id est, palmorum decem. Quod si posteriori conciliationi adhæreas, & Ebræorum cubita ob pollicum quantitatem extendas, differentia inter milliare mille pas- suum & מיל Rabbincum major erit: utpote
 *** 3 quum

DISSERTATIO

plo majorem : idcirco cum nullibi cubitum
 deprehendamus, qui hujusmodi excessu cu-
 bitum sex palmorum superet, restat ut cubi-
 tum quinque palmorum ita superari dica-
 mus, id est, cubitum quendam dari qui de-
 cem palmos complectatur, sive digitos qua-
 draginta. Qua ratione uterque locus jam è
 Sacris citatus conciliari commodissime po-
 test, si modo in priori loco, sive 2 Chron. 3. 15.
 stylobatæ unum cubitum tribuas. Itaque
 cum maximus cubitus plusquam dimidio ma-
 jor sit cubito Geographiæ Arabicæ, quàm
 Rabbini milliare bis mille cubitis circum-
 scribunt; & ex illa Geographia milliare ad
 tria cubitorum millia extenditur, non tanta
 est differentia quæ lectorem turbare queat.
 Etenim licet ex ista comparatione milliare
 Rabbanicum jam etiam majus appareat; id
 considerandum, Benjaminem nostrum tam
 anxie & scrupulosè spatia non dimetiri:
 quemadmodum ex eo liquet, quod segmenta
 passim omittat, quasi integris ferme parasan-
 garum & milliarium numeris loca distarent.
 Præterea minime negligendum quod Mai-
 monides cod. de precibus c. 15. sect. 4. ob-
 servavit, האצבע שמושהוים בו בכל התורה כולה הוא
 הגורל והוא הנקרא בהן די, *Digitus quo in tota ac*
universa lege meriuntur est magnus digitus, qui vo-
catur pollex manus. Quandoquidem autem tres
pollices

AD LECTOREM.

calculo parasangæ spatium fuerit 8000. cubitorum: siquidem quatuor milliaria contineat. Attamen in Geographia Nubiensi, non procul ab initio, secus auctor gravissimus sentire videtur, dum ait. الفرسخ اثنا عشر الف

ذراع والذراع اربعة وعشرون اصبعاً

Parasanga est duodecim millium cubitorum, cubitus viginti quatuor digitorum. Si Arab. parasanga 12000 cubitos complectitur, ergo Judaicam quatuor millibus superat. Deinde parasanga est quatuor milliarium; itaque si 12000 cubitos continet, milliare unum erit cubitorum 3000: at infra in notis meis ex Ebræorum sententia milliare duobus cubitorum millibus definiri probatur. Licet hæc prima fronte admodum & quam longissime inter se distare videantur; cubitis tamen accuratius expensis secus apparebit. Tria esse cubitorum genera satis liquet, è c. 17. codicis דלים: proprie dictus tamen cubitus est palmorum sex, sive ut auctor Nubiensis loquitur, vigintiquatuor digitorum. Verum quum Ebræi milliare bis mille cubitis circumscribunt, cubitos maximos intelligunt, qui quadraginta digitis constant. Ut varia Talmudicorum & posteriorum Rabbiorum testimonia linquam, collatio 2 Chron. 3. 15. cum 1 Reg. 7. 15. satis superque evincit, fuisse cubitum cubito, du-

*** 2

plo

DISSERTATIO

salutis viam non concernunt, sententiam mutavi: ut qui semper illiberale duxerim, ex alienæ industriæ obtrectatione gloriam captare. Quapropter in sequentibus versionem rarius quàm præcedentibus defendo; lectori hoc relinquens ut de Ariæ Montani sphalmatis iudicium ferat, si utriusque versionem, quæ per omnia differt, conferre libuerit. Quod verò ad Scaligeri marginales quasdam notas attinet, quibus me astrictum non autumavi, de iis iudicet vir Amplissimus Johannes Latus Societati Indiæ Occ. præfectus: ut qui istas notas habeat, quas mihi pro veteri amicitia suppeditaverat, cum in versione occuparer; atque etiam de huiusmodi rebus solus ferme recte iudicare possit, pro linguarum cognitione qua valet, & insigni ac singulari Historiarum & Geographiæ peritia, qua cæteris præcellit. Verum enim verò antequam ad ipsum itinerarium, Lector, te dimittam, quandoquidem noster in spatiorum dimensionibus frequenter milliaria, parasangas & diurna itinera sive *σάβμδς* adhibet, de iis quædam prælibanda: quò mens ac sententia Benjaminis constare queat. Parasangas continere apud Ebræos milliaria quatuor, notarum initio, id est, ad pag. Benj. 4. ex ipsorum libris observatum fuit; similiterque milliare bis mille cubitis ab iisdem definiri. Quo calculo

calculo

A D L E C T O R E M.

me operæ pretium facturum non duxi, si omnia in hoc itinerario accuratè expenderem & prolixis commentariis illustrarem; quemadmodum initio institueram: sed levi brachio cætera percurrere satis esse existimavi. Idque hac etiam inprimis de causâ, benevole lector, ut alia quæ jam partim parata habeo, partim adorno, propediem tibi exhibeam. Nam commentariis in Danielem unâ cum hoc opusculo juris publici jam factis, Halichoth Olam cum versione excuditur: cui codices Talmudicos, Berachoth, Zebachim, Bava Kama, Bava Metsâ, & Bava Batra, quos jam paratos habeo subjiciam, si Deus Opt. Max voluerit. Sed labor qui me maxime distrahit, in duorum manuscriptorum Judaicorum (quibus Christiana religio oppugnatur) versione ac refutatione occupatur. Hæc te ideo monitum volui, ne breviores notas mireris, quam tot regionum, regnorum, urbium, oppidorum ac pagorum recensio mereri videatur: licet succisvis horis forte longiores progressu temporis adjecturus sim. Nec denique hoc celabo: initio id mihi fuisse animi, ut novæ versionis meæ rationem omnibus redderem. Verum cum animadverterem, id agenti aliorum & quidem eruditissimorum virorum opiniones sæpe refellendas, idque in rebus quæ fidem &

* * *

salutis

DISSERTATIO

tem qui sequantur, invenit cum aliis Benjamin: adeo ut in mappis quibusdam geographicis Israëlitis procul in Oriente certus hujusmodi locus assignetur. Verumenimverò de his jam plura dicere supersedeo: in notis ad ipsum Benjaminem alia nonnulla adjiciam. E dictis liquet cum judicio legendum hoc itinerarium, nec auctori in omnibus habendam fidem, præsertim ubi suorum conditionem ac statum extollit: plurima tamen notatu digna passim occurrunt; ut quæ de locorum distantis aliisque annotat. Quamvis nec hic exactissimam ἀνεξέδαν perpetuò agnoscam: licet non diffitear, quin scribarum culpa ac incuria numeri forte locis quibusdã corrupti fuerint, vel locorum nomina permutata, si quando literis quibusdam convenirent. Præcipuam operam sumsisse videtur in numerandis Judæis, qui singulis regionibus & oppidis reperirentur; quum præstitisset in ea inquirere, quorum cognitio lectorem magis juvisset, quam numerum Judæorum cognoscere qui passim deprehenderentur. Unde liquet ad suam gentem semper collimasse, ut vel numero, vel ficto aliquo dominio Israëlitas commendaret: utpote qui vel justo aliquo numero ubique terrarum degerent; vel etiam rempublicam aut regnum adhuc obtinerent. Quocirca hisce omnibus expensis

me

AD LECTOREM.

Judæos Maitmonides comm. ad sect. i. cap. 8. codic. *Baba Kama* similiter loquitur, עקר מעקרי דתנו אין גובין קנסות בבבל והוא הדיון בשאר כל הארצות לחוץ מארץ ישראל, *Est è precipuis fundamentis legis nostræ, non exigi pœnam vulnerum in Babylonia; idemque jus in omnibus reliquis terris, Israeliticæ excepta, servandum.* Codice Berach. f. 58. p. i. circa medium, און מיומא דגלינן מארעין לית, לן רשותא למקטל, *Ab eo tempore quo è terra nostrâ migravimus, non habemus occidendi potestatem.* Claudâ testimonio Chaldæi paraphrastæ, qui hõc modo enarrat Hof. 3. 4. יומין סגיאין יתבון בני ישראל לית מלכא מדבית דוד ולית דעביד שולטן על ישראל *Multos dies permanebunt Israelitæ absque rege è familia Davidis, nec erit qui dominium exerceat in Israelitas.* Hæc omnia ideo profero, ut omnibus liqueat, quam noster Benjamin cum sequace suo Isaaco nobis Christianis imponere conetur, quamq; suos ac domesticos doctores eosq; primarios adversarios habeat. Alibi quum 53. Es. caput exponendum est, quam sese deprimunt isti mortales, ut totum istud caput ad se trahant! ubi verò com. 10. cap. 49. Genes. enarrandum, quam sese efferunt! Tempore Messia demum sceptrum ac gloriam expectant; attamen sceptrum & gloriam in comment. ad Genes. 49. caput, aliisque eorundem scriptis, præcedere videas. αἱξ ἔπω τέτοκεν, ἐλαφὸς δὲ τῆς δώμας; πάσι. Hanc absurditatem

tem

DISSERTATIO

inquisivisset nihil simile invenire potuit. Quine ipse quidem Jacobus Golius (lumen Academiae nostrae,) qui ad Orientalium rerum notitiam sibi comparandam in Orientem profectus conditionem & statum istarum gentium perlustravit, nec in Orientalium libris, nec familiari colloquio, nec regiones peragrando ficta ista dominia ac regna deprehendere potuit. Atque ut Judæos suo jugulem gladio, quid D. Kimchi tantus ipsorum Doctor? in Hof. 3. 4. ubi Deus dixerat, *dies multos manebunt filii Israelis absque Rege & absque Principe*, ipse addit, ואלה הם ימי הגלות, שאנחנו בו היום ואין לנו לא מלך ולא שר מושראל כי ברשות הגוים אנחנו וברשות מלכיהם ושריהם *Hi sunt dies exilii in quo hodie sumus, nec Regem nec Principem ex Israël habemus; sed in potestate gentilium sumus, & in potestate regum ipsorum & principum ipsorum.* Quid Abrabaniel de quo tantopere gloriantur? hic ad Esa. 53. 8. in priori expositione hæc scribit, עוד זכר המין השלישי, מרעות הגלות והוא שלא היה בתשראל מלכות ולא ממשלה ולא שבט משפט, *Præterea meminit tertii generis malorum exilii, nempe quod penes Israelitas non sit regnum, nec dominium, nec sceptrum judiciale: ubi plura in eandem sententiam sequuntur, atque inter alia synedrium habere negat; cum Benjamin vel decem ipsis in una civitate Bagdad assignet. Celeberrimus inter*

Judæos

AD LECTOREM.

fingant: quemadmodum vel unum hoc Rabbi Jachjæ ad ψ. 8. c. 8. Danielis ostendit, ubi Alexandrum magnum Romulo Romam quartam sui imperii partem assignasse, & Herodi Prolemaidis imperium dedisse, refertur: sed de his aliàs, Deo favente, plura adjiciam. Noster etiam ubi ad remota ista loca pervenit, ibi demum disertus esse incipit, eaque narrat quæ nunquam idoneis testibus probabit. Cujusmodi est & illud quod de hominibus sacco se includentibus vel potius boum pellibus narratur p. III. ubi tempestate jactati, se pellibus insutos in mare præcipitare, deinde ab aquilis in terram exportari, atque tandem cultris liberatores adorti, iis interfectis domum redire feruntur.

Sed præcipua eloquentia in describendo Judæorum dominio: quod ignorant quicumque Orientem postea lustrarunt. Affirmant Judæos in Oriente jus gladii non habere; nec hujusmodi synedria habere, nedum regna, quæ indigitat Benjamin, sed ab iis (si qui hoc privilegio gaudeant ut controversias inter suos dijudicent) ad Muhammedanos provocationem dari. Nobilissimus vir David de VVillem cognatus meus (ob longam multarum rerum experientiam Illustrissimo A-tausionum Principi à consiliis) in Oriente per annos duodecim versatus, cum in omnia in-

inqui-

DISSERTATIO

tantum initio viam describit , qua venerat
 • Judæus quidam ex illis regnis Chabor; sed
 etiam viam membratim proponit, qua redi-
 turus esset. Hæc de reditu verba ibi leguntur,
 מפורטונאלי ירד בים אוקינוס דרך סבוב יבשת פיס ויניה
 בים בימינם כל דרך אינסוליס פורטונאטי הנקראים היום
 ספאניולי וימשך דרך קאפו וירדו ביבשה ויסוב האפריק'
 דרך היבשה בשמאל ללכת אל המזרח עד הפרוטונטוריא
 הגדול הנק' קאווי די בונא ספיראנצא ויעבור הגולפו
 בארבאריקו למצא מיצר ים סוף וירד ביבשה למצוא מדבר
 , E Lusitania per mare
*Oceanicum descendens circumibit continentem illius
 Mauritaniae que vulgò Fez nuncupatur; & in mari
 à dextris relinquet omnem tractum insularum for-
 tunatarum, quæ hodie Spaniola dicuntur; deinde
 continentem Arsinarii, sive Cabo-verde legens, cir-
 cum Africa continentem à sinistra sitam navigans
 versus Orientem tendet, ad magnum illud promon-
 torium dictum Cabo di bona speranza, sive frontem
 Africa; atque tandem sinum quem Barbaricum vo-
 cant circumvectus, quò fretum maris Algosi asse-
 quatur, ibi in continentem descendet ut desertum
 Chabor inveniatur, sicuti fiet, ut ita ad locum suum
 perveniat.* Sed Peritsol iste audita tantum nar-
 rat; Judæum illum non viderat vel cum ipso
 locutus erat: quod testantur verba sub capi-
 tis istius finem, צורת היהודי הזה ומעשיו לפי חנשמע,
*Forma istius Iudæi ejusque opera, quantum audivi-
 mus, &c.* Sane Judæis familiare est, ut multa
fingant;

AD LECTOREM.

quam Calipha in acclamatione sua homines istius regionis solliciti essent. Nec omnia ista se vidisse testatur Benjamin; sed multa narrat tantum: & cum libri præfatio, tum Davidis Gans testimonium supra productum satis superque, multa quæ Benjamin narrat ab ipso tantum audita fuisse, testantur. Verum ut fingit Benjamin, ita hujus figmenta auget Isaac f. Aramæ: idque in eum finem ut nobis extorqueant è manibus telum, quo ipsos petimus è cap. 49. v. 10. Gen. Ideo Benjamin p. 70. & aliquot sequentibus tam magnifica de Israëlitarum senatu multiplici, gloria, dominio &c. enarrat, & postea de regno eorundem p. 101. aliisq;: quæ sanè excogitavit & finxit; vel saltem è privilegiis quibusdam, quibus precario fruuntur, dominia, regna ac summam dignitatem confecit. An hoc in sensum communem cadit, Judæos ac Israëlitas hic & in Germania passim sub jugo servitutis, imo in latissimo Hispanorum regno sub tyrannide malle vitam agere, quam Bagdadum petere aliaque loca ubi eorum imperium nobis describit Benjamin? An si tanta Israëlitarum illic felicitas, eò saltem Orientales Judæi non contenderent? Et ne quis excipiat, regnorum saltem in deserto Chabor situm ipsos latere: ecce Abraham Peritfol sui libelli Orchoth Olam c. 14. iter præmonstravit, ubi non tantum

tantum

DISSERTATIO

tamen Ebræorum magistris satis notum fuisse, docent cum præcedentium testimonia; tum aliorum : ejus enim inter alios mentionem etiam facit R. Isaac filius Aramæ, commentariis in Gen. qui inter Judæos fiunt plurimi. Ita enim fol. 92. כבר זכר הרבי בנימין בעל המסעות שראה בעיניו במדינת בגדאד עיר גדולה לאלהים ושמה כמה אלפים ורבנות מושראל וביום גנוסית מלכם היה רוכב נשיא מורע דוד אצלו במרכבת המשנה אשר לו ויקראו לפניו בכבוד גדול עשו דרך לבן דוד *Olim commemoravit Doctor Benjamin auctor itinerarii, se propriis oculis vidisse, in urbe Bagdad civitate maxima ac amplissima, Israëlitarum multa millia atque etiam dominatum ibi fuisse; quo verò die illorum regis natalitia aguntur, principem è prosapia Davidis apud illum in secundo ipsius curru vectari, & cum magna gloria coram acclamari, Parate viam filio Davidis.* Verum non dicit multa millia; sed mille: nam pag. 70. hæc leguntur verba, יש שם בבגדאד כמו אלף יהודים, *Illic Bagdadi mille ferme Iudæi degunt.* Nec dicit Benjamin, quo die Muhammedanorum Caliphæ natalitia aguntur, Judæorum principem apud illum curru vehi, quasi ipsi similis esset; sed quo die ipsum exulum caput creatur à Calipha, ipsum curru secūdario domum deduci: quemadmodum p. 74. narratur. Deinde Benjamin p. 72. ipsi acclamari dicit cum Calipham salutatū it; non verò cum Caliphæ natalitia aguntur, quasi tum de ipso magis, quam

quam

AD LECTOREM.

שברוב המקומות כאשר תמצא את כל הדברים הנזכרים
 נדפסים בספר הנקרא מפר מסעות בנימין והיה האיש
 ההוא חכם חרשים ומבין דעת ואחר שובו מהמסעות מת
 בשנת תתקל"ג, *Doctor Benjamin filius Iona Tude-
 lensis, qui multum peregrinatus est, profectus è re-
 gione Navarrena continuo itinere peragravit omnes
 tres mundi plagas, Europam, Africam, & Asiam:
 & quocumque pervenisset, omnia perscribat quæ
 vel viderat, vel ex fide dignis hominibus audiverat,
 eaque scripto consignans commemorabat etiam non-
 nullos magnates, & Iudaorum in plerisque locis nu-
 merum. Quemadmodum omnia ista, quæ memoravi,
 eo libro invenies excusa, cui titulus, liber itinerum
 Benjaminis. Caterum vir iste peritorum erat sa-
 pientissimus & rerum intelligens. Postquam autem
 ex itinere reversus esset, ann. 933. *scilicet* I. Chr. 1173.
 mortem obiit. Hic nulla operis plenioris men-
 tio; sed autor tantum excusi itinerarii memi-
 nit, alterum illud opus, quod nonnulli ex-
 tare putant, alto silentio præteriens: quod
 tamen non fecisset, si Judæi illud alicubi ex-
 tare vel unquam exstitisse credidissent. Hu-
 jus excusi itinerarii duæ sunt editiones: una
 Constantinopolitana, quam mihi suppedita-
 vit pro suo singulari in me affectu æternum
 Belgii decus magnus ille Heinsius; altera est
 Brisgoënsis, quam incomparabilis vir Johan-
 nes Buxtorfius olim ad magnum Scaligerum
 transmiserat. Liber est rarissimus, quem*

* * 5

tamen



DISSERTATIO AD LECTOREM.

BENEVOLE LECTOR, cujus tibi opusculum exhibeo est Benjamin: de quo hæc invenio in Jouchasin sive Chronico Abrahami Zacouthi, folio editionis Cracoviensis 131.

רבי בנימין בעל המסעות נפטר שנת תתקלג המאור הגדול
Rabbi Benjamin, qui multum peregrinatus est, obiit anno 933. sive à nato Christo 1173. magnum illud luminare, cujus sol toti Israëlì exortus fuit. Unde colligere promptum est, non diu post suum ex itinere reditum supervixisse: siquidem eodem isto anno rediisse legitur; quemadmodum pagina prima hujus sequentis opusculi testatur. Plenius de hoc viro in Tsemah David sive Chronico Davidis Gans, partis prioris fol. 55.

רבי בנימין בר יונה מטודילה בעל המסעות יצא ממדינת
נבארה והיה הולך ונסוע ומשוטט בכל שלשה חלקי העולם
אירופי אפריקא ואסיאה ובכל מקום אשר בא שמה
כתב כל הדברים שראה או ששמע מפיו אנשי אמת וכתבם
בספר וגם זוכר בו מקצת הגדולים ומספר היהודים

שכרוב

DEDICATORIA.

tati consecrata in vulgus prodit:
ego illam hac perfundi magnum
operæ pretium percepisse existi-
mabo. Eum itaque benigno vul-
tu accipe, qui quo minus potest,
eo magis inservire annitetur N.
tuæ; & si nihil queam, precibus
saltem apud omnium authorem
contendam ut sospitet & diutissi-
mè communi patriæ incolumem
præstet,

*Nobilitatem & Amplitudinem tuam,
cujus cliens permanere gestio*

CONST. L'EMPEREUR.

Lugd. Bat. 12. Kal. Apr.
ann. 1633. partæ salutis.

** 4

DIS-

EPISTOLA

ris ? ubi antiqua dicta & facta,
 consilia & eventus cum hodie-
 nis, tanto utilius contulisti; quo
 pluribus fuisti implicitus, plura-
 que magna cum laude tractasti.
 Itaque non eges exemplis quæ
 in hoc itinerario occurrunt, ipse
 multo utiliora expertus; nec ut
 laudes tuas attingam cupis vel
 opus habes, nam alii gloriam
 quærunt, ipse obtines, &

*convexa polus dum sidera pascet,
 Semper honos nomenque tuum lau-
 desque manebunt.*

Has ego augere nequeo; sed quod
 possum vota addam. Interim pa-
 tere ut hæc itineris Benjaminici
 pictura obscurioribus lineis à me
 expressa, tui splendoris lumine il-
 lustretur, dum tui fastigii clari-
 tati

DEDICATORIA.

quodam munusculo palam facere, & debitum meum homagio (ut vocem è trivio assumam) quodam agnoscere; omnes jam agnoscent. Præsertim cum ista ratione plus danti quam accipienti accedat. siquidem non summo decori esse non potest, ad tantum Heroem familiarius admitti, & eodem in Musæo versari ubi hæc legentur: quæ licet exilia & pro tuo fastigio nulla, tanto facilius grata fore confido, quanto N. tuæ indolē ad dandum quam accipiendum esse promptiorem certior sum. Etenim nihil ferme accipies: quid enim ex hoc libro tibi accrescet, qui præstantissimos authores cum è Græcis, tum è Latinis acri judicio examinave-

** 3 ris?

E P I S T O L A

factorum & meritorum tuorum
 vel recordari volupe est.) Nec ta-
 men quæ dicenda erant absolvi:
 multo plura restant, quæ omnia
 prætereo, ne vel adulari videar;
 vel etiam splendida facta & emi-
 nentes virtutes obscuro sermone
 humilibusque verbis narrando
 obscurem atque deprimam. Hæc
 tantum exponendi consilii & in-
 stituti mei occasione dicta sunt:
 quò, non temerè nec sine gra-
 vibus causis ad Nob. tuam hoc
 opusculum anhelare, omnibus
 constet. Etenim cum omnes plu-
 rimum obstricti simus, & publi-
 ce exantlatis laboribus aliquam
 referre gratiam teneamur; meri-
 tò cum nihil rependere valeam,
 me promptum saltem animum
 quo-

quo-

DEDICATORIA.

placuit. Hollandiæ vero ordines, ut eum sibi præ reliquis devincerent, in equestrem ordinem summo applausu asciverunt: ut non inter posteriores, sed priores sententiam dicentem audirent. Quippe in utroque conventu eum ante alios audire annitentes, qui longa & varia rerum publicarum experientia & animi sagacitate ac maturo & solido iudicio (quod omnes boni suspiciunt) instructus in ferendis suffragiis cynosuræ instar viam ostenderet. Longius proventus fui (quemadmodum vulgò ubi de tua N. sermo incidit, factitare solemus, ubi quisque summa animi alacritate data occasione in laudes tuas erumpere gestit, dum

E P I S T O L A

non immeritò ad Angliæ regem
 & Venetorum rempublicam la-
 borem ac operam tuam efflagita-
 tam fuisse : simili enim successu
 peracta quæ proceres in votis ha-
 bebant. Societas cum illis firma-
 ta, & fœdera sancita : ut eorum
 spei responderit successus ; nisi
 etiam superarit. In omnibus ubi-
 que ejus solertia & promptitudo
 illuxit, quem in hac etiam dupli-
 ci legatione adhibuerunt. Qua-
 propter ubi singulæ Confœdera-
 ti Belgii provinciæ tanti herois
 operam sibi longe utilissimam
 expertæ essent, nec tamen singu-
 læ illum suum facere possent, in
 Βελγικῆς ἢ Ordinum Gene-
 ralium consiliario senatu ad an-
 nos plurimos consiliarium esse
 pla-

DEDICATORIA.

favore ac benignitate, respublica
 nostra bellis crevit: horum quis
 dicatur nervus nemo ignorat: ad
 militum stipendia aliaque bellica
 onera sustinenda non mediocri
 pecuniæ vis requirebatur. Quan-
 tam reipublicæ nostræ incredi-
 bili dexteritate magni regis libe-
 ralitatem excitasti? nemo ante
 illa tempora; nemo deinceps pa-
 ria præstitit. Verum quod rei ca-
 put est, non solum infinitas fer-
 me coronatorum myriades con-
 fecisti; sed quod mirantur inpri-
 mis, ut serenissimus Rex patriæ
 nostræ illam summam remitteret,
 Ordines tua unius opera effectum
 dederunt. Hæc, & alia quæ ad-
 jungere possem, sed certo consi-
 lio prætermittam, indicio sunt,

**

non

EPISTOLA

citās ingenii animusque in casus omnes etiam inopinatos promptissimus, nec unquam quid factū opus sit dubius, illis perspectus ac cognitus esset? Accedebat prudentia singularis, quæ non solum ex historiārum omnium lectiōne; sed longo rerum usu comparata fuerat. Atque hæc latere non poterant: quandoquidem vel in uno atque altero colloquio certissima specimina eduntur. Magnam itaque illi ex ista legatione spem concipiebant: nec frustra fuerunt. Maxima enim commoda & emolumenta continuos plurimosque annos, quibus hoc munere fungebaris, perceperunt. Unum tantummodo paucissimis delibabo. Aspirante D. O. M.
favore

DEDICATORIA.

aliorum iudicium vel sermo eò deprimunt , ut idcirco minus reipublicæ fatagat; sed palmæ instar tanto alacrius obnilitur, quo plura meretur qui licet omnibus placere nequeat publicã salutem fartam tectam servat, quam is qui nemine obloquente in summa quiete ac statu pacato, ne quid respublica detrimenti capiat, fatagere non desinit. Iste igitur Heroicus animus in rebus difficillimis nihil unquã ab ingenuæ Nobilitatis alacritate remittens patriæ proceres & inprimis Illustrissimum Arausionum principem permovit, ut tua industria in legatione ad Magnum Galliarum Regem uti voluerint. Quem enim huic prætulissent, cujus sagacitas

citas

E P I S T O L A

gratulemur. Reliqui quantum unà nobiscum debeant, magna in rempublicam merita ostendunt, quæ multis regiminis tui annis in immensum accumulata id à bonis & patriæ amantibus impetrant, ut vitam tuam inter felicitatis nostræ columina censeamus, mortē ut ejusdem labem horreamus. Eos taceo, qui dum publica negotia non satis capiunt & intelligunt, publicæ salutis & communis patriæ fatagentem, quem suis forte votis experiuntur obsistere, non satis æstimant. Quorum omnium animum ac desideria ea animi magnitudine præteris, quæ generosam & antiquissimæ nobilitatis profapiam decet: nec Heroicam indolem alio-

DEDICATORIA.

cui majori merito offerendū cen-
ferem, quam nobilitati tuæ? Cui
non tantum ego; sed etiam totum
Confœderatū Belgium plura de-
bet quam eorū judicium permit-
tit, qui præclara tua facta non ex-
pendūt. Me quod attinet, munus
quod sustineo, Tibi, utpote hujus
Acad. Curat. vigilantissimo, non
minimum debeo : cujus cura me
vocatū eo magis gestio, quod
N. tuæ hanc esse cum cæteris Cu-
ratoribus, & hujus urbis Confuli-
bus sollicitudinē norint, ut non-
nisi maxime eximios & celebres
huc vocare soleas. Cujus animi
nuperrime illustre dedisti speci-
men. Neque vocasse contentus id
sedulò operam das, ut quotquot
sumus de tua benevolentia nobis
gra-

gra-

E P I S T O L A

set, alium hic esse in hac Academia virum magnum D. Ludovicum de Dieu, quem, quotiescunq; ipsius in scriptis meis mentionem facio, per conscientiam nequeo quin encomiis extollam, qui tanta pietate, theologiæ veræ, artium, & linguarum ferme omnium cognitione syderis instar ex alto corruscantis eminent. Sed cū aliis rebus totus detineretur, lubenti animo hunc mihi laborem relinquere cognoscebam: & hoc uterque damus operam, ut publico prodesse queamus, non tantopere quid à quo fiat solliciti. Itaq; ut antea dixi, istum Benjaminem in linguam Latinam transtuli & notis illustravi vel refutavi. Quem ita concinnatum
cui

DEDICATORIA.

Judæos ex eo impugnamus, quod eorum sceptrum usque ad Messiam perdurare debuerit (Genes. 49. 10.) jam verò per aliquot secula omne dominium sceptro designatum amiserint; illis quod respondeant suppetat, puta suum etiamnum regnum in Oriente inveniri, ubi multis locis summam jurisdictionem obtineant: quæ alibi plenius deduco, hîc innuisse contentus. Hæc licet ita sese habeant, tantum abest ut me ab opere revocarint, ut eò alacrius suscipiendum duxerim, quò fraudes illas & figmenta suis locis detegerem: ut si cui notas subjunctas liberet conferre, istud *κρησφύγετον* detectum haberet. Unum me potius remoratum fuisset,

set,

EPISTOLA

tis insuper notis, quibus autorem partim illustrarem, partim aberrantem in viam revocarem. Lubens profiteor, tanti me hunc autorem non ducere, quanti à quibusdam aliis æstimari observo: nihil enim tantopere studuisse ex toto scripto apparet, quam ut suam gentem non tantum magno ubique numero reperiri, sed etiam summa sinedria, dominia, imo regna quoq; nunc obtinere persuaderet. Hinc passim Israëlitæ magno studio numerare videas; eorumque jurisdictionem & imperium (iis præsertim locis quæ remotiora sunt, ubi mendacia non facile deprehensum iri sperabat) magno conatu delineare. Et quorsum hæc? ut quum
 Judæos

DEDICATORIA.

tetur, ubi rariora quoque & ha-
 etenus orbi nostro ignota sibi vi-
 sa testatur: adeoque ipsius libel-
 lus plurimarum rerum exempla
 affatim præbet, ut nonnisi cum
 voluptate legi queat. Evenit ali-
 quando ut cum viro Amplissimo
 D. D. Andrea Riveto (qui Nob.
 tuæ ob præclaras dotes intimus, &
 Principis Auraici junioris epho-
 rus ac gubernator, quo neminem
 magis idoneum censuit Illustrif-
 simus Princeps cui filium suum
 committeret) cum eo, inquam,
 iter facerem, atque multus de scri-
 pto isto Benjaminis sermo inci-
 deret: adeo ut tandem cum tanto
 viro id probari viderem, novam
 omnino versionem concinnandi
 laborem in me susceperim; addi-
 tis

E P I S T O L A

utpote quæ ex *αὐτοψία* res gestas, casus ac eventa enarrent. Sæpissimè historici magno veritatis studio ducuntur: verum ubi uno loco affixi alienis oculis credere necesse habent, fieri nequit quin fabulosa subinde lectori propinent: puta, quum alii quæ se vidisse sive putant, sive mentiuntur (uti non raro fit) historicis suggerunt. At in itinerariis nihil inde periculi: quandoquidem ab iis conscribuntur, qui ubique præsentis fuêre. Porrò inter itineraria quamplurima à multis plurimi factum fuit præsens hoc Benjaminis: quia non tantum Europam & Africam peragravit; sed ad intimas, imo etiam extremas Asiæ regiones se penetrasse profiteretur,

tetur,

DEDICATORIA.

consueta, sive præter usitatissi-
 mum modum evenere, ut præ-
 sentia nobis in infimo loco sitis
 exhibet. Quid præclarius, quid
 utilius, quid delectabilius exco-
 gitari posset? Verumenimverò
 cum varia sint historiarum gene-
 ra, nullum huic præferendum vi-
 detur, quo quis ea pertexit, quæ
 multis, longeque ac late distitis
 regionibus perlustratis, maximè
 notatu digna scripto consignans,
 lectores ne latum quidem un-
 guem progressos per longinquas
 regiones deducit. Hujusmodi hi-
 storiae itineraria audiunt: quæ
 bona fide contexta hac præ reli-
 quis prærogativa gaudent, quod
 majorem fidem mereantur, adeo-
 que lectorem certiozem reddant;

* 4 ut-

E P I S T O L A

quo casu φέρομεν ὅσα ἄλλοι λόγον δοκῶντα
 γνέσθαι τῶν πραγμάτων, ἀλόγως ἀποβέβηκε,
*producimus quæ cum præter rationem,
 viderentur facta fuisse, concinnum exi-
 tum sortita sunt.* Adeo uberes hic
 sunt exemplorū fructus, quos si-
 militer aliis in rebus est invenire:
 nec in sola deliberatione cernun-
 tur; sed eorum in omni genere
 ratio eadem. Quocirca semper
 laudata fuit historia: quæ singula-
 ria facta atque res gestas nobis
 ostendens, cujuscunque tempo-
 ris ac seculi exempla suppeditat:
 nec unius regionis cancellis con-
 stringitur; sed quam latè terra-
 rum termini extenduntur, expa-
 tiatur. Imò altius ascendens, ad
 ipsos usque cœlos pertingit, quæ-
 que in planetis ac stellis sive lege
 con-

DEDICATORIA.

didit, ὁμοια γὰρ ὡς Ἐπιτοπολὺ τὰ μέλλοντα
 τοῖς γεγονόσι, *similia enim ut plurimum
 præteritis sunt futura.* Quæ enim
 certior de futurorum plerumque
 incertissimorum eventu delibe-
 randi via, quam ubi tritam se-
 mitam calcamus, id est, præterita
 facta & eventus recolimus; futu-
 raque cum præteritis componen-
 tes illa quodammodo in his per-
 spicimus ac prævidemus? Et hîc
 quidem duplici modo ac ratione
 exemplis juvamus: vel cū ea quæ
 rationi consona apparent suaden-
 tur, quod facimus (ut ait idem
 in Rhetoric. ad Alexandrum)
 δεικνύτες ὡς Ἐπιτοπολὺ τέτον τ' ἔργον Ἐπι-
 τελειούσας τὰς πράξεις, *ostendendo, ut-
 plurimum eo modo negotia perfecta
 fuisse;* vel quæ dissona videntur,

* 3

quo

E P I S T O L A

tinetur; sed eo modo animis quoque imprimitur, ut eadem opera certissimè confirmetur. Quin etiam multo facilius & expeditius exempla factis nostris exprimere valemus, quam si regulis solummodo & præceptis in operibus & actionibus nostris dirigamur. Id cum in artibus mechanicis vulgo notum sit; tum in œconomicis ac politicis certissima experientia omnes deprehendunt. Quæ causa fuit, ut Aristoteles Rhetor. l. 2. c. 20. de aliis quibusdam antea loquutus, deinde subjunxerit, *Χρησιμώτερα δὲ πρὸς τὸ βελούσαιαι, πὲρ Ἀγῶν τῶν πραγμάτων, utiliora τὲρ sunt ad consultandum quæ ex rebus gestis depromuntur* (postea *Ἐξαδείγματα* exempla vocat:) rationem hanc addidit,

didit,



Nobilissimo ac Amplissimo viro

FRANCISCO
ab AERSEN

Equiti, Domino in *Sommelsdyck & Plaet*, Ordinum Generalium Con-
filiario, ad Galliarum Regem &c.
Exlegato, & Academiæ Lugd. Bat.
Curatori S. P.

Vir Nobilissime,

Nulla meritò aptior
ac convenientior
instituendi ac do-
cendi ratio cense-
tur, quam si ido-
neis exemplis res ipsa corporis vel
mentis saltem oculis exhibeatur:
quibus non solum rei veritas con-
tine-

Faint, illegible text, possibly bleed-through from the reverse side of the page.

Faint, illegible text, possibly bleed-through from the reverse side of the page.

Faint, illegible text, possibly bleed-through from the reverse side of the page.

מסעות של רבי

בנימין

ITINERARIUM
D. BENIAMINIS,

Cum

Versione & Notis

CONSTANTINI L'EMPEREUR
ab ОРРУСЪК, S.T.D. & S.L.P.
in Acad. Lugd. Batava.



LVGD. BATAVORVM,
Ex Officinâ ELZEVIRIANA.

clo lo cxxxiii.

Erson ab. ^{ing} g. Dislancoo distant. + ff + 6.
Errors obrond in g. luttion.

166

75

$$\begin{array}{r} 933 \\ 1173 \\ \hline 240 \end{array}$$

⊖



